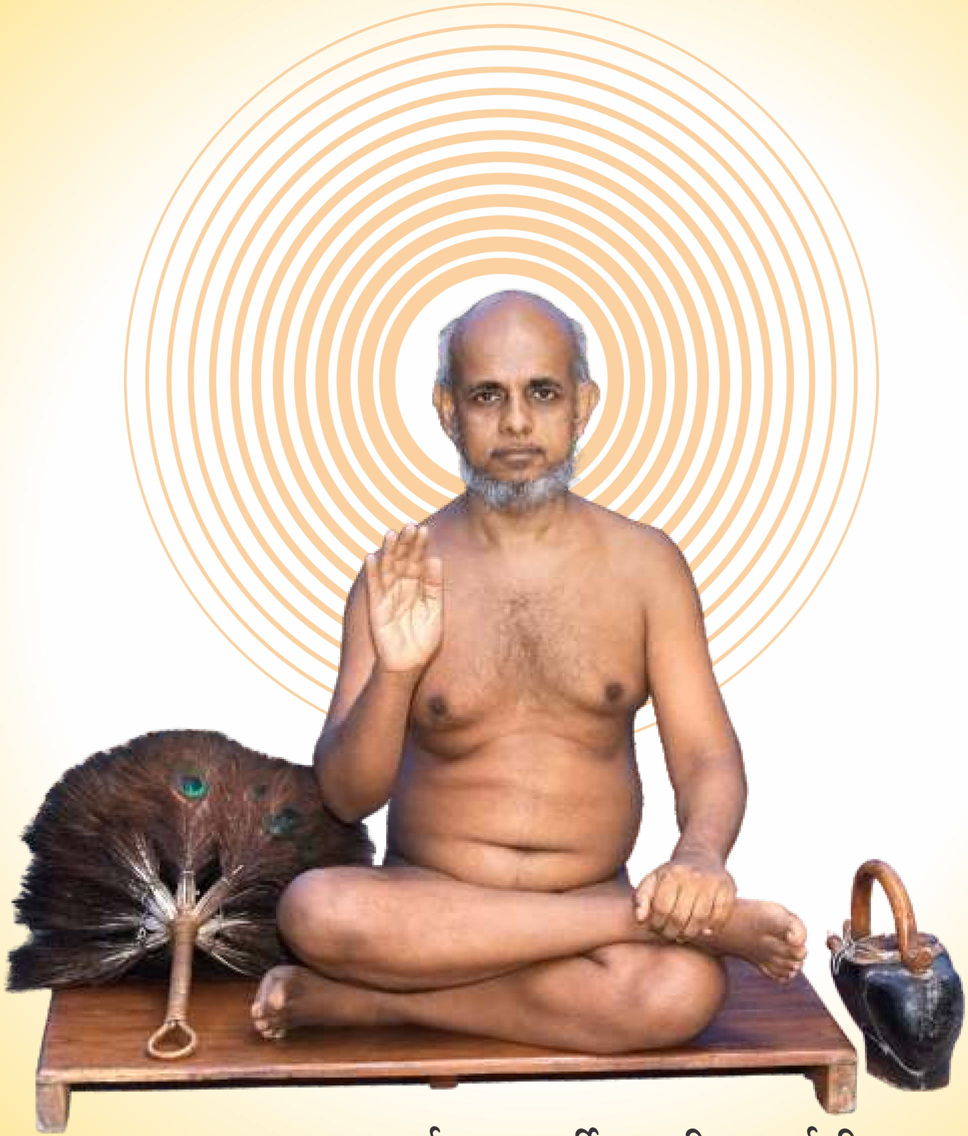

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

✲ जन्मदिवस 19–03–1971 ✲ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ✲ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद कल्पद्रुम महामण्डल विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

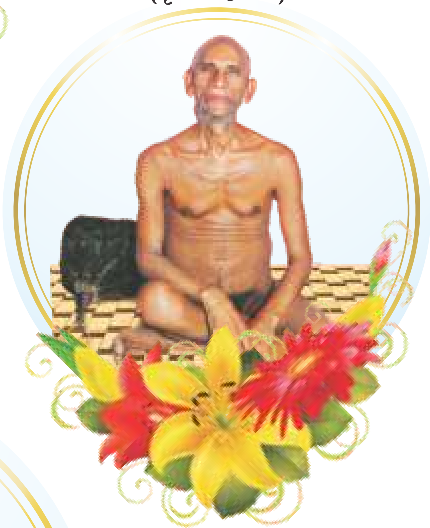

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

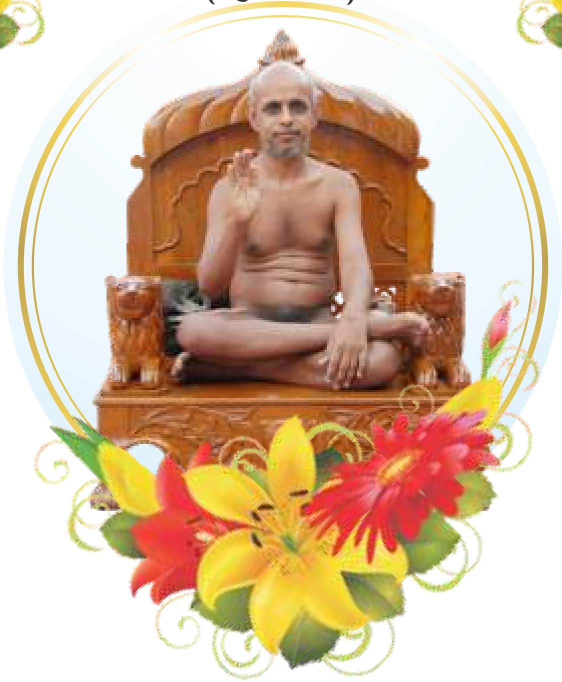

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

कल्पद्रुम महामण्डल विधान

माण्डला

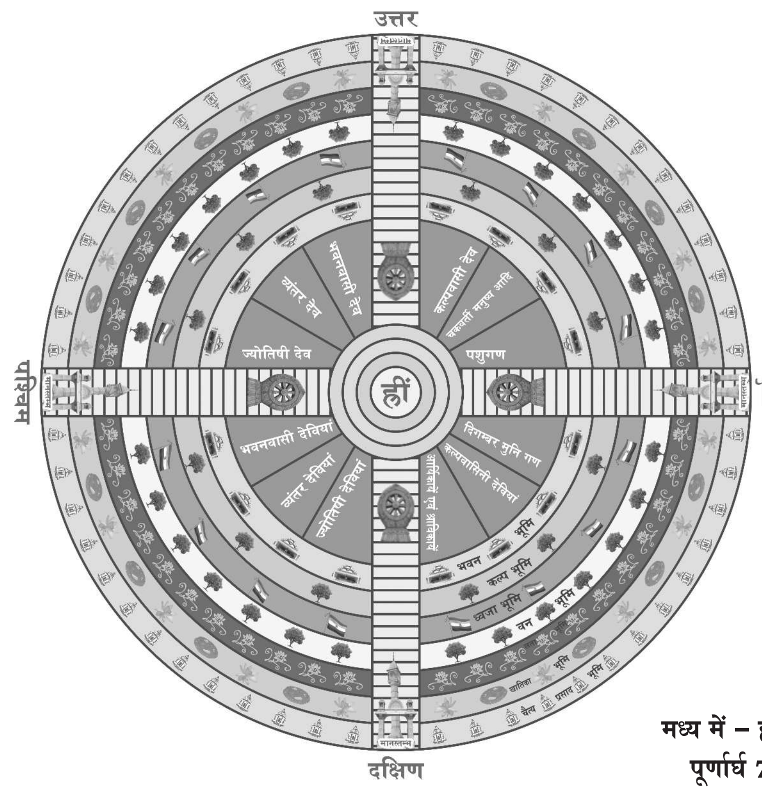

मध्य में – ह्रीं
पूर्णार्घ 72
कुल 2424 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : विशद कल्पद्रुम महामण्डल विधान
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम-2016 प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज
क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी ब्र. आस्था दीदी,
ब्र. सपना दीदी ब्र. आरती दीदी
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश सेठी शांतिनगर दुर्गापुरा रेल्वे स्टेशन के 9413336017पास जयपुर
2. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी ॒हरियाणा॑, 9812502062, 09416888879
3. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य : 151/- रु. मात्र

---

eqnzd%ikjlizdk'ku] fnYyh
Qksu ua- %09811374961] 09818394651] 9811363613
E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः

शार्दूलविक्रीडित छन्द

जिन्होंने आचार्य श्री विराग से, दीक्षा धरी,,
वे आचार्य हि पार्श्वनाथ प्रभु की, भावों सु पूजा करी।
जो संसार समुद्र से हि तिरने, का मार्ग भाषे सदा,
ऐसे श्री मुनिराज गुरु विशद की, पूजा करें सर्वदा।।

वसन्ततिलका छन्द

आचार्य श्री विशद सागर को जजूँ मैं।
जो शीलवान अरु इन्द्रिय संयमी हैं।
आचार्य के मुनि विशाल सु शिष्य ही हैं,
एकाशनादि तप योग जु धारते हैं।।

दोधक छन्द

श्रावक धर्म सदा समझावें, पंच महाव्रत गुप्ति बतावें।
जो समतारस को बरसावें, वे मुनि श्री विशद जय पावें।।
संयम धारण धीर सदा हैं, शीतलता गुण युक्त सदा हैं।
जो जिन शासन उन्नतकारी, वे मुनि श्री विशद सुखकारी।।

वसन्ततिलका छन्द

श्री हेम कुम्भ भर नीर सुगंध पाऊँ,
मुक्ता समान शुभ तंदुल पुष्प लाऊँ।
नैवेद्य दीपफल धूप सु थाल लेऊँ,
आचार्य श्री विशद को शुभ अर्घ्य देऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 श्री विशद सागराय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

वसन्ततिलका छन्द

झारी सु स्वर्ण भरि नीर सुगंध कीनों,
मोती सु अक्षत सु पुष्प सजाय लीनों।
नेवेद्य दीप अर धूप फलं सु लीनों,
श्री श्री विशाल मुनि को शुभ अर्घ्य दीनों।।

ॐ ह्रीं तपोनिष्ठ मुनि श्री 108 श्री विशाल सागराय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मुनि वन्दन कर्ता
पण्डित धनुष्कर

पुण्यार्जक

विनोद जैन

ऋषभ विहार, दिल्ली-92, मो.: 9811485261

त्रिलोक जैन

(ढाकपुरी) नयावास, अलवर (राज.), मो.: 823308292

प्रदीप कुमार, ऋषभ कुमार पाटनी

(ऋषभ मार्बल्स) पुष्कर रोड, अलवर, मो.: 9914002974

विपिन कुमार, मंयक जैन

267, असोड़ा हाउस, डब्लू के रोड, मेरठ, मो.: 9412203067

श्रीमती प्रियंका जैन धर्मपत्नी श्री अंकित जैन

53, श्रीराम विहार, मानसरोवर, जयपुर, मो.: 876667643

श्रीमती श्वेता जैन धर्मपत्नी श्री पंकज जैन

122, ग्राउण्ड फ्लोर, डिफेन्स एक्स, विकास मार्ग, दिल्ली, मो.: 9812282337

योगेश जैन

गिरितल रोड, काशीपुरा, मो.: 9837037448

राजेश जैन

ए-30, विवेक विहार फेस-2, दिल्ली-95, मो.: 9810621363

श्रीमी सीता देवी धर्मपत्नी श्री अनिल जैन

ऋद्धि सिद्धि समृद्धि, केकड़ी (राज.), मो.: 9460726257

श्रीमती अनीता धर्मपत्नी श्री वीर सेन जैन

6/20, ईस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली-26, मो.: 8459816967

॥श्री आदिनाथाय नमः॥

इन्द्रों का वैभव-विशाल रथ यात्रा

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिश्पारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्य किल्विषकाश्चैकशः

इन्द्र-100, 32 या 12 सामानिक – 20
त्रायस्त्रिश् – 33
पारिषद् : आभ्यन्तर, मध्य, बाह्य = कुल
12 14 16 42
आत्मरक्ष – 8
लोकपाल –प्रत्येक चारों दिशाओं में चार
अनीक – (अनेक के निम्न सात भेद है)

(1) वृषभ (2) रथ (3) घोड़े (4) गज (5) नर्तक (6) गन्धर्व (7) पदाति प्रत्येक सेना की सात कक्षायें होती है। प्रत्येक कक्षा में क्रमशः 84 लाख, 168 लाख, 336 लाख, 672 लाख, 1344 लाख, 2688 लाख व 5376 लाख कुल 10668 लाख होती है।

इसी प्रकार सातों प्रकार की सेना में कुल 7 अरब 46 करोड़ 76 लाख सैनिक होते हैं। जुलुस का प्रारूप इस प्रकार होगा–

क्र. सं.	नाम सेना-ध्वजा का रंग व वस्त्रों का रंग	प्रथम कक्षा	द्वितीय कक्षा	तृतीय कक्षा	चतुर्थ कक्षा	पंचम कक्षा	षष्टम कक्षा	सप्तम कक्षा
1	वृषभ	सफेद	लाल	नीलकमल जैसा	हरा	पीला	काला	किंशुक
2	रथ	सफेद	लाल	सुनहरी	हरा	नीलकमल जैसा	कमल नीलमणी	इन्द्र
3	अश्व	सफेद	लाल	पीला	हरा	नीला	लाल	नीला
4	गज	सफेद	उगते सूर्य जैसा सुनहरी	पीला	हरा	नीलकमल	लाल	अंजन जैसा काला
5	नर्तक के 7 भेद	कामदेव राजा	मंडलीक व महा मंडलीक राजा	बलदेव नारायण प्रतिनारायण	चक्रवृति राजा	चरम शरीर लोकपाल इन्द्र	ऋद्धिधारी गणधर	तीर्थंकर
6	गर्न्धव	षंडंग स्वर के गीत	नृत्य करते ऋषिक स्वर	गांधार स्वर के गीत व नृत्य	मध्यम स्वर में जिनेन्द्र देव के गीत	पंचम स्वंर के गीत	धैवती स्वर के गीत	निषाद स्वर
7	पदाति	काली ध्वजा व वस्त्र	नीली ध्वजा व वस्त्र	कपोतवर्ण व ध्वजा	सुनहरी ध्वजा	लाल	सफेद धवजा	श्वेत छत्र

''कल्पवृक्ष के समान मुँहमांगा फल देने वाला है यह "कल्पद्रुम विधान"

आचार्य श्री जिनसेन जी ने महापुराण के अड़तीसवे पर्व के प्रारम्भ में श्रावक के षट्कर्मो का वर्णन करते हुये पूजा के चार भेद बतलाये है–

''प्रोक्ता पूजार्हतामिज्या सा चतुर्धासदार्चनम्।
चतुर्मुखमहः कल्पद्रुमाश्चाष्टाह्निकोऽपि च॥''

अर्थात पूजा चार प्रकार की है

1. नित्य पूजा 2. चतुर्मुखपूजा 3. कल्पद्रुम पूजा और आष्टान्हिक पूजा।

1. नित्य पूजा–प्रतिदिन अपने घर से गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि द्रव्य ले जाकर जिनालय में अर्हन्त देव की पूजन करना नित्य पूजा है।

2. चतुर्मुख पूजा–महामुकुट बद्ध राजाओं द्वारा जो महापूजा की जाती है उसे 'चतुर्मुख' या 'सर्वतोभद्र' पूजा कहते है।

3. कल्पद्रुम पूजा–चक्रवर्तियों के द्वारा किमिच्छिक (मुँह माँगा) दानपूर्वक जो विशाल पूजन का आयोजन होता है उसे 'कल्पद्रुम पूजा' कहते हैं।

4. आष्टान्हिक पूजा–अष्टान्हिका पर्व के दिनों में जो नन्दीश्वर द्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयों आदि की पूजा की जाती है उसे अष्टान्हिक पूजा कहते हैं। इसके अतिरिक्त 'इन्द्रध्वज' पूजा का भी उल्लेख शास्त्रों में प्राप्त होता है।

जिसे इन्द्रों द्वारा किया जाता है।

आज साक्षात् इन्द्र या चक्रवर्ती आदिपात्र तो हैं नहीं फिर भी आप स्थापना निक्षेप से इन्द्र बनकर इन्द्र ध्वज विधान करते है 'अथवा इन्द्र बनकर पंच कल्याणक महोत्सव रचाते हैं। वैसे ही अपने में चक्रवर्ती का निक्षेप कर श्रावक यह कल्पद्रुम विधान करे। इस विधान में तीर्थंकर भगवान के महान वैभवपूर्ण समवशरण की ही पूजायें हैं। पुनः तीर्थंकर

प्रभु के गुणों की उनके पुण्य की पंचकल्याणक की व उनके तीर्थों में होने वाले मुनियों की एवं सहस्त्रनाम की पूजाये हैं।

समवशरण की संरचना–जिस समय तीर्थंकर प्रभु को केवलज्ञान होता है तब समवशरण की रचना सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर के निर्देशन में देवगण करते हैं। यह समवशरण भूतल से पाँच हजार धनुष ऊपर आकाश में स्थित होता है। इसकी रचना वृत्ताकार होती है उसकी चारों दिशाओं में बीस-बीस हजार सीढ़ियों की रचना रहती है। इन सीढ़ियों पर सभी जन पादलेप औषधि युक्त व्यक्ति की तरह बिना परिश्रम के चढ़ जाते हैं प्रत्येक दिशा में सीढ़ियों से लगी एक-एक वीथि/सड़क बनी होती है जो समवशरण के केन्द्र में स्थित गन्ध कुटी के प्रथम पीठ तक जाती है। इसका आँगन इन्द्रनील मणिमय होता है। समवशरण अत्यन्त आकर्षक और अनुपम शोभा सहित होता है। उसमें 1. चैत्य-प्रसाद भूमि, 2. जल-खातिका भूमि, 3. लता वन भूमि, 4. उपवन भूमि 5. ध्वजभूमि, 6. कल्पवृक्ष भूमि, 7. भवनभूमि, 8. श्री मण्डप-भूमि, प्रथम पीठ, द्वितीय पीठ तथा तृतीय पीठ भूमि होती है। समवशरण के बाह्य भाग में सबसे पहले धूलिसाल कोट बना रहता है। यह रत्नों के चूर्णों से निर्मित बहुरंगी और वलयाकार होता है। इसके चारों ओर स्वर्णमयी खम्भोवालें चार तोरण द्वार होते हैं। इन द्वारों के बाहर मंगलद्रव्य नवनिधि, धूप, घट आदि युक्त पुतलिया स्थित रहती है। प्रत्येक द्वार के मध्य दोनों बाजुओं में एक-एक नाट्यशाला होती है। इनमें बत्तीस-बत्तीस देवांगनाएँ नृत्य करती रहती हैं। ज्योतिष देव इन द्वारों की रक्षा करते हैं। इन द्वारों के भीतर प्रविष्ट होने पर कुछ आगे की ओर चारों दिशाओं में चार मानस्तंभ होते हैं। प्रत्येक मानस्तंभ चारों ओर चार दरवाजों वाले तीन-तीन परकोटों से परिवेष्टित रहता है। मानस्तंभों का निर्माण तीन पीठिका युक्त समुन्नत वेदी पर होता है। वह घण्टा ध्वजा और चामर आदि से सुशोभित अत्यधिक कलात्मक होता है। मानस्तम्भों के मूल और ऊपरी भाग में अष्ट महाप्रातिहार्यो से युक्त अर्हन्त भगवान की स्वर्णमय प्रतिमाएँ विराजमान रहती हैं। इन्द्रगण क्षीरसागर के जल से इनका अभिषेक किया करते हैं। मानस्तम्भों के निकट चारों ओर चार-चार वापिकाएँ बनी होती हैं। एक-एक वापिका

के प्रति बयालीस कुण्ड होते हैं। सभी जन इन कुण्डों के जल से पैर धोकर ही अन्दर प्रवेश करते हैं। मानस्तम्भों को देखने मात्र से दुरभिमानी जनों का मान गलित हो जाता है इसलिए 'मानस्तम्भ' यह इसकी सार्थक संज्ञा है। उसके बाद चैत्य प्रसाद भूमि आती है। वहाँ पर एक चैत्य प्रसाद होता है, जो कि वापिका, कूप सरोवर और वन खण्डों से मण्डित पाँच-पाँच प्रासादों से युक्त होता है। चैत्य प्रसाद भूमि के आगे रजतमय वेदी बनी रहती है। वह धूलीसाल कोट की तरह आगे गोपुर द्वारों से मण्डित रहती है। ज्योतिष देव, द्वार पर द्वारपाल का काम करते हैं। उस वेदी के भीतर की ओर कुछ आगे जाने पर कमलों से व्याप्त अत्यन्त गहरी परिखा होती है जो कि वीथियो/सड़कों को छोड़कर समवशरण को चारों ओर से घेरे रहती है। परिखा के दोनों तटों पर लतामण्डप बने होते है। लतामण्डपों के मध्य चन्द्रकान्त मणिमय शिलाएँ होती हैं, जिन पर देव इन्द्र गण विश्राम करते हैं। इसे खातिका भूमि कहते हैं। खातिका भूमि के आगे रजतमय एक वेदी होती है। वह वेदी पूर्ववत्-गोपुर द्वारों आदि से युक्त होती है। उस द्वितीय वेदी से कुछ आगे बढ़ने पर लताभूमि आती है, जिसमें पुन्नाग, तिलक, वकुल, माधवी इत्यादी नाना प्रकार की लताएँ, सुशोभित होती। लता भूमि में लता-मण्डप बने होते हैं, जिसमें सुर-मिथुन क्रीड़ारत रहते हैं। लता भूमि से कुछ आगे बढ़ने पर एक स्वर्णमय कोट रहता है। यह कोट भी धूलिसाल कोट की तरह गोपुर द्वारों, मंगल द्रव्यों नवनिधियों और धूप घटों आदि से सुशोभित रहता है उसके कुछ आगे जाने पर पूर्वादिक चारों दिशाओं में क्रमशः अशोक सप्तपर्ण, चम्पक और आम्र नामक चार उद्यान होते हैं। इन उद्यानों में इन्हीं नामोवाला एक-एक चैत्य वृक्ष भी होता है। यह वृक्ष तीन कटनी वाले एक वेदी पर प्रतिष्ठापित रहता है। उसके चारों ओर चार दरवाजों वालें तीन परकोटे होते हैं। उसके निकट मंगलद्रव्य रखे होते है, ध्वजाएँ फहराती रहती है तथा वृक्ष के शीर्ष पर मोतियों की माला से युक्त तीन छत्र होते है। इस वृक्ष के मूल भाग में अष्ट प्रातिहार्ययुक्त अर्हंत भगवान की चार प्रतिमाएँ विराजमान रहती हैं। इसे उपवन-भूमि कहते हैं। इस भूमि में रहनेवाली वापिकाओं में स्नान करने मात्र से जीवों को एकभव (आगे

पीछे का) दिखाई पड़ता है। तथा वापिकाओं के जल में देखने से सात भव दिखाई पड़ते हैं। उसके आगे पुनः एक वेदिका होती है। वेदिका के आगे ध्वज भूमि होती है। ध्वज भूमि में माला, वस्त्र, मयूर कमल, हंस, गरुड़, सिंह, बैल, हाथी और चक्र से चिह्नित दश प्रकार की निर्मल ध्वजाएँ होती हैं। इनके ध्वजदंड स्वर्णमय होते हैं। ध्वजभूमि के कुछ आगे बढ़ने पर एक स्वर्णमय कोट आता है। इस परकोटे के चारों ओर पहले के समान चार दरवाजे होते हैं, नाटक शालाएँ होती हैं तथा धूप घटों से सुगन्धित धुआँ निकलता रहता है। इसके द्वारो पर नागेन्द्र द्वारपाल के रूप में खड़े रहते हैं। उसके आगे कल्पभूमि होती है। कल्पभूमि में कल्पवृक्षों का वन रहता हैं इन वनों में कल्पनातीत शोभावाले दश प्रकार के कल्पवृक्ष होते हैं जो कि नाना प्रकार की लता बल्लियों एवं वापिकाओं से वेष्टित रहते हैं। यहाँ देव विद्याधर और मनुष्य क्रीड़ारत रहते हैं। कल्पभूमि में पूर्वादिक चारों दिशाओं में क्रमशः नमेरू, मन्दार, सन्तानक और पारिजात नामक चार सिद्धार्थ वृक्ष होते है। सिद्धार्थ वृक्षों की शोभा चैत्य वृक्षों के सदृश होती है। किन्तु इनमें अर्हंत की जगह सिद्ध प्रतिमाएँ होती हैं। कल्पभूमि के आगे पुनः एक स्वर्णमय वेदी बनी रहती हैं। इस वेदी के द्वार पर भवनवासी देव द्वारपाल के रूप में खड़े रहते है। इस वेदी के आगे भवन-भूमि होती है। भवन भूमि में एक से एक सुन्दर कलात्मक और आकर्षक बहुमंजिले भवनों की पंक्ति रहती है। देवों द्वारा निर्मित इन भवनों में सुर-मिथुन, गीत, संगीत नृत्य जिनाभिषेक, जिनस्नान आदि करते हुए सुखपूर्वक रहते हैं। भवनों की पंक्तियों के मध्य वीथियाँ गलियाँ बनी होती हैं। वीथियों के दोनों पार्श्व में नव-नव स्तूप (कुल 72) बने होते हैं। पद्मराग मणिमय इन स्तूपों में अर्हंत और सिद्धों की प्रतिमाएँ विराजमान रहती हैं। इन स्तूपों पर वन्दन मालाएँ लटकी होती हैं। मकराकार तोरणद्वार होते हैं। छत्र लगे होते हैं मंगल द्रव्य रखे होते है और ध्वजाएँ फहराती रहती हैं। यहाँ विराजमान जिन प्रतिमाओं की देवगण पूजन और अभिषेक करते हैं। भवन भूमि के आगे स्फटिक मणिमय चतुर्थ कोट आता है। इस कोट के गोपुर द्वारों पर कल्पवासी देव खड़े रहते हैं।

द्वादश गण–चतुर्थ कोट के आगे रत्न स्तम्भों पर आधारित अन्तिमश्री मण्डपभूमि होती है। उस भूमि में स्फटिक मणिमय सोलह दीवारों से विभाजित बारह कोठे होते है। इन बारह कोठो में ही बारह गण अथवा बारह सभाएँ होती है। इनमें सर्वप्रथम अर्हंत भगवान के दाये ओर के कोठे में गणधर देवादिक मुनि विराजते हैं। द्वितिय कोठे में कल्पवासिनी देवियाँ होती हैं तीसरे कक्ष में आर्यिका व श्राविका समूह होता है। इसके आगे वीथि रहती है। वीथि के आगे चौथे पाँचवे और छठवें कोठे में क्रमशः ज्योतिष व्यन्तर और भवनवासी देवों की देवियाँ रहती हैं। उसके आगे पुनः वीथि आ जाती है। उसके आगे के तीन कोठे में क्रमशः व्यन्तर ज्योतिष और भवनवासी देव रहते हैं। इसके बाद तीसरी वीथि होती है। उसके आगे के तीन कोठों में क्रमशः कल्पवासी देव, चक्रवर्ती आदिक मनुष्य एवं सिंहादिक पशु पक्षी जन्म-जात बैर को छोड़कर उपशान्त भाव से बैठकर भगवान के उपदेशामृत का लाभ लेते हैं। इनकोठों में मिथ्यादृष्टि, अभव्य और असंज्ञी जीव कदापि नहीं होते। ऐसे जीव बाहर के ही राग रंग में उलझकर रह जाते हैं। उसके आगे स्फटिक मणिमय पाँचवी वेदी आती है। इस वेदी के आगे एक के ऊपर एक क्रमशः तीन पीठ होते है। प्रथम पीठ पर बारह कोठों और चार वीथियों के सम्मुख सोलह-सोलह सीढ़िया होती हैं। इस पीठ पर चारों दिशाओं में अपने मस्तक पर धर्मचक्र धारण किये चार यक्षेन्द्र खड़े रहते हैं। इसी पीठ के ऊपर द्वितिय पीठ होता है। इस पीठ पर सिंह, बैल आदि चिह्नों वाली ध्वजाओं की पंक्ति, अष्ट मंगल द्रव्य, नव-निधि व धूपघट आदि शोभायमान रहते हैं। द्वितिय पीठ के ऊपर तीसरी पीठ होती है। तीसरी पीठ के ऊपर अनेक ध्वजाओं से युक्त गंधकुटी होती है। गन्धकुटी के मध्य में पाद-पीठ सहित सिंहासन होता है। भगवान सिंहासन से चार अंगुल ऊपर अष्ट महाप्रातिहार्यों के साथ आकाश में विराजमान रहते हैं।

समवशरण में जिनेन्द्र देव के माहात्म्य से आतंक, रोग, मरण, उत्पत्ति, बैर, काम-बाधा एवं क्षुधा-तृषा की पीड़ाएँ कदापि नहीं होती साथ ही श्री मण्डप भूमि के थोड़े से ही क्षेत्र में असंख्य जीव एक-दूसरे से आकृष्ट रहते हुए सुखपूर्वक विराजते हैं। योजनों विस्तारवाले इस समवशरण में प्रवेश और निकलने से बाल-वृद्ध सभी को अन्तमुर्हूत से अधिक समय नहीं लगता है। इस प्रकार यहाँ समवशरण की संरचना

का संक्षिप्त वर्णन पूर्ण हुआ। समवशरण के भव्य माण्डले की रचना कर यह कल्पद्रुम विधान विशेष भक्तिभाव से सम्पन्न करना चाहिए। इस विधान को भादों, माघ या चैत्र माह के सोलह कारण पर्व के मंगल दिनों में करना चाहिए। अथवा तीर्थंकरों के केवलज्ञान कल्याणक या अन्य विशेष पर्व के दिनों में भी सम्पन्न कर सकते हैं। सर्वप्रथम झंडारोहण करके अंकुरारोपण करना चाहिए। इसके पश्चात जलयात्रा करके वेदी शुद्धि करके मंडप में श्री जी की प्रतिमा को विराजमान करना चाहिए। पुनः इन्द्रों को वैभव सजाकर शोभायात्रा निकालनी चाहिए। इस शोभायात्रा को झंडारोहण के पहले करके वापसी लाकर झंडारोहण का कार्यक्रम किया जा सकता है। प्रतिदिन प्रातः त्यागी व्रती प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में संगीतमय भक्तिपूर्वक पूजा करें यदि मुनि महाराज या त्यागी व्रती वहाँ हैं तो उनके प्रवचन सांयकाल समवशरण की भव्य आरती एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहना चाहिए।

विधान की समाप्ति पर विशेष रूप से रथयात्रा महोत्सव करके समाज का सामूहिक भोजन करना चाहिए।

चतुर्विध संघ को यथायोग्य दान देना चाहिए। विधान करवाने वाले प्रतिष्ठाचार्य संगीतकार इन्द्र इन्द्राणी एवं मुख्य कार्यकर्ताओं का यथायोग्य सम्मान करना चाहिए। **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** द्वारा रचित यह कल्पद्रुम विधान नाम के अनुरूप ही फल देने वाला है। जैसे कल्पवृक्ष मुँह माँगा फल देते हैं। वैसे ही भक्तिभाव पूर्वक किया गया यह विधान भी मनोवांछित फल प्रदान करने वाला हैं। गुरुवर श्री विशद सागर जी महाराज आगे भी इसी प्रकार जिनवाणी के प्रचार-प्रसार की सेवा में संलग्न रहें इसी भावना के साथ श्री चरणों में बारम्बार नमोस्तु एवं भावों के अनुरूप सभी को यह विधान मनोवांछित फल प्रदान करें इस विधान के लेखन में पं. धनुस्कर जी एवं उनके परिवार का अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ है पं. जी अश्वस्थ होते हुए भी जिन धर्म एवं सम्यक् श्रुताराधना के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं हमारा आशीर्वाद है कि वह श्रुत पुत्र होकर माँ जिनवाणी की सेवा करते हुए मोक्ष पथ के राही बनें एवं और भी प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से विधान में जो सहयोगी रहे उनके लिए गुरुदेव का पूर्ण आशीर्वाद है।

–मुनि विशाल सागर (संघस्थ)
वर्षायोग 2014 अतिशय क्षेत्र तिजारा

विषय सूची

मंगलाचरण	13
समवशरण पूजन प्रारभ्यते–1	14
अथ श्री जिन मानस्तंभ पूजा प्रारभ्यते-2	18
अथ चैत्य प्रासाद भूमि पूजा प्रारभ्यते-3	40
अथ खातिका भूमि पूजा प्रारभ्यते-4	48
अथलता भूमि पूजा प्रारभ्यते-5	55
अथ उपवन भूमि पूजा प्रारभ्यते–6	62
ध्वज भूमि पूजा–7	86
अथ कल्पवृक्षभूमि पूजा प्रारभ्यते-8	92
अथ भवन भूमि पूजा प्रारभ्यते–9	119
अथ श्री मंडप भूमि पूजा प्रारभ्यते–10	129
अथप्रथम पीठ पूजा प्रारभ्यते–11	138
द्वितीय पीठ पूजा–12	147
अथ गंधकुटी विराजमान तीर्थंकर पूजा प्रारभ्यते–13	156
अथ तीर्थंकर गुण पूजा प्रारम्भ्यते-14	164
अथ श्री जिन दिव्यध्वनि पूजा प्रारभ्यते–15	188
अथ गणधर पूजा प्रारभ्यते–16	200
अथ चौंसठ ऋद्धि पूजा प्रारभ्यते–17	209
अथ सर्व साधु पूजा प्रारभ्यते–18	225
पञ्चकल्याणक पूजा–19	271
तीर्थंकर पुण्य पूजा–20	295
अनुबद्ध केवली पूजा–21	316
तीर्थ प्रवर्तन काल पूजा–22	335
सहस्रनाम पूजन–23	345
बड़ी समुच्चय जयमाला–24	465

मंगलाचरण

नव देवों के चरण में, नव कोटी के साथ।
समवशरण जिनदेव के, झुका रहे हम माथ।।

(ज्ञानोदय छन्द)

कर्म मोहनीय के नसते ही, ज्ञानावरणी कर्म नशे।
नशे दर्शनावर्ण कर्म अरु, अन्तराय भी पूर्ण नशे।।
केवल दर्शन ज्ञान वीर्य सुख, अनन्त चतुष्टय पाये हैं।
सुर नर किन्नर पशु के स्वामी, चरणों शीश झुकाये हैं।।1।।
धन कुबेर इन्द्राज्ञा पाकर, समवशरण रचना करते।
शुभ भावों का फल पाते वह, कोष पुण्य से निज भरते।।
मानस्तम्भ शोभते चउ दिश, मान गलित जो करते हैं।
रागी द्वेषी मोही जन के, मन का कालुष हरते हैं।।2।।
प्रथम चैत्य प्रासाद भूमि है, चैत्य बने हैं शुभकारी।
द्वितिय भूमी रही खातिका, निर्मल जल युत मनहारी।।
लता भूमि तृतिय कहलाई, श्रेष्ठ लताएँ रहीं महान।
उपवन भूमि चौथी पावन, जिसका कौन करे गुणगान।।3।।
ध्वज भूमी पञ्चम कहलाई, ध्वज पावन फहराते हैं।
कल्प वृक्ष भूमी छठवी में, तरु शुभ शोभा पाते हैं।।
सुरगृह भू में सुर पुर वासी, क्रीडा करते भाव विभोर।
श्री मण्डप भूमी में सुर नर, पशू बैठते चारों ओर।।4।।
तीन पीठयुत गंध कुटी के, ऊपर श्री जिन का स्थान।
कमलाशन पर अधर शोभते, समवशरण में जिन भगवान।।
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, चतुर्दिशा में हों दर्शन।
भव्य जीव जिन चरण बैठकर, भाव सहित करते अर्चन।।5।।
दोहा– कल्पद्रुम है श्रेष्ठ यह, पावन परम विधान।
भाव सहित जो भी करें, वे पावें कल्याण।।

।।इत्याशीर्वाद।।

समवशरण पूजन प्रारभ्यते–1

स्थापना

पुण्य उदय से समोशरण में, भव्य जीव जा पाते हैं।
श्री जिनवर के दर्शन करके, अपने भाग्य जगाते हैं॥
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, का आराधन करते हैं।
हृदय कमल में आह्वानन् कर, कोष पुण्य से भरते हैं॥
दोहा– आओ पधारो हृदय में, हे मेरे भगवान!
नम्र भाव से कर रहे; नाथ यहाँ गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथ अष्टक)

श्री जिनवर की पूजा करने, प्रासुक जल भर लाये हैं।
जन्मादिक त्रय रोग नशाने, चरण शरण में आये हैं॥
भिन्न-भिन्न चौबीसों जिनके, भाव सहित गुण गाते हैं।
तुमसे गुण को पाने हेतू, चरणों शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व. स्वाहा।

कुंकुंम केशर आदि सुगन्धित, चन्दन घिसकर लाये हैं।
भव सन्ताप नसाने हेतू, चरण शरण में आये हैं।।भिन्न.॥2॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

देव जीर साली के चावल, अमल अखण्डित लाये हैं।
अक्षय पद की प्राप्ती हेतु, श्री जिन चरण चढ़ाये हैं।।भिन्न.॥3॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कमल केतकी बकुल केवड़ा, के शुभ थाल सजाए हैं।
काम कलंक नसाने हेतू, चरण शरण में लाये हैं।।भिन्न.॥4॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

काजू किसमिस पिस्ता आदिक, कई पकवान बनाए हैं।
क्षुधा रोग के नाशन हेतू, श्री जिन चरण चढ़ाये हैं।।भिन्न.॥5॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्व. स्वाहा।

मणिमय दीप सुजगमग करते, रत्नजड़ित हम लाये हैं।
मोह तिमिर के नाशन हेतू, श्री चरणों में आये हैं।।भिन्न.॥6॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः मोहांधकार विनाशनाय दीपम् निर्व. स्वाहा।

दश प्रकार की धूप दशांगी, एक मिलाकर लाये हैं।
अष्ट कर्म के नाशन हेतू, अग्नी बीच जलाये हैं।।भिन्न.7॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्व. स्वाहा।

श्रीफल अरु बादाम सुपाड़ी, सेव नारंगी लाये हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, चरण शरण में आये हैं।।भिन्न.॥8॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः मोक्षफल प्राप्ताये फलम् निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अरु पुष्प चरूवर, दीप धूप फल लाये हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।भिन्न.॥9॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्ताये अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

दोहा

शांती धारा दे रहे, पाने शांती नाथ।
विशदभाव से तव चरण, झुका रहे जिन! माथ॥

॥शान्तये शांतिधारा॥

पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाये हम जिनराज।
चढ़ा रहे है भाव से, तव चरणों में आज॥
(पुष्पाञ्जलिः क्षिपत्)

अथ जाप्य मन्त्र–ॐ ह्रीं अर्हं श्री समवशरण महिमा मण्डित श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा–चौबीसों जिनराज के, समोशरण सुखकार।
धन कुबेर रचता स्वयं, आके विविध प्रकार॥

(चाल छन्द)

जय-जय श्री जिनदेवा, सुर नर करते नित सेवा।
जय-जय अनंत गुण धारी, जय आतम ब्रह्म विहारी॥
प्रभु दर्श ज्ञान सुख पाए, अरु वीर्य अनंत उपजाए।
श्री जिनवर जग उपकारी, हैं जग में मंगलकारी॥1॥
सुन देव सभी हर्षाए, जिनवर की महिमा गाए।
सुरपति की आज्ञा पाये, धनपती रत्न वर्षाए॥
फिर समवशरण बनवाया, मणियों से खूब सजाया।
है सीढ़ी की ऊँचाई, इक हाथ रही है भाई॥2॥
सब बीस हजार कहीं हैं, कोइ बाधा वहाँ नहीं है।
लूले लंगड़े नर नारी, चढ़ जाते सम्यक्धारी॥
शुभ धूलिशाल कहलाया, पहला परकोटा गाया।
चारों दिश में अभ्यंतर, मानस्तंभ बने हैं मनहर॥3॥
बारह योजन से दिखते, द्वादश गुण ऊँचे रहते।
चउ दिश में जिन दर्शन हों, मानी का मान गलन हो॥
शुभ चार कोट हैं सुन्दर, अरु पांच वेदिका मनहर।
है आठ भूमियाँ अंतर, फिर गंध कुटी है अनन्तर॥4॥
है धूलिसाल के अंदर, क्षिति चैत्य प्रासाद है सुन्दर।
इक-इक जिनमंदिर अंतर, प्रासाद पाँच अनन्तर॥
दो दो हैं नाट्यशालाएँ, गुण गाती सुर बालाएँ।
वेदी वेष्टित है उन्नत, हैं गोपुर द्वार समुन्नत॥5॥

निधि तोरण द्वार सजे हैं, द्वारे पर वाद्य बजे हैं।
फिर स्वच्छ नीर युत खाई, दूजी भूमी कहलाई॥
हंसादिक कलरव करते, कमलादिक मन को हरते।
फिर लता भूमि कहलाई, पुष्पों से सजी सजाई॥6॥
फिर द्वितिय कोट कहा है, गोपुर संयुक्त रहा है।
फिर उपवन भूमि रही है, वृक्षों से सहित कही है॥
चउ वृक्षों पर प्रतिमाएँ, चारों दिश शोभा पाएँ।
प्रातिहार्य सहित है सुन्दर, मणिमय दिखती है मनहर॥7॥
फिर पंचम भूमी आए, जो ध्वज भूमी कहलाए।
फिर द्वितीय कोट सुनिर्मित, है गोपुर द्वार समन्वित॥
फिर छटवी भूमी आई, दश विधि सुरतरु युत गाई।
फिर पंचम भूमी आए, जो ध्वज भूमी कहलाए॥8॥
फिर द्वितिय कोट सुनिर्मित, है गोपुर द्वार समन्वित।
फिर छटवी भूमी आई, दश विधि सुरतरु युत गाई॥
प्रतिदिश सुरतरु सिद्धारथ, सिद्धों की प्रतिमा धारक।
फिर सप्तम भूमी आवे, जो भवनभूमि कहलावे॥9॥
स्तूप रत्न से निर्मित, होते जिनबिम्ब समन्वित।
परकोटा स्फटिक मणी का, गोपुर है मरकत मणि का॥
फिर मंडप भूमी आती, जन-जन के मन को भाती।
जहाँ कोठे द्वादश होते, श्रोता जिनवाणी सुनते॥10॥
श्री जिनवर अतिशयकारी, हैं जग जन के उपकारी।
पंचम वेदी के अंतर, त्रय कटनी होती सुन्दर॥
पहली पर यक्ष हैं न्यारे, सिर धर्म चक्र को धारे।
दूजी पर आठ ध्वजाएँ, नव विधि मंगल द्रव पाएँ॥11॥
है गंधकुटी तीजी पर, शुभ कमल बना है मनहर।
ऊपर सिंहासन राजे, चउ अंगुल अधर विराजे॥
जिन चौंतिस अतिशय पावें, वसु प्रातिहार्य प्रगटावें।
जो अनन्त चतुष्टय धारें, अष्टादश दोष निवारें॥12॥
जिनवर के दर्शन पाकर, भवि तृप्त न हों गुण गाकर।
हम जिनवर के गुण गाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ॥

जिन पद में शीश झुकाएँ, जिनवर के पद को पाएँ।
अब 'विशद' ज्ञान को पाएँ, अरु विशद स्वयं हो जाएँ॥13॥

दोहा

ब्रह्मा विष्णु महेश तुम, वीर बुद्ध तव नाम।
वीतराग विज्ञान तव, करते 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त छन्द

तीर्थंकर चौबीस लोक में, करते हैं जग सौख्य प्रदान।
जिनके समवशरण की पूजा, सारे जग में रही महान॥
अष्ट द्रव्य से जिन की पूजा, करते हैं जो मंगल कार।
विशद ज्ञान के धारी हों वे, हो जाते इस भव से पार॥

(।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।)

अथ श्री जिन मानस्तंभ पूजा प्रारभ्यते-2

(कवित्त छन्द)

धूलिसाल के मध्य सु मणिमय, चहुँदिश सुन्दर वीथी जान।
वीथी मध्य सु मानस्तम्भ शुभ, समवशरण में रहा महान॥
मानस्तम्भों के दर्शन से, मानगलित करते भवि जीव।
जिन बिम्बों की अर्चा करके, प्राप्त करें जो पुण्य अतीव॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणस्थितमानस्तंभजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणस्थितमानस्तंभजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणस्थित मानस्तंभ जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक

(चाल-द्यानतराय कृत नन्दीश्वरद्वीप)

सीता नदि का शुभ नीर, केसर गंध भरा,
भर कनक कुंभ में नीर, जिन पद धार करा।
सु मानस्तंभ जिन बिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसु विधि से अर्घ्य चढ़ाय, मान गलित होवे॥1॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तंभ विराजमान जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन लाय, गंध सुगंध भरें,
जिनवर के चरण चढ़ाय, भव आताप हरें।
सु मानस्तंभ जिन बिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसु विधि के अर्घ्य चढ़ाय, मान गलित होवे॥2॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तंभ विराजमान जिनबिम्बेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुञ्ज धराय, कंचन थाल-सजा।
अक्षय पद हेतु चढ़ाय, तव गुण प्राप्त करा॥
सु मानस्तंभ जिन बिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसु विधि से अर्घ्य चढ़ाय, मान गलित होवे॥3॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तंभ विराजमान जिनबिम्बेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं वन से सुरभित पुष्प, चुन-चुन कर लाया,
श्री जिन पद सुमन रचाय, निज गुण विकसाया।
सु मानस्तंभ जिन बिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसु विधि से अर्घ्य चढ़ाय, मान गलित होवे॥4॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तम्भ विराजमान जिनबिम्बभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

अमृत सम चरू बनाय, प्रभु चरणों लाएँ,
दर्शन करके सुख पाय, सब दुख विनशाएँ।
सु मानस्तंभ जिनबिम्ब, सुन्दर मनमोहे,
वसु विधि से अर्घ्य चढ़ाय, मानगलित होवे॥5॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तम्भ विराजमान जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम घृतवर दीपक लाय, तव गुण को गावें,
मद मोह तिमिर बिनसाय, श्री जिनपद पावें।
सुमानस्तंभ जिनबिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसुविधि से अर्घ्य चढ़ाय, मानगलित होवे॥6॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तंभ विराजमान जिन बिम्बेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

चन्दन की धूप बनाय, दश दिश गंध करा।
मम अष्ट करम जल जाय, दुख संताप हरा॥
सु मानस्तंभ जिनबिम्ब, सुन्दर मन मोहे।
वसुविधि से अर्घ्य चढ़ाय, मान गलित होवे॥7॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तंभ विराजमान जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

सब सरस सुरस फल लाय, कंचन थाल भरा,
श्री जिन पूजा सु रचाय, लक्ष्मी प्राप्त करा।
सु मानस्तंभ जिन बिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसुविधि से अर्घ्य चढ़ाय, मानगलित होवे॥8॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थितमानस्तंभ विराजमान जिनबिम्बेभ्योफलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन तन्दुल लेय, कंचन थाल भरा,
चरु सुमन दीप फल धूप, अर्घ्य बनाय धरा।
सु मानस्तंभ जिन बिम्ब, सुन्दर मन मोहे,
वसुविधि से अर्घ्य चढ़ाय, मानगलित होवे॥9॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मानस्तंभ विराजमान जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा

क्षीरोदधि शुभ नीर, कंचन झारी में भरें।
हरण करें भव पीर, शांतीधारा त्रय करें॥1॥

।।शांतये शांतिधारा।।

सुरभित पुष्प सजाय, रजत पात्र में लाय हैं
पुष्पाञ्जलि को आय, जिन पद अर्चा कर रहे

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(वीर छंद)

श्रद्धा भक्ती सहित भव्य जो, समवशरण में आते हैं।
बिन माँगे ही नव निधियाँ अरु, रत्न सु चौदह पाते हैं॥
वह पाँचों कल्याणक पाके, होते धर्म चक्रधारी।
विशद ज्ञान को पाने वाले, सिद्ध शिला के अधिकारी॥
मानस्तंभ के अब यहाँ, चढ़ा रहें है अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते शुभम्, पाने सुपद अनर्घ्य॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द जोगीरासा)

समवशरण श्री वृषभदेव का, चार दिशा में सोहे।
दो-दो कोश चौड़ी वीथी सु, दिश पूरब में मोहे॥
दिशा चार जिनबिम्ब विराजे, मानस्तंभ निराले।
बन्दूं ध्याऊँ अर्घ्य चढ़ाऊँ, भव तम हरने वाले॥1॥

ॐ ह्रीं वृषभदेव समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण श्री दक्षिण दिश में, मन को मोह रहा है।
मानस्तम्भ परम पावन शुभ, गणधर पूज्य कहा है॥
शिखर युक्त सुन्दर अनुपम है, चहुँ दिश जिन प्रतिमायें।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दूँ ध्याऊँ, लक्ष्मी श्री मिल जाये॥2॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भचतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश की महावीथी में, मणियुत शोभा पाता।
मानस्तंभ वृषभ जिनवर का, मान गलितकरवाता॥शिखर...॥3॥

ॐ ह्रीं वृषभदेव समवशरणस्थित पश्चिम मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण की उत्तर दिश में, मानस्तंभ सहारे।
पूजे मनवचकाय वृषभ को, भव-भय दुःख निवारे॥
शिखर युक्त सुन्दर अनुपम है, चहुँ दिश जिन प्रतिमायें।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दूँ ध्याऊँ, लक्ष्मी श्री मिल जाये॥4॥

ॐ ह्रीं वृषभदेव समवशरणस्थित उत्तरदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखर रहा अतिभव्य पूर्व में, समवशरण मन मोहे।
अजितनाथ जिनवर का सुन्दर, मानस्तंभ सु सोहे॥
भक्ति भाव से वन्दन करके, श्री जिन के गुण गाएँ।
पूजे ध्याएँ अर्घ्य चढ़ाएँ, निज पद को पा जाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं अजितनाथ समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ दिशा दक्षिण मन भावन, सुर नर पूज रचाए।
मानस्तंभ सु अजितनाथ का,मणिसम जो चमकाए॥भक्ति...॥6॥

ॐ ह्रीं अजितनाथ समवशरणस्थित दक्षिणदिङ् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखर मनोग दिशा पश्चिम में, समवशरण में राजें।
मानस्तंभ रत्न सम सुन्दर, श्री जिन अजित विराजें॥भक्ति भाव.॥7॥

ॐ ह्रीं अजितनाथ समवशरणस्थित पश्चिमदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण जिनबिम्ब विराजे, अजितनाथ श्री भव्यं।
मिथ्यात्वी का मान गलावें, मानस्तम्भ सुरूप्यं॥भक्ति...॥8॥

ॐ ह्रीं अजितनाथ समवशरणस्थित उत्तरदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख हरता जिन मानस्तंभ है, पूर्व दिशा में सोहे।
संभव श्री जिननाथ विराजे, हम सबका मन मोहे॥भक्ति भाव.॥9॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द पाईता)

दक्षिण सुन्दर दिशा अवीची, मानस्तंभ बताए।
जिनपद पूजे करें नमामी, भगवत्ता वह पाए॥10॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ समवशरणस्थित दक्षिणदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभ प्रतीची सोहे, मान गलावे भाई।
संभव जिनको पूजें जो नर, वे पावें प्रभुताई॥11॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ समवशरणस्थित पश्चिमदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभ उदीची दिश में, जिनवर जहाँ विराजें।
चतुर्दिशा में जिन प्रतिमाएँ, अतिशय कारी राजें॥12॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ समवशरणस्थित उत्तरदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुः जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अभिनंदन जिनराज का, समवशरण सुखदाय।
मानस्तंभ जु देखकर, सर्व कर्म क्षयजाय॥13॥

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथ समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के नाम से, स्वास्थ्य लाभ हो जाय।
पूजूँ मानस्तंभ को, सर्व व्याधि नश जाय॥14॥

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथ समवशरणस्थित दक्षिणदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन मंगल करें, सब जन मन हर्षाय।
वन्दूं मानस्तंभ को, सर्व क्लेश नश जाय॥15॥

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथ समवशरणस्थित पश्चिमदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर मानस्तंभ की, पूजा सौख्य कराय।
छवि अभिनन्दन नाथ की, अतिशय पुण्य कराय॥16॥

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथ समवशरणस्थित उत्तरदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के पूर्व में, सुमतिनाथ जिनराज।
ध्याकर मानस्तंभ को, पावें जिनगुण आज॥17॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण मानस्तंभ को, पूजें सुर नर नाथ
सुमतिनाथ की दिव्यता, दर्शाए जो साथ॥18॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ समवशरणस्थित दक्षिणदिङ् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम मानस्तंभ का, दर्शन लाभ दिलाय।
प्रतिमा सुमति जिनेश की, सब सुख शांति कराय॥19॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ समवशरणस्थित पश्चिमदिङ् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों से निर्मित सभा, प्रभु से शोभा पाय।
मानस्तंभ उत्तर दिशा, चहुँ दिश पूजा जाय॥20॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ समवशरणस्थित उत्तरदिङ् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभ का पूर्व में, मानस्तंभ विशाल।
समवशरण को मन सु-ध्या, सुर नर होय निहाल॥21॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिन समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्य पद्म सम पद्मजिन, समवशरण हितदाय।
दक्षिण मानस्तंभ शुभ, जग में पूजा जाय॥22॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिन समवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण जिन पद्म का, सम्यक् ज्ञान कराय।
पश्चिम मानस्तंभ शुभ, जग में पूजा जाय॥23॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिन समवशरणस्थित पश्चिम दिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में जाय के, प्रभु को शीश झुकाय।
उत्तर मानस्तंभ शुभ, जग में पूजा जाय॥24॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिन समवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

जिन सुपार्श्व के समवशरण में, वीथी अनुपम चारों ओर।
मानस्तंभ शोभते उसमें, करते मन को भाव विभोर॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥25॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ समवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं

समवशरण में जिनसुपार्श्व के, मानस्तंभ बने हैं चार।
चतुर्दिशा में शोभित होते, अतिशयकारी मंगलकार॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥26॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ समवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं

जिन सुपार्श्व के समवशरण की, अतिशय शोभा अपरम्पार।
मानस्तंभ बने वीथी में, चारों दिश में अतिशयकार॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥27॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ समवशरणस्थित पश्चिमदिङ् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं

सुपार्श्व नाथ का वन्दन करते, समवशरण में आकर देव।
मानस्तंभ की महिमा अनुपम, चतुर्दिशा में रहे सदैव॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥28॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिन समवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभु के पद में आकर, इन्द्र झुकाते अपना शीश।
मानस्तंभ का वन्दन करते, चारों दिश में देवाधीश॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥29॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभु के समवशरण में, आकर तीन गती के जीव।
मानस्तंभ का वन्दन करके, पुण्य कमाते श्रेष्ठ अतीव॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥30॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभु के समवशरण में, चारों ओर मानस्तंभ।
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, नाश करें मानी का दम्भ॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥31॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभु का समवशरण है, अतिशयकारी परम पवित्र।
मानस्तंभ बने चारों दिश, करो दर्श उनके हे मित्र॥

चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥32॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में शोभित होते, जिनवर पुष्पदन्त भगवान।
मानस्तंभ का दर्शन करके, गल जाता मानी का मान॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥33॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्त प्रभु की महिमा है, सारे जग में अपरम्पार।
मानस्तंभ का दर्शन होता, चतुर्दिशा में मंगलकार॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥34॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्त के समवशरण का, दर्शन कर हों भाव विभोर।
मानस्तंभ के दर्शन पाते, प्राणी जग के चारों ओर॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥35॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्त की पूजा बन्धू, समवशरण में करो महान।
मानस्तंभ के दर्शन पावन, चारों ओर गलाते मान॥
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मान गलित कर सम्यक् श्रद्धा, पाने शीश झुकाते हैं॥36॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ की महिमा गाते, समवशरण में देव अनेक।
मानस्तंभ के चारों दिश में, दर्शन करते माथा टेक॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥37॥

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ के समवशरण की, महिमा भाई अपरम्पार।
मानस्तंभ शोभते अनुपम, चतुर्दिशा में जानों चार॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥38॥

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जी समवशरण में, धर्म ध्वजा शुभ फहराते।
चतुर्दिशा में अतिशयकारी, मानस्तंभ शोभा पाते॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥39॥

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ के समवशरण में, मानस्तंभ बने हैं चार।
चतुर्दिशा में दर्शन करके, प्राणी पाते सौख्य अपार॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥40॥

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में श्री श्रेयांस के, प्राणी पाते ज्ञान प्रकाश।
मानस्तंभ का दर्शन करके, होता मोह महातम नाश।

दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥41॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांश नाथ के साथ अनेकों, प्राणी करते हैं कल्याण।
मानस्तंभ शोभते चउ दिश, गलित करें मानी का मान॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥42॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांश के समवशरण में, मल्ल अनेकों करें प्रणाम।
मानस्तंभ का दर्शन करते, चतुर्दिशा में जो अभिराम॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥43॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांस नाथ से व्रत धारण कर, श्रावक बने अनेकों संत।
मानस्तंभ का वन्दन करते, चतुर्दिशा में जो गुणवन्त॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥44॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के समय अनेकों, प्राणी पाएँ केवल ज्ञान।
समवशरण की चतुर्दिशा में, मानस्तंभ बढ़ाते शान॥
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥45॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन कुबेर ने वासुपूज्य के, समवशरण का कर निर्माण।
मानस्तंभ बनाए चउ दिश, फिर स्वर्गों में किया प्रयाण।।
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक पूज्यता जिनने पाई, बालयती जो हुए प्रधान।
अरुण मणी सम आभा वाले, वासुपूज्य जी हैं भगवान।।
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य से पूज्य नहीं हैं, तीन लोक में कोई महान।
सुर नर मुनिवर अर्चा करके, भाव सहित करते गुणगान।।
दर्शन करके चतुर्दिशा में, जिनबिम्बों के मंगलकार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

लेय सुगंधित गंध, समवशरण को पूजते।
मिट जाते सब द्वन्द, पूरब मानस्तंभ में।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल नाथ भगवान, सिंहासन पर राजते।
करते हम गुण गान, दक्षिण मानस्तंभ का।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजें मन आनंद, देव अप्सरा नृत्य कर।
ध्याऊँ विमल जिनंद, पश्चिम मानस्तंभ नित।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित फल पाय, विमलनाथ छवि देखकर।
उत्तम अर्घ्य चढ़ाय, उत्तर मानस्तंभ में।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा)

प्रातिहार्य से शोभितजिनवर, समवशरण में साजे।
सिंहनिष्क्रिडित सिंहासन पर, अनंतनाथ जिन राजे।।
पूरब मानस्तंभ दिव्य है, उसमें जिन प्रतिमायें।
समवशरण में शीश झुकाकर, हम भी पूज रचाएँ।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ की भक्ती करके, निश दिन पाप नशाएँ।
मन संशय को दूर भगाकर, जय जय जिन गुण गाएँ।।
दक्षिण मानस्तंभ दिव्य शुभ, उसमें जिन प्रतिमायें।
समवशरण में शीश झुकाकर, पूजें शीश झुकाएँ।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ की सुन्दर प्रतिमा, समवशरण में ध्याएँ।
सुन करके उपदेश प्रभू का, भव दुख नाश कराएँ।।
पश्चिम मानस्तंभ दिव्य है, उसमें जिन प्रतिमायें।
समवशरण में शीश झुकाकर, पूजें शीश झुकाएँ।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंतजिन समवशरण में, भव्यों का मन मोहें।
चौंतिस अतिशय धार प्रभू जी, तीन लोक में सोहें॥
उत्तर का मानस्तंभ दिव्य शुभ, उसमें जिन प्रतिमायें।
समवशरण में शीश झुकाकर, पूजें शीश झुकाएँ॥56॥

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीतिका

धर्मनाथ के समवशरण में, चार समय ध्वनि खिरती।
धर्मामृत का पान कराकर, मन का संशय हरती॥
श्री जिन वचनामृत पीकर के, सबको लक्ष्मी मिलती।
पूरब मानस्तंभ जजें हम, पूजा वाञ्छित फलती॥57॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर का समवशरण लख, त्रय प्रदक्षिणा करता।
धर्मनाथ की सभा में जाए, मन भावों से भरता॥
श्रीजिन वचनामृत पीकर के, सबको लक्ष्मी मिलती।
दक्षिण मानस्तंभ जजें हम, पूजा वाञ्छित फलती॥58॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में श्री गणधर मुनि, दिव्यध्वनि विस्तारें।
द्वादशांग जिन वाणी कहकर सबके भाग्य संवारें॥
श्रीजिन वचनामृत पीकर के, सबको लक्ष्मी मिलती।
पश्चिम मानस्तंभ जजें हम, पूजा वाञ्छित फलती॥59॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के समवशरण में, छत्र त्रय भी सोहें।
धर्मनाथ की महिमा ऐसी, जग जन का मन मोहें॥

श्री जिन वचनामृत पीकर के, सबको लक्ष्मी मिलती।
उत्तर मानस्तंभ जजें हम, पूजा वाञ्छित फलती॥60॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

श्री शांतिनाथ का समवशरण, दुर्भिक्ष व्याधि का नाशक है।
पूरब का मानस्तंभ जजे, बनता निज गुण का शासक है॥
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन चरणों विशद चढ़ाते हैं।
हो शांति हमारे जीवन में, बश यही भावना भाते हैं॥61॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ प्रभु का समवशरण तिष्ठे, तहँ सब ऋतु के फल फूल खिलें।
दक्षिण का मानस्तंभ जजे, भव दुख से मुक्ती शीघ्र मिले।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन चरणों विशद चढ़ाते हैं
हो शांति हमारे जीवन में, बश यही भावना भाते हैं॥62॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ-जहँ प्रभुवर का हो विहार, तहँ-तहँ सुभिक्षता होती है।
पश्चिम का मानस्तंभ जजे, भव दुख की बाधा खोती है॥
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन चरणों विशद चढ़ाते हैं।
हो शांति हमारे जीवन में, बश यही भावना भाते हैं॥63॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ की महिमा तो, सब रोग शोक दुखहारी है।
उत्तर का मानस्तंभ जजें, भव दुख की मिटती क्यारी है॥

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन चरणों विशद चढ़ाते हैं।
हो शांति हमारे जीवन में, बश यही भावना भाते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

जिनवर कुंथुनाथ, दया करें हर जीव पर।
पूजत सुर नर नाथ, पूरब मानस्तंभ को।।65।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ जिनराज, सेवत इन्द्र नरेन्द्र सब।
वसु विधि पूजें आज, दक्षिण मानस्तंभ को।।66।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ दिश चार, समवशरण में शोभते।
पूजूँ प्रतिमा चार, पश्चिम मानस्तंभ की।।67।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्वध्वनि सुख सार, गणधर मुनि गावत सदा।
पूजूँ प्रतिमा चार, उत्तर मानस्तंभ की ।।68।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरि नाशक अरहनाथ, केवल ज्ञान प्रकाश कर।
पूजें हम जिननाथ, पूरब मानस्तंभ को।।69।।

ॐ ह्रीं अरहनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरह जिनराज, मंगल सबका ही करें।
गाएँ हम गुणआज, दक्षिण मानस्तंभ का।।70।।

ॐ ह्रीं अरहनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पुण्य बढ़ाय, अरहनाथ जिन पूजते।
अतिशय श्रेष्ठ कराय, पश्चिम मानस्तंभ शुभ।।71।।

ॐ ह्रीं अरहनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोहें श्री अरहनाथ, जो सबकी रक्षा करें।
पूजत हम जिननाथ, उत्तर मानस्तंभ को।।72।।

ॐ ह्रीं अरहनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पर विजय कराय, मल्लिनाथ जिनराज जी।
पूजें भक्ति लगाय, पूरब मानस्तंभ को।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन प्रवचन देत, तीन लोक के अधिपति।
पूजें योग समेत, दक्षिण मानस्तंभ को।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ शुभदाय, मन से ध्यावे जो सदा।
पूजें भक्ति लगाय, पश्चिम मानस्तंभ को।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी स्यात् पद युक्त, भव्यों का मंगल करे।
होवे भव से मुक्त, उत्तर मानस्तंभ ध्या।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रतधर करम खिपाय, मुनिसुव्रत जिनवर नमूँ।
अर्हद् पद मिल जाय, मानस्तंभ पूरव जजें।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग बतलाए, मुनिसुव्रत जिनराज जी।
मान गलित करवाय, दक्षिणमानस्तंभ शुभ।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रिद्धि-सिद्धि मिल जाय, ध्यावत मुनिसुव्रत सदा।
शिव पद को दर्शाय, पश्चिम मानस्तंभ शुभ॥79॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार चतुष्टय पाए, तपकर मुनिसुव्रत प्रभो!
मानगलित करवाय, उत्तर मानस्तंभ शुभ॥80॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नमि जिन दर्शन पाय के, दु:ख शोक नश जाय।
पूरब मानस्तंभ की, मिलकर आरति गाय॥81॥

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि गण गुण गावत सदा, श्री जिन वैभव दिव्य।
दक्षिण मानस्तंभ की, चहुँ दिश शोभा भव्य॥82॥

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यन को सुख देत जो, समवशरण अतिरम्य।
पश्चिम मानस्तंभ में, भव्यों के जो गम्य॥83॥

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीवें जो भव पार हो, जिनवच सुधा समान।
उत्तर दिशि बन्दूँ सदा, मानस्तंभ महान॥84॥

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में बैठकर, नष्ट होय सब दम्भ
अष्ट द्रव्य से पूजते, पूरब मानस्तंभ॥85॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ दर्शन किए, भाग्यसिद्धि को पाय।
मानस्तंभ पूजे सदा, दक्षिण दिशि में आय॥86॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाऊँ शुभ फल मैं सदा, जिनवर पद शिर टेक।
मानस्तंभ महान शुभ, पश्चिम दिशि में एक॥87॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के मध्य में, तिष्ठत श्री जिनराज।
उत्तर मानस्तंभ को, पूजें शुभ दिन आज॥88॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

वन्दूं पारसनाथ, दूर करें उपसर्ग जो।
पूरब दिशि का नाथ, ध्याएँ मानस्तंभ नित॥89॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाशीलगुणवान, पारसनाथ जिनेश तुम।
ध्याएँ नित भगवान, दक्षिण मानस्तंभ को॥90॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम धार जिनेन्द्र, केवलज्ञान प्रकट किया।
पूजें सब अहमिन्द्र, पश्चिम मानस्तंभ को॥91॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मावति धरणेन्द्र, शासन देवी देवता।
पूजें पार्श्व जिनेन्द्र, उत्तर मानस्तंभ को॥92॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर महाअतिवीर, वर्द्धमान सन्मति प्रभो!।
पूजें प्रतिमा धीर, पूरब मानस्तंभ की।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवशरणस्थित पूर्वदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर गौतम सोय, ध्यावें वीर जिनेश को।
पूजन निशदिन होय, दक्षिण मानस्तंभ की।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवशरणस्थित दक्षिणदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ध्यावत भगवान, पार करो संसार से।
पूजूँ बिम्ब महान, पश्चिम मानस्तंभ के।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवशरणस्थित पश्चिमदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव मिले अपार, महावीर के नाम से।
पूजूँ प्रतिमा चार, उत्तर मानस्तंभ की।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवशरणस्थित उत्तरदिक् मानस्तम्भस्य चतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा–चौबीसों जिनराज के, मानस्तंभ विशेष।
जिनकी पूजा हम करें, सोहें श्री जिनेश।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थितषण्ण-वतिमानस्तंभस्थित सर्वजिन प्रतिमाभ्य: पूर्णार्घ्यं...

।।शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलि:।।

जाप्य–ॐ ह्रीं चतुर्दिक् मानस्तंभ स्थित श्री जिनेन्द्राय नम:

जयमाला

दोहा: समवशरण में शोभते, मानस्तंभ विशाल।
भाव सहित गाते यहाँ, जिनकी हम जयमाल।।1।।

(चौपाई)

जय-जय मानस्तंभ विशाला, चउ दिश जिन प्रतिमा सु निराला।
जो मानी का मान गलावैं, सबको सम्यक् ज्ञान करावैं।।2।।
प्रभु से बारह गुणा ऊँचाई, चहुँ दिश सुन्दर दिखती भाई।
योजन बीस प्रकाश कराई, बारह योजन से हि दिखाई।।3।।
घंटा मानस्तंभ सु सोहे, चामर परम ध्वजा मन मोहे।
सुवर्णिम जिनमें जिन प्रतिमाएँ, देव नित्य अभिषेक कराएँ।।4।।
चारों ओर सरोवर सुन्दर, निर्मल जल से भरे जु मनहर।
फिर तहँ पुष्पवाटिका शुभकर, मानस्तंभ लगे बहु सुन्दर।।5।।
मानस्तंभ की महिमा न्यारी, सुर नर करत जु शोभा भारी।
मरकत मणिसम सुन्दरतायी, जिसका दर्शन शुभ फल दायी।।6।।
चारों दिश श्री जिन प्रतिमाएँ, हम दर्शन से विघ्न नशाएँ।
मानस्तंभ की करें जो पूजा, फिर नहि पावें भव वो दूजा।।7।।
करे सु वंदन सब नर नारी, तुमने सब संशय है टारी।
मानस्तंभ जगत सुखदाई, आरति कर हम पुण्य सुपाई।।8।।
मानस्तंभ के दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
हम भी 'विशद' ज्ञान प्रगटाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।।9।।

(दोहा)

मानस्तंभ की भावना, धरें जो मन में कोय।
मन के सब दुख दूर हों, चहुँ दिश शांती होय।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थितषण्णवति-मानस्तंभ स्थित चर्तुशीति अधिकत्रय शत (384) जिन प्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पाञ्जलि:।

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार।।
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र नृप, अनुक्रम से पावें शिव द्वार।।

इत्याशीर्वाद:

अथ चैत्य प्रासाद भूमि पूजा प्रारभ्यते-3

अथ स्थापना:-कुण्डलिया छन्द

समवशरण में जानिए, भूमि चैत्य प्रासाद।
मनहर यह भूमी रही, धूलिसाल के बाद॥
धूलिसाल के बाद, पहली भूमि के अन्दर।
पंच पंच प्रासाद इक, जिन चैत्य के अन्तर॥
प्रभु से यह प्रासाद, गुणित हैं द्वादश ऊँचे।
करके हम आह्वान, जिन प्रतिमाएँ पूँजें॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थित चैत्यप्रासाद भूमिसम्बन्धि जिनमंदिर जिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित चैत्यप्रासाद भूमि सम्बन्धि जिनमंदिर जिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित चैत्यप्रासाद भूमि सम्बन्धि जिनमंदिर जिन प्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथ अष्टक द्रुतविलम्बित

कनक कुंभ भरे शुभ नीर के, नशें जन्मादि रोग शरीर के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥1॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो जलं नि. स्वाहा।

मलय चंदन गंध घिसाय के, चरण चंदन गंध चढ़ाय के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥2॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो चन्दनं नि. स्वाहा।

रुचिर तन्दुल पुञ्ज चुनाय के, तव समक्ष सु पुञ्ज चढ़ाय के।
श्री जिन बिम्बसुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥3॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतान नि. स्वाहा।

परम सुन्दर पुष्प जो ल्याय के, रजत थाल सु पुष्प सजाय के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥4॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं नि. स्वाहा।

घृत सु पूरित चरू बनाय के, परम हेम थाल भराय के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥5॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं नि. स्वाहा।

मणि समान सु दीपक लाय के, प्रभु करूँ शुभ आरति गाय के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥6॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो दीपं नि. स्वाहा।

परम पावन धूप बनाय के, दश दिशा सुगंध उड़ाय के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥7॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो धूपं नि. स्वाहा।

मधुर दाडिम लोंग सुलायके, धर सु पात्र जिनेश चढ़ाय के।
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥8॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो फलं नि. स्वाहा।

जल सु चंदन आदि मिलाय के, हम चढ़ाते अर्घ्य बनाय के
श्री जिन बिम्ब सुमंदिर पाय के, चरण हम पूजें द्रव्य सजाय के॥9॥
ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद भूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा के लिए, लाए पावन नीर।
यही भावना है विशद, मिट जाए भव पीर॥

॥शान्तये शान्तिधारा॥

सुरभित लाए पुष्प यह, पुष्पाञ्जलि को नाथ।
अर्चा करते भाव से, चरण झुकाते माथ॥

॥दिव्य पुष्पांजलिः॥

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

प्रथम चैत्य प्रासाद भू, समवशरण में आन।
देय अखण्ड पुष्पाञ्जलि, करते हम गुणगान

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

छन्द:-जोगीरासा

श्री आदिनाथ के समवशरण में, चैत्यमहल सुखकारी।
अतिशय रूप लोक में पावन, वीतराग अविकारी॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥1॥

ॐ ह्रीं आदिनाथसमवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण के वन उपवन में, चैत्य भूमि मन मोहे।
अजितनाथ की चैत्य भवन में, मूरत सुन्दर सोहे॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥2॥

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन संभव के समवशरण में, पूजा नित्य रचाएँ।
भव बंधन से पार लगाने, वसुविधि अर्घ्य चढ़ाएँ॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥3॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनंदन के समवशरण में, सुर शचि नृत्य रचाएँ।
कर जिन वंदन सुर नर मुनिगण, निज को धन्य कराएँ॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥4॥

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण की अद्भुत शोभा, देख देख हर्षाएँ।
सुमतिनाथ का ध्यान लगाकर, निज का ज्ञान उपाएँ॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥5॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्मसु जिनवर सब दुख भंजन, जन-जन के हितकारी।
प्रथम भूमि में पर्वत नदि से, समवशरण छवि न्यारी॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥6॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण की चैत्यभूमि में, श्री सुपार्श्व जिन सोहें।
पुष्पवाटिका जिनवरमंदिर, जन जन का मन मोहें॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥7॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चंद्रनाथ के समवशरण में, विद्याधर सुर आते।
तीन योग से त्रि परिक्रमा, कर झुक शीश झुकाते॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥8॥

ॐ ह्रीं चंद्रनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर नर किन्नर प्रभु सेवा कर, जीवन सफल बनाते।
सुविधिनाथ के सुमिरन से सब, पाप नाश हो जाते॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥9॥

ॐ ह्रीं सुविधि नाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीतल प्रभु के चरण कमल में, शीतलता सब पाते।
जिन दर्शन से सब भक्तों के, मन मुधकर खिल जाते॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥10॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री श्रेयांस के समवशरण में, भव्यजीव सब आते।
भक्ति भाव से पूजा करके, श्रीजिन के गुणगाते॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥11॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वासुपूज्य के समवशरण में, सुर नर ढोक लगाते।
जिनवर की महिमा शुभ गाकर, भव सागर तर जाते॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥12॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विमलनाथ का समवशरण शुभ, अतिशयमंगलकारी।
चरण शरण में आकर प्रभु हम, पावें नव निधि सारी॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥13॥

ॐ ह्रीं विमलनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अनंत के समवशरण में, पुष्पवृष्टि शुभ होती।
नाम मात्र से सब जीवों को, सुखानुभूति सु होती॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥14॥

ॐ ह्रीं अनंतनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्म सु ज्ञाता धर्म धुरन्दर, धर्मनाथ प्रभु प्यारे।
प्रातिहार्य सु शोभित जिनवर, सबमें सुन्दर न्यारे॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥15॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतिनाथ का समवशरण शुभ, जग में शांति करावे।
वसु विधि थाल सजा नरकिन्नर, पूजा नित्य रचावें॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥16॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुन्थुनाथ के समवशरण में, भक्तिभाव गुण गाएँ।
श्री जिन का शुभ ध्यान लगाकर, निज गुण को प्रकटाएँ॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥17॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नविनिर्मित समवशरण में, अरहनाथ जिन भाई।
जिन से धर्मामृत पाते हैं, भव्यजीव सुखदायी॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥18॥

ॐ ह्रीं अरहनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल्लिनाथ जिन मोहमल्लजित्, अर्हद् पद के धारी।
त्रिभुवन के स्वामी जग वन्दित, तीन लोक उपकारी॥
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी॥19॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिसुव्रत के समवशरण में, भव्य जीव जब आते।
शीश झुकाते श्री चरणों में, अक्षयनिधि सब पाते।।
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी।।20।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञान देख नमिजिन का, चहुँ दिश हर्ष मनाए।
श्री नमिजिन के समवशरण को, धनपति भव्य रचाए।।
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी।।21।।

ॐ ह्रीं नमिनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करुणा सागर नेमिनाथ जिन, त्रिभुवन पति कहलाए।
समवशरण में पूजा करने, अष्टद्रव्य हम लाए।।
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी।।22।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पार्श्वनाथ की दिव्य ध्वनि सुन, वैर-भाव मिट जाएँ।
समवशरण में पूजा करके, निज कल्याण कराएँ।।
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी।।23।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ समवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में महावीर के, सम्यक् ज्ञान जगावें।
जिनवर की पूजा, कर प्राणी, धन वैभव सब पावें।।
समवशरण में पहली भूमी, चैत्य प्रासाद कहाई।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजें, हम भविजन सुखदायी।।24।।

ॐ ह्रीं महावीर जिनसमवशरणस्थित चैत्यप्रासादभूमि संबंधि जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चौबिस जिनके समवशरण में, प्रथम भूमि मनहारी।
उसमें जिन मन्दिर जिन प्रतिमा, की महिमा शुभकारी।।
कलह, रोग दारिद मिटते हैं, जिनपद ढ़ोक लगाये।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाके, करें जो पूजन गाये।।25।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित चैत्य प्रासाद भूमि सम्बन्धि सर्व जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: सर्व सुख प्राप्ताये पूर्णार्घ्यं...

।।शातंये शांति धारा। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा:-चौबीसों जिनराज शुभ, समवशरण में आप।
गाऊँ गुण जयमालिका, मिटे सकल संताप।।1।।

(स्रग्विणी छन्द)

नमूँ नाथ को मैं सदा ध्यान ध्याऊँ, सभी बिम्ब तीर्थेश को सिर नमाऊँ।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्यदायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।2।।
सदा नाथ मेरी यही प्रार्थना है, मुझे अब न संसार में आवना है।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।3।।
सु चारों दिशा चैत्य प्रासाद होवे, वहीं वीथि में नाट्यशाला जु होवे।
समवोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।4।।
सु देवी बतीसों सदा साज साजें, जहाँ एक एकेक में देवि नाचें।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।5।।
वनों बावड़ी युक्त प्रासाद होवें, जहाँ देव क्रीडा करें भक्त होवें।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।6।।
जुतीर्थेश का ध्यान ध्यावें सदा ही, वही संपदा नाथ पावे सदा ही।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।7।।
सुरेन्द्रं अधीशं मुनीद्रं गणीशं, सदा आपको ही भजे हम जिनेन्द्रं।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई।।8।।

भजें भक्त तुमको सदा शीश नाएँ तुम्हारे चरण की जो पूजा रचाएँ।
समोसर्ण तीर्थेश का सौख्य दायी, वही चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई॥9॥
'विशद' आश ले आप चरणों में आए, भ्रमण जग अनादि मेरा छूट जाए॥
समोशर्ण तीर्थेश का सौख्यदायी वहीं चैत्य प्रासाद भू श्रेष्ठ गाई॥10॥

दोहा

तीर्थंकर चौबीस जिन, चैत्य महल सुखकार।
भविजन इनको नित नमें, होवे भवदधि पार॥11॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त, चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित चैत्य प्रासाद भूमि सम्बन्धि सर्व जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य:, सर्वसुख प्राप्ताये जयमाला पूर्णार्घ्यं...

।।शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलि:।।

कवित्त छन्द

श्री जिन चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पाते ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र नृप, अनुक्रम से पावें शिवद्वार॥

इत्याशीर्वाद:

अथ खातिका भूमि पूजा प्रारभ्यते-4

स्थापना

द्वितिय भूमी रही खातिका, समवशरण में भाई।
कुन्द कुमुद कमलों से शोभित, गंध रहे महकाई॥
शुभ मणिमय सोपान जहाँ पर, निर्मल जल से सोहें।
तीन लोकवर्ती जीवों के, क्षण-क्षण मन को मोहें॥
समवशरण में पूजा करने, भाव सहित हम आए।
हृदय कमल में आह्वानन् कर, अतिशय हम हर्षाए॥

ॐ ह्रीं खातिकाभूमि मंडित समवशरणस्थित वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह। अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित समवशरण स्थित वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह:! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित समवशरणस्थित वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छन्द: इन्द्रवज्रा

गंगा नदी का ये शुभ नीर लेके, पूजें सदा नाथ त्रि धार देके।
विशद खातिका भूमि है सौख्यकारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥1॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय जलं...

गोशीर श्री खण्ड कर्पूर ल्याये, नत हो घसौं श्री चरणों चढ़ाये।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥2॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय चंदनं...

मैं अक्षतों के शुभम् पुञ्ज लाके, पाऊँ सु लक्ष्मी प्रभु को चढ़ाके।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥3॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय अक्षतान्....

मैं केतकी आदि सु पुष्पलाऊँ, पुष्पों सजे थाल मनहर चढ़ाऊँ।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥4॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय पुष्पं...

मैं शुद्ध खाजे ये घृत के बनाऊँ, रत्नों से नैवेद्य अतिशय चढ़ाऊँ।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥5॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय नैवेद्यं...

घीपूर के दीप मनहर जलाऊँ, श्री जिन की पूजा कर सौख्य पाऊँ।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥6॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय दीपं...

श्री खण्ड कृष्णागरु आदिक मैं लेऊँ, हे नाथ! अग्नी में धूप खेऊँ।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥7॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय धूपं...

बादाम पिस्ता श्री फल चढ़ाऊँ, श्री मोक्षलक्ष्मी फल को मैं पाऊँ।
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ हे जिन हमारी॥8॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय फलं...

नीरादिकों का शुभम् अर्घ्य लाऊँ, पूजा प्रभू की कराने चढ़ाऊ.॥
विशद खातिका भूमि है सौख्य कारी, बाधा हरो नाथ! हे जिन हमारी॥9॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणाय अर्घ्यं...

सोरठा

क्षीरोदधि शुभ नीर, कंचन झारी में भरूँ।
हरण करूँ भव पीर, शांतिधारा मैं करूँ॥1॥शांतये शांतिधारा।

सुरभित पुष्प सजाय, रजत पात्र में लाये हैं।
पुष्पाञ्जलि को आय, जिन पद अर्चा कर रहे।।दिव्य पुष्पांजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा– भूमि खातिका श्रेष्ठ, चहुँ दिश में शोभित रही।
पुष्पाञ्जली यथेष्ठ, द्वितिय भूमी में करूँ॥1॥
इतिमण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चौबोला छन्द)

चैत्यभूमि के आगे वेदी, चहुँ दिश सुन्दर मन मोहे।
गोलाकार बनी वेदी पर, मणि मय मोती सम सोहे॥
जिसके आगे भूमि खातिका, समवशरण में मन खोवे।
पूजूँ जिन को समवशरण में, नितप्रति मंगल शुभ होवे॥1॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडितवृषभदेवसमवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ऊँचाई से, भू चौथाई है गहरी।
चारों तरफी वर्तुल आकृति, निर्मल जल से श्रेष्ठ भरी॥
निर्मल जल में खिले कमल जो, जन जन के मन हरषावें।
पूजूँ जिन को समवशरण में, नित प्रति मंगल हम गावें॥2॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री अजितनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व स्वा।

देव देवियाँ किन्नर गण भी, इनमें क्रीडा करते हैं।
भूमि खातिका की शोभा से, भव्यों के मन भरते हैं॥
कमल पुष्प आदिक हैं सुन्दर, सबके मन को भाते हैं।
पूजूँ जिन को समवशरण में, नित प्रति मंगल गाते हैं॥3॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री संभवनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

अभिनंदन के समवशरण में, सुर नर वन्दन नित्य करें।
तीर्थंकर का अतिशय अनुपम, दर्शन कर नर दोष हरें॥
सुर मृदंग की ध्वनि नित्य सुन, प्रभु की महिमा नित गावें।
पूजें जिन को समवशरण में, नित प्रति मंगल हम गावें॥4॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित श्री अभिनंदननाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(त्रिभंगी छन्द)

जिनवर अविकारी, आनन्दकारी, दयाविधारी, आप प्रभो!।
मैं तुमको ध्याऊँ, माथटिकाऊँ, वैभवपाऊँ, सुमति विभो!॥
अक्षय सुखदायी, शांतिप्रदायी, शुभफलदायी, दिव्य प्रभो!।
जिनवर अविकारी, अतिशयकारी, मंगलकारी, पूज्य विभो!॥5॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमिंडित श्री सुमतिनाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरश्री धारी जग हितकारी, वरशिवनारी, पद्मप्रभो!।
तुम केवल ज्ञानी त्रिभुवनमानी, जग में नामी, आप विभो!।अक्षय.॥6॥
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री पद्मप्रभजिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवर हितकारी, शिवपद धारी, श्री सुपार्श्व मंगल कारी।
हैं विघ्ननिवारक, भ्रमतमनाशक, पुण्यप्रदायक, सुखकारी॥अक्षय.॥7
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री सुपार्श्वनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।.

हे जग प्रति पालक, पंचकल्याणक, शिवफलकारक, शिवकारी।
तुम हो भवहारी, शरणतिहारी, संकट हारी, अविकारी॥अक्षय.॥8॥
ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित श्री चन्द्रप्रभजिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रीसुविधि जिनेशं, ब्रह्ममहेशं, दिव्योपदेशं, धीर प्रभो।
तुम दोष निवारे, काजसँवारे, दुःख निवारे, सुविधि विभो!।।
अक्षय सुखदायी, शांतिप्रदायी, शुभफलदायी, दिव्य प्रभो!।
जिनवर अविकारी, अतिशयकारी, मंगलकारी, पूज्य विभो!।।9।।
ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित श्री पुष्पदंतजिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीतलगुणशोभित, सुरपतिसेवित, मुनिगणवन्दित, कृपाकरो।
भामंडल भासित, अधरविराजित, रविसम भासित, कष्ट हरो।।अक्षय.।।10।।
ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित श्री शीतलनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रेयो तीर्थंकर, हितक्षेमंकर, तुमश्रेयस्कर, महाप्रभो!।
तुम परमजिनेश्वर, अशुभ क्षयंकर, महामहेश्वर, श्रेय प्रभो।।अक्षय.।।11।।
ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित श्री श्रेयांस जिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवर भगवन्ता, ज्ञान अनन्ता, परममहन्ता, कर्म क्षयी।
हे सुमतिसुदाता, जगविख्याता, शिवसुखदाता, ज्ञानमयी।।अक्षय.।।12।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री वासुपूज्य जिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भवसागरतारी, महिमाधारी, आरति थारी कर लाये।
हेकरुणाधारी, जयगुणधारी, तवशरनारी, हम आये।।अक्षय.।।13।।
ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित श्रीविमलनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समदृष्टि जुधारी, मदनविदारी, व्याधिनिवारी, सुखदाई।
वसुकर्मनिवारी, भवभयहारी, सुरनरनारी, गुणगाई।।अक्षय.।।14।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्रीअनंतनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभज्ञानप्रकाशा, रिपुको नाशा, धर्मजिनेशा, श्रेष्ठजिनं।
हनिकर्म असाता मतिशुभदाता, पूज्यविधाता, धर्मजिनं।।अक्षय.।।15।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्रीधर्मनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री शान्तिजिनेशं, नमितसुरेशं, सिद्धजिनेशं, धन्य प्रभो!
हे प्रभु वागीशं, त्रयपदईशं, हेजगदीशं, तीर्थ विभो।।अक्षय.।।16।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्रीशांतिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रीकुन्थुजिनेश्वर, नुतनागेश्वर, हे परमेश्वर सफल करं।
श्री जिनवर चरणं, ग्रहदुखहरणं, बाधाहरणं, पापहरं।।अक्षय.।।17।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री कुन्थुनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रीअरभगवन्ता, सौख्य अनन्ता, परमजिनन्दा, शोक हरो।
मैं भक्ति रचाऊँ, पूजागाऊँ, द्रव्यचढ़ाऊँ, सौख्य करो।।अक्षय.।।18।।
ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित श्री अरहनाथजिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

श्रीमल्लिजिनेशा, धर्मसुरेशा, मम अभिलाषा पूर करो।
हे चिन्ताहारी, अक्षयकारी, मोहनिवारी, विपद हरो।।अक्षय.।।19।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री मल्लिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिसुव्रत पालक, मुनिगणनायक, सुव्रतदायक व्रतकरणं।
प्रभु दुष्ट निवारक मित्रसुदायक, धनसुतदायक दुखहरणं।।अक्षय.।।20।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री मुनिसुव्रतनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री नमिजिनवाणी, गणधरमानी, जनकल्याणी, ज्ञानमई।
प्रतिमाप्रभु थारी, जग में न्यारी, कलमषहारी, भव्यमई।।अक्षय।।21।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री नमिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री नेमिजिनेश्वर, हे योगीश्वर, धर्मविदाम्बर, धीर धरं।
तुम हो अविनाशी, गुणकी राशी, व्यथाविनाशी, दया करं।।अक्षय।।22।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्री नेमिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तुम करमनि कक्षक, भविजनरक्षक, हितउपदेशक, जगत विभो।
मैं तुमकों ध्याऊँ, भक्ति रचाऊँ, शिवफलपाऊँ, पार्श्व प्रभो!।।अक्षय.।।23।।
ॐ ह्रीं खातिकाभूमि मंडित श्री पार्श्वनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मोहनिवारी, जग उपकारी, समताधारी वीर प्रभो।
वांछित फलकारी दूषणहारी, सुरनरनारी, जगतविभो!।।अक्षय.।।24।।
ॐ ह्रीं खातिका भूमिमंडित श्रीमहावीरजिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य:-हरिगीतिका

भूमि खातिका समवशरण में, सब जन का मन हरती।
अधर विराजे अर्हत् पूजा, पूर्ण कामना करती॥
कुमुद कमल सब पुष्प जहाँ पर, यह वैभव दर्शाते ।
पूजें प्रभु को अर्घ्य चढ़ाकर, धन सुख शिव फल पाते॥25॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित श्री वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।।शांतये शातिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

जाप्य-ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानन्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा-समवशरण में तिष्ठते, जिनवर पूज्य त्रिकाल।
भूमि खातिका की यहाँ, गाते हम जयमाल॥

(शंभू छन्द)

शुभ समवशरण में तीर्थंकर के, द्वितिय भूमी रही महान।
नाम खातिका जिसका पावन, पूजा करते सुर नरआन॥
निर्मल जल से पूरित खाई, कमल खिले हैं अपरंपार।
जलचर प्राणी क्रीड़ा करते, कलरव करते बारंबार॥1॥
जन-जन को आनंदित करती, मन को करती भाव विभोर।
देव सुरासुर किन्नर आकर, स्तुति करते चारों ओर॥
बने हुए सोपान जहाँ पर, मणीरत्नमय अपरंपार।
श्रद्धा से नत मस्तक होते, प्राणी प्रभु पद बारंबार॥2॥
दिन में कमल खिला करते हैं, ऐसा कहते जग में लोग।
रात कुमुदनी खिलती भाई, मिले चन्द्रमा का संयोग॥
किन्तू समवशरण में रात्री, या दिन का कोई भेद नहीं।
कमल कुमुदनी खिलते दोनों, साथ-साथ जो नहीं कहीं॥3॥
दिव्यध्वनि सुन समवशरण में, प्राणी पाते सद्श्रद्धान।
श्री जिनेन्द्र के चरणों आकर, भाव सहित करते गुणगान॥

जीवन सफल बनाते प्राणी, वंदन करते बारंबार।
मन वांछित फल पा लेते हैं, जीवन होता मंगलकार॥4॥
समवशरण की कृत्रिम रचना, करके पूजा करें त्रिकाल।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा करते दीप प्रजाल॥
'विशद' ज्ञान को पाकर हम भी, समवशरण को पावें नाथ।
अनंत चतुष्टय पानें हेतू, झुका रहे तव चरणों माथ॥5॥
दोहा-श्रेष्ठ पारिखा युत प्रभो!, समवशरण के धाम।
सुख शांती सौभाग्य को, पाने किया प्रणाम॥

ॐ ह्रीं खातिका भूमि मंडित श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...

।।शान्तये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र नृप, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

इत्याशीर्वाद:

अथलता भूमि पूजा प्रारभ्यते-5

अथ स्थापना (हरिगीतिका छन्द)

लता भूमि की शोभा अनुपम, जिनवर समवशरण में,
देव देवियाँ नृत्य रचाते, क्रीडा करते वन में।
आठों कर्म नसाएँ भगवन्, कर्म निर्जरा करके,
पूजें प्रभु को मन वच तन से, श्रद्धा भक्ती धरके॥
समवशरण में पूजा करने, भाव सहित हम आए,
हृदय कमल में आह्वानन् कर, अतिशय हर्ष मनाए॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसमवशरणस्थितवृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसमवशरणस्थितवृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसमवशरणस्थितवृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक (दोहा छन्द)

प्रासुक लाए नीर हम, देते जल की धार।
जन्म जरादिक नाश हों, पाएँ शिव पद द्वार॥1॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः जलं...

चंदन घिसकर लाए यह, चढ़ा रहे हम आज।
भव संताप विनाश हो, पाएँ शिवपुर राज॥2॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः चन्दनं....

अक्षय अक्षत से यहाँ, पूज रहे जिन पाद।
अक्षय पद पाएँ विशद, हो विनाश उत्पाद॥3॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः अक्षतान्...

पुष्प सुगन्धित यह लिए, पूजा हेतु विशेष।
काम बाण विध्वंश हो, पाएँ निज स्वदेश॥4॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः पुष्पं...

चढ़ा रहे नैवेद्य हम, होवे क्षुधा विनाश।
यही भावना भा रहे, पूरी हो मम आश॥5॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः नैवेद्यं..

दीप जला पूजा करें, होवे मोह विनाश।
विशद ज्ञान का मम हृदय, होवे शीघ्र प्रकाश॥6॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः दीपं...

धूप जलाते आग में, हम यह खुसबूदार।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ शिव पद सार॥7॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः धूपं...

चढ़ा रहे हम फल यहाँ, ताजे शुभ रसदार।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, हो जाए उद्धार॥8॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः फलं...

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे जिनराज।
पद अनर्घ्य पाएँ विशद, मिले स्वपद साम्राज्य॥9॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांती धारा के लिए, भरकर लाए नीर।
इस भव से मुक्ती मिले, मिट जाए भव तीर॥

शांतये शांतिधारा।

पुष्प मँगाएँ बाग से, पुष्पाञ्जलि के हेतु।
अर्चा करते भाव से, पाने शिव का सेतु॥

दिव्य पुष्पाजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– समवशरण होवे जहाँ, सुरनर गण सब आय।
पुष्पाञ्जलि से पूजते, चिंतित फलको पाय॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सोरठा

बारह सभा सु युक्त, जिनवर शोभा पावते।
लता भूमि संयुक्त, जिनवर पूजा हम करें॥1॥

ॐ लता वन भूमि मंडित श्री वृषभदेवसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों मंगल युक्त, जग में श्रेष्ठ तुम्ही प्रभो!।
होवें भव से मुक्त, समवशरण पूजा करें॥2॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री अजितनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू शरण शुभ पाय, प्राणी पावें सम्पदा।
है जग में सुखदाय, संभव नाम तभी प्रभो!॥3॥

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री संभवनाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनन्दन भगवान, सबको आनन्दित करें।
जिन चैतन्यमहान, चमत्कार चहुँ दिश करें॥4॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री अभिनन्दननाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु की पूजा श्रेय, भव भय दुख व्याधी हरे।
सबको सन्मति देय, सुमतिनाथ जिनवर प्रभो!॥5॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री सुमतिनाथ सवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुक्ति रमा को पाय, पद्म जगत स्वामी भये।
जो जन पद्म चढ़ाय, पावे शिव श्री पद महा॥6॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री पद्मप्रभ जिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन पाय, प्रभु को ढोक लगाय जो।
जिन सुपार्श्व पददाय, रत्नत्रय पावे सही॥7॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्रीसुपार्श्वनाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धवल स्वरूप महान, लोकालोक प्रकाशमय।
अष्ट सुद्रव्य प्रदान, चन्द्रनाथ तुमको नमन्॥8॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री चन्द्रनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्पदंत जिनराय, पूजें अर्घ्य बनाय के।
समवशरण को पाय, पूजें ध्यान लगाय के॥9॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री पुष्पदंत जिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीतल गुण जो गाय, समवशरण में आय नर।
मोह अग्नि नश जाय, पूजें अर्घ्य चढ़ाय के॥10॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री शीतलनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर नर अर्घ्य चढ़ाय, श्रेयो जिन तुमको सदा।
जिनवर के गुण गाय, पाय निधी सम्यक्त्व की॥1॥
ॐ ह्रीं लतावन भूमिमंडित श्री श्रेयांस जिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्र करें गुणगान, वासुपूज्य भगवान का।
पावें निधी महान, मंगल अर्घ्य चढ़ाय के॥12॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री वासुपूज्यजिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विमलमती मिल जाय, विमलनाथ को ध्यायकें।
पूजूँ अर्घ्य बनाय, कुमति नाश मम हो प्रभो!॥13॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री विमलनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनपद भक्ति रचाय, स्वर्ग देवता आयकें।
प्रभुअनन्त जो ध्याय, सुर नर सुख पावें सदा॥14॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री अनन्तनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान, धर्म प्रदाता हो तुम्हीं।
अर्घ्य जु करूँ प्रदान, जिन चणाम्बुज में सदा॥15॥
ॐ ह्रीं लतावन भूमिमंडित श्री धर्मनाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तव पद आश्रय लेय, शांतिनाथ चक्रेशपति।
जिन पद अर्घ्य जु देय, सदा शांति पावे वही॥16॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री शांतिनाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुन्थुनाथ भगवन्त, समरस सुखदायक प्रभो!
पावें सौख्य अनन्त, जो पूजे मन लाय कें॥17॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री कुन्थुनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अरहनाथ सुखदाय, वज्रवृषभनाराच तन।
कल्मष सब नश जाय, जो नर पूजें जिन चरण॥18॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री अरहनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहमल्ल को जीत, जिनवर अर्हत् पद लहे।
कर्म हुए भयभीत, जिनवर के गुण गान से॥19॥
ॐह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री मल्लिनाथसवशरणाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रिभुवन स्वामी आप, मुनिसुव्रत सुव्रतधरे।
होऊँ मैं निष्पाप, पाद पद्म पूजूँ सदा॥20॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री मुनिसुव्रतनाथसमवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिन गुण भंडार, सोहत समवशरण प्रभो!।
कण्ठ नाम जो धार, वो नर जय पावे सदा॥21॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री नमिजिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशरण शरण सहाय, श्री युत नेमीनाथ तुम।
जिन दर्शन मिल जाय, बन्दूँ समवशरण सदा॥22॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्रीनेमिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस भक्ति रचाय, कमठ सु संयम धार के।
भवसागर तिर जाय, पारस पूजन जो करैं॥23॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री पार्श्वनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपद अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में जो प्रभो!
बलशाली हो जाय, महावीर के ध्यान से॥24॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री महावीरजिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

लता भूमि मण्डित जिनवर, समवशरण में रहे महान।
सुर नर पशु पद वन्दन करते, भाव सहित गाते गुणगान॥
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हम करते वन्दन।
'विशद' भाव से श्री जिनेन्द्र का, करते हैं हम अभिवन्दन॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणेभ्य: पूर्णार्घ्यं...

॥शांतयेशांतिधारा। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानन्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

तीर्थंकर जिनराज का, समवशरण शुभकार।
लताभूमि शोभित प्रभो!, वन्दू बारम्बार।

चौपाई

जय जय जिनवर जन हितकारी, दया धुरन्धर समताधारी।
जय अचिन्त्य लक्ष्मी के धारी, लताभूमि की शोभा भारी॥2॥
जय जय जिनवर शिवसुखकारी, गुण अनन्त के तुम हो धारी।
सुर नर मुनिगण वंदन गावें, पूजा कर मन में हर्षावें॥3॥
लताभूमि की शोभा न्यारी, चहुँ दिश सुमन-सुमन की क्यारी।
श्रेष्ठ वापिका शुभ कहलाये, विविध वर्ण युत पुष्प बताये॥4॥

जहँ मणिमय सीढ़ी मनहारी, मन वच तन है वंदना हमारी।
सुर नर चहुँ दिश जय जय गावें, जिन दर्शनकर पुण्य बढ़ावें॥5॥
शुभत्रिकोण वर्तुल वापिकाएँ, अरु पुन्नाग नाग सु लताएँ।
कुब्जक हैं शतपत्र निराले, अतिमुक्तक वन शाखा वाले॥6॥
खिले कमल सबका मन मोहें, समवशरण में जिन प्रभु सोहें।
सुर दृम दृम मिरदंग बजावें, समवशरण में नाचें गावें॥7॥
जिन धुनि मन संताप हरावें, सप्तभंग को प्रभु समझावें।
श्री जिनवर के गुण जो गावें, सुख संपद सब ही सुख पावें॥8॥
हमने भी यह भाव बनाए, समवशरण रचना रचवाए।
स्थापित जिन बिम्ब कराएँ, सब मिल जिन को पूज रचाएँ॥9॥
समवशरण की रचना प्यारी, जग में होती आनन्दकारी।
पुण्य उदय मेरा अब आया, जो जिन प्रभु का दर्शन पाया॥10॥
'विशद' भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी।
हम भी शिवपदवी को पाएँ, भ्रमण पूर्ण संसार मिटाएँ॥11॥

(घत्ताछन्द)

श्रीजिन हितकारी, शिवपथकारी, भक्ति तिहारी दुखहारी।
त्रिभुवन में न्यारी, महिमाभारी, पूजनथारी सुख कारी॥
ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडित श्री वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं...

॥शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(कवित्त छन्द)

श्री जिन चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पाते ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र पद, अनुक्रम से पावें शिवद्वार॥

इत्याशीर्वाद:

"जिनपूजा सर्व सुखकारी"

किं जंपएण बहुणा ती सुजी लोएसु किं विं जं सुक्खं।
पुज्जा फलेण सव्वं पाविज्जइ नत्थि सन्देहो॥तविसा..॥

बहुत कहने से क्या तीनों लोकों में जो कुछ भी सुख है वह सब जिन पूजा के फल से प्राप्त होते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं।

अथ उपवन भूमि पूजा प्रारभ्यते–6

स्थापना

लताभूमि के आगे मनहर, धनद स्वर्णमय कोट सजाय।
गोपुर द्वारों नव निधियों से, धूप घटों से शोभा पाय॥
उपवन भूमी के चउ दिश में, चार चैत्य तरु शोभा पाय।
उनमें जिन प्रतिमाएँ सोहें, आह्वानन् कर अर्घ्य चढ़ाय॥
दोहा– चैत्य वृक्ष पर शोभते, अकृत्रिम भगवान।
जिनके पद पंकज करें, विशद यहाँ गुणगान॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित उपवन भूमि चतुर्दिक् चैत्य वृक्ष संबंधि सर्व जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणस्थित उपवन भूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणास्थित उपवन भूमि चतुर्दिंक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणं॥

(चाल होली की ताल)

वन्दों भावसों, उपवन भू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥टेक॥
क्षीरोदधि का प्रासुक जल ले, कुंभि कलश भर लाय।
जिन अर्चा कर भवि जीवों का, जनम जरा नश जाय।
वन्दों भावसों, श्री उपवन भू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः जलं..

घिसकर केशर चंदन सुन्दर, कुंकुम रंग मिलाय।
भवदुखहरन चरन पर वारों, संशय ज्ञान मिटाय॥
वन्दों भावसों, उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः चंदनं...

मुक्ताशशि सम तन्दुल लेकर, हेमथाल भरिलाय।
पुञ्ज धरों चरणों में जिनवर अक्षय पद मिल जाय

वन्दों भावसों, उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान्...

कमल केतकी बेल चमेली, चुन चुन पुष्प सजाय।
काम कलंक विनाशन कारन, तुम पद पुष्प चढ़ाय।
वन्दों भावसों, उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं...

फेनी गोझा आदि मनोहर, रसयुत घेवर लाय।
रोगक्षुधादिक मैटन कारण, तवपदढोक लगाय।
वन्दों भावसों, उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं...

रत्नजड़ित अरु घृत से पूरित, जगमग ज्योति जगाय।
दीप धरों तव चरणन आगे, केवल ज्ञान कराय॥
वन्दों भावसों, उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥6॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः दीपं...

अगर तगर कृष्णागरु चंदन, दशविध गंध बनाय।
अग्नि संग खेवो चरनन में, अष्ट करम जरि जाय।
वन्दों भावसों, उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः धूपं....

ऐला पिस्ता लौंग सुपारी, श्री फल थाल सजाय।
पूजों श्रीजिन चरणों आगे, मोक्ष महाफल पाय॥
वन्दों भावसों श्री उपवनभू जिबिम्ब, वन्दों भावसों॥8॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्यः फलं....

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य ले, शुद्धभाव विकसाय।
जिन पद पूजों भक्ति भाव से, जय जय श्री जिनराय॥
वन्दों भावसों उपवनभू जिनबिम्ब, वन्दों भावसों॥9॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि चतुर्दिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि सर्व जिनप्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।..

दोहा

दोहा– कंचन झारी में भरूँ, क्षीरोदधि शुभनीर।
शांतीधारा त्रय करें, हरण करें भव पीर, ॥1॥

शांतये शांतिधारा।

रजत पात्र में लाये हैं, सुरभित पुष्प सजाय
जिन पद अर्चा कर रहे, पुष्पाञ्जलि को आय,

दिव्य पुष्पांजलिं:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा– तीर्थंकर जिनराज, छत्र त्रय से शोभते।
पुष्पाञ्जलि से आज, उपवन भूमी पूजते॥

इति मण्डलस्योपरिउपवनभूमिचैत्यवृक्षस्थाने पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

छन्द:–जोगीरासा

आदिनाथ के समवशरण में, उपवन भूमी सोहे।
वन अशोक जहँ पूर्व दिशा में, पुष्पभरित मन मोहे॥
वन अशोक में द्रुम अशोक शुभ, जिन प्रतिमा शुभकारी।
चहुँ दिश मणिमय जिन प्रतिमा की, पूजा मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष संबंन्धिचतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभदेव के समवशरण में, दक्षिण दिश शुभ होई।
सप्तच्छद वन दक्षिण दिश में, फल फूलों युत सोई॥
उसमें सप्तच्छद तरुवर पर, चहुँ दिश जिन प्रतिमाएँ।
पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो, जो पूजन को आएँ॥2॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छचैत्यवृक्ष–संबंन्धिचतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभदेव के समवशरण में, पश्चिम दिश वन पाया।
सुरभित सुमन सुमन से शोभित, उपवन चंपक गाया॥
चंपक वन के चैत्यवृक्ष पर, श्री जिन प्रतिमा होवे।
जिनको पूजे मन वच तन से, मन की कालुष खोवे॥3॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपक–चैत्यवृक्ष संबंन्धिचतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिदेव के समवशरण में, उत्तर दिश कहलावे।
तरू आम्रवन उत्तर दिशि में, फल से शोभा पावे॥
उपवन मध्य हि आम्र वृक्ष पर, श्रीजिन प्रतिमा होवे।
जिनको पूजे मन वच तन से, मन की कालुष खोवे॥4॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष–संबंन्धिचतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के समवशरण में, पूर्व दिशा वन शोभे।
वन अशोक सुन्दरतम जिसमें, तरु अशोक शुभ होवे।
चैत्यवृक्ष पर चहुँ दिश प्रतिमा, सबका कल्मष धोवे।
समवशरण में जिनवर पूजा, सब सुखकारी होवे॥5॥

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण उपवनभू में अनुपम, सप्तच्छद वन शोभे।
उसमें अनुपम चैत्य तरू पर, विविध पुष्प मन लोभे॥
चैत्यवृक्ष पर चहुँ दिश प्रतिमा, सबके दु:ख नशावे।
समवशरण में जिनवर पूजा, कर मानव सुख पावे॥6॥

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष संबंन्धिचतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनद रचित जिन समवशरण में, पश्चिम दिश वन न्यारा।
चंपक वन में चंपक तरुवर, लागे सबसे प्यारा।।
चंपक तरुपर चहुँ दिश प्रतिमा, सबको शांति दिलावे।
समवशरण में जिनवर पूजा, सब निधि सौख्य करावे।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष संबंन्धिचतु र्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में उपवन भू की, उत्तर दिश मनहारी।
आम्र सु वन में चैत्य आम्र तरु, अतिशय है शुभकारी।
जिसमें चहुँ दिश सुन्दर प्रतिमा, सबके मन को भाती।
समवशरण में जिनवर पूजा, सम्यक्ज्ञान कराती।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष संबंन्धिचतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भवजिन के समवशरण में, प्रभु वन्दन सुखकारा।
वन अशोक पूरव में अनुपम, अरु अशोक तरु न्यारा।।
जिसमें चहुँ दिश मणिमय प्रतिमा, प्रातिहार्य युत जानो।
समवशरण में जिनवर पूजा, शुभ फल दायी मानो।।9।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश में सप्तच्छद वन, के उपवन हैं न्यारे।
जिसके सप्तछद तरुवर पर, पुष्प सुगंधित प्यारे।।
जिस पर चहुँ दिश मणिमय प्रतिमा, प्रतिहार्य युत जानो।
समवशरण में जिनवर पूजा, शुभ फल दायी मानो।।10।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिन के समवशरण में, गणधर गणयुत होवें।
पश्चिम दिश में चंपक वन अरु, चंपक तरु तहँ शोभें।
जिस पर चहुँ दिश मणिमय प्रतिमा, प्रातिहार्य युत जानो।
समवशरण में जिनवर पूजा, शुभ फलदायी मानो।।11।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवजिन के समवशरण में, साधू संघ विराजे।
दिश उत्तर में आम्रवन सु वन तरु, आम्रवृक्ष तहाँ राजे।
जिस पर चहुँ दिश मणिमय प्रतिमा, प्रातिहार्य युत जानो।
समवशरण में जिनवर पूजा, शुभ फलदायी मानो।।12।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् उत्तरदिक् चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के समवशरण में, पूर्व दिशा वन भू में।
वन अशोक पत्रों युत जिनमें, वृक्ष मगन हो झूमें।।
वन अशोक के चैत्य तरू में, चहुँ दिश प्रतिमा जानो।
समवशरण मणिमय जिन प्रतिमा, मंगल कारी मानो13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के समवशरण में, दक्षिण दिश मन मोहे।
वन समूह से मण्डित जिसमें, सप्तपर्ण वन शोभे।।
सप्तच्छद तरुवर पर चहुँ दिश, मणिमय जिन प्रतिमाएँ।
करके समवशरण जिनपूजा, मोक्ष लक्ष्मी पाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश शुभ चंपक वन में, विविध वापिका जानो।
चंपक तरु पर चहुँ दिश प्रतिमा, कमलासन युत मानो।।
मणिमय प्रतिमा प्रभु की सुन्दर, तीनों लोक प्रकाशे।
समवशरण में जिनकी पूजा, सब विघ्नों को नाशे।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्मिचदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण की उत्तर दिश में, श्रेष्ठ आम्रवन जानो।
आम्र सुवन में आम्रचैत्य तरु, सरस फलों युत मानो।।
चैत्य वृक्षपर चहुँ दिश प्रतिमा, सुन्दर मणिमय होवे।
जिनकी पूजा सुरनर करके, अपना अघ मल धोवे।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन समूह से मण्डित उपवन, पूर्व दिशा सुखकारी।
वन अशोक अरु तरु अशोक है, शोक निवारण कारी॥
चैत्य वृक्ष पर सुन्दर प्रतिमा, समवशरण में जानो।
तीन भुवन में जिनवर पूजा, नितमंगलमय मानो॥17॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के दक्षिण दिश में, सप्तपर्ण वन पाया।
उनके मध्य वृक्ष सप्तच्छद, सब हितकारी गाया॥
प्रातिहार्य युत जिन प्रतिमाएँ, मणिमय चहुँ दिश जानो।
तीन भुवन में जिनवर पूजा, नित मंगलमय मानो॥18॥

ॐ ह्रीं सुमतिननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छ चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश उपवन भूमी में, चंपक वन शुभ जानो
वन में चैत्य तरू चम्पक पर, चतु जिन मूरति मानो॥
छत्र चार युत श्रीजिन प्रतिमा, रोग शोक सब नाशे॥
करके समवशरण जिन पूजा, सम्यक् ज्ञान प्रकाशे॥19॥

ॐ ह्रीं सुमतिननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के समवशरण की, भू में आम्रवन जानो।
आम्र सुवन में आम्रवृक्ष पर, बिम्ब निराले मानो॥
चहुँ दिश प्रतिमा अधर विराजे, समवशरण मन भाते।
उपवन भू की जिनवर पूजा, मुनि गण सुन्दर गाते॥20॥

ॐ ह्रीं सुमतिननाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्षसंबंधि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु के समवशरण में, सुन्दर प्रभु की वाणी।
वन अशोक तरुवर अशोक तल, शोक रहित हों प्राणी॥
तरु अशोक पर, चहुँ दिश प्रतिमा, सुर नर पूज रचाते।
समवशरण में जिनवर महिमा, सुर नर मिल सब गाते॥21॥

ॐ ह्रीं पद्मनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तरु सप्तच्छद मरकत मणिसम, जिन शोभा युत जानो।
सप्तपर्ण वन दक्षिण दिश में, उपवन भू नित मानो॥
चैत्यवृक्ष पर सुन्दर प्रतिमा, सबके मन को भाये।
उपवन भू की जिनवर पूजा, करके मन हरषाये॥22॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में पश्चिम वन की, भूमि अमंगलहारी।
चंपक वन नित पुष्प सुसज्जित, चहुँ दिश गंध जु न्यारी।
उनके मध्य हि चंपक तरु पर, चहुँ दिश प्रतिमा न्यारी।
उपवन भू की जिनवर प्रतिमा, भविजन लागे प्यारी॥23॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम श्री समवशरण में, उत्तर दिश मनहारी।
आम्रसुवन में सुरपति रमते, क्रीड़ा करते न्यारी॥
आम्रवृक्ष पुष्पों फल मण्डित, चहुँ दिश प्रतिमा प्यारी॥
उपवन भू की जिनवर प्रतिमा, तीनलोक मनहारी॥24॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम जिन समवशरण में, जिन सुपार्श्व मन भाये।
वन अशोक में तरु अशोक शुभ, पूर्व दिशा में गाये॥
चैत्य वृक्ष पर चहुँ दिश प्रतिमा, सब कालुष हर लेवे
उपवन भू की जिनवर पूजा, सकल सौख्य कर देवे॥25॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वादिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तछच्द वन समवशरण में, दक्षिण दिश में जानो।
वन में सप्तच्छदतरुवर पर, जिन प्रतिमा शुभ मानो॥
जिनकी पूजा मंगलकारी, सब विघ्नों को नाशे।
उपवन भू में जिनवर प्रतिमा, चारों ओर प्रकाशे॥26॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में पश्चिम दिशा की, उपवन भू मनहारी।
चंपक वन में चंपक तरु पर, जिन प्रतिमा सुखकारी॥
अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर, श्री जिनवर गुण गाई।
उपवन भू की जिनवर प्रतिमा, सबके मन को भाई॥27॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदकि् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सुपार्श्व के समवशरण में, उत्तर दिश वन जानो।
आम्रसुवन के आम्र तरू पर, चैत्य भवन शुभ मानो॥
उसमें मरकतमणि सम प्रतिमा, सबके मन को भावे।
उपवन भू की जिनवर प्रतिमा, सुर नर पूज रचावें॥28॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ के समवशरण में, प्रभु जी शोभा पावें।
धनद सु निर्मित तरु अशोक पर, जिन प्रतिमा मन भावें॥
समवशरण में उपवन भू की, पूजा नित्य रचावें।
राग द्वेष अभिमान त्यागकर सर्व सौख्य पद पावें॥29॥

ॐ ह्रीं चंद्रनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन सप्तच्छद समवशरण में, दक्षिण दिश में शोभे।
तरु सप्तछद मरकत मणिमय, पत्तों से युत होवे॥
उपवन मध्य चैत्यतरु सुन्दर, जिन प्रतिमा से सोहे।
समवशरण में जिनवर पूजा, सबके मन नित मोहे॥30॥

ॐ ह्रीं चंद्रनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक तरुवर रत्न विनिर्मित, चहुँ दिश शोभा पावे।
पश्चिम दिश में चंपक वन ही, धनपति दिव्य रचावे॥
उपवन बीच चैत्यतरु शोभित, जिन प्रतिमा से सोहे।
समवशरण में जिनवर पूजा, सबका मन नित मोहे॥31॥

ॐ ह्रीं चंद्रनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक हितंकर समवशरण में, रोग शोक मिट जावे।
आम्र सुवन अरु आम्र चैत्यद्रुम, उत्तर शोभा पावे॥
समवशरण में सुर नर किन्नर, जिनवर गुण नित गाते।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा नित्य रचाते॥32॥

ॐ ह्रीं चंद्रनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के समवशरण में, उपवन भू जो शोभे।
पूरब दिश में तरु अशोक वन, सुर नर का मन मोहे॥
उसके मध्य अशोक चैत्यतरु, जिन प्रतिमा से सोहे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मैं पूजूँ, जो भविजन मन मोहे॥33॥

ॐ ह्रीं पुष्पंदतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर का समवशरण तो, नवनिधि से युत होवे।
उसके दक्षिण दिश में सुन्दर, सप्तच्छद वन होवे।
वन के मध्य सु सप्तच्छद तरु, मणि पत्तों से सोहे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, जो भविजन मन मोहे॥34॥

ॐ ह्रीं पुष्पंदतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम जिन समवशरण प्रभु, नभ में अधर विराजे।
चंपक वन के चंपक तरु पर, जिनवर बिम्ब सु राजे॥
उपवन भू की छटा निराली, प्रभु शोभा तन भाई।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, भविजन को सुखदाई॥35॥

ॐ ह्रीं पुष्पंदतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में पुष्पदंत की, दिव्य ध्वनि शुभ सोहे।
आम्रोद्यान रहा उत्तर में, आम्रवृक्ष मन मोहे।
चैत्यवृक्ष पर श्री जिनवर का, बिम्ब निराला होई।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, भविजन पूजें सोई॥36॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलजिन का समवशरण शुभ, गणधर वन्दित जानो।
पूरब दिश में है अशोक वन, तरु अशोक शुभ मानो॥
तरु अशोक पर जिनवर प्रतिमा, सुर नर पूजित होई।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, भविजन पूजें सोई॥37॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश सप्तच्छद वन में, सप्तच्छद तरु पावें।
समवशरण में चैत्यवृक्ष को, भविजन पूज रचावें।
चैत्यवृक्ष की जिनवर प्रतिमा, मुनिवर वन्दित सोई।
चहुँ दिश जिनवरबिम्ब पूज्य हैं, नित निर्मल मन होई॥38॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में चंपक वन शुभ, सुमन सुरभि मय होवे।
पश्चिम दिश का चंपक तरुवर, जिन प्रतिमा से शोभे॥
शीतल जिन की पूजा करके, चित्त प्रफुल्लित होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, कर्म कालिमा खोवें॥39॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के उत्तर दिश में, भूमि मनोहर जानो।
आम्रसुवन के आम्रतरू पर, प्रतिमा सुन्दर मानो॥
मानस्तंभ युत चैत्य तरू शुभ, भविजन मान गलावें।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, विघ्न नाश हो जावें॥40॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की सुन्दर आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
भूत शाकिनी करे ना बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
मानस्तंभ युत चैत्य तरू पर, मणिमय प्रतिमा होवें।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य हैं, कर्म कालिमा खोवें॥41॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की सुन्दर आभा का शुभ, बना हुआ है घेरा।
नहीं डाकिनी से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
दक्षिण दिश सप्तच्छद तरु पर, जिनवर प्रतिमा होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म कालिमा खोवे॥42॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छ चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में प्रभु आभा से, ढँका हुआ तन मेरा।
करे काकिनी प्रेत ना बाधा, रक्षित तन पर घेरा॥
पश्चिम दिश चंपक तरु सुन्दर, फल फूलों युत होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म कालिमा खोवे॥43॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर जिनवर की आभा से, ढँका हुआ तन मेरा।
करे न बाधा यक्षि राकिनी, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
आम्रसुवन में आम्रतरू पर, चैत्य भवन शुभ होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म कालिमा खोवे॥44॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की आभा का शुभ, बना हुआ है घेरा।
नहीं वाकिनी से हो बाधा, रक्षित है तन मेरा॥
तरू अशोक के चारों दिश में, जिन प्रतिमाएँ होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म कालिमा खोवे॥45॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोकतरु चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की सुन्दर आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
नहीं साकिनी से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
सप्तछद तरु रहा मनोहर, दक्षिण दिश में होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म कालिमा खोवे॥46॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छदचैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

प्रभु की सुन्दर आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
नहीं लाकिनी से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
भामंडल युत जिनवर प्रतिमा, चंपक तरु पर होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म कालिमा खोवे॥47॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन भामण्डल की आभा से, मिटता घोर अँधेरा।
नहीं नवग्रहों से हो बाधा, रक्षित है तन मेरा॥
तरू आम्र की चतुर्दिशा में जिन प्रतिमाए जानो।
चहुँ दिशा जिनवर बिम्ब पूजते, कर्म नाश हों मानो॥48॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ की आभा का शुभ, बना हुआ है घेरा।
नहीं याकिनी से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
तरु अशोक पर चैत्य वृक्ष शुभ, सुर वन्दन को आवें।
पूजें चहुँ दिश जिनप्रतिमा को, स्वर्ग सम्पदा पावें॥49॥

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके पावन दर्शन से ही, नित प्रति होय सवेरा।
नहीं राक्षसों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
तरु सप्तच्छद दक्षिण दिश का, भय संताप मिटावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, चउगति दु:ख हटावे॥50॥

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी सुन्दर आभा का शुभ, बना हुआ है घेरा।
व्यंतर देव करें न बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
प्रभु की शोभा चंपक तरु पर, अतिशय पुण्य करावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, सब संकट मिट जावे॥51॥

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके पावन दर्शन से ही, नित प्रति होय सवेरा।
कोई देव से न हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
आम्र सु तरु पर चहुँ दिश प्रतिमा, मंगल नित्य करावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मिथ्या मल गल जावे॥52॥

ॐ ह्रीं विमलनाथमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्रचैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की सुन्दर आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
नहीं दुर्जनों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
तरु अशोक की जिनवर प्रतिमा, संशय ज्ञान मिटावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मंगल निधि मिलजावे॥53॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की आभा से ही, बना हुआ है घेरा।
वृश्चिक से नहिं कभी हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
सप्तच्छ तरुवर की प्रतिमा, सारे कल्मष हारी।
चहुँ दिश जिनवर की प्रतिमाएँ, जो जग में है न्यारी॥54॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनन्त की आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
नहीं तस्करों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
चंपक वन में प्रभु की महिमा, अशुभ क्षयंकर होवे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, नित प्रतिमंगल होवे॥55॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की आभा से ही, नश जाए मोह अँधेरा।
नहीं भेकसों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा॥
आम्र वृक्ष प्रभु महिमा ऐसी, रज सुवर्ण बन जावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, अष्ट करम नश जावे॥56॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ की आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।।
विकल त्रय से नहीं हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
तरु अशोक की जिन प्रतिमा को, सुर नर मन से ध्यावें।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, पाप क्षरण हो जावे।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ की आभा का ही, बना हुआ अंधेरा।
अग्नी से बाधा न होवे, प्रभु रक्षित तन मेरा।
सप्तच्छद तरु पर जिन प्रतिमा, मोह महामद हारी।
चहुँ दिश जिनवर शोभित होते, प्रभु प्रतिमा सुखकारी।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदिक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ की आभा से ही, मिटता भव का फेरा।
दंष्ट्रिण से मुझे नहीं हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
चंपक तरु की जिनवर प्रतिमा, धर्म सु वृद्धि करावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मनोहर, प्रभु सुख को बरसावें।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमचदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ की आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
गोह आदि से नहीं हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
आम्र वृक्ष की प्रतिमा ऐसी, मुक्ति मार्ग विकसावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मनोहर, प्रभु सुख को बरसावै।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ की आभा से ही, होवे ज्ञान सवेरा।
सर्पों से मुझे न हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
तरु अशोक की प्रतिमा ऐसी, व्याधि विकार नशावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मनोहर, प्रभु सुख को बरसावें।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
जृंभक से मुझे नहीं हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
तरु सप्तच्छद प्रतिमा सुन्दर, राग द्वेष नशावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, पुण्य कर्म विकसावे।।62।।

ॐ ह्रीं शंतिनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जिन की आभा का, पड़ा हुआ शुभ घेरा।
नहीं पक्षियों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
चंपक वन के चैत्यवृक्ष पर, रत्नों की छवि न्यारी।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मनोहर, जिन अतिशय सुखकारी।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर का दर्श मैटता, जन्म मरण का फेरा।
नहीं शूकरों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
आम्रवृक्ष पर जिनवर प्रतिमा, परम दिव्य हितकारी।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मनोहर, माया मोह निवारी।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक है यह जीवन मेरा, प्रभु पद रहे बसेरा।
हाथी से मुझे नहीं हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
तरु अशोक जिनबिम्ब मनोहर, सुषमा अद्भुत न्यारी।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब मनोहर, भव-भव पाप निवारी।।65।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिनपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य:अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ की आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
नहीं मुद्गलों से हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
दक्षिण सप्तच्छद तरु प्रतिमा, वीतराग हितकारी।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब रत्न मय, पूजा सिद्धि सुकारी।66।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की सुन्दर आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
नहीं हो ग्रामिणों से बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
पश्चिम दिश चंपक तरु प्रतिमा, सहसनाम गुण गाऊँ।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, अतिशय शिव पद पाऊँ।।67।।
ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभु की सुन्दर आभा से, बना हुआ शुभ घेरा।
मुझे न हो नाहर से बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।
आम्रवृक्ष उत्तरदिश प्रतिमा, चिन्ता सर्व निवारी।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूज्य है, पूजा सु ऋद्धिकारी।।68।।
ॐ ह्रीं कुन्थुनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जिन की आभा से, ढँका हुआ तन मेरा।
मुझे न हो बाधा उष्ट्रों से, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
वन अशोक तरु पूरब दिश में, मन संक्लेष मिटावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब जजूँ मैं, विपद नाश हो जावे।।69।।
ॐ ह्रीं अरहनाथजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जिन की पूजा कर मिटता अज्ञान अंधेरा।
महामारी न मुझे सतावे, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
सप्तच्छद में विविध वापिका, उपवन शोभा पावे।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब जजूँ मैं, बुद्धि वृद्धि मिल जावे।।70।।
ॐ ह्रीं अरहनाथजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की अर्चा करके कटता, जन्म जन्म का फेरा।
राजा से मुझे न हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
वेदी तीन कोट युत पावन, प्रभु से शोभा पावे।
चहु दिश जिनवर बिम्ब पूजते, ऋद्धि-सिद्धि हो जावे।।71।।
ॐ ह्रीं अरहनाथजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की सुन्दर आभा से ही, ढँका हुआ तन मेरा।
व्याधी से मुझे नाहीं हो बाधा, प्रभु रक्षित तन मेरा।।
मन वच काय शुद्धि युत जिनवर, तव पद कमल चढ़ाएँ।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजकर, अतिशय पुण्य कमाएँ।।72।।
ॐ ह्रीं अरहनाथजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्षसंबन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भु छन्द)

भवविजयी श्रीमल्लिनाथ जिन, समवशरण सुखकारी है।
है अशोक तरु चैत्य पूर्व में, भविजन का दुखहारी है।।
त्रिभुवन वन्दित समवशरण में, उपवन भू मनहारी है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब अलौकिक, पूजा अतिशुभकारी है।।73।।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ समवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के समवशरण में, मुनिवर प्रभु गुण गाते हैं।
चैत्यतरू पर सप्तछद वन, भविजन प्रीति लगाते हैं।।
त्रिभुवन वन्दित समवशरण में, उपवन भू मनहारी है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब अलौकिक, पूजा अति शुभकारी है।।74।।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ समवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभाव से समवशरण में, वैर भाव मिट जाते हैं।
चंपक तरु जिन बिम्ब मनोहर, सुर ललनायें लाते हैं।।
सुर नर किन्नर से नित वन्दित, उपवन भू मनहारी है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब अलौकिक, पूजा अतिशयकारी है।।75।।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ समवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के समवशरण में आकर, सुर नर ढोक लगाते हैं।
आम्रवृक्ष पर प्रभु की शोभा, त्रिभुवन के मन भाते हैं।

प्रभु को मन से जो नित ध्यावें, चक्रवर्ति पद पाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब जजें जो, अतिशय सौख्य कराते हैं।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ समवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवशरण जो पूजें, सर्व मनोरथ पाते हैं।
वन अशोक पूरब में होवे, परमानंद कराते हैं।।
चैत्यवृक्ष की जिनवर प्रतिमा, भविजन को उपकारी है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब जजूँ मैं, जिन पूजा शुभकारी है।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोकचैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

दक्षिण दिश सप्तच्छद वन में, सप्तच्छद तरु गाये हैं।
चहुँ दिश जिनप्रतिमा के सम्मुख, मानस्तंभ बताए हैं।।
समवशरण को जो नित ध्यावें, वांछित फल वह पाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, सब संकट नश जाते हैं।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की अद्भुत महिमा, आधि व्याधि सब खोते हैं।
चंपक वन की छटा निराली, अतिशय मंगल होते हैं।।
चैत्यवृक्ष की प्रतिमा न्यारी, चहुँ दिश शांति कराते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब जजे हम, मुक्ति रमा को पाते हैं।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपकचैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भविजन मुनिसुव्रत जिन का, समवशरण मन धारें हैं।
आमों का वन उत्तर दिश में, दुख दारिद सब टारें हैं।।
चैत्यवृक्ष की प्रतिमा न्यारी, चहुँ दिश शांति कराते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवशरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण श्री नमि जिनवर का, सुख का सागर लहराए।
पूर्व दिशा में वन अशोक शुभ, कालुषहारी कहलाए।।
चैत्यवृक्ष की प्रतिमा न्यारी, सुर नर पूज रचाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं।।81।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमीनाथ जिनधर्म धुरन्धर, समवशरण हितकारी है।
सप्तच्छद वन भवन वापिका, चहुँ दिश शोभाकारी है।।
सप्तच्छद तरु प्रतिमा पावन, सुर शचि नृत्य रचाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं।।82।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्मों का कल्पवृक्ष जिन, समवशरण उपकारी है।
पश्चिम दिश के चंपक वन में, षड्वापिकाएँ न्यारी हैं।।
चैत्यवृक्ष पर पावन प्रतिमा, भविजन के मन भाती है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा मिल जाती है।।83।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक नमिजिन स्वामी, सुन्दर तन युत गाये हैं।
दिश उत्तर में रहा आम्र वन, मन हारी बतलाए हैं।।
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं।।84।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमीनाथ जी योग धारकर, भोगों पर जय पाए हैं।
पूरव दिश में तरु असोक पर, श्री जिन बिम्ब बताए हैं।
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं।।85।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् असोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व अमंगल दोष हरें प्रभु, व्रत संयम जो पाले हैं।
दक्षिण दिश सप्तच्छद वन में, सुन्दर भवन निराले हैं॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते है॥86॥

ॐ ह्रीं नेमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीश्वर के नाममंत्र से, सुख शांती सब पाते हैं।
चंपक वन की पश्चिम दिश में, सुर नर ढोक लगाते हैं॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं॥87॥

ॐ ह्रीं नेमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में जिनवंदन से, सम्यक् निधि मिल जाती है।
वृक्ष आम्रवन उत्तर दिश में, प्रभु से शोभा पाती है॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजतें मैं, मुक्ति रमा को पाते हैं॥88॥

ॐ ह्रीं नेमिजिनसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण प्रभु पार्श्वनाथ का, सब मंगल करतारा है।
तरु अशोक वन पूरब दिश में, सर्व सौख्य भंडारा है॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं॥89॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट मोचन पार्श्व प्रभू जी, भव-भव के दुखहारी हैं।
दक्षिण दिश में सुन्दर उपवन, सप्तच्छद सुखकारी हैं॥
चैत्य वृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं॥90॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छन्द चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष दक्षिणी समवशरण में, पार्श्वनाथ गुण गाते हैं।
चंपक वन में सुन्दर वेदी, मणि रत्नों युत पाते हैं॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिशा जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्तिरमा को पाते हैं॥91॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ करतार प्रभो! जिन, भव भय भंजनहारी हैं।
वृक्ष आम्रवन उत्तर दिश में, जिनवर प्रतिमा धारी हैं॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते मैं, मुक्ति रमा को पाते हैं॥92॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्द्धमान महावीर प्रभू के, गुण गाने हम आये हैं।
तरु अशोक वन पूरब दिश में, समवशरण को पाए हैं॥
चैत्यवृक्ष की प्रतिमा पावन, भविजन के मन भाती है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा मिल जाती है॥93॥

ॐ ह्रीं महावीर समवशरणस्थित उपवनभूमिपूर्वदिक् अशोक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण, महावीर प्रभू का, कुमति विनाशनहारी है।
सप्तच्छद वन दक्षिण दिश का, सर्व मनोरथकारी है॥
चैत्यवृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा को पाते हैं॥94॥

ॐ ह्रीं महावीर समवशरणस्थित उपवनभूमिदक्षिणदिक् सप्तच्छद चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर प्रभू के समवशरण में, यक्ष यक्षीणी आते हैं।
श्री जिनवर की पूजा करके, निज को धन्य बनाते हैं॥
चैत्य वृक्ष के बिम्ब मनोहर, भविजन के मन भाते हैं।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्तिरमा मिल जाती है॥95॥

ॐ ह्रीं महावीर समवशरणस्थित उपवनभूमिपश्चिमदिक् चंपक चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर नाम है दिव्य मंत्र शुभ, जो भी मन से ध्याते हैं।
शील अठारह सहस पाल कर, पार भवोदधि पाते हैं।।
चैत्यवृक्ष की प्रतिमा पावन, भविजन के मन भाती है।
चहुँ दिश जिनवर बिम्ब पूजते, मुक्ति रमा मिल जाती है।।96।।

ॐ ह्रीं महावीर समवशरणस्थित उपवनभूमिउत्तरदिक् आम्र चैत्यवृक्ष सम्बन्धि चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

तीर्थंकर के समवशरण में, भू उपवन शोभा पाती।
चहुँ दिश इक-इक चैत्यवृक्ष में, जिन प्रतिमा मन को भाती।।
चहुँ दिश जिन प्रतिमा के आगे, मानस्तंभ सजाए हैं।
अष्ट द्रव्य से प्रभु को पूजें, धर्मवृद्धि वह पाए हैं।।97।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवशरणस्थित उपवनभूमि सम्बन्धि षण्णवति चैत्य वृक्ष चतुरशीत्यधिक त्रिशत् प्रतिमातावत्प्रमाण मानस्तंभ संबन्धिषट् त्रिशंदधिक एक सहस्र पंचशतजिन प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं...

।।शांतये शांतिधारा-दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जाप्य-ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नमः

अथ जयमाला

सोरठा- मणिमय जिनवर बिम्ब, चैत्यवृक्ष राजित सदा।
वन्दूँ मैं जिन बिम्ब, होय सौख्य चहुँ दिश विशद।।

(पद्धरिछन्द)

जय समवशरण शोभित जिनेश, जय उपवन भू मण्डित महेश।
जय सुर नर वंदित चैत्यवृक्ष, जय मणिमय श्री जिन चैत्यवृक्ष।।1।।
जय गणधर पूजित चैत्यभूमि, जय मुनिवर विचरण चैत्य भूमि।
जय चहुँ दिश शोभित चैत्यभूमि, जय वन उपवन युत चैत्य भूमि।।2।।
जय पूरब दिश सुन्दर अशोक, जो भविजन का सब हरे शोक।
सप्तच्छद भूमि है महान, चंपक प्रतीचि में शुभ प्रधान।।3।।
फल सुमन युक्त भूमी सुजान, उत्तर में आम्र सुवन महान।
है स्वर्ण कोट दूजा महान, चउ गोपुर द्वारों युक्त मान।।4।।
व्यंतर सुर मुद्गर आदि धार, उपवन भू रक्षक रहे द्वार।
हैं मणिमय तोरणयुक्त द्वार, शुभ अष्ट सुमंगल द्रव्य सार।।5।।

प्रत्येक एक सौ आठ जान, सब मंगलकारी हैं महान।
उसके आगे उपवन सु भूमि, चहुँ दिश वन सुन्दर युक्त भूमि।।6।।
वन है असोक पहला महान, फिर सप्तच्छद चम्पक सुजान।
उपवन चतुर्थ वन आम्र होय, चहुँ दिश तहँ इक इक तरू सोय।।7।।
चहुँदिश में तरु पर चैत्य जान, उनमें इक-इक जिनबिम्ब मान।
वसु प्रातिहार्य युत बिम्ब खास, मणिमय चारों दिश हो प्रकाश।।8।।
सम्मुख प्रतिमा के एक-एक, शुभ मानस्तम्भ भी रहा नेक।
वेस्टित त्रय कोटों युक्त होय, जो तीन पीठ युत रहा सोय।।9।।
उपवन भू में वापी महान, क्रीड़ा पर्वत भी रहा मान।
तहँ उच्च भवन अति शोभमान, है नाट्यशालाएँ भी महान।।10।।
जो उपवन भू की करें भक्ति, वे भव सागर से पाएँ मुक्ति।
जिन बिम्बों का करके सुध्यान, शिवरमणी रस का करें पान।।11।।
जिन चरण पूजते 'विशद' आज, अब मोक्ष पुरी का मिले ताज।
ये भक्त खड़े हैं लिए आस, अब मोक्ष महल का मिले वास।।12।।

धत्तानन्द

जय जय जिन श्रीधर, त्रिभुवन हितकर, मुक्तिरमावर शिवदाई।
मैं तुम गुण गाऊँ, दर्शन पाऊँ, विघ्न नशाऊँ सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित उपवन भूमि सम्बन्धि मानस्तंभ सहित सर्व चैत्य वृक्षस्थितजिनप्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं...

।।शांतये शांतिधारा-दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

कवित्त छन्द

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार।।
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र पद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार।।

(पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्, इत्याशीर्वादः)

ध्वज भूमि पूजा–7

अथस्थापना (अडिल्ल छन्द)

दिव्य ध्वजाएँ ध्वज भूमी में, रत्न रचित है अपरम्पार।
है स्तम्भ स्वर्ण से निर्मित, समवशरण में मंगल कार॥
ध्वज भूमी शोभित है जिसमें, अरहंतों का है स्थान।
भक्ति भाव से वन्दन करके, करते निज उर में आह्वान॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमि मंडित वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वावननं

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक (चाल छन्द)

गंगा ह्रद निरमल पानी, शुभ झारी में भर लानी।
ध्वज भूमि परम सुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥1॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः जलम्...

केसर सुगंध मनहारी, भवताप नशावन कारी।
ध्वजभूमि परमसुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥2॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः चंदन...

अक्षत अखण्ड हम लाए, शुभ पुंज चढ़ा सुख पाये।
ध्वजभूमि परमसुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥3॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः अक्षतान्...

सुरतरु के सुमन जु लाए, प्रभु काम बाण विनशाए।
ध्वजभूमि परम सुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥4॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः पुष्पम्...

ताजे नैवेद्य ये लाए, प्रभु क्षुधा रोग मिट जाए।
ध्वज भूमि परमसुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥5॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः नैवेद्यं...

मणिमय ये दीप जलाए, मम आत्म ज्योति जग जाए।
ध्वजभूमि परम सुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥6॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः दीपं....

चन्दन की धूप चढ़ाएँ, कर्मों से बन्ध छुड़ाएँ।
ध्वज भूमि परमसुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥7॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः धूपं...

रसयुक्त मधुर फल लाएँ, प्रभु मोक्ष महाफल पाएँ।
ध्वज भूमि परम सुखदाई, शुभ पूजें भक्ति लगाई॥8॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः फलं....

कंचनमय पात्र भराएँ, प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाएँ।
ध्वज भूमि परम सुखदाई, हम पूजें भक्ति लगाई॥9॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– कंचन झारी में भरें, क्षीरोदधि शुभ नीर।
शांतिधारा त्रय करें, हरण करें भव पीर॥1॥

॥शांतये शांतिधारा॥

रजत पात्र में लाये हैं, सुरभित पुष्प सजाय।
जिन पद अर्चा कर रहे, पुष्पाञ्जलि को आय॥

॥दिव्य पुष्पाजलिः॥

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– ध्वज भूमी संयुत प्रभो!, समवशरण सुखकार।
पुष्पाञ्जलि देते सदा, होवे सौख्य अपार॥

इति मण्डलस्योपरि, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(पद्धड़ि छन्द)

श्री आदि जिनेश्वर हैं महान, सुर नर पद में झुकते प्रधान
ध्वज भूमी में पूजा रचाय, प्राणी भव सागर पार पाय॥1॥

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री वृषभदेव समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अजित नाथ का मिले साथ, हम झुका रहे हैं चरण माथ।
ध्वज भूमी में पूजा रचाय, प्राणी भव सागर पार पाय॥2॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री अजितनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है संभव जिन का श्रेष्ठ नाम, जिन भक्ती से सब बनें काम।
ध्वज भूमी में पूजा रचाय, प्राणी भव सागर पार पाय॥3॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिंडित श्री संभवनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन का नाम जो लेय, सब प्रकार आनन्द करेय।
ध्वज भूमी पूजे मन लाय, जासैं रोग-शोक क्षय जाय॥4॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री अभिनन्दननाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ पूजों सुखकार, चरणन शरण लेय मतिधार।
ध्वज भूमी पूजे मन लाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥5॥
ॐ ह्रीं ध्वजमंडित श्री सुमतिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो पद्म! लक्ष्मीपति आप, पूजत हरें सकल सन्ताप।
ध्वज भूमी पूजे मन लाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥6॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री पद्मप्रभ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन धन्य सुपारसनाथ, भक्ति कभी न छूटे नाथ!।
ध्वज भूमी पूजे मन लाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥7॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री सुपार्श्वनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय भक्ति जो अपने पाय, चन्द्र प्रभू पद द्रव्य चढ़ाय।
पञ्चम भूमी पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥8॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री चन्द्रनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जजे जु तुमको भाव सुनाथ, वह पावे शिव सुख का साथ।
पञ्चम भूमि पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥9॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमि मंडित श्री पुष्पदंत जिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल वाणी मन हरषाय, जो पूजे शीतल गुण पाय।
पञ्चम भूमी पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥10॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री शीतलनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रिय वृद्धी श्रेयांस कराय, जजे जो नवलब्धी को पाय।
पंचम भूमी जजूँ मनलाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥11॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमि मंडित श्री श्रेयांस जिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य की शरण जु आय, वो ही सर्व ज्ञान को पाय।
पञ्चम भूमी पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥12॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री वासुपूज्यजिन समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ का करें विचार, पाएँ शिव पुर का हम द्वार।
पञ्चम भूमी पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥13॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री विमलनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनअनंत मन भक्ति लगाय, वो प्राणी सम्यक्त्व जगाय।
पञ्चम भूमी पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥14॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री अनंतनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म-धर्म का सार बताय, पूजें प्रभु को ध्यान लगाय।
पंचमभूमि जजूँ मन लाय, जासें रोग-शोक क्षयजाय॥15॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री धर्मनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ मंगल करतार, पूजें प्रभु को अर्घ्य उतार।
पञ्चम भूमि पूज रचाय, जासें रोग-शोक क्षय जाय॥16॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री शांतिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ को मन वच काय, अर्चा करें शरण को पाय।
प्राणी ध्वज भूमि में आन, करते हैं निज का कल्याण॥17॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री कुन्थुनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिन पद सुर ध्यान लगाय, भक्ती कर वांछित फल पाय।
प्राणी ध्वज भूमी में आन, करते हैं, निज का कल्याण॥18॥
ॐ ह्रीं ध्वभूमि मंडित श्री अरहनाथ, समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ पूजूँ मन लाय, जिससे मन निर्मल हो जाय।
ध्वज भूमी पूजें जो लोग, पावें शिव सुख का संयोग॥19॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री मल्लिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

मुनिसुव्रत मुनियों के नाथ!, पूजूँ उन्हें भाव के साथ।
ध्वज भूमी पूजें जो लोग, पावें शिव सुख का संयोग॥20॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री मुनिसुव्रतनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

ऋद्धीधारी जिन नमिनाथ देते शिवपुर का वे साथ।
ध्वज भूमी पूजें जो लोग, पावें शिव सुख का संयोग॥21॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री नमिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

नेमिनाथ सिद्धीपति आप, कटते पूजा से सब पाप।
ध्वज भूमी पूजें जो लोग, पावें शिव सुख का संयोग॥22॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री नेमिनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

प्राणी रक्षक पार्श्व जिनेन्द्र, जिनकी सेव करें धरणेन्द्र।
ध्वज भूमी पूजें जो लोग, पावें शिव सुख का संयोग॥23॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री पार्श्वनाथ समवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

महावीर जिन नाम सु धार, भव सागर से पावें पार।
ध्वज भूमी पूजें जो लोग, पावें शिव सुख का संयोग॥24॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री महावीरजिनसमवशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (सोरठा छन्द)

जिन पूजा मन धार, समवशरण आऊँ प्रभो!
श्रीजिन अर्घ्य उतार, ध्वज भू नमन करें विशद॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरणेभ्य: पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्।

जाप्य : ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा

प्रातिहार्य शोभित प्रभो, जगत वंद्य जिनदेव।
नत मस्तक होकर प्रभो!, करूँ चरण की सेव॥

अडिल्य छंद

पंचम धर्म ध्वजा भू सुन्दर जानिए।
तृतिय कोट परिवेष्टित उसको मानिए॥

श्रेष्ठ ध्वजाएँ फहराती चउ दिश अहा
सुर नर गणधर सबका मन मोहे जहाँ॥1॥
चहुँ दिश ध्वज भू में दश ध्वज शुभ जानिए,
जिनकी महाध्वज इक सौ आठ प्रमानिए।
महा ध्वज इक सौ आठ लघु-ध्वज धार है,
जिनकी भक्ति सु भावन पूजौ सार है॥2॥
समवशरण में महाध्वजाएँ शोभतीं,
वृषभ सिंह गज गरुड मोर की होवतीं।
कमल चक्र रवि हंस चन्द्र ध्वज सार हैं,
जो पूजें वो भव दुख से हों पार हैं॥3॥
ध्वज भू में चउ लक्ष सहस सत्तर कहीं,
आठ सौ अस्सी श्रेष्ठ ध्वजाएँ शुभ रहीं।
दिव्यध्वज युत भू श्री जिन की गाइये,
धन सुत सुख समृद्धी सब जन पाइए॥4॥
तृतीय कोट ध्वज भूमी आगे जानिए,
रजतमयी सुन्दर सोहे यह मानिए।
द्वार चार के रक्षक सुर कहलाए हैं,
भक्ति भाव सुर भवनवासि दिखलाए है।॥5॥
इन गलियों में, धूप घड़े शुभ गाए हैं।
नव निधियों से युक्त श्रेष्ठ कहलाए हैं॥
नाट्य शालाएँ उभय ओर शुभ जानिए।
मन हरतीं लोगों का जो शुभ मानिए॥6॥
इन्द्र चक्रवर्ती आदिक जो गाए हैं।
ध्वज भू को वह भी आ पूज रचाए हैं॥
श्री जिन का वैभव जग में शुभकारहै।
'विशद' मोक्ष का जीवों को दातार है॥7॥

दोहा

परम पूज्य जिनवर सभी, त्रिभुवन में सुखकार।
पूजत ध्वज भू भाव से, होय दोष निरवार॥
ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडित श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं...
शांतये शातिधारा। दिव्यपुष्पांजलि:क्षिपेत्।

कवित्त छन्द

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र पद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

(पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्, इत्याशीर्वादः)

अथ कल्पवृक्षभूमि पूजा प्रारभ्यते-8

(कवित्त छन्द)

धूलिसाल के मध्य सु मणिमय, चहुँदिश सुन्दर वीथी जान।
वीथी मध्य सु मानस्तम्भ शुभ, समवशरण में रहा महान॥
मानस्तम्भों के दर्शन से, मानगलित करते भवि जीव।
जिन बिम्बों की अर्चा करके, प्राप्त करें जो पुण्य अतीव॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणस्थितमानस्तंभजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणस्थितमानस्तंभजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणस्थित मानस्तंभ जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ स्थापना (शम्भु छन्द)

तीर्थंकर के समवशरण में, कल्पवृक्ष भूमी षष्ठम्।
चहुँ दिश इक-इक अतिशय सुन्दर, तरु सिद्धार्थ रहे शुभतम्॥
तरु सिद्धार्थ पे चहुँ दिश इक इक, सिद्धों की सोहे प्रतिमा।
पूज रहे आह्वानन विधि से, जागे अन्दर की प्रतिभा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित कल्प वृक्ष भूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमा समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमा समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमा समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्दबेसरी)

क्षीरोदधि का जल भर लाय, उससे जिन पद धार कराय।
सिद्ध बिम्ब को पूज रचाय, जन्म जरा दुख मम नश जाय॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः जलं...

चन्दन केशर घिस कर लाय, प्रभु चरणों धर अति हरषाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब सुखदाय, भवाताप मेरा नश जाए॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः चंदनं...

धवल अखण्डित तन्दुल लाय, पूत भाव धर भाजन पाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित आय, उत्तम अक्षय पद मिल जाय॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अक्षतान्...

सुरतरु के यह पुष्प मँगाय, पूजा कर जन मन हर्षाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित पाय, ताफल मदन मोह नशि जाय॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः पुष्पं...

मन मोहक मोदक बनवाय, स्वर्ण थाल में धर कर लाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित पाय, ता फल क्षुधा रोग नशि जाय॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतुः सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः नैवेद्यं...

शुद्ध घृतारित दीप बनाय, कंचन थाल सजाकर लाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित भाय, मोह महातम सब नश जाय॥6॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतु: सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: दीपं...

चन्दन चूर सुधूप बनाय, वसु कर्मों को दिए जलाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित भाय, दुष्ट कर्म विध्वंस कराय॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतु: सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: धूपं....

श्रीफल लोंग बदाम सु लाय, दाड़िम पिस्तादिक फल पाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित भाय, मोक्षमहाफल अति सुखदाय॥8॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतु: सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: फलं...

जलफलादि वसु द्रव्य सजाय, शुभ परिणति धर पूजा गाय।
पूजों सिद्ध बिम्ब नित भाय, सुख सौभाग्य सदा हो जाय॥9॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थितकल्पवृक्षभूमि सम्बन्धि चतुश्चतु: सिद्धार्थ वृक्ष मूल भाग विराजमान चतुश्चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

सोरठा

कंचन झारी में भरूँ, क्षीरोदधि शुभ नीर।
शांतिधारा त्रय करूँ, हरण करूँ भव पीर॥1॥

शांतये शांतिधारा।

रजत पात्र में लाये हैं, सुरभित पुष्प सजाय।
जिन पद अर्चा कर रहे, पुष्पाञ्जलि को आय॥

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– तीर्थंकर को भक्ति से, ध्याते मन वच काय।
भव-भव दुःख विनाश कर, अन्तिम शिव पुर पाय॥

।।इति मण्डलस्यापरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(छन्द जोगीरासा)

आदिनाथ के समवशरण में, कल्पभूमि अति शोभे।
कल्प वृक्ष सिद्धार्थ नमेरू, पूर्व दिशा मन लोभे॥
कल्पवृक्ष भूमी में अतिशय, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुखकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

कल्पवृक्ष भूमी के दक्षिण, तरु मन्दार सुजानो।
रत्नमयी सिद्धों की चहुँ दिश, इक इक प्रतिमा मानो।
तरु सिद्धार्थ के आश्रित चहुँ दिश, मानस्तम्भ निराले।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख देने वाले॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक् मन्दार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

पश्चिम कल्पभूमि संतानक, वृक्ष सुशोभित भाई।
तीन मेखलाओं के ऊपर, तरु सिद्धार्थ सुखदायी॥
कल्पतरू भू अतिशय सुन्दर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुखकारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

उत्तर कल्पवृक्षभूमी में, परिजात द्रुम जानो।
मंगलमय सिद्धार्थ तरू मे, सिद्ध बिम्ब शुभ मानो॥

आदिनाथ के समवशरण में, षष्ठम भू मनहारी।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुख कारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

अजितनाथ के समवशरण में, कल्पभूमि सुखदायी।
वृक्ष नमेरू पूर्व दिश में, श्रद्धा ध्यान प्रदायी।।
कल्पवृक्ष भूमी में अतिशय, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुखकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

अजितनाथ के समवशरण में, कल्पवृक्ष भू जानो।
दक्षिण दिश मन्दार तरू शुभ, तीन कोट युत मानो।।
रत्नमयी सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर पूजें, शिवसंपद सुखकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वा।

कल्पतरू भू में दशविध के, कल्पवृक्ष नित होवें।
सन्तानक द्रुम पश्चिम दिश में, दिव्य पीठ युत शोभें।
कल्पभूमि में रत्नमयी शुभ, सिद्ध बिम्ब मनहारी।।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर पूजें, शिवसंपद सुखकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कल्पवृक्षभूमी में प्रभु की पूजा, शुभ फलदायी।
पारिजात द्रुम उत्तर दिश में, उत्तम तेज प्रदायी।।
कल्पभूमि में परम सु-सुन्दर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर पूजें शिव संपद सुखकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

दसविध कल्पवृक्ष शुभ अनुपम, समवशरण में शोभें।
पूरब दिश में वृक्ष नमेरू, कल्पभूमि में होवें।।
कल्पवृक्ष भूमी में सुन्दर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, सिद्ध बिम्ब मनहारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

सम्भवजिन की पूजा नित ही, अतिशय पुण्य प्रदायी।
तरु मन्दार दिशा दक्षिण में, मंगलमय अधिकायी।
कल्पभूमि में परम सु सुन्दर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ा कर पूजें, शिव संपद सुखकारी।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउदक्षिणदिक् मन्दार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

सम्भवजिन के समवशरण में, कल्पभूमि मन भावे।
सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष नित, प्रभु से शोभा पावे।।
पश्चिम दिश में अतिशय सुन्दर, प्रेक्षण शाला होवे।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, कर्म कालिमा धोवे।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं..

समवशरण की कल्पभूमि में, क्रीडागृह शुभ जानो।
उत्तर दिश सिद्धार्थ तरू में, पारिजात शुभ मानो।।
कल्पभूमि में परम सु सुन्दर, सिद्ध बिम्ब नित होवे।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा धोवे।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

तीर्थंकर अभिनंदन स्वामी, समवशरण में राजे।
कल्पतरू भू में नमेरु पर, प्रतिमा सिद्ध विराजे।।
दसविध कल्पवृक्ष जहँ सुन्दर, मनवांछित फल दायी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, है सौभाग्य प्रदायी।।13।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

सिद्ध बिम्ब चहुँ दिश दक्षिण में, तरु मन्दार जो सोहे।
मानस्तंभ सिद्धार्थ तरू के, आश्रित नित चउ होवे॥
कल्पभूमि में कल्पवृक्ष नित, सब उत्तम फल देवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, मनवांछित फल लेवें॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

चक्रवर्ति नरपति से वन्दित, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष शुभ, पश्चिम में मनहारी॥
कल्पवृक्ष मय सुन्दर भूमी, प्रभु से शोभित जानो।
वसुविध अर्घ्य चढ़कर पूजें शिव सुखकारी मानो॥15॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

समवशरण अभिनंदन जिन का, अनुपम शोभा कारी।
उत्तर दिश में पारिजात तरु, कल्पभूमि मनहारी॥
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ वृक्ष पर, शुभ महिमा दिखलावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पद में पहुचावें॥16॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन नाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

दिशा पूर्व सिद्धार्थ नमेरू, मुनिगण वन्दित जानो।
इसकी चतुर्दिशा में नित ही, सिद्ध बिम्ब चउ मानो।
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ वृक्ष पे, रत्नसु निर्मित होवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म हमारे खोवें।17॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

भाव सहित सिद्धों की प्रतिमा, का जो ध्यान लगावें।
अष्ट कर्म चकचूर करें फिर, प्रभु सम पदवी पावें॥

दक्षिण में मन्दार तरू पर, शुभ महिमा दिखलावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख में पहुचावें॥18॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक् मन्दार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

सुर नर मुनिगण मिल सिद्धों की, पूजा सुन्दर गावें।
प्रभु के दरश मात्र से नित ही, सारे पाप नशावें॥
सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब चउ होवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें॥19॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं....

समवशरण की कल्पभूमि में, सिद्ध बिम्ब सुखदाता।
पारिजात तरु उत्तर दिश में, चिंतित सुफल प्रदाता।
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ तरू पर, चहुँ दिश सुन्दर होवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें॥20॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

पूरब दिश सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्धों की प्रतिमाएँ।
पद्मनाथ की पूजा करके, भवि जन पुण्य कमाएँ॥
कल्पवृक्ष भूमी में प्रतिमा, हैं उत्तम सुखदायी॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, मनवांछित फलदायी॥21॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं....

समवशरण की कल्पभूमि में, बावड़ियाँ शुभ होवें।
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब नित शोभें।
पद्मनाथ का वन्दन करके, सुरपति नाच रचावें।
वसुविधि अर्घ्य चढ़ाकर पावन, मन वांच्छित फल पावें॥22॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

उत्तर मणि रत्नों से निर्मित, है प्रसाद मनहारी।
कल्पभूमि के पश्चिम दिश में, सन्तानक तरु भारी॥
समवशरण श्री पद्मनाथ का, अतिशय पुण्य प्रदायी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, मनवांछित फलदायी॥23॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपपश्चिमदिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

चहुँ दिश मानस्तंभ सु शोभित, समवशरण सुखदायी।
कल्पभूमि के उत्तर दिश में, पारिजात तरु भाई।
चहुँ दिश तरु सिद्धार्थ वृक्ष पर सिद्धबिम्ब, मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अतिशय मंगलकारी॥24॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजत सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

कामधेनु सम कल्पभूमि शुभ, मनवांछित फलदायी।
श्री सुपार्श्व का समवशरण शुभ, अतिशय सौख्य प्रदायी॥
चहुँ दिश तरु सिद्धार्थ वृक्ष पर सिद्धबिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, जग में मंगलकारी॥25॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथासमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

श्री सुपार्श्व का समवशरण शुभ, सुर नर वन्दित सोहे।
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष नित, कल्पभूमि मन मोहे॥
सुरपति पूजित सिद्ध बिम्ब जहँ, चहुँ दिश शोभित होवें।
वसुविधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें॥26॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउदक्षिणदिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

जिन सुपार्श्व की करें आरती, सुर आनन्द मनावें।
भूपति सम पदवी को पावें, जो जन पूज रचावें॥

पश्चिम दिश संतानक तरु पर, सिद्ध बिम्ब शुभ होवें।
वसुविधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें॥27॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथासमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

सुरपति निज परिवार सहित जिन, समवशरण में आवें।
श्री सुपार्श्व की पूजा करके, धन्य धन्य गुण गावें॥
पारिजात तरु पर उत्तर में, सिद्ध बिम्ब शुभ होवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें॥28॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथसमवशरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भसहितचतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

किन्नर सुर परिवार सहित जिन, समवशरण में आवें।
चन्द्रनाथ की भक्ती गाकर, प्राणी पूज रचावें॥
पूर्व दिशा सिद्धार्थ नमेरू, सिद्ध बिम्ब शुभ होवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें।29॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमिपूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

चन्द्रनाथ का सुमिरन करके, जग में मान्य कहावे।
कल्पभूमि की पूजा करके, अतिशय सौख्य बढ़ावे॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब नित होवे।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, कर्म कालिमा खोवें॥30॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

देवइन्द्र परिवार सहित नित, प्रभु दर्शन को आवें।
करें प्रदक्षिणा चन्द्रनाथ की, पूजा भाव रचावें॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मन भावें।
कल्पवृक्ष की पूजा करके, प्राणी शिव सुख पावें॥31॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

त्रिकरणों युत इन्द्र राज भी, श्री जिन मंगल गावे।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, तीर्थंकर गुण गावे॥
सिद्ध बिम्ब पारिजात तरू पर, उत्तर दिश में सोहे।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्रभु पूजा मन मोहे॥32॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमिउत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

असुर कुमार परिवार साथ ले, प्रभु दर्शन को आवें।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर, सुविधिनाथ जय गावें॥
पूर्व नमेरु सिद्धार्थ तरू पर, सिद्ध बिम्ब शुभ होवें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुख होवे॥33॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

समवशरण में देव सभी मिल, आकर पुष्प चढ़ावें।
पुष्पदंत की पूजा करके, मन में हर्ष बढ़ावे॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुखकारी॥34॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

(शम्भु छन्द)

विद्युतेन्द्र परिवार सहित नित, समवशरण में आते हैं।
छम छम छम छम नाचें गावें, प्रभु चरणों झुक जाते हैं।
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, मोक्ष मार्ग पर बढ़ जावें॥35॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

सुपर्णेन्द्र परिवार सहित, जिन वन्दन करने को आवें।
कल्पवृक्ष भूमी की पूजा, करके मन अति हर्षावें॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, मोक्ष मार्गपर बढ़ जावें॥36॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

शीतलनाथ जिनेश्वर का शुभ, समवशरण है सुखकारी।
कल्पवृक्ष की पूजा करते, पूरब में आनंद कारी॥
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ नमेरू, पर अतिशय शोभा पावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुख पा जावें॥37॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

अग्नि कुमार परिवार सहित सुर, बैठ विमानों से आवें।
समवशरण का दर्शन करके, अतिशय पुण्य श्रेष्ठ पावें॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर प्राणी, क्षण में शिव सुख पा जाते॥38॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

वातकुमार इन्द्र मिलकर के, नाच नाच कर आते हैं।
कल्पवृक्ष भूमी की पूजा, करके हर्ष मनाते हैं॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते॥
अर्घ्य चढ़ाकर जग के प्राणी, शिव सुख क्षण में पा जाते॥39॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

मंगल द्रव्य ले देव स्तनित, जिन वन्दन को आते हैं।
जय जय जिनवर पूजा गाकर, मंगल भाव जगाते हैं।

पारिजात तरु सिद्ध बिम्ब शुभ, कल्पभूमि है मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, मनुज लोक के नर नारी।।40।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

समवशरण की अद्भुत रचना, धनपति नित्य रचाते हैं।
श्री श्रेयांस की पूजा करने, चक्रवर्ति भी आते हैं।।
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्धबिम्ब महिमा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुख पा जाते।।41।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

उदधिकुमार परिवार साथ ले, छम छम छम कर आते हैं।
हेम थाल में पुष्प सजाकर, जिनपद प्रीति बढ़ाते हैं।।
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें प्राणी, शिव सुख पा जाते।।42।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

घननं घननं घंट बजाकर, द्वीप कुमार जो आते हैं।
तीर्थंकर का दर्शन पाकर, वन्दन कर गुण गाते हैं।।
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुख पा जाते।।43।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

तीर्थंकर पद दिक् कुमार भी, झुकि झुकि शीश नमाते हैं।
समवशरण में आकार नित ही, पूजा भाव रचाते हैं।।

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजन, करके मन में अतिशय हर्षाते।।44।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

वासुपूज्य जिनवर का पावन, समवशरण सुखकारी है।
कल्पभूमि के सिद्ध बिम्ब की, महिमा अतिशय न्यारी है।।
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ नमेरू, बिम्ब में अति शोभा पावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, शिव सुख प्राणी पा जावें।।45।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

भाव भक्ति धर किन्नर सुर भी, हर्ष-हर्ष गुण गाते हैं।
प्रभु के समवशरण में आकर, भव दुख जलधि नशाते हैं।।
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, शिव सुख प्राणी पा जाते।।46।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

किंपुरुषेन्द्र सुशोभित होकर, जिन पद कमल चढ़ाते हैं।
जिनपद श्रद्धा भक्ती धरकर, समवशरण गुण गाते हैं।
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते।।47।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिमदिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

जय जय जय जय श्री जिनवर के, महोरगेन्द्र गुण गाते हैं।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर, प्रभु को शीश झुकाते हैं।।

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणाी पा जाते॥48॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

गन्धर्वेन्द्र सु पुलकित मन में, झूम-झूम कर आते हैं।
समवशरण में ढ़ोक लगाके, मनवांछित फल पाते हैं॥
शुभ नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते॥49॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

दृम दृम दृम मिरदंग बजाके, यहाँ नाचते आते हैं।
स्वर्णथाल में श्रीफल लेकर, जिन पद पूज रचाते हैं॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब है मनहारी।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजें प्राणी, बनते शिव के अधिकारी॥50॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

नित ही प्रभु की सेवा करने, भव्यजीव सब आते हैं।
विमलनाथ का दर्शन करके, कल्मष दूर भगाते हैं॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब है मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर प्राणी, बनते शिव के अधिकारी॥51॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

राक्षसेन्द्र शुभ बुद्धि उपाकर, समवशरण में आते हैं।
प्रभु के दर्शन करते ही सब, दुष्ट कर्म विनशाते हैं॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते॥52॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

नाच नाच कर भूत इन्द्र भी, जिनदर्शन को आते हैं।
प्रभु की पूजा मनहर गाकर, मन में अति हर्षाते हैं।
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ नमेरू, पर अतिशय शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते॥53॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

पिशाचेन्द्र परिवार सहित मिल, भक्ति भाव से आते हैं।
समवशरण की पूजा करके, सारे पाप नशाते हैं॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते॥54॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

इन्द्र भास्कर समवशरण में, नतमस्तक हो जाते हैं।
जिनानन्त का वैभव लखकर, मन में बहुत लजाते हैं।
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते॥55॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित मिल, दृम-दृम साज सजाते हैं।
मंगल वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, जिन पूजन शुभ गाते हैं॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर प्राणी, जिन पूजा करने जाते॥56॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

मिलकर देव ग्रहों के सारे, समवशरण में आते हैं।
जिनवर वाणी सुनकर सब ही, धन्य धन्य हो जाते है॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभ पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाते॥57॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

(हरिगीता छन्द)

नक्षत्रों के देव भी सारे, जय जय जय गुण गावें।
प्रभु की महिमा सुन्दर गाकर, शत शत ढोक लगावें।
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख आनन्दकारी॥58॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

देव प्रकीर्णक तारों के सब, छम छम छम कर आवें।
समवशरण की कर प्रदक्षिणा, प्रभु को शीश झुकावें॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुखकारी॥59॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

धर्म जलधि जिन धर्मनाथ की, पूजा अतिशयकारी।
कल्पभूमि के कल्पवृक्ष सब, मनवांछित सुखकारी॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, जग में मंगल कारी॥60॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

शांतिनाथ का दर्शन करके, कर्म कालिमा खोवे।
मंगल वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, परम हर्ष नित होवे॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी जग मनहारी॥61॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

है महान सौधर्म इन्द्र भी, पूजा भाव रचावे।
तननं तननं तान सजाकर, जिन वन्दन को आवे॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभ जानो।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पजूं, शिव सुखकारी मानो॥62॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

हो ईशान इन्द्र श्रद्धालू, जिन पद शीश झुकावे।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर, जिन पूजन शुभ गावे॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभ जानो।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुखकारी मानो॥63॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

समवशरण में सानत्कुमार सुर, श्री जिन चँवर ढुरावें।
प्रभु की पूजा दिव्य रचाकर, शत् शत् शीश झुकावें॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुख कारी॥64॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

कुन्थुनाथ के वचनामृत नित, भवि आताप निवारी।
कल्पभूमि जिन समवशरण की, अतिशय फल सुखकारी॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभ सोहें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव वनिता को मोहें॥65॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

सुर महेन्द्र जिन पद में आकर, श्रीफल कमल चढ़ावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, जिनवर महिमा गावे॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव संपद सुखकारी॥66॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

ब्रह्म इन्द्र जिन समवशरण में, बैठ विमानों आवें।
जिनवर की पूजा करके जो, शत-शत ढोक लगावें॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब नित सोहें॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव लक्ष्मी को मोहें॥67॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

प्रभु के आगे ब्रह्मोत्तरेन्द्र भी, भक्ती से गुण गावें।
कल्पभूमि के सिद्ध बिम्ब को, झुकि झुकि शीश नमावें॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सपंद सुख कारी॥68॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

हेमथाल में द्रव्य सजाकर, लान्तवेन्द्र भी आवें।
प्रभु के आगे शीश झुकाकर, हर्ष-हर्ष गुण गावें।
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभकारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, जग के सब नर नारी॥69॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं..

अरहनाथ की भक्ति स्तुति, गणधर सुन्दर गावें।
कल्पभूमि के सिद्ध बिम्ब की, पूजा नित्य रचावें॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुखकारी॥70॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

कापिष्ठेद्र भी अष्ट द्रव्य से, पूजा कर सुख पावे।
समवशरण में आकर नित ही, छम छम कर हर्षावे॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुखकारी॥71॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम सन्तानक नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

शुक्र इन्द्र सद्ज्ञान जगाकर, समवशरण में आवे।
जिनवर वाणी सुनकर नित ही, नित नव मंगल गावे॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुखकारी॥72॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

महा शुक्र के इन्द्र भाव से, वसु विधि अर्घ्य चढ़ावें।
दृम दृम दृम मिरदंग बजाकर, मंगल स्तुति गावें॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुखकारी॥73॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

मल्लिनाथ के समवशरण में, कल्पवृक्ष सुखदाई।
अष्टकर्म के नाश करन को, जो साधन है भाई॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभ जानो।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुखकारी मानो॥74॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

शतारेन्द्र आनन्दित होकर, जिन पद चँवर ढुरावें।
जय जय जय जय वन्दन करके, नित नवमंगल गावें॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शुभ जानो।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुखकारी मानो॥75॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

सहस्रार के इन्द्र भाव से, जिनपद प्रीति लागवें।
समवशरण में जिनवर पूजा, मन से दिव्य रचावें॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब जानो।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, शिव सुखकारी मानो॥76॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

(शम्भु छन्द)

मुनिसुव्रत के चरण कमल में, गणधर प्रीति जगाते हैं।
प्रभु की सुन्दर वाणी सुनकर, भविजन को समझाते हैं॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाने वाले, शिव पदवी को पा जाते॥77॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिन समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

ताथेई ताथेई नृत्य रचाकर, आनतेन्द्र गुण गाते हैं।
प्रभु के दर्शन करके नितही, जय जयकार लगाते हैं॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर प्राणी, शिव पदवी को पा जाते॥78॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिन समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

वाद्य बजाकर प्राणतेन्द्र भी, जिनवर महिमा गाते हैं।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर, धन्य धन्य हो जाते हैं॥
सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, जो जग मंगलकारी हैं॥79॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिन समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

आरणेन्द्र जिनपद में आकर, झुकि झुकि शीश नमाते हैं।
कल्पभूमि की पूजा करके, अतिशय सौख्य बढ़ाते हैं॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुख पा जाते॥80॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिन समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजत सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

अच्युतेन्द्र जिन भक्ती करने, बैठ विमानों में आवें।
जिनवर की स्तुति पूजा कर, नत मस्तक पद हो जावें॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब अतिशय जानो।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, शिव पद सुखकारी मानो॥81॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

नमि जिनवर का तन अति सुन्दर, तीन लोक सुखकारी है।
पाण्डुक शिला पे न्हवन प्रभू का, सुरपति करता भारी है॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, प्राणी शिव सुख पा जाते॥82॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

नमि जिनवर के समवशरण में, कल्पभूमि अति न्यारी है।
पश्चिम दिश संतानक तरु पर, प्रतिमा मंगलकारी है॥
सिद्ध बिम्ब सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध प्रदाता कहलाए।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख प्राणी पा जाए॥83॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

कल्पवृक्ष भू में सुरतरु की, शोभा अति मन भावन है।
जो भवि पूजें मन वच तन से, हो जाता वह पावन है॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब मनहारी हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाने वाले बनते शिव अधिकारी हैं॥84॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

नेमिनाथ के समवशरण में, धर्मवृद्धि पावें प्राणी।
चहुँदिश कल्पभूमि में राजित, प्रतिमा सुन्दर कल्याणी॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पदवी नर पा जाते॥85॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

नेमिनाथ के समवशरण में, रत्नों की छवि न्यारी है।
कल्पभूमि सिद्धों की प्रतिमा, पूजें सुर नर नारी है॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पदवी नर पा जाते॥86॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

नेमिनाथ का समवशरण सब, ग्रह बाधा का नाशी है।
कल्पभूमि सिद्धों का दर्शन, समकित ज्ञान प्रकाशी है॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पदवी नर पा जाते॥87॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् सन्तानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

प्राणिमात्र के अभय प्रदाता, नेमिनाथ जिन स्वामी हैं।
कल्पभूमि के कल्पवृक्ष नित, दुख भंजक अभिरामी हैं॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पदवी नर पा जाते॥88॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

पार्श्वनाथ के दर्शन करके, मुक्ति रमा वश हो जावे।
तीर्थंकर के समवशरण में, कर्म कालिमा खो जावे॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पुर में जा बश जावें॥89॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

पार्श्वनाथ के समवशरण में, कल्पभूमि अघहारी है।
जिनवर पूजा भक्ति रचाते, जो जग मंगलकारी है॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पावें।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, शिव पुर पदवी पा जावें॥90॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

पार्श्वनाथ का समवशरण शुभ, भविजन क्लेष निवारे हैं।
क्षमाभाव गुण जो भी धारे, प्रभु उसको ही तारे हैं॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पुर पदवी पा जाते॥91॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पश्चिम दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

जिनवर समवशरण में चहुँ दिश, मानस्तंभ सजाया है।
पद्मावति धरणेन्द्र सु पूँजित, पार्श्वनाथ गुण गाया है॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सम्पती पा जाते॥92॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारितजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

समवशरण श्री महावीर का शुभ अतिशय दिखलाता है।
कल्पवृक्ष से माँगें जो भी, तुरत उसे मिल जाता है॥
नित नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, निज निधि वे नर पा जाते।93॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पूर्व दिक् नमेरु सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर जिन के गुण गाकर, प्रतिभा शाली हो जाते।
कल्पभूमि के कल्पवृक्ष की, महिमा अतिशय बतलाते॥
दक्षिण दिश मंदार वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब अतिशय कारी॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव सुख पाते नर नारी॥94॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि दक्षिण दिक् मंदार सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

महावीर का समवशरण शुभ, भव दुख संकटहारी है।
जो भवि ध्यावे मन वच तन से, पावें सन्मति न्यारी है॥
संतानक सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब अतिशय कारी।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पद पावें नर नारी॥95॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि पशिमच दिक् संतानक सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतुः सिद्ध प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं...

जिनवर समवशरण सर्वोत्तम, जग में मंगल कारी है।
कल्पभूमि की प्रतिमा नित ही, भविजन दुःख निवारी है॥

पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष पर, सिद्ध बिम्ब शोभा पाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिव पदवी नर पा जाते॥96॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि उत्तर दिक् पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुर्मानस्तम्भ सहित चतु: सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्यं

दोहा– समवशरण में कल्प भू, सिद्ध बिम्ब मनहार।
पूजा करके भाव से, होवें भव से पार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर, समवशरण स्थित कल्पवृक्षभूमिसम्बन्धि षण्णवति सिद्धार्थ वृक्ष मूलभाग विराजमान चतुरशीत्यधिकत्रिंशतसिद्ध प्रतिमा तत्सम्बन्धितावत्प्रमाण मानस्तम्भ चतुर्दिक विराजमान षट् त्रिंशदधिक पंचदश- शतजिनप्रतिमाभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जाप्य : ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

जयमाला

दोहा– कल्पवृक्ष भूमी रही, वाञ्छित फल दातार।
जयमाला गाते विशद, पाने भव दधि पार॥

(छन्द मोतियादाम)

प्रभू का समवशरण शुभकार, परम शांती का है आधार।
भव्य जो ध्याते मन वचकाय, लब्धि क्षायिक पाते हितदाय॥
कल्पतरु भू छटवीं कहलाय, जहाँ की महिमा कही ना जाय।
चतुर्दिक तरु हैं चार प्रकार, भूप तरु है जिनमें मंदार॥1॥
देय पानांग तरू शुभ पेय, वृक्ष तूर्यांग वाद्य शुभ देय।
भूषणांग भूषण का दातार, भोजनांग तरु देता आहार॥
वस्त्रांग करता है वस्त्र प्रदान, आलयांग आलय का दे दान।
करे दीपांग सुतरू प्रकाश, भाजनांग देता भोजन खास॥2॥
तरू मालांग देय शुभ माल, देय तेजांग सुतेज विशाल।
कल्पतरू भूमी है मनहार, भव्य जीवों को है सुखकार॥
चतुर्दिक तरुसिद्धार्थ अनेक, रहे उन्नत सुंदर प्रत्येक।
गुणित द्वादश तरु पहिचान, प्रभू के तन से उच्च महान्॥

रहे प्रेक्षागृह महिमावान, श्रेष्ठ क्रीड़ाशाला पहिचान।
तरू सिद्धार्थ के मूल प्रदेश, चतुर्दिश सिद्ध बिम्ब सुविशेष॥
कोट त्रय वेष्टित है सुविशाल, पीठ त्रय की बहुविध गुणमाल।
पीठ मणिमय गाये शुभकार, श्रेष्ठ है सिद्ध बिम्ब मनहार॥
नहीं जिन की महिमा का पार, करें जो भव दु:खों को क्षार।
कल्पभूमी में आते देव, पूजते हैं जिन बिम्ब सदैव॥
प्राप्त करते जो पुण्य अपार, बने अनुक्रम से वे अनगार।
कर्म का करके पूर्ण विनाश, करें फिर सिद्ध शिला पर वास॥

दोहा– कल्पवृक्ष भूमी 'विशद', पूजें जो भवि जीव।
मुक्ती पथ पाथेय वे, पावें पुण्य अतीव॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षभूमिमंडित श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं...

।।शान्तये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

कवित्त छन्द

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र नृप, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ भवन भूमि पूजा प्रारभ्यते–9

अथ स्थापना (शम्भुछन्द)

कल्पवृक्षभूमी के आगे, चौथी वेदी महिमावान।
भवनवासि देवों से रक्षित, ध्वज घण्टा युत रही महान॥
इसके आगे भवन भूमि नित, शुभ रत्नों युत गाई श्रेष्ठ।
जिनमें सुर युगलों के द्वारा, जिनाभिषेक शुभ होय यथेष्ठ॥
चहुँ दिश नव-नव स्तूपों में, जिन सिद्धों के बिम्ब महान।
सब ही सुन्दर दिव्य मनोहर, रत्न विनिर्मित अतिशय वान॥

रत्नविनिर्मित स्तूपों की, पूजन का सौभाग्य जगाय।
'विशद' भाव से वन्दन करके, मंगलमय आह्वान कराय।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवनभूमि सम्बन्धि नवनवस्तूपमध्य विराजमान सर्व अर्हन्त सिद्ध प्रतिमा समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवनभूमि सम्बन्धि नवनवस्तूपमध्यविराजमान सर्व अर्हन्त सिद्ध प्रतिमा समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवनभूमि सम्बन्धि नव नव स्तूपमध्य विराजमान सर्व अर्हन्त सिद्ध प्रतिमा समूह।! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चाल–होली की (ताल जत्त)

क्षीरो दधि जल झारी लीनो, केशर रंग मिलाय।
तीन करण युत तीन धार दे, जनम मरण नशि जाय।
अर्चों नीर सों, श्री सिद्धबिम्ब मनहार, अर्चों नीरसों ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

केसर अरु मलयागिर चंदन, कुंकुम संग घिसाय।
भव-भव के दुख मैटन हेतू, जिन पद शीश झुकाऊ।।
चर्चों गंध सों, श्री सिद्धबिम्ब मनहार अर्चों गंध सो ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः चंदन निर्व. स्वाहा।

तन्दुल धवल अखण्डित लेकर, हेम पात्र भर लाय।
अक्षय सुफल परम पद पाने, जिन पद प्रीति लगाय।
अर्चों पुञ्जसों, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार अर्चों पुंजसौं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कल्पवृक्ष पारिजात नमेरू, जनित सुमन शुभ लाय।
ब्रह्मपुत्र मद मोह हरन को, जिन पद पुष्प चढ़ाय।
अर्चों पुष्पसौं, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार, अर्चों पुष्पसों ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नेवज विविध मनोज्ञ सरसमय, घृत मय श्रेष्ठ बनाय।
क्षुधा रोग निरमूल करन को, जिन पद भेंट चढ़ाय।।
अर्चों सुचरुसों, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार अर्चों सुचरुसों ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः चरुं निर्व. स्वाहा।

मणि मंडित घृत पूरित दीपक, उज्ज्वल ज्योति जगाय।
दीप धरों जिन चरणों आगे, समकित ज्ञान लहाय।
अर्चों दीपसों, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार, अर्चों दीपसों ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः दीपं निर्व. स्वाहा।

अगर तगर मलयागर चन्दन, जिन चरणन में लाय।
धूप घटों में धूप खेय कर, अष्ट कर्म जरि जाय।
अर्चों धूपसों, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार, अर्चों धूपसों ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः धूपं निर्व. स्वाहा।

नारिकेल बादाम छुहारा, पिस्ता लौंग मंगाय।
महामोक्ष फल दायक जिनवर, पूजों चित्त लगाय।
अर्चों सुफलसों, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार, अर्चों सुफलसों।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः फलं निर्व. स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्पचरुअरु, दीप धूप फल लाय।
अर्घ्य समर्पित करि जिन पद में, आवागमन मिटाय।
अर्चों अर्घ्य सों, श्री सिद्ध बिम्ब मनहार, अर्चों अर्घ्यसों।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि नव नव स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।.

सोरठा

क्षीरोदधि शुभ नीर, कंचन झारी में भरें।
जिनपद ढार सुनीर, शांति धारा त्रय करें।।

।।शांतये शांतिधारा।।

कमल केतकी पुष्प, रजतपात्र धर लाय हम।
कर पुष्पाञ्जलि पुञ्ज, जिन पद चढ़ा सु यश करें।।

।।दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

अर्थ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– सिद्ध बिम्ब अर्हन्त के, पूज रहे हम आज।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव पद ताज।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(शम्भू छन्द)

आदिनाथ के समवशरण में, भवनभूमि मन भाती है।
जिसमें जिन सिद्धों की प्रतिमा, चहुँ दिश सौख्य दिलाती है।।
मणि रत्नों से निर्मित प्रतिमा, नव नव स्तूपों युत श्रेष्ठ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, चहुँ दिश शांती मिले यथेष्ठ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथीमध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भवन भूमि में चहुँ दिश नव नव, हैं स्तूप सदा सुखकार।
जिसमें सिद्ध बिम्ब शुभकारी, श्रेष्ठ बहत्तर मंगलकार।।
अजितनाथ के समवशरण में, नवस्तूप रहे अविनाश।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, दुख दरिद्र का होय विनाश।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथीमध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्भव जिन के समवशरण में, नवस्तूप बने मनहार।
जिनमें सिद्ध बिम्ब सुखदायी, रहे बहत्तर मंगलकार।।
भवन भूमि अतिशय सुन्दर है, सुर गण महिमा गाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, सुख समृद्धी पाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथीमध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनंदन के समवशरण में, सुर नर गणधर आते हैं।
ध्वजा पताकाओं से शोभित, भवन भूमि को जाते हैं।।
नित अर्हन्त सिद्ध की प्रतिमा, नव स्तूपों में मनहार।
तिनको पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्म वृद्धि हो मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथीमध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भवनभूमि के भवनों में सुर, करते जिनअभिषेक महान।
समवशरण में सुमतिनाथ की, पूजा गणधर करें प्रधान।।
चहुँ दिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों में मनहार।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्यसे, धर्मवृद्धि हो मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथीमध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्मनाथ के समवशरण में, भवनभूमि अति शोभ रही।
शुभ तोरण द्वारों से निर्मित, भवनभविक मन लोभ रही।।
चहुँदिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों युत मनहार।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्म वृद्धि हो मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथीमध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं स्तूप भवन भूमी में, छत्रादिक वैभव से युक्त।
जिन सुपार्श्व के समवशरण में, सुन्दर वीथी से संयुक्त।।
चहुँ दिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों युत मनहार।
जिनको पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्म वृद्धि हो मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों मंगल द्रव्य सहित शुभ, शोभित होते हैं स्तूप।
चन्द्रनाथ के समवशरण में, पूजा करते सुर नर भूप।।
चहुँ दिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों में मनहार।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्य से, होकर के मैं भी अविकार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुविधिनाथ का वन्दन करके, मन आनन्दित हो जावे।
समवशरण की भवन भूमि में, चैत्य वृक्ष शोभा पावे।।
चहुँ दिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों सहित महान।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्मवृद्धि का दो प्रभु दान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

समवशरण निर्मित कुबेर से, शीतल जिन का मंगलकार।
जो जिन सिद्ध बिम्ब को पूजें, त्रिभुवन पति बनते अविकार।।
चहुँ दिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों सहित महान।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्मवृद्धि का दो प्रभु दान।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कमलासन पे समवशरण में, शोभित होते श्रेय जिनेश।
तीन लोक के अधिपति होकर, कर्म शत्रु दल नशें विशेष।।
चहुँ दिश जिन सिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों युत मनहार।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्मवृद्धि हो मंगलकार।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच-कल्याणक धारी जिनवर, कर्म कालिमा नाश करें।
वासुपूज्य जिन की पूजा कर, प्राणी दुख दारिद्र हरें।
चहुँ दिश जिनसिद्धों की प्रतिमा, नव स्तूपों सहित महान।
तिनकों पूजें अष्ट द्रव्य से, धर्मवृद्धि का पाएँ दान।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनसमवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

रत्नजड़ित स्तूप बहत्तर, को हम शीश झुकाते।
विमल नाथ जिनवर की भक्ती कर सौभाग्य जगाते।।
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन विविध रत्नों से शोभित, पूजा भवि भव नाशें।
श्री अनन्त महिमा गुण मण्डित, लोकालोक प्रकाशें।।
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के अग्र विहार समय में, धर्म-चक्र नित चालें।
धर्मनाथ का वंदन करके, समकित ज्ञान जगालें।।
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिस्तूप मध्य मकराकर, तोरण सुन्दर शोभे।
शांतिनाथ के समवशरण में, श्री वृद्धी नित होवे।।
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन भूमि स्तूप सूर्य सम, मणि किरणों से सोहे।
त्रिभुवन में श्री कुन्थु जिनेश्वर, परम पूज्य मन मोहे।।

नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥17॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचे हैं स्तूप स्वंय से, चैत्यवृक्ष सम भाई।
समवशरण में अर जिनवर ने, शोभा अद्भुत पाई॥
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥18॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य जग श्रेष्ठ जिनेश्वर, मल्लिनाथ कहलाए।
दिव्य मणी रत्नों से निर्मित, जिन स्तूप बताए॥
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥19॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव से क्रोध हनन कर, व्रतधारी कहलाये।
मुनिसुव्रत का नाम जगत में, अति आनंद दिलाये॥
नव नव है स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के बन जावें अधिकारी॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिनवर की महिमा ऐसी, सूर्य समान विभासे।
प्रभु की पूजा मन वच करके, भेद-विज्ञान प्रकाशे॥
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥21॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वनभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया भाव से प्राणी रक्षा, करके मन हर्षावें।
नेमिनाथ पद शीश झुकाकर, सुख सौभाग्य बढ़ावें॥
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥22॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के चरणांबुज में, मुनि गण भक्ति लगावें।
विशद करें स्तुति श्री जिन की, आवगामन मिटावें।
नव-नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥23॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाके भविजन समवशरण में, महावीर गुण गावें।
श्री जिन पूजन भाव से करके, अर्हत्सम पद पावें॥
नव नव हैं स्तूप चतुर्दिक, सिद्ध बिम्ब अविकारी।
पूजा करके मोक्ष महल के, बन जावें अधिकारी॥24॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र समवशरण स्थित भवनभूमि पार्श्वभाग वीथी मध्य नव-नव स्तूप विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: अर्घ्यं...

दोहा

भवनभूमि जिन सिद्ध को, पूजें मन वच काय।
रिद्धि सिद्धि नव निधि मिले, अन्तिम शिवपुर पाय॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वहा।

॥शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

सोरठा– शत-शत शीश झुकाय, भवन भूमि जिनराज को।
जयमाला शुभ गाय, जिनवर सम पदवी मिले॥

चौपाई

जय जय समवशरण जिनराय, वीतराग छवि मन से ध्याय।
जिनवर समवशरण सुखकार, सकल व्याधि संकट सब टार॥1॥
भवन भूमि नव-नव स्तूप, सिद्ध बिम्ब हैं पूज्य अनूप।
जिनवर समवशरण सुखकार, सिद्ध बिम्ब शोभे मनहार॥2॥
मंगल द्रव्य रखे शुभकार, हैं स्तूप सुमंगलकार।
रचना भवनों की मन भाय, भांति-भांति के ध्वज फहराय॥3॥
सुरपति भक्ति करन को आय, जय जय जय जिनवर गुणगाय।
अमर ढौरने चँवर जो आय, शत शत वन्दन पूजा गाय॥4॥
घन घन घन घन घंट बजाय, दृम-दृम-दृम मिरदंग सजाय।
नूपुर झन झन झन झंकाय, तननन तननन तान सुनाय॥5॥
फिर सुर दिव्य आरती गाय, सिद्ध बिम्ब जिन शीश झुकाय।
भव्य जीव अभिषेक रचाय, धन्य धन्य जिनवर गुण गाय॥6॥
जय जय जय आनंद अपार, प्रभु भव सागर करते पार।
प्रभु शरणागत बन जो आय, सुख सौभाग्य सुजस पद पाय॥7॥
जिन पूजा कर पुण्य विशाल, अर्जित कर हों माला-माल।
संयम का लेकर आधार, शिव पद पाते हो अविकार॥8॥
'विशद' ध्यान का है ये सार, प्राणी होते भव से पार।
नाथ पूर्ण हो मेरी आस, शिवपुर में हो मेरा वास॥9॥

दोहा

भवन भूमि के बिम्ब को, मन से जो भवि ध्याय।
सुख संपद सब भोगकर, शिव पद सुख को पाय॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भवन भूमि सम्बन्धि सर्व स्तूप मध्य विराजमान सर्व जिन सिद्ध प्रतिमाभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

कवित्त छन्द

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥

वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र नृप, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

इत्याशीर्वाद:

अथ श्री मंडप भूमि पूजा प्रारभ्यते–10

अथ स्थापना (शम्भु छन्द)

जो रत्नों के स्तम्भों पर, मुक्ता मालादिक से पूर्ण।
दिव्य श्री मण्डप भूमी है, अष्टम द्वादश गण परिपूर्ण।
इनमें गणधर मुनि सब तिष्ठें, जिनका हम करते आह्वान।
जिनवर समवशरण जो पूजें, जग में वे हो जाँय महान॥
श्री मण्डप भूमी में जाकर, पूजा का सौभाग्य मिले।
हृदय सरोवर में मेरे भी 'विशद' ज्ञान का फूल खिले॥

ॐ ह्रीं मंडपभूमि मंडित समवशरण विभूति धारक श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री मंडपभूमि मंडित समवशरण विभूतिधारक श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री मंडपभूमि मंडित समवशरण विभूति धारक श्री वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

यमुना का जल भर लाए, प्रभु चरणों धार कराये।
श्री मण्डप भू सुखदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन लाए, भव नाश हेतु हम आए।
श्री मण्डप भू शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षत लाए, अक्षय सुख पाने आए।
श्री मण्डप भू शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: अक्षय प्रद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कमल केतकी लाए, संताप नशाने आए।
श्री मण्डन भू शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आए।
श्री मण्डप शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक शुभ लाये, प्रभु मोह तिमिर नश जाए।
श्री मण्डप भू शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप दशांग चढ़ाएँ, भव-भव के कर्म नशाएँ।
श्री मण्डप भू शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल थाली भर लाएँ, प्रभु शिवपद हेतु चढ़ाएँ।
श्री मण्डप भू शुभदाई, हम पूज रहे है भाई।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हेमपात्र बनवाएँ, सब आठों द्रव्य सजाएँ।
श्री मण्डप भू शुभदाई, हम पूज रहे हैं भाई।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डपभूमि मंडित चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित भगवत् जिनेन्द्राय: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

क्षीरोदधि सम नीर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं
हरण करूँ भव पीर, शांती धारा दे विशद।।1।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित पुष्प सजाय, स्वर्ण पात्र में लाये हैं
पुष्पाञ्जलि को आय, जिन पद अर्चा के लिए

दिव्य पुष्पाजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– परमेश्वर हे परम जिन, त्रिभुवन के तुम नाथ।
प्रभु को पूजें हम सदा, पुष्पाञ्जलि के साथ।।

।।इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(कवित्त छन्द)

वृषभदेव के समवशरण में, द्वादश कोठे सुन्दर जान।
भवि जीवों को है सुखदायी, एक सौ बीस कोस का मान।।
चौंसठ ऋद्धीधारी गणधर, का पहले में है स्थान।।
श्री मण्डप युत समवशरण शुभ, सुर नर मुनि से वन्द्य महान।।1।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री वृषभदेव जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के समवशरण में, श्री मण्डप भू शोभावान।
भवि जीवों को है सुखदायी, एक सौ पन्द्रह कोस प्रमाण।।
अनुपम मणिमय दीवालों युत, बारह कोठे बने प्रधान।
श्री जिनवर का अतिशय ऐसा, सुरनर मुनि से पूज्य महान।।2।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिन का समवशरण शुभ, पुष्पमाल संयुक्त प्रधान।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, एक सौ दश कोसों मान॥
जहाँ देवियाँ कल्पवासिनी, द्वितिय कोठों में मनहार।
समवशरण शुभ सुर नर मुनि से, पूज्य कहा है मंगलकार॥3॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री सम्भनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन के समवशरण में, सम्यग्दृष्टी जीव महान।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, इक सौ पाँच कोस का मान॥
आर्यिकाएँ अतिशय कारी शुभ, तृतीय कोठे में मनहार॥
श्री मण्डप युत समवशरण है, सुर नर मुनि युत मंगलकार॥4॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री अभिनन्दनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ का समवशरण शुभ, सुर असुरों के विघ्न नशाय।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, गणधर मुनि सौ कोष कहाय॥
श्रेष्ठ देवियाँ ज्योतिष वासी, चौथे कोठे में पहिचान।
श्री मण्डप युत समवशरण भू, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥5॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभु के समवशरण में, मण्डप मणिमय शोभ रहा।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, मात्र पंचानवे कोस कहा॥
व्यन्तर देवियाँ जिन भक्ती युत, पंचम कोठे में पहिचान।
समवशरण की महिमा ऐसी, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥6॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मण्डप भू जिन सुपार्श्व की, रत्न स्तम्भों पर शुभकार।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, नब्बे कोस रहे मनहार॥
जहाँ देवियाँ भवन वासिनी, षष्ठम् कोठे में पहिचान।
श्री मण्डप युत समवशरण शुभ, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥7॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नकांति युत श्री मंडप में, चन्द्रनाथ जिन शोभ रहे।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, मात्र पच्चासी कोस कहे॥
देव भवनवासी का भाई, सप्तम् कोठे में स्थान।
श्री मण्डप युत समवशरण में, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥8॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत का समवशरण शुभ, तीन लोक में सुन्दर जान।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, अस्सी कोस का रहा प्रमाण॥
किन्नरादिक व्यंतर देवों का, अष्टम कोठे में स्थान।
श्री मण्डप भू समवशरण में, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥9॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मंडप भूमि विराजमान श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलजिन के समवशरण में, भवि जीवों का है स्थान।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, मात्र पचहत्तर कोस महान॥
सूर्यादिक ज्योतिष देवों का, नवम् कोष्ठ में है स्थान॥
श्री मण्डप युत समवशरण शुभ, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥10।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेय नाथ की महिमा ऐसी, प्रकट करें भवि जीव स्वभाव
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, सत्तर कोस में रहे प्रभाव॥
देव इन्द्र सोलह वर्गों के, दशम कोष्ठ में रहे महान॥
श्री मण्डप युत समवशरण में, सुर नर मुनि पाते स्थान।11॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य जिन समवशरण में, सर्व सिद्धि का देते दान।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, पैंसठ कोस का रहे प्रमाण॥
एकादश कोठे में राजा, चक्रवर्ति नर का स्थान
श्री मण्डप युत समवशरण में, सुर नर मुनि से पूज्य महान॥12॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा)

विमल नाथ के समवशरण में, मैत्री भाव जगाएँ।।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, साठ कोस मुनि गाएँ।।
सिंह गजादि तिर्यञ्च जीव सब, द्वादश कोष्ठ में आवें।
श्री मण्डप युत समवशरण में, सुर नर मुनि सब जावें।।13।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मण्डप में आकर भविजन, जिन भक्ती सब पाते।
द्वादश के शुभ वर्ग से भाजित, पचपन कोस बताते।।
जिनानन्त के दर्शन करके, भविजन रोग नसावें।
श्री मण्डप युत समवशरण में, सुर नर मुनि सब जावें।।14।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनद रचित श्री मण्डप भाई, अतिशयकारी जानो।
भवि जीवों को है सुखदायी, पचास कोस का मानो।।
धर्मनाथ के समवशरण में, वैभव सब ही पावें।
श्री मण्डप युत समवशरण में, सुर नर मुनि सब आवें।।15।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों पद से युक्त जिनेश्वर, समवशरण में गाये।
भवि जीवों को है सुखदायी, पैंतालीस कोस बताए।।
जय जय शांतिनाथ सुखकारी, तुम सम और न कोई।
श्री मण्डप युत समवशरण शुभ, सुर नर पूजित होई।।16।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों पद से युक्त जिनेश्वर, का मंडप शुभ गाया।
भवि जीवों को है सुखदायी, चालीस कोस बताया।।

कुन्थुनाथ जिन स्वामी भगवन्, वीतराग गुण पाये।
श्री मण्डप की महिमा ऐसी, सुर नर पूज रचाये।।17।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

श्री मण्डप में सुरललनाएँ जिन भक्ती शुभ करें महान।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, पैंतिस कोस का है स्थान।।
कामदेव चक्रेश जिनेश्वर, तीर्थंकर पद के धारी।
श्री मण्डप में सुर नर मुनि से, वंदित हैं प्रभु अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय जय जय मल्लिनाथ जिन, भविजन पूजित मंगलकार।
तव श्री मण्डप तीन लोक में, भविजन को सुख का आधार।।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, तीस कोस का रहा प्रमाण।।
जिन मण्डप की महिमा ऐसी, सुर नर पूजित कहा महान।।19।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया धुरन्धर विघ्न महीधर, मुनिसुव्रत जयवंत जिनेश।
दिव्य श्री मण्डप जिन प्रभु का, नत मस्तक हों जीव विशेष।।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, पच्चिस कोस का रहा प्रमाण।।
श्री मण्डप की महिमा ऐसी, तीन लोक में रहा महान।।20।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण जजें जो जीव प्रभू के, पावें अक्षय निधि भंडार।
धनद रचित श्री मण्डप में तो, जिनवर महिमा अपरम्पार।।
बारह के शुभ वर्ग से भाजित, बीस कोष का रहा प्रमाण।
नमि जिनवर की महिमा ऐसी, तीन लोक में पूज्य महान।।21।।

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्योति जगाकर नेमी, जिन मंडप में शोभा पाय।
करुणासागर कृपा सिन्धु तव, नाम लेत भव दुःख पलाय।।

बारह के शुभ वर्ग से भाजित, पन्द्रह कोस का रहा प्रमाण।
श्री मण्डप की महिमा ऐसी, गणधर मुनि से पूज्य महान॥22॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के श्री मण्डप में, श्रुतज्ञानी मुनि रहे महान।
दो सौ अठासी से है भाजित, मात्र सु पच्चीस कोस प्रधान॥
सब जीवों को श्री मण्डप में, हर्ष हृदय में पावन आप।
प्रभु की अद्भुत महिमा ऐसी, मैत्रीभाव सदा जग जाय॥23॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान देख जिनवर का, सुर नर मुनि सब टेकें माथ।
महावीर का अतिशय ऐसा, सिंह गाय सब बैठें साथ॥
पाँच के घन का दसवें गुणका, नौ से भाजित धनुष प्रमाण।
श्री मंडप की पूजा करके, पाएँ श्री सुख को भगवान॥24॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डपभूमि विराजमान श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा–तीर्थंकर चौबीस जिन, पूजें मन वच काय।
श्री मंडप भू में स्वयं, सब श्रिय सुख मिल जाय॥25॥

ॐ ह्रीं जिन समवशरण स्थित श्री मण्डप भूमि विराजमान श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: महार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा–समवशरण राजित प्रभो, श्री मण्डप सुखदाय।
गाएँ शुभ जयमालिका, तुष्टि करो जिनराय।

चौपाई

जय जय तीर्थंकर शिवकारी, धनद रचित मंडप सुखकारी।
जय जय मानस्तंभ मनोहर, श्री मण्डप त्रिभुवन में सुन्दर॥1॥

द्वादश कोष्ठ सु मण्डित मण्डप, चहुँ दिश लगे मनोहर मण्डप।
शुभ अक्षीण महानस मनहर, प्रथम कोष्ठ में मुनिवर गणधर॥2॥
द्वितिय कल्पवासिनी देवी, जो हैं जिनवरपद की सेवी।
तृतिय कोष्ठ में हैं आर्यिकाएँ, फिर ज्योतिष्कों की ललनाएँ॥3॥
पंचम में व्यंतर महिलाएँ, षष्ठम् भवनवासि ललनाएँ।
भवनवासि सप्तम में जानो, अष्ठम् में व्यंतर पहिचानो॥4॥
नवम् कोष्ठ ज्योतिष का भाई, दशम् कोष्ठ वैमानिक पाई।
ग्यारहवे में नर चक्री जावें, द्वादशवाँ तिर्यंच भी पावें॥5॥
द्वादश सभा कहीं मनहारी, श्री मण्डप भूमी है प्यारी।
तीन लोक के प्रभु अधिकारी, जय जय जिनवर तुम अविकारी॥6॥
जय जय मण्डप भू हितकारी, तव दर्शन भवि क्लेष निवारी॥
कई स्तुतियाँ गणधर गावें, जिन पूजा कर हर्ष मनावें॥7॥
जय जय श्री मण्डप को ध्याएँ, कर्म कालिमा दूर भगाएँ।
श्री मण्डप की आरति गावें, सुख संपद शिव पद को पावें॥8॥
हम भी प्रभु को पूज रचाएँ, अनुक्रम सों शिव पद को पाएँ।
यही भावना एक हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी॥9॥
जग के तुम त्राता कहलाए, अत: द्वार हम तुमरे आए।
पूजा का फल हम पाएँगे, निश्चय से शिवपुर जाएँगे॥10॥
भव का भ्रमण मिटेगा सारा, लक्ष्य यही है एक हमारा।
'विशद' भावना हम यह भाएँ, अति शीघ्र शिवपदवी पाएँ॥11॥

दोहा– श्री मण्डप भू में प्रभो, शोभित हैं जिनराज।
वन्दन है शुभ भाव से, जिनपद में मम आज॥

ॐ ह्रीं श्री जिन समवशरण स्थित श्री मण्डप भूमि विराजमान श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।

(कवित्त छन्द)

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजैं, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वह धन धान्य सम्पदा वैभव, सुख सम्पत्ती पाएँ अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम लहै मुक्तिपद सार॥

(इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्)

अथप्रथम पीठ पूजा प्रारभ्यते–11

अथ स्थापना, (कवितछन्द)

पंचम वेदि के बाद पीठ शुभ, वैडूर्यमणि से बनी महान।
द्वादश कोठे चार वीथियाँ, सोलह जिसमें हैं सोपान।।
चूड़ी सम वर्तुल पीठों पर, चहुँ दिश में यक्षेन्द्र विशेष।
शिर पर धर्मचक्र जो धारें, समवशरण में पूज्य जिनेश।।
समवशरण में जाकर हमको, पूजा का सौभाग्य मिले।
हृदय कमल के सिंहासन पर 'विशद' ज्ञान का दीप जले।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित यक्षेन्द्रमस्तकोपरिविराजमान चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! युक्तजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित यक्षेन्द्र मस्तकोपरिविराजमान चतुश्चतुर्धर्मचक्र समूह! युक्तजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापननं। ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित यक्षेन्द्रमस्तकोपरि- विराजमान चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! युक्तजिनेन्द्र अत्र नम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छन्द:—अष्टपदी

क्षीरोदधि उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
दो हमको भव का तीर, मैटो जनम जरा।।
ले धर्मचक्र सिर यक्ष, मन में मोद भरे।
सब रिद्धि-सिद्धि से दक्ष, अर्चा कर्म हरे।।1।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थत यक्षेन्द्र मस्तकोपरिधर्मचक्र विभूषित तीर्थंकरेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन में केशर गार, कुंकुम रंग भरा।
प्रभु भव आताप निवार, तुम पद गंध धरा।।
ले धर्म चक्र सिर यक्ष, मन में मोद भरे।
सब रिद्धि सिद्धि कर लेय, अर्चा कर्म हरे।।2।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थत यक्षेन्द्र मस्तको परिधर्मचक्रमहिमामण्डित तीर्थंकरेभ्य: चन्दनं....

अक्षत सु अखण्डित लाय, कंचन थाल भरा।
मम अक्षय सुख मिल जाय, तव पद पुञ्ज करा।।
ले धर्मचक्र सिर यक्ष, मन में मोद भरे।
सब रिद्धि-सिद्धि में दक्ष, अर्चा कर्म हरे।।3।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थत यक्षेन्द्र मस्तकोपरिधर्म चक्रमहिमामण्डित तीर्थंकरेभ्य: अक्षतान्...

सुरतरु के सुमन अपार, चुन चुन कर लाये।
मम काम बिथा निरवार, प्रभु शरणा आये।।
शुभ धर्मचक्र सिर यक्ष, प्रभु को यक्ष भजे।
सब रिद्धि-सिद्धि कर लेय, जो जिन पीठ जजे।।4।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थयक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्र महिमामण्डित- तीर्थंकरेभ्य: पुष्पम्...

मन मोहक मोदक लाय, मणिमय थाल भरे।
प्रभु क्षुधा रोग विनशाय, तव पद अग्र धरे।।
शुभ धर्मचक्र ले यक्ष, द्वारे पर सोहें।
सब रिद्धि-सिद्धि के साथ, सब का मन मोहें।।5।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित- तीर्थंकरेभ्य: नैवेद्यं...

रत्नों का दीपक लेय, जगमग ज्योति जरे।
प्रभु तव पद अग्र धरेय, केवल ज्ञान वरे।।
शुभ धर्मचक्र ले यक्ष, द्वारे पर सोहें।
सब रिद्धि-सिद्धि के साथ सब का मन मोहें।।6।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित- तीर्थंकरेभ्य: दीपं....

कृष्णागरु चन्दन लाय, हे प्रभु खेवत हैं।
प्रभु अष्ट करम जरि जाय, तुम पद सेवत हैं।।
शुभ धर्मचक्र ले यक्ष, द्वारे पर सोहें।
सब रिद्धि-सिद्धि के साथ सब का मन मोहें।।7।।

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित- तीर्थंकरेभ्य: धूपं...

शुचि श्रीफल आम अनार, पिस्ता लौंग करे।
प्रभु भव बाधा निरवार, तुम पद भेंट धरे॥
शुभ धर्मचक्र ले यक्ष, द्वारे पर सोहें।
सब रिद्धि-सिद्धि के साथ सब का मन मोहें॥8॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित-तीर्थंकरेभ्य: फलं...

जल चन्दन आदि मिलाय, ताकों अर्घ्य करें।
जिनपद लक्ष्मी मिल जाय, तुम पद ध्यान धरें॥
शुभ धर्मचक्र ले यक्ष, द्वारे पर सोहें।
सब रिद्धि-सिद्धि के साथ सब का मन मोहें॥9॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित-तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

धारा देते हम यहाँ, लेके पावन नीर।
शांती धारा दे विशद, हरण करें भवपीर॥

शांतये शांतिधारा।

सुरभित पुष्प सजाय कर, भर लाए हम थाल
पुष्पाञ्जलि करके विशद, होंगे मालामाल

दिव्य पुष्पाजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **धर्मचक्र भूषित प्रभो!, समवशरण हितकार।**
पुष्पाञ्जलि देते चरण, पाएँ हर्ष अपार॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(छन्द जोगीरासा)

आदिनाथ के समवशरण में, सुर नर सब ही आवें।
चहुँ दिश धर्मचक्र सिर धारें, यक्ष प्रभू को ध्यावें॥

अष्ट-द्रव्य का थाल सजाकर, जिन वन्दन को आवें।
धर्मचक्र युत प्रथम पीठ की, पूजा कर गुण गावें॥1॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री वृषभदेव तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयवन्तों जिनराज प्रभो! तुम, शुक्ल ध्यान शुभ पाए।
धर्म चक्र मस्तक पर धारें, यक्ष प्रभू गुण गाए।
अजितनाथ की महिमा सुन्दर, तीन लोक मन भावें।
धर्मचक्र युत प्रथम पीठ की, पूजा कर गुण गावें॥2॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री अजितनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भव जिन के चरण कमल में, देव देवियाँ आवें।
प्रभु की पूजा करके पावन, आतम सुख उपजावें।
सहस आरे युत धर्म चक्र जिन, समवशरण में पावें
धर्मचक्र युत प्रथम पीठ की, पूजा कर गुण गावें॥3॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री सम्भवनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के पाद पद्म में, निशदिन पुष्प चढ़ावें।
आठों मंगल द्रव्य सु शोभित, अद्भुत शोभा पावें॥
समवशरण जिन धर्म चक्र में, सहस रश्मियाँ होवें।
श्री जिन धर्मचक्र की पूजा, कर्म कालिमा खोवें॥4॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री अभिनन्दननाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में सुमतिनाथ की, आरति करने आवें।
दृमदृम दृम मिरदंग बजाकर, प्रभु की जय जय गावें॥
समवशरण जिन धर्मचक्र में, सहस आर नित होवें।
श्री जिन धर्मचक्र की पूजा, कर्म कालिमा खोवें॥5॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री सुमतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म राग सम सुन्दर जिनवर, समवशरण में जानो।
परम देवकृत चौदह अतिशय, अर्हद् प्रभु के मानो।
समवशरण जिन धर्मचक्र शुभ, दिव्य तेज प्रकटावे॥
श्री जिनधर्म चक्र को पूजा, कर्म कालिमा खोवे॥6॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री पद्म प्रभु तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ पर चढ़कर गणधर, त्रय प्रदक्षिणा देवें।
जिन सुपार्श्व की पूजा करके, पुष्पाञ्जलि कर सेवें।
समवशरण जिन धर्म चक्र शुभ, वर्तुलाकार बनावें॥
श्री जिन धर्म चक्र को पूजें, सुख समृद्धी पावें॥7॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री सुपार्श्व तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ पर आकर मुनिवर, स्तुतियाँ कई गावें।
चंद्रनाथ की पूजा करके, मन में अति हरषावें॥
धर्मचक्र नित समवशरण में, यक्ष शीश पर सोहे।
श्री जिन धर्म चक्र को पूजें, नित प्रति मन को मोहे॥8॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री चन्द्रनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर देवादिक बारह गण, रत्नों की कटनी पे।
पुष्पदंत के समवशरण में, धर्मचक्र अति दीपे॥
मणिमय थाल सजाकर प्रभुवर, द्रव्य सु आठों लाएँ।
धर्म चक्र की पूजा करके, नित प्रति सौख्य कराएँ॥9॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंख्यात गुणश्रेणी प्राणी, कर्म निर्जरा पावें।
भव्य जीव शीतल जिनवर की, स्तुति नित्य रचावें॥
समवशरण जिनधर्म चक्र में, सौम्यकांति मनहारी।
धर्मचक्र की पूजा करते, नित प्रति मंगल कारी॥10॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवशरण में आकर, दुष्टकर्म विनशाएँ।
श्री श्रेयांस की भक्ती करके, निज गुण रत्न भराएँ॥
अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, जिन चरणों में लाएँ।
धर्मचक्र की पूजा करके, तीर्थंकर पद पाएँ॥11॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री श्रेयांस तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के समवशरण में, सुर नर नाच रचावें।
धृगतां धृगतां ताल देत सुर, प्रभु पूजा शुभ गावें।
प्रथम पीठ पर स्थित होकर, चक्र यक्ष शिर धारें।
धर्मचक्र की पूजा करके, सब विघ्नों को टारें॥12॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ओंकार मय वाणी प्रभु की, दिव्य ध्वनि में होवे।
सब जीवों के श्रवण मात्र से, कर्मों का मल धोवे॥
समवशरण जिनधर्म चक्र को, शत शत शीश झुकाएँ॥
धर्मचक्र की पूजा करके, मन-वांछित फल पाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री विमलनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनलोक में पूज्य जिनेश्वर, समवशरण धन धारी।
अंतरंग बहिरंग रमावर, त्रिभुवन पति सुखकारी॥
जिनानन्त को मन से ध्यावें, यक्ष चक्र सिर धारें।
धर्मचक्र की पूजा करके, सब संकट हम टारें॥14॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री अनन्तनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीर्थंकर धर्म प्रभाकर, धर्मनाथ सुख दाता।
तुमको मन में ध्यानें से ही, वैर भाव मिट जाता॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण सुखदायी।
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि हो भाई॥15॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री धर्मनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

शांतिनाथ चक्रेश जिनेश्वर, आप अतुल बलधारी हो।
भव्य अर्चना करें अहर्निश, सुरनरगण मिल थारी हो॥
धर्मचक्र यक्षेन्द्र धारकर, मंगल आरति गाते हैं।
धर्मचक्र की पूजा करके, जय श्री लक्ष्मी पातें हैं॥16॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी रक्षक आप जिनेश्वर, परम शांति सुख दाता हो।
त्रिभुवन में श्री कुन्थुनाथ जिन, धन समृद्धी दाता हो॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मंगलकार।
धर्म-चक्र की पूजा करके, धर्म-वृद्धि पावें मनहार॥17॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य ले मन वच तन से, तीर्थंकर गुण गाते हैं।
अरहनाथ की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मनहारी॥
धर्म चक्र की पूजा करके, धर्म-वृद्धि होवे न्यारी ॥18॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री अरहनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

भव विजयी श्री मल्लि जिनन्दा, विधि के आप विधाता हैं।
तीन लोक में पूज्य कहाए, चिंतित फल के दाता हैं॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मनहारी।
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि होवे न्यारी ॥19॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री मल्लिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के चरण कमल में, सुर नर प्रीति लगाते हैं।
तीर्थंकर की पूजा करके, वाचस्पति पद पाते हैं॥

प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मनहारी।
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि होवे न्यारी ॥20॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिजिन के समवशरण में, ऋद्धि-सिद्धि सब पाते हैं।
गणधर द्वारा अष्ट द्रव्य से, नित प्रति पूजा गाते हैं।
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मनहारी॥
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि होवे न्यारी॥21॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री नमिजिन तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभनाराच संहनन, उत्तम तन युत काया है।
नेमिनाथ के समवशरण में, रत्नत्रय मन भाया है॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में है न्यारी।
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि होवे न्यारी ॥22॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री नेमिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न दिगम्बर परम सु सुन्दर, त्रिभुवन पूज्य कहाए हैं।
पार्श्वनाथ को जो भी ध्याएँ, राज्य विभव को पाए हैं॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मनहारी॥
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि होवे न्यारी ॥23॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव को जीता तुमने, तीर्थंकर पद पाया है।
महावीर कर्मारि जयी तुम, केवलज्ञान जगाया है॥
प्रथम पीठ रत्नों सम सुन्दर, समवशरण में मनहारी।
धर्मचक्र की पूजा करके, धर्मवृद्धि होवे न्यारी ॥24॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डित श्री महावीर तीर्थंकराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

समवशरण मंगलकारी है, प्रथम पीठ है मंगलकार
धर्म चक्र ले यक्ष खड़े हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार॥
रत्न सुनिर्मित प्रथम पीठ की, शोभा अतिशय रही महान।
रत्नों से हम चौबिस जिन की, अर्चा कर करते गुणगान॥25॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ-यक्षेन्द्रमस्तकोपरिधर्मचक्रमहिमामण्डितेय: वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: महार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य-ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा

जिनवर वाणी से सदा, होता दिव्य प्रकाश।
समवशरण में जीव सब, करते पूरी आस॥

पद्धरि छंद

जय समवशरण जिनका प्रधान, जय प्रथम पीठ अतिशय महान।
जय नाना द्रव लेके अपार, अरु मंगल द्रव्य सु पीठ सार॥1॥
जय रत्न सुशोभित पीठ जान, अनुपम शोभा सम्पन्न मान।
कोठे वीथी सुन्दर महान, चहुँ दिश सोलह सोपान मान॥2॥
तहँ धर्मचक्र मंगल सु जान, जय जिनवर महिमा नित महान।
जय प्रथम पीठ महिमा अपार, जय त्रिभुवन-प्रति धन सौख्यकार॥3॥
शुभ वर्तुल है जिन धर्म चक्र, चहुँ दिश शोभे जिन धर्मचक्र।
है धर्म चक्र चउ दिशा चार, मणियों से शोभित सहस आर॥4॥
जो जग जन के हैं सौख्यकार, जिनधर्म चक्र सिर यक्ष धार।
सुनीलमणी युत भव्य पीठ, जिन समवशरण शुभ होय पीठ॥5॥
जहँ गणधर देवादिक जु आय, प्रभु भक्तिभाव जयमाल गाय।
घननं घननं घंटा बजाय, तननं तननं तन तान गाय॥6॥
जिनवर की सेवा करें देव, नित धन्य-धन्य सब करत सेव।
श्री समवशरण नित आय देव, अरु भक्ति भाव पायें सदैव॥7॥

हम चरण शरण में धार माथ, भव व्याधि नाश अब करो नाथ।
शुभ सुमनवृष्टि नभ करत देव, जय जय जय श्री अर्हन्त देव॥8॥
शत-शत् वन्दन तव चरण माथ, अतिशय पद पाएँ श्रेष्ठ नाथ।
जिन धर्मचक्र सोहे अपार, प्रभु भव सागर से करो पार॥9॥
यह विनती करते भक्त आन, चरणों में करते हैं प्रणाम।
अब हो जाए मम् पूर्ण आस, हो 'विशद' मोक्ष में मम् प्रवास॥10॥

दोहा

धर्मचक्र वन्दन करें, समवशरण तिहुँ काल।
मुझको शिवरमणी प्रभो! देकर करो निहाल॥

ॐ ह्रीं समवशरण प्रथम पीठस्थ यक्षेन्द्र मस्तको परि धर्मचक्रमहिमा मण्डितेभ्य: श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं...

कवित्त छन्द

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजें, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वह धन धान्य सम्पदा वैभव, सुख सम्पत्ती पाएँ अपार।
विशद इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम से पावे शिव द्वार॥

(पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्, इत्याशीर्वाद:)

द्वितीय पीठ पूजा-12

स्थापना (चौपाई छन्द)

द्वितिय पीठ स्वर्णमय जानो, जिन के समवशरण में मानो।
शुभ स्तंभ मणीमय सोहें, अष्ट ध्वजाएँ मन को मोहें॥
अष्ट द्रव्य सोहें मनहारी, धूप घटादि की शोभा न्यारी।
द्वितिय पीठ 'विशद' सुखदायी, भव दुख दूर करे जो भाई॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थितद्वितीयपीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह! युक्त जिनेन्द्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महा ध्वजा समूह! युक्त जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह! युक्त जिनेन्द्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छन्द गीतिका

लेकर सु उज्ज्वल नीर हिमगिरि, कलश में भर लाए हैं।
अब नाश हेतु कषाय का हम, अर्चना को आए हैं॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजें सदा जो पीठ द्वितिय, सौख्य शिव पद पावते॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

गोशीर चन्दन नीर के संग, हम घिसा कर लाए हैं।
होवे सुगन्ध दशों दिशा में, भ्रमर मन को भाए हैं॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजे सदा जो पीठ द्वितीय, सौख्य शिव पद पावते॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित जिनेन्द्रेभ्यः चन्दनं निर्व. स्वाहा।

उज्ज्वल अखण्डित धवल अक्षत, हेम थाल सजाए हैं।
शुभ पुंज तुम पद देत जिनवर, सौख्य अक्षय पाए हैं॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजे सदा जो पीठ द्वितीय, सौख्य शिवपद पावते॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह कमल सुन्दर केतकी के, पुष्प अनुपम लाएँगे।
अब चढ़ा जिनपद पुष्प अनुपम, समर शूल नशाएँगे।
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजे सदा जो पीठ द्वितीय, सौख्य शिवपद पावते॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

पकवान मिष्ठ महान सुन्दर, इक्षु रस सम लाएँगे।
अब चढ़ा नैवेद्य जिनवर, क्षुधा रोग नशाएँगे॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजें सदा जो पीठ द्वितीय, सौख्य शिव पद पावते॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः नैवेद्यम् निर्व. स्वाहा।

मणिरत्न निर्मित दीप सुन्दर, ल्याय घृतवर से महा।
तम मोह नाशन हेतु जिनवर, दीप अर्पित है अहा॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजे सदा जो पीठ द्वितीय, सौख्य शिवपद पावते॥6॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः दीपं निर्व. स्वाहा।

यह अगर कृष्णागर सु चन्दन, चूर पावक में दिया।
वसु कर्म भंजन हेत जिनवर, भेंट तुम पद में किया॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजे सदा जो पीठ द्वितीय, सौख्य शिवपद पावते॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः धूपं निर्व. स्वाहा।

दाडिम श्रीफल आम केला, सरस फल मृदु लाए हैं।
हम मोक्ष फल पाने चरण में, फल चढ़ाने आए हैं॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गावते।
पूजें सदा जो पीठ द्वितिय, सौख्य शिव पद पावते॥8॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः फलं निर्व. स्वाहा।

शुचि उदक चंदन धवल अक्षत, पुष्प पात्र सजाए हैं।
चरु दीप धूप फलार्घ्य करि हम, जिन पदाम्बुज लाए हैं॥
तीर्थंकरों के नाम सुन्दर, नित्य गणधर गाते रहे।
पूजे सदा जो पीठ द्वितीयं, सौख्य शिव पद पा रहे॥9॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा महिमा मण्डित तीर्थंरकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांती धारा जो करें, वे पावें भव कूल।
मित्र स्वजन शत्रू सभी, उनके हों अनुकूल॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– **पुष्पाञ्जलि कर प्राप्त हो, भव सागर का अंत।**
भाव सहित पूजा किए, पाते सौख्य अनन्त॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

द्वितीय पीठ महान्, महाध्वजाओं युत सदा।
पुष्प चढ़ाएँ आन, मिले दिव्यलक्ष्मी 'विशद'॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौपाई

समवशरण श्री जिन का पाएँ, प्रभु के दर्शन कर हर्षाएँ।
श्री जिन पद वसु द्रव्य चढ़ाएँ, जय जय आदिनाथ गुण गाएँ॥
भाव सहित जिन के गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, चरण चढ़ाने को हम लाए॥1॥

ॐ ह्रीं वृषभजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय जय श्री अजित जिनन्दा, काटे भव भव के दुख फन्दा।
प्रभु तुमको निशदिन जो ध्यावें, शिव लक्ष्मी निश्चित ही पावें॥
भाव सहित जिन के गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, चरण चढ़ाने को हम लाए॥2॥

ॐ ह्रीं अजितनाथजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय श्री सम्भव तीर्थेशा, दरश हरे भव भय संक्लेषा।
समवशरण अर्हन्त विराजें, चहुँ दिश धन्य धन्य सुर साजे॥

जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितीय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥3॥

ॐ ह्रीं संभवजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य रहे अभिनन्दन स्वामी, सुर नर गणधर के पथ गामी।
भव्यजीव तुमको मन ध्यावें, समवशरण में पूज रचावें॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितीय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥4॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपति चौंसठ चँवर ढुरावैं, प्रभु सेवा कर पुण्य बढ़ावैं।
सुमतिनाथ त्रिभुवन सुखदाई, कुमति हरें सन्मति सुखदाई॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितीय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥5॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभु ने ज्ञान जगाया, तीन लोक में आनन्द छाया।
छम छम छम सुर नाच रचावें, जिन चरणाम्बुज शीश झुकावें॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितिय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥6॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय जय सुपार्श्व भगवन्ता, जनम जनम के दुख अघहन्ता।
देवलोक से सुर गण आएँ, प्रभु वन्दनकर पुण्य कमाएँ॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितिय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥7॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसने प्रभु का ध्यान लगाया, चन्द्रनाथ का दर्शन पाया।
हेम पात्र धर कमल चढ़ाएँ, कुष्ठ रोग सब दूर भगाएँ॥

जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितिय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥8॥

ॐ ह्रीं चन्द्रनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधिनाथ जिन मंगलकारी, सहसबार जिन ढ़ोक हमारी।
जिनकी महिमा सुर नर गावें, चरणों में नत शीश झुकावें॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजामनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितिय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥9॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंत समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवशरण जो आवें, शीतल जिन वचनामृत पावें।
समवशरण जिन अतिशय जानो, जिन पद सब नतमस्तक मानो॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितिय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥10॥

ॐ ह्रीं शीतलजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मत दस अतिशय नित पावें, देव रत्नवृष्टी करवावें।
देव सु दुंदुभि वाद्य बजावें, जय जय श्रेयो गुण सब गावें॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितीय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥11॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य पद शीश झुकाएँ, भव भव के आताप नशाएँ।
धूप दशांग अग्नि में खेवें, वासुपूज्य चरणन में सेवें॥
जहँ शुभ अष्ट ध्वजा मनहारी, वह द्वितिय कटनी शुभकारी।
करके द्वितीय पीठ की पूजा, जन्म मिले न हमको दूजा॥12॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल नाथ की शरण जु आवें, दर्शन कर शिव लक्ष्मी पावें।
गंधकुटी जिनराज विराजें, चहुँ दिश नभ सुर दुंदुभि साजें॥

अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥13॥

ॐ ह्रीं विमलजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अनंत के गुण हम गाएँ, चार चतुष्टय प्रकट कराएँ।
गंधकुटी जिनराज विराजें, चहुँ दिश नभ सुर दुंदुभि बाजें॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥14॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ त्रिभुवन जस गाई, अस्तिकाय जिनवर समझाई।
समवशरण जिन दर्शन पाएँ, अष्ट द्रव्य से पूज रचाएँ॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥15॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, कामदेव षोडश तीर्थंकर।
शांतिनाथ को जो भी ध्यावें, यथाख्यात संयम को पावें॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥16॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ की करे जो सेवा, उनके रक्षक होवें देवा।
कुन्थुनाथ त्रिभुवन सुखदाई, पूजे आधि व्याधि नश जायी ॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥17॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथ समोशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री अरजिन जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण सब रोग शोक हर, दर्शन श्री जिन के श्रेयसकर।
अर जिन समवशरण जो आवें, वंदन कर लक्ष्मी पुर पावें।

अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥18॥

ॐ ह्रीं अरजिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री अरहनाथ जिन जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेम थाल भर द्रव्य सु लाएँ, प्रभु चरणों धर चित् उमगाएँ।
मल्लिनाथ का ध्यान लगाएँ, वैभव समवशरण का पाएँ॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥19॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि मण्डल सम कटनी भाई, समवशरण में अतिसुखदायी।
मुनिसुव्रत का नाम जु ध्यावें, कामदेव चक्री पद पावें॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥20॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत जिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नमि जिन की भक्ति रचावें, श्रेष्ठ सुकीर्ति जग में पावें।
देव चतुर्णिकाय के आवें, जिन पूजा कर हर्ष मनावें॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥21॥

ॐ ह्रीं नमि जिन समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग सुख तज तुम दीक्षा धारी, तीन लोक में आनंदकारी।
तुम पद जो भी शीश झुकावें, केवल ज्ञान विभूती पावें॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥22॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस परमोज्वल गुणकारी, नित्य निरंजन पद के धारी।
समवशरण कटनी पर जाएँ, पारस दर्शन कर हर्षाएँ॥

अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥23॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्धमान सन्मति जिन गाए, वीर अति महावीर कहाए।
तुमको निश दिन जो भी ध्यावें, सुख-धन-धान्य वृद्धि को पावें॥
अष्ट ध्वजाएँ मंगलकारी, दश चिन्हों युत हैं शुभकारी।
द्वितिय पीठ रही मनहारी, भवि जीवों की कल्मषहारी॥24॥

ॐ ह्रीं महावीर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– तीर्थंकर पूजा महा, दिव्य करें हम आज।
समवशरण को पूजकर, पाएँ सुख निधि राज॥25॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि अष्ट अष्ट महाध्वजा समूह युत श्री तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा– **नित्य अहर्निश धर सदा, तीर्थंकर पद प्रीत।**
रत्नों से पूजा करें, समवशरण शुभ पीठ॥

(वेसरी छन्द)

समवशरण महिमा नित सोहे, दिव्य पीठ, द्वितिय मन मोहे।
पीठ स्वर्णमय सुन्दर होई, रत्न खचित भूमी युत सोई॥1॥
चहुँ दिश नव निधि अद्‌भुत होवें, समवशरण कालुषता खोवे।
अष्ट महा ध्वज तहँ फहराएँ, प्रभु दर्शन चहुँ दिश सब पाएँ॥2॥
त्रिभुवन में शुभ आनंदकारी, द्वितिय पीठ ध्वजा शुभकारी।
दिव्य धूप घट स्थित होवें, तिनकी शोभा अनुपम शोभे॥3॥

मंगल द्रव्य धरें हितदाई, आत्मशुद्धि प्रभु दर्श सुपाई।
प्रभु दर्शन भवि कल्मष नाशें, पूजत समकित ज्ञान प्रकाशे।।4।।
जिनवर महिमा अतिशयकारी, तीन लोक में शिव पदकारी।
प्रभु भक्ती से भवदुख जावें, तातें निशदिन शीश झुकावें।।5।।
और कथन हम किस मुख गावें, तुच्छ बुद्धि नहि पार लगावें।
हम भी प्रभु की भक्ति रचाएँ, अनुक्रम से निर्वाण लहाएँ।।6।।
श्री जिनेन्द्र महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
जिनकी महिमा जो भी गाते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।7।।
चढ़ा रहे जो सुमनावलियाँ, खिलें हृदय की उनके कलियाँ।
'विशद' ज्ञान शुभ नर प्रगटावें, अन्तिम मोक्ष महा पद पावें।।8।।

सोरठा

महाध्वजाएँ पाय, द्वितीय कटनी पर सदा।
मोक्षमहा सुखदाय, पूजें भक्ती धर विशद।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण द्वितीय पीठोपरिस्थित द्विनवत्यधिक एकशत महाध्वजाभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्।

कवित्त छन्द

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजें, जो भवि आठों द्रव्य सजाय।।
वह धन धान्य सम्पदा वैभव, सुख सम्पत्ती पाएँ अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार।।

(पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्, इत्याशीर्वाद:)

अथ गंधकुटी विराजमान तीर्थंकर पूजा प्रारभ्यते–13

छन्द–कवित्त

तीर्थंकर के समवशरण में सम्यग्दृष्टी जीव महान।
गंधकुटी में सुर नर मुनिवर, गणधर मिल करते गुणगान।।
तीर्थंकर की गंधकुटी में, आह्वानन् कर पूजा गाय।
भव्य जीव वह श्रद्धाधारी, अपना शुभ सौभाग्य जगाय।।

समवशरण में जाकर हमको, पूजा का सौभाग्य मिले।
हृदय कमल के सिंहासन पर, 'विशद' ज्ञान का दीप जले।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित गंधकुटी विराजमान-चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित गंधकुटी विराजमान चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित गंधकुटी विराजमान, चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम देते जिन पद धार, कल-कल नाद करे।
त्रय रोग होय परिहार, मन आह्लाद भरे।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद में चन्दन धार, देते महक उठे।
हो भवाताप परिहार, अन्तस चहक उठे।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाच्छत मोती पुञ्ज, थाली भर लाएँ।
मिल जाए मोक्ष निकुञ्ज, अक्षय पद पाएँ।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: अक्षयपद-प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह लेके पुष्पित फूल, अर्चा को लाएँ।
हो काम रोग निर्मूल, शीलेश्वर बन जाएँ।।

है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह लिए सरस पकवान, पावन मनहारी।
हो क्षुधा रोग की हान, बनने अनगारी।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं (चरूम्) निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक यह लिया प्रजाल, आरति को लाए।
अब नशे मोह का जाल, ज्ञान रवि खिल जाए।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जले अग्नि में धूप, कर्म का नाश करें।
पद पाएँ विशद अनूप, शिवपुर वास करे।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: अष्ट कर्म विनाशय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह लाए रसदार, चढ़ाके हर्षाएँ।
हम करें आत्म उद्धार, शिव पदवी पाएँ।।
है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर के लाए।
हम पाएँ सुपद अनर्घ्य, आप जो पद पाए।।

है गंध कुटी मनहार, जग मंगलकारी।
हम चरणों देते ढोक, तुम हो शिवकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण गंधकुटी विराजित जिनेन्द्रभ्य: अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांती पाने को यहाँ, देते शांती धार।
नाथ! आपके चरण में, पाएँ हम उद्धार।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, कर हो परमानन्द।
काल अनादी कर्म का, आस्रव होता बन्द।।

दिव्य पुष्पाजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ

सोरठा– चंदन केसर पुष्प, रत्न दीप फल धूप ले।
कर पुष्पाञ्जलि पुञ्ज, गंधकुटी नित हम जजें।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्।

सोरठा– कंचन थाल सजाय, वसु विधि अर्घ्य बनायके।
मंगल भाव जगाय, आदिनाथ जिन पूजते।।1।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाल सजाय, वसु विधि अर्घ्य बनाय के।
चरणों माथ लगाय, अजितनाथ जिन पूजते।।2।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाल सजाय, वसु विधि अर्घ्य बनायके।
भक्ति भाव उमगाय, संभव जिन को पूजते।।3।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण पात्र भर लाय, वसु विधि अर्घ्य बनायके।
मनवांछित फल पाय, अभिनंदन जिन पूजते॥4॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री अभिनंदन नाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र भर लाय, वसु विधि अर्घ्य बनायके।
सुर नर गण मिल गाय, सुमतिनाथ जिन पूजते॥5॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हेम पात्र भर लाय, वसु विधि अर्घ्य बनायके।
भक्ति त्रियोग लगाय, पद्मनाथ जिन पूजते॥6॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री पद्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रजत पात्र भर लाय, वसुविधि अर्घ्य बनायके।
चरणों चित्त लगाय, जिन सुपार्श्व पद पूजते॥7॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाल सजाय, वसु विधि अर्घ्य बनायके।
आत्म सिद्धि हो जाय, चन्द्रनाथ जिन पूजकर॥8॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में आय, वसुविधि अर्घ्य सजायके।
भव सागर तिर जाय, पुष्पदंत को पूजते॥9॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र भर लाय, आठों द्रव्य मिलाय के।
मन शीतल हो जाय, शीतल जिन को पूजते॥10॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण पात्र भर लाय, आठों द्रव्य सजायके।
निर्मल भाव जगाय, श्रेयो जिन को पूजते॥11॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
वासुपूज्य जिनराय, वन्दन कर नित पूजते॥12॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य चढ़ाय, समवशरण को आय के।
शिव रमणी सुख पाय, विमलनाथ को पूजते॥13॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में आय, आठों द्रव्य सजाय के।
काम कलंक नशाय, जिन अनंत वंदन सदा॥14॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
मिथ्या ज्ञान नशाय, धर्मनाथ पूजें सदा॥15॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
मन उल्लास भराय, शांतिनाथ पूजा किए॥16॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण पात्र धर लाय, आठों द्रव्य मिलाय के।
सोलह भावन भाय, कुन्थुनाथ को पूजकर॥17॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण पात्र भर लाय, आठों दरब मिलाय के।
अरहनाथ गुण गाय, समोशरण में आय के॥18॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
आत्मशुद्धि विकसाय, मल्लिनाथ जिन पूजते॥19॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
पावन पद को पाय, मुनिसुव्रत जिन जो भजे॥20॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
मति श्रुत ज्ञान कराय, नमि जिन को नित पूजते॥21॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
केवल ज्योति जगाय, नेमि नाथ पूजा सदा॥22॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
त्रिभुवन निधि सुख पाय, पार्श्वनाथ की भक्ति कर॥23॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय, समवशरण में आय के।
शाश्वत सुख को पाय, महावीर को पूजकर॥24॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पूर्णार्घ्य (कवित्त छन्द)

तीर्थंकर के समवशरण में, रत्नविनिर्मित पीठ महान।
धनद रचित शुभ गंधकुटी में, चतुर्दिशा में महिमावान॥
सिंह निष्क्रीडित सिंहासन पर, जिनवर शोभा पाते हैं।
श्री जिन गंधकुटी को पूजें, क्षायिक लब्धि जगाते हैं॥

ॐ ह्रीं समवशरण गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नमः

अथ जयमाला

दोहा

गंधकुटी शुभ गंधमय, समवशरण में खास।
जयमाला गाएँ प्रभो!, होवे ज्ञान प्रकाश॥

(चौपाई छन्द)

श्री जिन गंधकुटी मन ध्याएँ, जय-जय जिन अतिशय गुण गाएँ।
अतिशय ध्वज पंक्ती मन मोहे, जय-जय गंधकुटी शुभ सोहे॥1॥
गंधकुटी धूपों से सुरभित, अरु वन्दन माला से शोभित।
चामर और किंकणी मनहर, मणिमय दीप जलाते सुन्दर॥2॥
रत्नजड़ित सिंहासन होवे, उस पर दिव्य कमल इक शोभे।
चउ अंगुल ऊपर श्री जिनवर, कमल मध्य में शोभें प्रभुवर॥3॥
जिन दर्शन को सुरगण आवें, गंधकुटी में पूजन गावें।
कोई सहसनाम गुण गावें, कोई जयजय शब्द गुंजावें॥4॥
केई सुन्दर चमर ढुरावें, कोई धन्य-धन्य नित गावें।
केई घन घन घंट बजावें, कोई तननं साज सजावें॥5॥
कोई मधुर सु वीन बजावें, कोई छम छम नाच रचावें।
केई मधुर वचन शुभ गावें, केई दृम-दृम साज सजावें॥6॥
जिनवर शोभा अति सुखदाई, गंधकुटी है मनहर भाई।
जय-जय गंधकुटी जिन बन्दें, भव-भव के कर्मों को खण्डें॥7॥
समवशरण की शरणा जाएँ, दर्शन करके मुक्ती पाएँ।
गंधकुटी को शीश झुकाएँ, अतिशय सौख्य परम पद पाएँ॥8॥

पूजाकर मन में हर्षाएँ, चरण कमल में पुष्प चढ़ाएँ
'विशद' भावना हम यह भाएँ, शिवपुर में हम धाम बनाएँ॥9॥

दोहा

गंधकुटी जिनराज को, पूजें मन वच काय।
समृद्धी सुख भोगकर, शिवपुर वास कराय॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी साक्षात् विराजित श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।
(कवित्त छन्द)

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजें, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वे धन धान्य सम्पदा वैभव, सुख सम्पत्ती पाएँ अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम लहै मुक्तिपद सार॥

(इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्)

अथ तीर्थंकर गुण पूजा प्रारम्भ्यते-14

अथ स्थापना (छन्द जोगीरासा)

तीर्थंकर पद भूषित जिनवर, समवशरण मनहारी।
जिनवर केवल-ज्ञान जगाए, छियालिस गुण के धारी॥
तीर्थंकर के गुण का नित ही, मन में ध्यान लगाएँ।
आह्वानन संवौषट् विधि कर, पूजा भक्ति रचाएँ॥

दोहा

तीर्थंकर के गुण सदा, तीन योग से ध्याय।
होय कर्म की जिर्नरा, अन्तिम शिवपुर पाय॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन षट्चत्वारिंशद्-मूलगुणमहिमानिधान चउ घाति कर्ममल रहित अर्हन्त परमेष्ठिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन: षट्चत्वारिंशद्-मूलगुणमहिमानिधान चउ घाति कर्ममल रहित अर्हन्त परमेष्ठिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन: षट्चत्वारिंशद्-मूलगुणमहिमानिधान चउ

घाति कर्ममल रहित अर्हन्त परमेष्ठिन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द हरिगीतिका)

निगमनदी जल निरमल लेकर, हेम भृंग भर लाए।
जिन चरणों में धारा देते, तृषा रोग नश जाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥1॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुंम केशर चन्दन शीतल, नीर संग घिस लाए।
भवाताप के भंजन हेतू, प्रभु तव, चरण चढ़ाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥2॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं, निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ अखण्डित अक्षत उज्ज्वल, हेम पात्र भर लाए।
जिन चरणों में पुंज धारकर, अक्षय सुख भवि पाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥3॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तरु मन्दार के पुष्प सु सुन्दर, अनुपम थाल सजाए।
प्रभु पद कमल में पुष्प चढ़ाए, मदन मोह विनशाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥4॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस लिए नैवेद्य मनोहर, स्वर्ण थाल भर लाए।
प्रभु चरणों नैवेद्य भेंट कर, क्षुधा रोग नश जाए॥

छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥5॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले कर्पूर दीप यह घी के, ज्योति पुंज जल जाए।
मोह तिमिर के नाश हेतु ये, दीप चरण में लाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥6॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर मलयागिर चन्दन, से यह गंध बनाए।
धूपायनों में धूप खेय कर, अष्ट करम जल जाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥7॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम श्रीफल आम सु लेकर, कनक थाल भरवाए।
मुक्ति सुफल पाने के कारण, चरण श्रीफल लाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥8॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदिक लेकर यह, अनुपम अर्घ्य बनाए।
प्रभु चरणों में प्रीति जगाकर, अर्घ्य चढ़ाने लाए॥
छियालिस गुण के धारी जिन की, भक्ती पूजा करते।
पाकर के धन धान्य भोग वर, मुक्ति लक्ष्मी वरते॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष विहीन-षट् चत्वारिंशद गुणस्वामिने अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

शांती धारा जो करें, वे पावें भव कूल
मित्र स्वजन शत्रू सभी, उनके हों अनुकूल

शांतये शांतिधारा।

पुष्पाञ्जलि कर प्राप्त हो, भव सागर का अंत।
भाव सहित पूजा किए, पाते सौख्य अनन्त॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

तीर्थंकर गुण को शुभम्, मन-वच तन से ध्याय।
पुष्पांजलि देते परम, सर्व व्याधि क्षय जाय॥

।।इति मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।।

चौंतिस अतिशय (नरेन्द्र छन्द)

तीर्थंकर के जन्म समय में, दस अतिशय नित होवे।
परमौदारिक प्रभु के तन में, मल पसेव सब खोवे॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिवलक्ष्मी सुख पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं निः स्वेदत्वसहजातिशयगुण मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने अर्घ्यं...

तीर्थंकर की महिमा ऐसी, त्रिभुवन में सुख दायी।
प्रभु का तन मल मूत्र रहित शुभ, निर्मल होता भाई॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर के हम, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं निर्मलता सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

धवल क्षीर सम रुधिर देह में, तीर्थंकर के होवे।
प्रभु की ऐसी भक्ति रचाएँ, अघ मल मेरा खोवे॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं क्षीर सदृशधवलरुधिरत्व सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, भूषित प्रभु तन जानो।
ऐसा उत्तम श्रेष्ठ संहनन, नामकर्म से मानो॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, शिवलक्ष्मी सुख पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

तन के अवयव समअनुपातिक, अतिशय सुन्दर जानो।
समचतुस्रसंस्थान युक्त प्रभु, लोकोत्तम नर मानो॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर शिवलक्ष्मी सुख पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

प्रभु तन मोहक आकर्षण युत, दिव्य कहा है भाई।
त्रिभुवन में सुन्दर तन जानो, अतिशय जो सुखदायी॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं अनुपमरूप सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

तीर्थंकर तन से लोकोत्तर, अनुपमप गंध सु बहती।
जिससे सब जीवों में अतिशय, भक्ति उमड़ती रहती॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, तीर्थंकर गुण ध्याएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं सौगंध्य सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

सहस्राष्ट शुभ लक्षण तन में, तीर्थंकर के जानो।
प्रभु की सुन्दर ऐसी आभा, मंगलकारी मानो॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तर सहस्र शुभलक्षण सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

तीर्थंकर तन बलानन्त युत, प्रबल पुण्य से पावें।
करने को अभिषेक मेरु पर, बालक को ले जावें॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं अनन्तबलवीर्य सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

हित मित अमृत सम प्रिय वाणी, तीर्थंकर की भाई।
प्रभु की मनमोहक शुभ वाणी, कल्याणी सुखदायी॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥10॥

ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचन सहजातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

घातिकर्म के क्षय से प्रभु जी, दस अतिशय प्रगटावें।
इक सौ योजन तक सुभिक्षता, प्रभु प्रभाव से पावें॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥11॥

ॐ ह्रीं शतैक योजन सुभिक्षतारूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान जगाकर जिनवर, गगन गमन गुण पावें।
स्वर्ण कमल रचते हैं सुरगण, प्रभु उन पर ही जावें॥
दर्शन करके श्री जिनेन्द्र का, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥12॥

ॐ ह्रीं गगन गमन रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

तीर्थंकर जिन समवशरण में, अदया भाव न पावें।
क्रूर जीव भी जिन प्रभाव से, करुणामय हो जावें॥
दर्शन करके श्री जिनेन्द्र का, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं प्राणिवधाभाव केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

(शम्भू छंद)

केवल-ज्ञानी तीर्थंकर पर, हो उपसर्ग नहीं भाई।
वैर भूल प्राणी शरणागत, होते प्रभु की प्रभु ताई।
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥14॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

समवशरण में जिनवर का मुख, उत्तर पूरब दिश जानो।
फिर भी प्रभु के आत्मतेज से, चहुँ दिश दर्शन हो मानो॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥15॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुख रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

परमौदारिक तन जिनेन्द्र का, अतिशय सुखकर है जानो।
केवलज्ञान के बाद प्रभु के, कवलाहार न हो मानो।

तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥16॥

ॐ ह्रीं कवलहारभाव रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

सब विद्याओं के स्वामी जिन, तीर्थंकर नित होते हैं।
केवल ज्ञान ज्योति समलंकृत, त्रिभुवन वन्दित होते हैं॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥17॥

ॐ ह्रीं सर्वविद्याईश्वरत्व रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

प्रभु का केवल ज्ञान जान सुर, धन्य धन्य नित गाते हैं।
छाया रहित शरीर प्रभू का, भविजन मन हरषाते हैं।
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥18॥

ॐ ह्रीं छायाविहीनता रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

निर्निमेष अर्हन्त जिनेश्वर, तीन लोक सुखकारी हैं।
तीर्थंकर के समवशरण में, प्रभु पूजा शिवकारी है॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥19॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

समवशरण में तीर्थंकर अति, मनभावन मोहक होते।
केवल ज्ञानोपरान्त केश नख, अपनी वृद्धी को खोते॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण हम प्रगटाएँ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, अनुक्रम से मुक्ती पाएँ॥20॥

ॐ ह्रीं नखकेश वृद्धि विहीनता रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

(जोगीरासा छन्द)

प्रभु की अर्द्धमागधी भाषा, जग जन की कल्याणी।
सुरकृत चौदह अतिशय पातें, जिनवर केवल ज्ञानी॥

दर्शन करके तीर्थंकर के, भाव सहित गुण गाएँ॥
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥21॥

ॐ ह्रीं सुरकृत अर्द्धमागधी भाषा देशना रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ-जहाँ हो गमन प्रभू का, वैर भाव नर खोवें।
मैत्री भाव सभी जीवों में, जिन दर्शन से होवें।
दर्शन करके, तीर्थंकर के, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥22॥

ॐ ह्रीं सुरकृत सर्वजीव परस्पर मैत्री भाव रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के आत्म तेज से सुरकृत, चौदह अतिशय भाई।
मेघ पटल से रहित गगन हो निर्मल शुभ सुखदायी॥
दर्शन करके तीर्थंकर के, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥23॥

ॐ ह्रीं सुरकृतनिर्मलआतिशय रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय श्री देवाधिदेव का, जग में सुखप्रद जानो।
मल से रहित हों सर्व दिशाएँ, निर्मल शुभमय मानो॥
दर्शन करके तीर्थंकर के, भाव सहित गुण गाएँ।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाएँ॥24॥

ॐ ह्रीं सुरकृत निर्मल दिक् चक्रातिशय रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भु छन्द)

षड् ऋतुओं के फलफूलादिक, एक समय फल जाते हैं।
केवल ज्ञान के अतिशय से सब, भव के दुख क्षय जाते हैं।
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाते हैं॥25॥

ॐ ह्रीं सुरकृत सर्वजीव षट्ऋतुफलितपुष्पफलरूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण वत् पृथ्वी इक योजन, निर्मल शुभ होवे अविकार।
यह सुरकृत सुखदायक अतिशय, जग में नित होवे मनहार॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाते हैं॥26॥

ॐ ह्रीं सुरकृत दर्पणवत् स्वच्छ निर्मल धरित्री रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ पच्चिस स्वर्ण कमल की, रचना सुरकृत सुखदायी।
प्रभु विहार में चरण तले ये, पुष्प सुशोभित हों भाई॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाते हैं॥27॥

ॐ ह्रीं सुरकृत जिन चरणकमलतल स्वर्ण कमल रचना रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय ध्वनि सुर द्वारा नभ में, प्रभु विहार में होय विशेष।
तीर्थंकर त्रिभुवन में सुख के, धारी होते जिन तीर्थेश
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाते हैं॥28॥

ॐ ह्रीं सुरकृत नभसि जिनवर जयघोष रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विहार में मन्द सुगन्धित, वायू चलती सुखदायी।
तीर्थंकर का अतिशय ऐसा, परम शांति होवे भाई॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, अतिशय गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव लक्ष्मी सुख पाते हैं॥29॥

ॐ ह्रीं सुरकृत मन्द सुगन्ध युत वयाररूप रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ कुमार देव वृष्टी शुभ, गंधोदक की अपरम्पार।
समवशरण में आकर करते, शीतलता प्रद बारम्बार॥

तीर्थंकर का दर्शन करके, प्राणी गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाते हैं॥30॥

ॐ ह्रीं सुकृत गन्धोदक वृष्टि रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

हो विहार प्रभु का सुखदायक, मंगलकारी अपरम्पार।
परम आनन्द सभी जीवों को, प्रभु प्रताप से हो मनहार॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, प्राणी गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाते हैं॥31॥

ॐ ह्रीं सुकृत सर्वजन परमानन्द रूप (अर्थात् हर्षित सृष्टि रूप) केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नित सुरकृत निष्कंटक पृथ्वी, प्रभु अतिशय से हो भाई।
दर्पणवत् प्रभु के विहार से, स्वच्छ भूमि हो सुखदायी॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, प्राणी गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाते हैं॥32॥

ॐ ह्रीं सुकृत निष्कंटकभूमि रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के आगे धर्मचक्र का, चलना अति मन भाता है।
धर्मचक्र शिव मार्ग प्रकाशक, अतिशय पुण्य करता है॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, प्राणी गुण प्रगटाते है।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाते है॥33॥

ॐ ह्रीं सुकृत जिन अग्रचलित धर्मचक्र रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र चँवर घण्टा ध्वज दर्पण, स्वस्तिक झारी पंखा जान॥
अतिशय मंगल अष्ट द्रव्य ये, प्राप्त करें अर्हत् भगवान॥
तीर्थंकर का दर्शन करके, प्राणी गुण प्रगटाते हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिवलक्ष्मी सुख पाते हैं॥34॥

ॐ ह्रीं सुरकृत सहचलायमान वसु (अष्ट) मंगल द्रव्य रूप केवलज्ञानातिशय गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य (शम्भू छन्द)

तीर्थंकर के समवशरण में, तरु अशोक शुभ होता है।
पाकर के सानिध्य प्रभु का, शोक पूर्णतः खोता है॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी है॥
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा शिव पद कारी है॥35॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

रत्नजड़ित सिंहासन पर प्रभु, समवशरण में शोभ रहे।
तीर्थंकर जिन शान्त सौम्यछवि, से जग जन को मोह रहे॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी है।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा शिव पद कारी हैं॥36॥

ॐ ह्रीं सिंहासन महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

तीर्थंकर के मस्तक पर नित, छत्र त्रय शुभकर जानो।
तीन लोक के अधिपति अर्हत्, जग में सुन्दरतम् मानो॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा है शिव पद कारी हैं॥37॥

ॐ ह्रीं छत्र त्रय महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

घातिकर्म के क्षय से प्रभु के, सिर पीछे भामण्डल होय।
जीव के सात भवों का दर्शन, भामण्डल में होवे सोय॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा है शिव पद कारी हैं॥38॥

ॐ ह्रीं भामण्डल महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

प्रभु के सिर पर देवों द्वारा, चौंसठ चँवर दिव्य ढुरते।
प्रभु को नमस्कार करने से, भव्य मोक्ष लक्ष्मी वरते॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा है शिवपद कारी हैं॥39॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

देव दुन्दुभि गगन मध्य शुभ, जिनके अतिशय से शुभकार।
तीर्थंकर के धर्मराज्य की, सूचक है जो अपरम्पार॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा है शिवपद कारी हैं॥40॥

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

देवों द्वारा प्रभु मस्तक पर, पुष्पवृष्टि नित होती है।
मानो प्रभु के दिव्य गुणों की, पंक्ति प्रसारित होती है॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा शिव पद कारी है॥41॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्टवृष्टि महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

समवशरण में प्रभु के मुख से, ध्वनि निरक्षरी खिरती है।
प्रभु की वाणी मृदु हितकारी, जग का कालुष हरती है॥
प्रातिहार्य से शोभित जिनवर, त्रिभुवन में हितकारी हैं।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा शिव पद कारी है॥42॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि महाप्रातिहार्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं...

"अनन्त चतुष्टय"

(जोगीरासा छन्द)

ज्ञानावरण कर्म के क्षय से, ज्ञानानंत जगाते।
स्याद्वादमय प्रभु की वाणी, सब सुखकारी गाते॥
अनन्त चतुष्टय मंडित श्री जिन, समवशरण में जानो।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव सुखकारी मानो॥43॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाश कर दर्शन वरणी, दर्शन गुण प्रगटाते।
प्रभु के दर्शन पाकर नित ही, भव-भव दुख छय जाते॥
अनन्त चतुष्टय मंडित श्री जिन, समवशरण में जानो।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव सुखकारी मानो॥44॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी परमातम जिन, अनन्तचतुष्टय पाते।
मोहनीय कर्मों के क्षय से, सुख अनन्त प्रगटाते॥

अनन्त चतुष्टय मंडित श्री जिन, समवशरण में जानो।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव सुखकारी मानो॥45॥
ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण मंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी अन्त न होय वीर्य का, बल अनन्त प्रगटाते।
अन्तराय कर्मों के क्षय से, बल अनन्त सुख पाते॥
अनन्त चतुष्टय मंडित श्री जिन, समवशरण में जानो।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, शिव सुखकारी मानो॥46॥
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुणमंडिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

छियालिस गुण के धारी जिनवर, तीर्थंकर अविकारी
दस-दस जन्म ज्ञान के अतिशय, चौदह सुरकृत कारी॥
प्रभु जी अष्ट प्रातिहार्य पाएँ, चार चतुष्टय धारी।
पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर, महा सौख्य फलकारी॥
ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुण मंडित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिः।)

अष्टादश दोष रहित तीर्थंकर के अर्घ्य

दोहा– दोष अठारह रहित प्रभू, जग में मंगलकार।
पुष्पाञ्जलि देते यहाँ, सर्व शांति सुखकार॥

(इति मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।)

दोहा– क्षुधा दोष से रहित हैं, तीर्थंकर भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजते, चरणों में धर ध्यान॥1॥
ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष से रहित हैं, तीर्थंकर भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजते, चरणों में धर ध्यान॥2॥
ॐ ह्रीं तृषामहादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष से रहित हैं, तीर्थंकर भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजते, चरणों में धर ध्यान॥3॥
ॐ ह्रीं जन्ममहादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष से रहित हैं, तीर्थंकर भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजते, चरणों में धर ध्यान॥4॥
ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण दोष से रहित हैं, तीर्थंकर भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजते, चरणों में धर ध्यान॥5॥
ॐ ह्रीं मरण महादेष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष विहीन हैं, तीर्थंकर जिनराज।
मणि रत्नों मय पूजते, चरणाम्बुज जिन आज॥6॥
ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों के थाल में, लेकर द्रव्य महान।
अरति दोष से रहित जिन का करते गुणगान॥7॥
ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों के थाल में, लेकर द्रव्य महान।
खेद दोष से रहित जिन, का करते गुणगान॥8॥
ॐ ह्रीं खेद महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों से थाल में, लेकर द्रव्य महान।
शोक दोष से रहित जिन, का करते गुणगान॥9॥
ॐ ह्रीं शोक महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों से थाल में, लेकर द्रव्य महान।
रोग दोष से रहित जिन, का करते गुणगान॥10॥
ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों से थाल में, लेकर द्रव्य महान।
मान दोष से रहित जिन, का करते गुणगान॥11॥
ॐ ह्रीं मान महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों से थाल में, लेकर द्रव्य महान।
मोह दोष से रहित जिन, का करते गुणगान॥12॥
ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों से थाल में, लेकर द्रव्य महान।
राग दोष से रहित जिन, का करते गुणगान।।13।।

ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों से थाल में, लेकर द्रव्य महान।
द्वेष दोष से रहित जिन, का करते गुणगान।।14।।

ॐ ह्रीं द्वेष महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से पूजते, लोक पूज्य तीर्थेश।
विरहित हैं भय दोष से, जगती पति अवधेश।।15।।

ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्नों के थाल में, नीरादिक धरि आठ।
निद्रा दोष रहित प्रभो!, पूजें करि बहु ठाठ।।16।।

ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में पूज्य हैं, जिन अर्हंत भगवान।
चिन्ता दोष विहीन हैं, करते हम गुणगान।।17।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में पूज्य हैं, अवनिपति तीर्थेश।
स्वेद दोष से रहित हैं, दोष रहें ना शेष।।18।।

ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

दोष अठारह से रहित, जग में शोभा पाय।
जल फलादि वसु द्रव्य ले, पूजें श्री जिनराय।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश महादोश रहित श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

यक्ष यक्षिणियों द्वारा श्री जिन के अर्घ्य

दोहा

यक्ष यक्षिणी नित रहें, समवशरण प्रभु पास।
पुष्पाञ्जलि देते सदा, आवों मिल सब आज।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्।)

(चौपाई)

जय-जय आदिनाथ सुखदाय, 'गोमुख' शासन यक्ष कहाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय।।1।।

ॐ ह्रीं शासनदेव 'गोमुख' यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय अजितनाथ भगवान, 'महायक्ष' करता गुणगान।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं शासनदेव 'महायक्ष' यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री अजितनाथस्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय संभव जिन सुखदाय, 'त्रिमुख' आपका यक्ष कहाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं शासनदेव त्रिमुख यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनन्दन आनन्द कराय, 'यक्षेश्वर' पद में शिरनाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय।।4।।

ॐ ह्रीं शासनदेव यक्षेश्वर यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय सुमतिनाथ जिनराय, यक्ष 'तुम्बुरू' शीश झुकाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय।।5।।

ॐ ह्रीं शासनदेव तुम्बुरू यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय पद्मनाथ जिनराय, 'पुष्प यक्ष' नित शीश झुकाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥6॥

ॐ ह्रीं शासनदेव पुष्प यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री पद्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिनवर सुखदाय, 'यक्ष मातंग' चरण झुक जाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं शासनदेव मातंग यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्रनाथ श्री वृद्धि कराय, 'श्याम' यक्ष जिन भक्ति लगाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥8॥

ॐ ह्रीं शासनदेव श्याम यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्पदंत जिनवर हितदाय, 'अजित' यक्ष जिन भक्ति बढ़ाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥9॥

ॐ ह्रीं शासनदेव अजित यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीतलनाथ जजूँ मनलाय, 'ब्रह्मयक्ष' जिनवर गुण गाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥10॥

ॐ ह्रीं शासनदेव ब्रह्मयक्ष यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री शीतलनाथस्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री श्रेयांस जिनेश्वर देव, 'ईश्वर' यक्ष करें नित सेव।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥11॥

ॐ ह्रीं शासनदेव ईश्वर यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय वासुपूज्य जिनदेव, यक्ष 'कुमार' करे नित सेव।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥12॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथस्य शासनदेव कुमार यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय विमलनाथ जिनदेव, 'षण्मुख' यक्ष करें नित सेव।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥13॥

ॐ ह्रीं शासनदेव षण्मुख यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनंतनाथ सुयश दिलवाय, 'पाताल' यक्ष सदा गुणगाय।
तिनके सिर पे श्री जिनराय, पूजें वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय॥14॥

ॐ ह्रीं शासनदेव पाताल यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय धर्मनाथ जिनेदव, 'किन्नर' यक्ष करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥15॥

ॐ ह्रीं शासनदेव किन्नर यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय शांतिनाथ जिनदेव, 'गरुड' यक्ष करता नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥16॥

ॐ ह्रीं शासनदेव गरूड यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय कुन्थुनाथ जिनदेव, 'गंधर्व' यक्ष करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥17॥

ॐ ह्रीं शासनदेव गंधर्व यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय अरहनाथ जिनदेव, यक्ष 'खगेन्द्र' करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥18॥

ॐ ह्रीं शासनदेव खगेन्द्र यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय मल्लिजिनेश्वर देव, यक्ष 'कुबेर' करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥19॥

ॐ ह्रीं शासनदेव कुबेर यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय मुनिसुव्रत जिनदेव, 'वरुण' यक्ष करते नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥20॥

ॐ ह्रीं शासनदेव वरूण यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय नमिनाथ जिनेश्वर देव, 'भ्रकुटी' यक्ष करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥21॥

ॐ ह्रीं शासनदेव भ्रकुटी यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय नेमिनाथ जिनदेव, 'गोमेद' यक्ष करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥22॥

ॐ ह्रीं शासनदेव गोमेद यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय पार्श्वनाथ जिनदेव, 'धरणेन्द्र' यक्ष करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥23॥

ॐ ह्रीं शासनदेव धरणेन्द्र यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय महावीर जिनदेव, 'मातंग' यक्ष करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु को पूज रहे हम आज॥24॥

ॐ ह्रीं शासनदेव मातंग यक्ष पाद पदमार्चिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(यक्षिणी द्वारा पूज्य श्री जिन के अर्घ्य)

जय-जय आदिनाथ जिनराय, 'चक्रेश्वरी' यक्षी सिरनाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥1॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि चक्रेश्वरी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय अजित जिनेश्वर देव, 'रोहिणी' यक्षि करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥2॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि रोहिणी यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय श्रीजिन संभव देव, 'प्रज्ञप्ति' यक्षी करि सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥3॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि प्रज्ञप्ति यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय श्री अभिनन्दनदेव, 'वज्र शृंखला' करि नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥4॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि वज्रशृंखला यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय सुमति जिनेश्वर देव, पुरुषदत्ता यक्षी करि सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥5॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि पुरुषदत्ता यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय जय श्री पद्मप्रभ देव, मनोवेगा यक्षी करि सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥6॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि मनोवेगा यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री पद्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय श्री जिन सुपारस देव, काली यक्षी करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥7॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि काली यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय चन्द्रनाथ जिनराय! ज्वालामालिनी माथा नाय॥
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥8॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि ज्वालामालिनी यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय पुष्पदंत जिनदेव, करे 'महाकाली' नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥9॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि महाकाली यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय श्री शीतल जिनराय, 'चामुण्डा' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥10॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि चामुण्डा यक्षी पाद पदमार्चिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय श्रेयांसनाथ जिन देव, 'गौरी यक्षि' करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥11॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि गौरी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय वासुपूज्य जिनराय, 'गांधारी यक्षि' सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥12॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि गांधारी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री वासुपूज्यनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय विमलनाथ जिनराय, 'वैरोटी यक्षी' सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥13॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि वैरोटी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय अनंत नाथ जिनराय, 'अनन्तमती यक्षी' सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥14॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि अनन्तमति यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय धर्मनाथ जिनदेव, 'मानसी' यक्षी करे नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥15॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि मानसी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय शांतिनाथ जिनदेव, करे महामहानसी नित सेव।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥16॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि महामानसी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय कुन्थुनाथ जिनराय, 'यक्षी गांधारी', सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥17॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि जया गांधारी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय अरहनाथ जिनराय, 'तारावती' यक्षी सिरनाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥18॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि तारावती यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय मल्लिनाथ जिनराय, 'अपराजिता' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥19॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि अपराजिता यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय श्री मुनिसुव्रत जिनराय, 'बहुरूपिणी' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥20॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि बहुरूपणी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय श्री नमि जिनेश्वराय, 'चामुण्डा' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥21॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि चामुण्डा यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय नेमिनाथ जिनराय, 'कुष्माण्डनी' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥22॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि कुष्माण्डनी यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय पार्श्वनाथ जिनराय, 'पद्मावती' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिनराज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥23॥

ॐ ह्रीं शासनदेवि पद्मावती यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय महावीर जिनराय, 'सिद्धायनी' यक्षी सिर नाय।
सिर पर सोहें श्री जिन राज, प्रभु पद पूजे सकल समाज॥24॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रस्य शासनदेवि 'सिद्धायनी' यक्षि पाद पदमार्चिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– समवशरण जिन यज्ञ में, आवें शासन देव।
जल गंधाक्षत अर्पिते, शांती करो सदैव॥

ॐ ह्रीं गोमुखादि सर्व यक्ष, चक्रेश्वर्यादि सर्व यक्षी! पाद पदमार्चिताय श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नमः

अथ जयमाला

दोहा– छियालिस गुण को प्राप्त कर, बनते जिन तीर्थेश।
गाते शुभ जयमालिका, पावें सुगुण विशेष॥

चौपाई

तीर्थंकर गुण जो भी ध्यावें, वे शिवपद लक्ष्मी को पावें।
प्रभु जनमत दस अतिशय पाते, सुरगण नतमस्तक हो जाते॥1॥
केवलज्ञान जु प्रभु को होई, दस अतिशय प्रभु पावें सोई।
चौदह अतिशय सुरकृत जानो, तिनकी महिमा अद्‌भुत मानो॥2॥
अष्ट प्रातिहार्य शुभ पाते, यह अतिशय प्रभु के जग जाते।
तीन लोक में मंगलकारी, प्रभु! हैं अनन्त चतुष्टयधारी॥3॥
प्रभु हैं छियालिस गुण के धारी, जिन की शरण सदा सुखकारी।
दोष अठारह रहित बताये, जिन थुति से वांछित फल पाए॥4॥
देवलोक से सुरगण आवें, तीर्थंकर गुण पूज रचावें।
छम-छम-छम सुर नाच रचावें, दृम-दृम-दृम मिरदंग बजावें॥5॥
सुरगण धन्य धन्य गुण गावें, प्रभु दर्शन कर हर्ष मनावें।
प्रभु पूजा विघ्नों को नाशे, दर्शन से भवि कल्मश ह्रासे॥6॥

हम तो प्रभु का ध्यान लगाएँ, पूजा कर भवि जन्म नशाएँ।
अर्हत् पद के तुम अधिकारी, भव-भव दुख के तुम ही तारी॥7॥
भव्य जीव जिनको जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
जय-जय तीर्थंकर गुण ध्याएँ, समवशरण प्रभु शीश झुकाएँ॥8॥
प्रभू आपके हम गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अपने सारे कर्म नशाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवी को पाएँ॥9॥

दोहा

तीर्थंकर प्रभु के सदा, अतिशय सब सुखदाय।
छियालिसों गुण हम जजें, शिव लक्ष्मी मिल जाय॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषविहीन-षट् चत्वारिंशद् गुणस्वामिने गोमुख चक्रेश्वर्यादि यक्ष यक्षी सेवित श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

कवित्त छन्द

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीनलोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजें, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
ताके सुख समृद्धि धन धान्य, ज्ञान सम्पदा मिलै अपार।
विशद इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मत बहाओ आँसू उन पर,
जो इस जहाँ से चले गये।
मातम करो बुजदिलों पर,
जो जुल्मों से डरके आँख मीच लेते हैं।

अथ श्री जिन दिव्यध्वनि पूजा प्रारभ्यते–15

अथ स्थापना (जोगीरासा)

तीर्थंकर के मुख से निकली, ओंकार मय शुभ वाणी।
समवशरण में सब जीवों का, हित करती है जिनवाणी।।
दिव्यध्वनि सुन द्वादशांग श्रुत, गणधर नित्य रचाते हैं।
दिव्यध्वनि की पूजा करके, अतुल सौख्य हम पाते हैं।।

दोहा– **दिव्यध्वनि आह्वान कर, विशद भाव के साथ।**
शत-शत वन्दन हम करें, झुका रहे हैं माथ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्व भाषामयदिव्यध्वनि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वृषभदि चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्व भाषामयदिव्यध्वनि समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमलविनिर्गतसर्वभाषा-मयदिव्यध्वनि समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छन्द:-वसन्ततिलका

भृंगार हेम परि पूरित वारि लाए।
माँ शारदा चरण जन्म जरा नशाए।।
श्री भारती भगवती जिन दिव्य वाणी।
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामय दिव्यध्वनिभ्य: जलं समर्पयामीति स्वाहा।

गोशीर केसर सु चंदन संग लाए।
माता करूँ तव सु भक्ति हिये धराए।
श्री भारती भगवती जिन दिव्य वाणी,
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामय दिव्यध्वनिभ्य: चन्दन समपर्यमीति स्वाहा।

मोती समान शुभ अक्षत पुंज लाए।
वाणी जजें परम अक्षय सौख्य पाए।।
श्री भारती भगवती जिन दिव्य वाणी।
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

मन्दार कल्पतरु पुष्प संवारि लाए।
श्री शारदा सु चरणों शिर हम झुकाए।।
श्री भारती भगवती जिन दिव्यवाणी,
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: पुष्प समर्पयामीति स्वाहा।

नैवेद्य मिष्ठ घृत पूरित दिव्य लाए।
पूजा विधान रचने शुभ चरु चढ़ाए।।
श्री भारती भगवती जिन दिव्यवाणी।
चर्चों पदाब्ज तब दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

रत्नों सुदीप घृत वाति कपूर लाए।
मिथ्यात्व नाश करने तुमको चढ़ाए।।
श्री भारती भगवती, जिन दिव्यवाणी।
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

खेवों सुधूप हरि चंदन वह्नि माहीं।
माता तवाग्र वसुकर्म जरंत जाहीं।।
श्री भारती भगवती जिन दिव्यवाणी।
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

ऐला लवंग फल कंचन थाल लाई।
वागीश्वरी नित जजूँ तुम मोक्ष दाई॥
श्री भारती भगवती जिन दिव्यवाणी।
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी॥8॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: फलं समर्पयामीति स्वाहा।

श्रीमत् जिनेन्द्र मुख पद्म पियूष वाणी।
देते तवाग्र वसु अर्घ्य ये सौख्यदानी॥
श्री भारती भगवती, जिन दिव्यवाणी।
चर्चों पदाब्ज तव दिव्य जिनेन्द्र! वाणी॥9॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत सर्वभाषामयदिव्यध्वनिभ्य: अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा

प्रमुदित मन मेरा हुआ, जैसे चंद चकोर।
शांती धारा दे रहे, शांती हो चहुँ ओर॥

शांतये शांतिधारा।

पुष्पाञ्जलि करते चरण, हे त्रि जग की मात।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥

दिव्य पुष्पाजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– दिव्य-ध्वनि पूजा शुभम्, करे जो मन वच काय।
द्वादशांग वाणी परम, महा मोक्ष फलदाय॥

(इति मंडलस्योपरि पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्।)

(शंभु छन्द)

समवशरण में जिनवर मुख से, दिव्यध्वनि शुभ खिरे अनूप
अष्टादश शुभ महाभाषाएँ, सप्तशतक् लघु भाषा रूप॥

भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, जिसके द्वारा होता ज्ञान।
राही बनकर मुक्ती पथ के, पा लेते हैं पद निर्वाण॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत अष्टादश महाभाषा सप्तशतक् क्षुल्लक भाषामय दिव्य ध्वनिभ्य: अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा– गणधर जिनधुनि श्रवण कर, द्वादश अंग रचाय।
पूज रहे हम भक्ति से, ज्ञानामृत मिल जाय॥

शंभु छन्द

तीर्थंकर वाणी से भाषित, गणधर रचित सूत्र पावन।
द्वादशांग मय वाणी मंगल, भव्यों को है मनभावन॥
प्रथम अंग में मुनिश्वरों के, सब 'आचार' का किया कथन।
पद अष्टादश सहस प्रमाण का, आचारांग में है वर्णन॥2॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुख कमल विनिर्गत आचारांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसमें ज्ञान विनय आदिक अरु, क्रिया विशेष का है वर्णन।
धर्म क्रिया में स्वमत परमत, कल्पाकल्प का रहा कथन॥
द्वादशांग के 'सूत्र कृताँग' में, पद छत्तीस सहस पावन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सफल होय मेरा जीवन॥3॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुख कमल विनिर्गत सूत्र कृतांगाय अर्घ्यं...

एकादिक जिसमें पदार्थ के, स्थानों का किया कथन।
जीव सामान्य इक द्वि त्रि आदिक, स्थानों का है वर्णन॥
'स्थानांग' द्वादशांग सूत्र में, पद बियालीस सहस पावन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सफल होय मेरा जीवन॥4॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत स्थानांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ जीवादिक षड्द्रव्यों का, द्रव्य अपेक्षा होय कथन।
क्षेत्र काल अरु भाव अपेक्षा, मिथ: सादृश्य है वर्णन॥
एक लाख चौंसठ हजार पद, 'समवायांग' में हैं पावन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सफल होय मेरा जीवन॥5॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत समवायांग अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साठ सहस्र प्रश्न गणधर के, अस्ति नास्ति आदिक शुभकार।
समवशरण में इन प्रश्नों के, उत्तर का होता अवतार।।
पद दो लख सहस अठाईस, 'व्याख्या प्रज्ञप्ती' में वर्णन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सफल होय मेरा जीवन।।6।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत व्याख्याप्रज्ञप्ति अंगाय अर्घ्यं...

तीर्थंकर के धर्म कथादिक, का जिसमें सारा वर्णन।
जीवादिक सब द्रव्य पदार्थों, के स्वभाव, का किया कथन।।
गणधर प्रश्नों के उत्तर का, दिव्यध्वनि में कहते सार।
छठे 'ज्ञातृधर्मकथांग' में पद, पाँच लाख छप्पन हज्जार।।7।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत ज्ञातृधर्मकथांग अंगाय अर्घ्यं...

जिसमें ग्यारह प्रतिमा आदिक, श्रावक का आचार कहा।
पद ग्यारह लख सत्तर सहस्र युत, 'उपासकाध्ययनांग' रहा।।
द्वादशांगमय वाणी निर्मल, भव्यों को निर्मल करती।
दिव्यध्वनि की पूजा करके, सुख समृद्धी वैभव भरती।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुख कमल विनिर्गत उपासकाध्ययनांग अर्घ्यं...

प्रति तीर्थंकर काल में दस-दस, अन्तःकृत केवली गाये।
अरु 'अन्तःकृत दशांग' सूत्र में, इन्हीं का शुभ वर्णन पाए।।
तेईस लाख अठाईस सहस पद, 'अन्तःकृत दश में आवें।
तिनको पूजें मन वच तन से, परमानंद सु पद पावें।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत अन्तःकृतदशांगाय अर्घ्यं...

प्रति तीर्थंकर के सुकाल में, दश दश महामुनि शुभ जानो।
वे सब घोर उपसर्ग सहनकर, अनुत्तर विमान में जन्में मानो।।
'अनुत्तर दशांग' में सुपद बानवे, लाख चवालिस सहस कहे।
तिनको मन वच तन से पूजें, ज्ञान की सरिता श्रेष्ठ बहे।।10।।

ॐ ह्रीं वृषभादि मुख कमल विनिर्गत अनुत्तरोपादक अंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतीत अनागतकाल के शुभ अरु, अशुभ का प्रश्न करे कोई।
अरु उसके उत्तर का जिसमें, समुचित उपाय वर्णन होई।।

आक्षेपणी आदिक चार कथा का, जिसमें वर्णन शुभ गाया।
वही 'प्रश्न व्याकरण' नाम का, दशम अंग शुभ कहलाया।।

दोहा– तिरानवे लाख सोलह सहस, पद गाए शुभकार।
जिनपद वन्दन कर मिले, नर जीवन का सार।।11।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत प्रश्नव्याकरणांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय के तीव्र मंद का, वर्णन जिसमें वर्णित जान।
द्रव्य क्षेत्र अरुकाल भाव से, अनुभाग अपेक्षा वर्णन मान।।
अथवा जिसमें पुण्य पाप का, वर्णन सारा बतलाया।
वह इक कोटि चौरासी लाख पद, 'विपाक सूत्र' अंग गाया।।12।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत विपाकसूत्रांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन सौ त्रेसठ मिथ्या मत का, खण्डन वर्णन जिसमें होय।
इक सौ आठ कोटि अड़सठ लख, छप्पन सहस पंच पद सोय।।
'दृष्टिवाद' के पंच भेद में, परिकर्म सूत्र अरु प्रथमानुयोग।
और पूर्वगत चूलिका ध्याएँ, मन वच काय लगा त्रियोग।।13।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत दृष्टिवादांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणित करण परिकर्म सूत्र में, चन्द्र प्रज्ञप्ती प्रथम कहा।
उसमें चन्द्रगमन परिवार अरु, वृद्धि हानि ग्रह कथन रहा।।
छत्तिस लाख अरु पाँच हजार पद, 'चन्द्र-प्रज्ञप्ति' के गाये।
तिनको पूजें मन वच तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि आए।।14।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुख पद्म विनिर्गत चन्द्रप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

द्वितिय सूर्य-प्रज्ञप्ति भेद शुभ, परिकर्म अधिकार में जानो।
सूर्य ऋद्धि परिवार गमन अरु, ग्रहादि वर्णन जिसमें मानो।।
'सूर्य प्रज्ञप्ती' में पाँच लाख अरु, तीन हजार सुपद गाये।
तिनकों पूजूँ मन वच तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि आए।।15।।

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत सूर्यप्रज्ञप्तये अर्घ्यं..

परिकर्म सूत्र सु 'जम्बूद्वीप शुभ, प्रज्ञप्ती' नाम तृतीय भाई।
जिसमें द्वीप के मेरु गिरि अरु, कुलाचलादि कथनी गाई॥
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ती पद त्रय, लाख पच्चीस हजार गाए।
तिनको पूजें मन वच तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि आए॥16॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्व स्वाहा।.

'द्वीप सागर प्रज्ञप्ती' में नित, द्वीप सागर का हो निरुपण।
तत्र स्थित व्यन्तरादि आवास अरु, जिन मन्दिर का शुभ वर्णन॥
बावन लख छत्तीस सहसपद, द्वीप सागर प्रज्ञप्ति कहे।
तिनकों पूजें मन-वच-तन से, बुद्धि वृद्धि नित श्रेष्ठ रहे॥17॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत द्वीप सागरप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्व स्वाहा।.

जीव अजीव पदार्थों के सब , है प्रमाण का शुभ वर्णन गाय।
पंचम 'व्याख्या प्रज्ञप्ती' में, सूत्र सु भाषित है पावन॥
इसके पद चौरासी लाख अरु, छत्तीस हजार दिव्य गाये।
तिनको पूजूँ मन-वच-तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि आए॥18॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत व्याख्याप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

दृष्टिवाद का भेद दूसरा, 'सूत्र' नाम का सुन्दर जान।
तीन सौ तिरेसठ कुमत पक्ष, प्रतिपक्ष रूप वर्णन यह मान॥
इसके पद अट्ठयासी लाख, जिनवर मुख से भाषित गाए।
तिनकों पूजूँ मन-वच-तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि आए॥19॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत दृष्टिवादभेद सूत्राय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

दृष्टिवाद का भेद तीसरा, 'प्रथमानुयोग' कहा जाए।
तिरेसठ शलाका पुरुषों का भी, जिसमें वर्णन शुभ आए॥
प्रथमानुयोग पद पंच सहस शुभ, जिनवर भाषित शुभ गाये।
जिनकी अर्चा करने को यह, अर्घ्य चढ़ाने को लाए॥20॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गतदृष्टिवाद भेद प्रथमानुयोगाय अर्घ्यं...

जिसमें वस्तू के उत्पाद व्यय, और ध्रौव्य का है वर्णन।
अंग बारहवें दृष्टिवाद शुभ, चौथे भेद का रहा कथन॥

इसके चौदह भेद में पहला, उत्पाद नाम का कहलाए।
जिनकी अर्चा करने को यह, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए॥21॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत दृष्टिवाद भेद पूर्वगत प्रथम उत्पादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रायणी पूरव' में सात सौ, सुनय और दुर्नय वर्णन।
षट् द्रव्यों अरु सप्त तत्त्व नव, है पदार्थ का श्रेष्ठ कथन॥
पद छियानवे लख श्रेष्ठ द्वितिय पद, पूर्व अग्रायणी में गाए।
जिनकी अर्चा करने को यह, अर्घ्य चढ़ाने को लाए॥22॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत अग्रायणी पूर्वाय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

वीर्यानुवाद पूर्व में सत्तर, लाख सदा सु पद गाये।
षड् द्रव्यों की शक्ति रूप शुभ, वीर्य का निरुपण शुभ पाए॥
वीर्यानुवाद पूर्व की भक्ती, से बल वीर्य शक्ति आए।
जिनकी अर्चा करने को यह, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए॥23॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत वीर्यानुवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।.

वस्तू स्व द्रव्यादि अपेक्षा, अस्ति रूप शुभकर गाया।
अरु पर द्रव्यादि अपेक्षा से वह, असत् रूप भी बतलाया॥
'अस्ति-नास्ति प्रवाद' पूर्व से, साठ लाख पद शुभ गाए।
जिनकी अर्चा करने को यह, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए॥24॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं...

कवित्त

पंचम 'ज्ञान प्रवाद' पूर्व में, ज्ञान के भेदों का स्वरूप।
अरु उत्पत्ति संख्या विषयों के, फल का निरुपण होय अनूप॥
ज्ञान-प्रवाद पूर्व के पद इक, कम करोड़ शुभ बतलाए।
तिनकों पूजें मन वच तन से, शिवपद को प्राणी पाए॥25॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत ज्ञानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश प्रकार सत्यों का वर्णन, 'सत्य प्रवाद' पूर्व में जान।
अरु असत्य वचनों की बहुविध, प्रवृत्ति का भी कथन महान॥
षष्ठम् सत्य प्रवाद पूर्व में, एक करोड़ छह पद शुभकार।
तिनकों पूजें मन वच तन से, बुद्धि वृद्धि होवे मनहार॥26॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत सत्यप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

जिसमें आत्मादिक पदार्थ के, बहु विध धर्मों का वर्णन।
निश्चय अरु व्यवहार अपेक्षा, किया गया है श्रेष्ठ कथन॥
'आत्मप्रवाद' में आत्म स्वरूप अरु, पद छब्बीस कोटि गाए।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि आए॥27॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत आत्म प्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

ज्ञानावरणादिक कर्मों के, बंध सत्त्व का है वर्णन।
उदय उदीरणा आदिक का अरु, कर्म सिद्धान्त का श्रेष्ठ कथन॥
एक कोटि पद लाख सुअस्सी, 'कर्म-प्रवाद' पूर्व गाए।
तिनकों पूजें मन वच तन से, बुद्धि वृद्धि प्राणी पाए॥28॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत कर्मप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

पाप त्याग का बहुविध वर्णन, 'प्रत्याख्यान' पूर्व में होय।
त्याग गुप्ति द्रव्यादि अपेक्षा , समिति आदि का वर्णन सोय॥
लाख चौरासी पद का वर्णन, जिनवर मुख भाषित शुभकार।
तिनकों पूजें मन वच तन से, बुद्धि वृद्धि हो मंगलकार॥29॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत प्रत्याख्यान पूर्वाय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

सात सौ लघु विद्याओं का शुभ, है स्वरूप साधन वर्णन।
पाँच सौ महा विद्याओं का भी, मंत्रादिक फल रूप कथन॥
अष्टांग निमित्तज्ञान वर्णन इक, कोटी दश लख पद में जान।
नित 'विद्यानुवाद' पद पूजें, मंगल बुद्धि वृद्धि हो मान॥30॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत विद्यानुवाद पूर्वाय अर्घ्यं..

तीर्थंकर के पंच 'कल्याणक', आदिक का जिसमें वर्णन।
षोडश कारण भव्य भावना, तपश्चरण का रहा कथन॥
चक्री का वैभव वर्णन अरु, पद छब्बीस कोटि शुभकार।
तिनकों पूजें मन वच तन से, बुद्धि वृद्धि होवे मनहार॥31॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत कल्याणवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

द्वादश 'प्राणावाय पूर्व' में, तेरह कोटि सु पद गाए।
वसुविध वैद्यक अरु भूतादिक, मंत्र व्याधि नाशक पाए॥
विष नाशक मंत्रादि प्रयोग अरु, स्वरोदय का वर्णन गाया।
तिनकों पूजें मन वच तन से, बुद्धि वृद्धि दायक पाया॥32॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत प्राणवायप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं...

चौंसठ कला क्रिया चौरासी, संगीत शास्त्रों का वर्णन।
'क्रिया विशाल पूर्व' में नित ही, अलंकार का रहा कथन॥
नित्य नैमित्तिक क्रिया आदि अरु, छन्द व्याकरणादि महान।
तिनकों मन में नित ही ध्याएँ, जागे स्वपर भेद विज्ञान॥33॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत क्रियाविशाल पूर्वाय अर्घ्यं...

बीज गणित स्वरूप लोक अरु, मोक्ष का है जिसमें वर्णन।
मोक्ष सु कारण भूत क्रिया का, शुभ स्वरूप आदिक निरुपण ॥
पद 'त्रिलोक बिन्दु सु सार' में, द्वादश कोटी लाख पचास।
तिनकों पूजें मन वच तन से, पाएँ हम शिवपुर में वास॥34॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत त्रिलोक बिन्दुसार पूर्वाय अर्घ्यं...

जल स्तंभन मन्त्र तन्त्र का, वर्णन जिसमें वर्णित होय।
अग्नि प्रवेश स्तंभन भक्षण, आदि मन्त्र रु तन्त्र भी सोय॥
पद द्वय कोटि नव लाख नवासी, सहस दोय शत् है शुभकार।
भेद रहा जल गता 'चूलिका', का भी पावन मंगलकार॥35॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत जलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

'स्थलगता' में मेरू पर्वत, भूमि-प्रवेश का शुभ वर्णन।
शीघ्र गमनादिक मन्त्रतन्त्र अरु, तपश्चरण का रहा कथन॥
पद द्वय कोटि नवलाख नवासी, सहस दोय शत रहे महान।
स्थलगता पूजते पावन, करने को आतम कल्याण॥36॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत स्थलगता चूलिकायै अर्घ्यं...

'मायागता' में मायामय अरु, इन्द्रजाल का है वर्णन।
इन्द्रजाल विक्रियादिक मंत्रों, तन्त्रादिक का है निरुपण॥
नित द्वय कोटि नव लख नवासी, सहस द्विशतपद इसमें जान॥
तिनकों पूजें मन-वच-तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि हो मान॥37॥
ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत मायागता चूलिकायै अर्घ्यं...

धातु रसायन काष्ठ लेपादिक, लक्षण का जिसमें वर्णन।
सिंह गज रूप धारने वाले, मन्त्र तन्त्र का रहा कथन॥
दो करोड़ नौ लाख नवासी, सहस द्विशत् पद जिसमें जान।
'रूपगता' पूजें मन वच तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि हो मान॥38॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत रूपगता चूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ 'आकाशगता(में पावन, है आकाश गमन वर्णन।
नभ में गमन के कारण गाये, मन्त्र तन्त्र का रहा कथन॥
दो करोड़ नौ लाख नवासी, सहस दिशत् पद इसमें जान।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मंगल बुद्धि वृद्धि हो मान॥39॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत आकाशगता चूलिकायै अर्घ्यं...

सामायिक चतुर्विंशति स्तव, देव वंदना प्रतिक्रमण।
वैनयिक कृतिकर्म प्रकीर्णक, दशवैकालिक का वर्णन॥
अष्टम् उत्तराध्ययन पद सुन्दर, कल्पव्यवहार नवम् गाया।
जिसको पूजूँ मन वच तन से, शिव का कारण बतलाया॥40॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत सामायिकादिक चतुर्दश प्रकीर्णक स्वरूप अंग बाह्येभ्यः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्यं (जोगीरासा छन्द)

श्रुतज्ञानमय दिव्य-ध्वनि शुभ, जग कल्याण करावे।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नितप्रति, भविजन ध्यान लगावे॥
द्वादशांग अरु अंगबाह्य श्रुत, जिनमुख भाषित जानो।
पूज रहे हम मन वच तन से, शिव का कारण मानो॥41॥

ॐ ह्रीं वृषभादि तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत गणधरदेवरचित द्वादशांग अंगबाह्य स्वरूप दिव्यध्वनिभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नमः

अथ जयमाला

दोहा– पूजें जिनवर भक्ति से, दिव्य ध्वनि को आज।
गाएँ तव गुण मालिका, सरें सकल सब काज॥1॥

चौपाई

जय जय जिनवर धर्म के धारी, दयाधुरन्धर जग हितकारी।
तीन लोक में तुम उपकारी, त्रिभुवन मानी शिवसुखकारी॥2॥
जय जय समवशरण के स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
दरश मात्र अघ पाप नशावे, प्रभु दर्शन सम्यक्त्व करावे॥3॥
समवशरण जिन दर्शन पावे, सब ही मान गलित हो जावे।
गणधर मुनि शुभ पुण्प उपायें, तीर्थंकर वाणी जु खिरायें॥4॥
जय जय दिव्य ध्वनि हितकारी, भविजन को शुभ आनन्दकारी॥
समवशरण में जग के प्राणी, ओंकारमय शुभ जिनवाणी॥5॥
स्याद्वादमय प्रभु की वाणी, मिथ्याज्ञान हरे जिनवाणी।
जिन धुनि सुन सब मोह नशावे, त्रिभुवन में आनन्द जो छावें॥6॥
प्रभु ने अइउऋलृ समझाया, षड् द्रव्यों का ज्ञान कराया।
सबके हित खिरती जिनवाणी, जय जय जिनवाणी कल्याणी॥7॥
सुन गणधर मुनि ग्रन्थ रचावें, जिनवाणी आचार्य बतावें।
सिद्ध परम पद को है पाना, ये ही जिनवाणी से जाना॥8॥
जिनवाणी सद्बुद्धि जगावे, मिथ्यातम को दूर भगावे।
जिनवाणी तव शरणा पाएँ, भव दुख का हम चक्र नशाएँ॥9॥
जिनवाणी माँ मंगलकारी, बार-बार यह अरज हमारी।
मुझको भव सागर से तारो, शिवरमणी से शीघ्र ही वारो॥10॥
यही भावना भाते स्वामी, बन जाएँ मुक्ती पथ गामी।
'विशद' मोक्ष पदवी हम पाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ॥11॥
दोहा– दिव्य ध्वनि पूजें सदा, चौबीसों जिन राज।
अर्घ्य चढ़ा तुमको यहाँ, पाएँ सुख निधि आज॥12॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर मुखपद्मविनिर्गत सर्वभाषामय दिव्यध्वनिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

कवित्त छन्द

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजें, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वे धन धान्य सम्पदा वैभव, सुख सम्पत्ती पाएँ अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम से पावें शिवद्वार ॥

(इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्)

अथ गणधर पूजा प्रारभ्यते–16

दोहा

तीर्थंकर की सभा में, भविजन जावें कोय
समवशरण अर्हन्त का, गणधर पूजित होय॥
गणधर बिन न खिर सके, दिव्य-ध्वनि का सार।
गणधर पूजा जो करें, पावें सौख्य अपार॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर-गणधर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर-गणधर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर-गणधर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

क्षीरोदधि निर्मल नीर, कंचन कुंभ भरे।
नश जाए भव की पीर, यातें धार करे॥
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केसर घिस लाय, गंध बनाय महा।
प्रभु भव अताप नशाय, जिन पद जजें अहा॥

गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल के पुञ्ज सजाय, कंचन थाल भरे।
तव चरणों देत चढ़ाय, निज पद प्राप्त करे॥
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुर तरु के सुमन समान, चुन चुन पुष्प करे।
हो काम व्यथा की हान, यातें पुष्प धरे॥
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है॥4॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक घेवर घृत लाय, कंचन थाल भरे।
प्रभु क्षुधा रोग विनशाय, तुम पद भेंट करे॥
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है॥5॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय शुभ दीप जलाय, आतम ज्योति जगा।
मम तिमिर मोह नश जाय, तव पद ढोक लगा॥
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है॥6॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्दन अगर कपूर, दशविध गंध करा।
तव पाद पद्म में पूर, आठों करम जरा॥
गणधर गणनाथ महान, नमन करूँ तुमको।
पद वसु विधि अर्घ्य प्रदान, पाऊँ सुख निधि को॥7॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल पूंगी फल सार, षड् ऋतु के लाए।
प्रभु पूजें फल भरि थार, आतम सुख पाए।
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आठों द्रव्य मिलाय, ताकों अर्घ्य करें।
तुमको पूजें जिनराय, भव दुख शोक हरें।।
गणधर गणनाथ महान, चरण में वन्दन है।
पद वसुविधि अर्घ्य प्रदान, भाव से अर्चन है।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **क्षीरोदधि शुभ नीर, कंचन झारी में भरें।**
हरण करें भव पीर, शांतिधारा त्रय करें।।शांतये शांतिधारा।

दोहा– **सुरभित पुष्प सजाय, रजत पात्र में लाये हैं।**
पुष्पाञ्जलि को आय, जिन पद अर्चा कर रहे।।दिव्य पुष्पांजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा– गणधर मुनि सुखकार, श्री जिनवर को पूजते।
होवे हर्ष अपार, पुष्पाञ्जलि करते यहाँ

।।इति मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अडिल्ल छन्द

आदिनाथ के समवशरण, को जानिए,
गणधर रहे चौरासी, जिनके मानिए।
वृषभ सेन गणधर, पहले कहलाए हैं।
जिनकी पूजा करने, को हम आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवतीर्थंकरस्य ऋषभसेनप्रमुख चतुरशीतिगणधरेभ्य: अर्घ्यं..

दिव्य ध्वनि का सार, गणधर देते जानिए।
अजितनाथ के नब्बे, गणधर मानिए।।

केसरी सेन प्रथम, गणधर कहलाए हैं।
जिनकी पूजा करने, हम भी आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकरस्य केशरीसेन प्रमुखनवति गणधरेभ्य: अर्घ्यं.

प्रभु संभव का नाम, जगत में सिद्ध है।
गणधर उनके इक सौ, पाँच प्रसिद्ध हैं।।
गणधर चारूदत्त, प्रथम कहलाए हैं।
जिनकी पूजा करने, हम भी आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरस्य चारुदत्त प्रमुख पंचाधिक शत् गणधरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन आनंद, करें सुखकार हैं
जिनके इक सौ त्रय, गणधर हितकार हैं।
वज्र चमर पहले, गणधर कहलाए है।
जिनकी पूजा करने, हम भी आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकरस्य वज्रचमर प्रमुख त्रयोयाधिशत् गणधरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके एक सौ सोलह, गणधर गाए हैं।
ऐसे सुमतिनाथ, जिनराज बताए हैं।।
वज्र साधु जी, गणधर प्रथम कहाए हैं।
जिनकी पूजा करने, हम भी आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरस्य श्री वज्र प्रमुख षोडशे एक शत् गणधरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्म प्रभु पद्म, समान बताए हैं।
जिनके इक सौ ग्यारह गणधर गाए हैं।।
प्रथम सुगणधर श्री चमर कहलाए हैं।
जिनकी पूजा करने हम भी आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभतीर्थंकरस्य श्री चमर प्रमुख एकादशे एक शत्गणधरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके पंचानवे श्रेष्ठ गणीश्वर ख्यात हैं।
वे सुपार्श्वजिन इस जग में प्रख्यात हैं।
बलदत्त साधू प्रथम सुगणधर गाए हैं।।
जिनकी पूजा करने हम भी आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरस्य बलदत्त प्रमुख पंचनवति गणधरेभ्यः अर्घ्यं...

चन्द्रनाथ का समवशरण शुभकार है,
जिनके तिरानवे गणधर मंगलकार हैं।
श्री वैदर्भ प्रधान सु गणधर गाए हैं।
जिनकी पूजा करने हम भी आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभतीर्थंकरस्य वैदीभ प्रमुख त्रिनवति गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

पुष्पदंत के अठासी गणधर मान्य हैं,
श्री नाग प्रधान गणधर हैं।
ऋद्धि सिद्धि से युक्त गुणों की खान हैं।
भक्त अतः जिनका करते गुणगान हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकरस्य श्री नाग प्रमुख अष्टाधिकारीति गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

शीतल प्रभु के सतासी गणधर मानिए,
कुन्थु प्रमुख गणधर उनमें पहचानिए।
ऋद्धि सिद्धि से युक्त गुणों की खान हैं।
भक्त अतः जिनका करते गुणगान हैं।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकरस्य श्री कुन्थु प्रमुख सप्ताधिक शीति गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांस प्रभू के सतत्तर गणधर श्रेष्ठ हैं
श्री धर्मगुरु गणनाथ जी उनमें ज्येष्ठ हैं।
रिद्धि सिद्धि से युक्त सु गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरस्य श्री धर्मगुरु प्रमुक्षा सप्त सप्तति गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के छयासठ गणधर गाए हैं,
उनमें मंदर मुनी प्रधान कहलाए हैं।

रिद्धि सिद्धि से युक्त सु गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकरस्य मन्दर प्रमुख षट्षष्टि गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समताधारी विमलनाथ गुण गाइए,
जिनके पचपन गणधर मुनि शुभ पाइये।।
जिनके जयमुनि प्रधान गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकरस्य जयमुनि प्रमुख पंचपंचाशत् गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त प्रभू के पचास गणधर जानिए।
वे सब ऋद्धि सिद्धि से पूरति मानिए।
श्री अरिष्ट मुनि प्रधान गणधर को जजें।
भव भव बाधा नाश सहज सुख को भजें।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरस्य अरिष्ट प्रमुख पंचाशत् गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मदिवाकर धर्मनाथ को जानिए।
उनके तैंतालिस गणधर हैं ये मानिए।।
अरिष्टसेन गणधर जी प्रमुख कहाए हैं।
भव भय बाधा नाश, सहज सुख पाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकरस्य अरिष्टसेन प्रमुख त्रि चत्वारिंशत् गणधरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील शिरोमणि शांतिनाथ को जानिए।
उनके नित्य सु छत्तिस गणधर मानिए।
श्री चक्रायुध प्रथम सु गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकरस्य चक्रायुध प्रमुख षट् त्रिंशत् गणधरेभ्यः अर्घ्यं...

शिवपथ कारी कुन्थुनाथ को मानिए,
उनके पैंतिस गणधर शुभकर जानिए।

श्री स्वयंभू प्रमुख सु गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें॥17॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरस्य स्वयं भू प्रमुख पंचत्रिंशत् गणधरेभ्य: अर्घ्यं...

समवशरण में अर जिन नाथ पवित्र हैं,
जिनके गणधर तीस जो सबके मित्र हैं।
श्री कुंथू मुनि प्रधान गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें॥18॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकरस्य कुंभ प्रमुख त्रिंशद् गणधरेभ्य: अर्घ्यं...

समवशरण में प्रभु के वैभव दिव्य हैं।
मल्लिसुजिन के अठाईस गणधर भव्य हैं।
श्री विशाखमुनि प्रधान गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें॥19॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरस्य विशाखमुनि प्रमुख अष्टाविशंति गणधरेभ्य: अर्घ्यं.....

मुनिसुव्रत के अठारह, गणधर जानिए,
वे सब ही श्रुतज्ञान, सु मंडित मानिए।
मल्लिराज प्रधान सु, गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश, सहज सुख को भजें॥20॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरस्य मल्लि प्रमुख अष्टादश गणधरेभ्य: अर्घ्यं...

श्री नमि जिनवर शुभ, मंगल करतार हैं
जिनके सत्रह गणधर, गुण भंडार हैं।
श्री सुप्रभमुनि प्रधान, गणधर को जजें,
भव भय बाधा नाश, सहस सुख को भजें॥21॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकरस्य सुप्रभमुनि प्रमुख सप्तदश गणधरेभ्य: अर्घ्यं...

ग्यारह गणधर नेमिनाथ, के जानिए,
वरदत्त प्रमुख गणधरजी, उनमें मानिए॥
ऋद्धि सिद्धि से युक्त, सु गणधर को जजें।
भव भय बाधा नाश, सहज सुख को भजें॥22॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ तीर्थंकरस्य वरदत्त प्रमुख एकादश गणधरेभ्य: अर्घ्यं...

पारसनाथ के दश गणधर शुभ जानिए।
गणधर प्रमुख स्वयंभू उनमें मानिए॥
जो श्री पारस प्रभु के गणधर को जजें,
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें॥23॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरस्य स्वयं भू प्रमुख दश गणधरेभ्य: अर्घ्यं....

सन्मति दायक महावीर भगवान हैं।
जिनके ग्यारह गणधर सुख की खान हैं।
जिनके गौतम प्रधान गणधर को जजें,
भव भय बाधा नाश सहज सुख को भजें॥24॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिन तीर्थंकरस्य गौतम गणधर प्रमुख एकादश गणधरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (छन्द: जोगीरासा)

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौंसठ ऋद्धी धारें।
चौदह सौ बावन गणधर नित, भविजन दु:ख निवारें।
बीज बुद्धि आदिक ऋद्धी युत, गणधर मंगलकारी।
तिनको पूजें अष्ट द्रव्य से, सकल सौख्य करतारी॥25॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर ऋषभसेनादि एकोनषष्ट्यधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप—ॐ ह्रीं समवशरण पद्मसूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:।

अथ जयमाला

दोहा

गण नायक गणनाथ तुम, गणपति गणधर ईश।
गाएँ तव जयमालिका, चरण झुकाकर शीश॥1॥

पद्धरि छन्द

जय जय मुनि श्री गणधर प्रधान, जिनकी ध्वनि सुनते हैं महान।
कई मुनि श्रावक भी सुनें साथ, तव पद पूजें हम नित्य नाथ!॥2॥

तव दर्शन से सब कटें पाप, श्री तीर्थंकर के शिष्य आप।
गणधर मुनि चौंसठ ऋद्धिधार, भविजन को देते श्रेष्ठ सार॥3॥
शुभ द्वादशांग वाणी अपार, रचते गणधर मुनि ग्रन्थसार।
धर बीज बुद्धि ऋद्धी गणेश, चौदह पूरव रचते विशेष॥4॥
तुम गर्भ जन्म तप ज्ञान युक्त, जिन पूजा भक्ती से संयुक्त।
मन वांछित कारज सिद्ध सार, सुख रिद्धि सिद्धि धर हो अपार॥5॥
तुम कोष्ठ बुद्धि धारी महान, तव पूजन से हो कर्म हान
तव शरण गही हमने अपार, तुमको पूजें हम बार-बार॥6॥
मुनि गणधर जिन पूजा रचाय, अरु कर्म निर्जरा फिर कराय।
अक्षीण महानस-ऋद्धि धार, गणधर करते मंगल अपार॥7॥
हे दीन दयालु कृपा निधान, हमको अक्षय पद दो महान।
तुमसा न कोई दयावान, तुम जिन संतो में हो प्रधान॥8॥
महिमा का तुमरी नहीं पार, तुम हो भव्यों के कण्ठहार।
हम चरण वन्दना करें नाथ, तव चरण कमल में झुका माथ॥9॥
हम करें वन्दना चरण आन, दो हमको भी गुरु ज्ञान दान।
तव चरण झुकाते 'विशद' माथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥10॥

दोहा

गणधर गुणपूजा करें, प्राणी भव्य महान।
मन वांछित फल प्राप्त कर, अन्त लहें निर्वाण॥9॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवानां श्री वृषभसेनादि द्विपञ्चाशत् अधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलि:।

कवित्त छन्द:

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुख दाय।
तिनके समवशरण को पूजैं, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्यपद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद:)

अथ चौंसठ ऋद्धि पूजा प्रारभ्यते-17

अथ स्थापना

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, तीन लोक मंगलकारी।
गणधर दिव्य देशना झेलें, होते जो ऋद्धीधारी॥
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ गाईं, मुनिवर पाते अनगारी।
आह्वानन् कर पूजा करने, वाले हों ऋद्धीधारी॥
दोहा- ऋद्धी धारी ऋषि मुनी, यति हैं जो अनगार।
जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष का शुभ उपहार॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति-तीर्थंकर-समवशरण में चतु: षष्ठि-ऋद्धि राजित मुनीश्वरा:! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-चतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणे चतु: षष्ठि-ऋद्धि राजित मुनीश्वरा:! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्री श्री वृषभादि-चतुर्विंशति-तीर्थंकर समवशरणे चतु: षष्ठि-ऋद्धि राजित मुनीश्वरा:! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(बसन्त तिलका छन्द)

गंगा नदी सु भर प्रासुक नीर लाएँ।
श्री नाथ! के सु चरणों में चढ़ाएँ॥
बुद्ध्यादि चौंसठ मंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्याएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित चतु: षष्ठि ऋद्धि राजित मुनीभ्य: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

काश्मीर केशर सु चंदन गंध लाएँ।
श्रीनाथ भक्ति धर के तुमको चढ़ाए॥
बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥2॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: चन्दनं....

मुक्ता समान शुभ तन्दुल पुञ्ज लायें।
ताको सु पुञ्ज कर सौख्य अखंड पायें॥
बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥3॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अक्षतान्....

सुरभित सुगंधित पुष्प सु बेल लायें,
चरणों सु पुष्प भरि थाल प्रभो! चढ़ायें॥
बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥4॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: पुष्पं...

पक्वान्न मिष्ठ रस सार संवार लायें।
श्रीनाथ के चरण-पद्म सदा चढ़ायें॥
बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥5॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: नैवेद्यं...

रत्नों सुदीप घृतपूर सजाय लाए।
ज्ञान प्रकाश करने तुमको चढ़ाए।
बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥6॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: दीपं....

खेवों तवाग्र दशगंध हुताष माहीं,
शीघ्रातिशीघ्र वसु कर्म जरन्त जाहीं।
बुद्ध्यादि चौंसठ सुंमगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥7॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: धूपं...

ऐला बादाम भर हेम सु थाल लायें।
चर्चू तवाग्र जिन श्री फल मुक्ति पाएँ॥

बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥8॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: फलं....

आठों सु द्रव्य कर नाथ! सु अर्घ्य लायें,
जिनपद चढ़ा सुअक्षय सौख्य पायें।
बुद्ध्यादि चौंसठ सुमंगल ऋद्धि पाएँ।
पाएँ सदा नव निधी इस हेतु ध्यायें॥9॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

कंचन झारी में भरें, क्षीरोदधि शुभ नीर।
शांतीधारा त्रय करें, हरण करें भव पीर॥1॥
शांतये शांतिधारा।

रजत पात्र में लाये हैं, सुरभित पुष्प सजाय
जिन पद अर्चा कर रहे, पुष्पाञ्जलि को आय

दिव्य पुष्पांजलि:।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

बुद्ध्यादिक हैं ऋद्धियाँ, धारें जो ऋषिराज।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, सरें सकल सब काज॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

छन्द जोगीरासा

अण्वादि स्कंध अन्त सब, मूर्त द्रव्य जो जानें।
वे ही मुनिवर अवधि ऋद्धि के, धारक हों यह मानें॥
अवधि बुद्धि ऋद्धी के स्वामी, तीन लोक सुखदाई।
तिनकों पूजें मन वच तन से, भव संताप हराई॥1॥

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई द्वीप के सब जीवों की, मन की बात जो जानें।
वे मुनि मनः पर्यय ऋद्धी के, स्वामी यह ही मानें॥
मनः पर्यय ऋद्धी युत मुनिवर, त्रिभुवन में सुखदाई।
तिनको पूजें मन वच तन से, भव संताप नशाई॥2॥

ॐ ह्रीं मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल द्रव्य की गुण पर्यायें, एक समय बतलावें।
लोकालोक प्रकाशित करके, केवल ऋद्धि सु पावें॥
ऋद्धि सिद्धि के धारी मुनिवर, तीन लोक सुखदाई।
तिनकों पूजें मन वच तन से, भव संताप नशाई॥3॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज भूत पद गुरु से पाकर, सारा श्रुत जो जानें।
उनके बीज बुद्धि ऋद्धी शुभ, प्रकट होय यह मानें॥
बीज बुद्धि ऋद्धीधर मुनिवर, भविजन श्रुत समझाई।
तिनको पूजें मन वच तन से, भव संताप नशाई॥4॥

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं..

गुरु से शब्द रूप बीजों को, पा स्वबुद्धि सम्हारें।
अरु मिश्रण बिन बुद्धी रूपी, कोठे में मुनि धारें॥
ऐसे कोष्ठ बुद्धिधर मुनिवर, भविजन श्रुत समझाई।
तिनको पूजें मन वच तन से, भव संताप नशाई॥5॥

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान विशिष्ट पादानुसारणी, बुद्धि धरें मुनिराई
ग्रन्थ के एक सु पद को सुनकर, सकल ग्रन्थ बतलाई॥
पादानुसारणी बुद्धीधर मुनि, सम्यक्ज्ञान जगावें।
तिनको पूजें मन वच तन से, भव संताप ना पावें॥6॥

ॐ ह्रीं पादानुसारणी बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शम्भु छन्द

श्रोतेन्द्रिय उष्कृट क्षेत्र से, दसों दिशाओं में भाई।
संख्यात योजन क्षेत्र में स्थित, भी तिर्यञ्चों में पाई॥

अक्षरानक्षर बहु प्रकार के, उद्‌भूत शब्द जो भी आवें।
उनको सुन प्रत्युत्तर देवे, संभिन्न श्रोतृत्त्व धारी पावें॥
संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि-ऋद्धी धर, होते मुनि मंगलाई।
तिनको पूजें मन वच तन से, श्वांस रोग मुनि विनशाई॥7॥

ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिह्वेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र से, संख्यातों योजन जाने।
विविध रसों के स्वाद जु पावें, दूरास्वादन ऋद्धी माने॥
दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धिधर, ऋषिवर बुद्धी बल पावें।
तिनकों पूजें मन वच तन से, समृद्धी भवि प्रगटावें॥8॥

ॐ ह्रीं दूरास्वादित्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शनेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र बहि, संख्यातों योजन जानो।
अष्ट विधी स्पर्श को जाने, दूरस्पर्श ऋद्धि मानो॥
दूरस्पर्श बुद्धि ऋद्धी मुनि, निज तप बल से प्रगटावें।
तिनको पूजें मन वच तन से, शुभ समृद्धि सौख्य पावें॥9॥

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्व बुद्धि ऋद्धि राजित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र बहि, संख्यातों योजन भाई।
नानाविध गन्धों को जानें, दूर गन्ध युत सुखदाई॥
दूरघ्राणत्व ऋद्धिधर मुनिवर, आत्म कल्याण स्वयं पावें।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मुक्ति मार्ग पर बढ़ जावें॥10॥

ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र बहि, संख्यातों योजन पाए।
मनुष्य और तिर्यञ्चों के बहु, अक्षर अनक्षर शब्द गाए।
उनके शब्द श्रवण करते मुनि, दूर श्रवणत्व ऋद्धि धारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, मुनि की ऋद्धी सुखकारी॥11॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षुरिन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र सु, संख्यात योजन अधिकाई।
स्थित बहुत विध द्रव्य को देखें, दूर दृष्टि ऋद्धी पाई॥

दूरदर्शि ऋद्धी युत मुनि के, चरण कमल सिरनाते हैं।
बार-बार पद वन्दन करके, पूजा नित्य रचाते हैं॥12॥
ॐ ह्रीं दूरदर्शित्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पढ़ने से दश पूर्व पंचशत्, महाविद्यायें प्रगटावें।
प्रश्नादिक लघु विद्याओं के, देवाज्ञा पाने आवें॥
दसपूर्वित्व ऋद्धि युत मुनिवर, जग से वंदित कहलावें।
तिनको पूजें मन वच तन से, सर्व शांति नित हम पावें॥13॥
ॐ ह्रीं दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णागम में पारंगत मुनि, श्रुत केवली कहलाते।
ऐसे मुनि ही चौदह पूर्वी, बुद्धि ऋद्धि धर शुभ पाते॥
मुनि चौदह पूर्वी ऋद्धीधर, स्व समय पर समय बतलावें।
तिनकी भक्ती करें भाव से, मुनिवर सम श्रुत हम पावें॥14॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर व्यंजन लक्षण स्वप्नादी, अष्टांग निमित्त ऋद्धी धारी।
मुनि त्रिकाल स्वर आदि के ज्ञानी, परम पूज्य महिमा धारी॥
जन्म मरणादिक ज्ञान के धारी, मुनि शत्-शत् वन्दनकारी।
तिनकी पूजा मंगलकारी, जग में सुख शान्ती कारी॥15॥
ॐ ह्रीं अष्टांग महानिमित्त बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञानावरणादिक कर्मों, का क्षयोपशम मुनि पावें।
अध्ययन जिन चौदह पूरब का, ज्ञान ऋषी जी प्रगटावें॥
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि युत मुनिवर, त्रिभुवन में हैं सुखदाई।
तिनको पूजेंमन वच तन से, ऋद्धि सिद्धि मिल शुभ जाई॥16॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनिवर कर्मों का उपशम, गुरु उपदेश बिना पावें।
वह मुनि सम्यग्ज्ञान के द्वारा, 'विशद' ज्ञान को प्रगटावें॥
धर प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी शुभ, मुनि प्रतिवादि विनाश करें।
तिनको पूजें मन वच तन से, सम्यक् ज्ञान प्रदान करें॥17॥
ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाक्यादिक परमत वादी को, करके वाद हरा देवें।
पर द्रव्यों की कर गवेषणा, वादित्व ऋद्धि जो वर लेवें॥
शुभ वादित्व ऋद्धिधर मुनिवर, संशय विभ्रम नाश करें।
तिनको पूजें मन वच तन से, सम्यक् ज्ञान प्रकाश करें॥18॥
ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द: जोगीरासा

अणु बराबर छिद्र में जो मुनि, शीघ्र प्रवेश कर जावें।
चक्रवर्ती के कटक की रचना, ऋषि ऋद्धी से प्रगटावें॥
धर मुनि अणिमा विक्रिया ऋद्धी, दुर्भिक्षादि विनाशें।
तिनको पूजें मन वच तन से, सम्यक् ज्ञान प्रकाशें॥19॥
ॐ ह्रीं अणिमाविक्रिया ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप विशेष के द्वारा मुनिवर, विक्रिया ऋद्धी धारें।
मेरु बराबर वपु कर लेवें, महिमा ऋद्धि सम्हारें।
महिमा विक्रिया ऋद्धी धारी, तीन लोक हितकारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, शिव सुख संपदकारी॥20॥
ॐ ह्रीं महिमाविक्रिया ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय को वायु से भी लघुतर, मुनिवर शीघ्र बनावें।
उपजत तप से विक्रिया ऋद्धी, शुभ लघिमा कहलावें॥
लघिमा विक्रिया ऋद्धी धर मुनि, तीन लोक उपकारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, मुनिवर मंगलकारी॥21॥
ॐ ह्रीं लघिमाविक्रिया ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर तप विशेष से ऋद्धी, शुभ गरिमा को पावें।
अधिक वज्र से भी गुरुतायुत, वपु को शीघ्र बनावें॥
गरिमा विक्रिया ऋद्धी धर मुनि, त्रिभुवन में उपकारी।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मुनि सुख संपदकारी॥22॥
ॐ ह्रीं गरिमाविक्रिया ऋद्धि राजित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि भू पर स्थित रहकर, सूर्य चन्द्र छू लेवें।
अंगुलि से ही मेरु शिखर अरु, अन्य वस्तु पा लेवें।।
ऐसे प्राप्ति ऋद्धि युत मुनिवर, तीन लोक उपकारी।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मनवांछित फलकारी।।23।।
ॐ ह्रीं प्राप्ति विक्रिया ऋद्धि राजित मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू पर भी जल सम उन्मज्जन, और निमज्जन पाते।
जल पर भी पृथिवी के सदृश, सरल गमन कर जाते।।
ऐसे प्राकाम्य ऋद्धीधर मुनिवर, तीन लोक उपकारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, मुनिवर मंगलकारी।।24।।
ॐ ह्रीं प्राकाम्य विक्रिया ऋद्धि राजित मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मनुष्यों पर ऋद्धी से, मुनिवर प्रभुता पावें।
ऐसी ईशत्व ऋद्धि सु तप से, मुनिवर जी प्रगटावें।।
शुभ ईशत्व ऋद्धि युत मुनिवर, तीन लोक उपकारी।
तिनकों पूजें मन वच तन से, राज सु सम्पादन कारी।।25।।
ॐ ह्रीं ईशत्व विक्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप विशेष से सब जीवों को, वश में मुनि कर लेवें।
वशित्व विक्रिया ऋद्धीधर मुनि, सकल सौख्य वर देवे।।
सब जीवों को हितकर मुनिवर, होते हैं शुभकारी।
तिनकों पूजें मन वच तन से, सब जग मंगलकारी।।26।।
ॐ ह्रीं वशित्व विक्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं.....

तप बल से प्रतिघात बिना मुनि, गिरि के मधि घुस जावें।
और वृक्ष के मध्य से होकर, गगन गमन कर जावें।।
अप्रतिघात ऋद्धिधर मुनिवर, तीन लोक उपकारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, मुनि जग मंगलकारी।।27।।
ॐ ह्रीं अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रिया ऋद्धी बल से मुनिवर, अदृश्यता को पावें।
अन्तर्धान ऋद्धि के द्वारा, जग में सौख्य करावें।।

अन्तर्धान ऋद्धिधर मुनिवर, तप समाधि सुख कारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, मुनि वर मंगलकारी।।28।।
ॐ ह्रीं अन्तर्धान विक्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धी से निजकाय के युगपत्, मुनि बहु रूप बनावें।
काम रूप ऋद्धी धर मुनिवर, जो कल्याण करावें।।
परम दिगम्बर मुनिवर शाश्वत्, तीन लोक उपकारी।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मन वांछित फलकारी।।29।।
ॐ ह्रीं कामरूपित्व विक्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायोत्सर्ग में होकर मुनिवर, गगन गमन कर जावें।
जिस ऋद्धी से बाधा ना हो, गगन गमन में पावें।।
धार आकाश गामिनी ऋद्धी, मुनि जग मंगलदायी।
तिनको पूजें मन वच तन से, महिमा भी शुभ गाई।।30।।
ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्व चारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं...

जल में पृथ्वी के सदृश मुनि, सरल गमन कर जावें।
अरु जलकायिक जीव न घातें, जल चारण जब पावें।।
मुनि जल चारण क्रिया ऋद्धिधर, असमय वृष्टि विनाशें।
तिनको पूजें मन वच तन से, भव भय के दुख नाशें।।31।।
ॐ ह्रीं जलचारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउअंगुल प्रमाण पृथ्वी तज, ऊपर गगन में चालें।
घुटने बिन मोड़े बहु योजन, की शुभ शक्ति सम्हालें।।
मुनि जंघा चारण ऋद्धीधर, मन की चिन्ता नाशें।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मिथ्या ज्ञान विनाशें।।32।।
ॐ ह्रीं जंघा चारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से फूल फलों पत्तों पर, पृथ्वी सम चल जावें।
मुनि जीवों की बिन विराधना, जीव कष्ट ना पावें।।
पुष्प पत्र फल चारण ऋद्धी, धर मुनि धर्म प्रकाशें।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मिथ्या ज्ञान विनाशें।।33।।
ॐ ह्रीं पुष्प चारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव घात बिन अग्नि शिखा पर, जिससे मुनि चल जावें।
अग्नि शिखा चारण ऋद्धीधर, मुनि वर श्रेष्ठ कहावें॥
अग्नि शिखा चारण युत मुनिवर, भूकम्पादि विनाशें।
तिनकों पूजें मन वच तन से, सब संकट जो नाशें॥34॥
ॐ ह्रीं अग्निशिखा चारण ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से अप्कायिक जीवों को, कष्ट नहीं पहुँचावें।
मेघों पर से गमन ऋद्धिधर, मुनिवर जो कर जावें॥
मेघ चारण ऋद्धीधर मुनिवर, तीन लोक उपकारी।
तिनको पूजें मन वच तन से, मुनि सब मंगलकारी॥35॥
ॐ ह्रीं मेघ चारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर पद विक्षेप में निर्भय, अपनी चाल सम्हालें।
मकड़ी तन्तु की पंक्ती पर, जीव घात बिन चालें॥
मकड़ी तन्तु चारण ऋद्धीधर, पीड़ा सर्व विनाशें।
तिनकों पूजें मन वच तन से, सकल विघ्न भय नाशें॥36॥
ॐ ह्रीं मकड़ी तन्तु चारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं....

ज्योतिष देव विमान रश्मियों, का अवलम्बन लेवें।
अरु ऋद्धी द्वारा तपसी जन, ग्रहादि पर चल देवें॥
मुनि धर ज्योतिश्चारण ऋद्धी, नवग्रह विघ्न विनाशें।
तिनको पूजें मन वच तन से, सकल विघ्न भय नाशें॥37॥
ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर अस्खलित पद विक्षेपकर, वायु पंक्ति पर चालें।
जीव घात बिन नाना गति युत, अपनी गती सम्हालें॥
प्रचण्डपवनोद्भव भय नाशें, मारुत चारण धारी।
तिनकों पूजें मन वच तन से, मुनि सब मंगलकारी॥38॥
ॐ ह्रीं मारुतचारण क्रिया ऋद्धि राजित ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

सात भेद तप ऋद्धि के जानो, प्रथम उग्र तप जिसका मानो।
श्रेष्ठ ऋद्धि जो मुनिवर पाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥39॥
ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर जो उपवास बढ़ावें, सूर्य समान दीप्ति वह पावें।
दीप्ति ऋद्धिधर मुनि अनगारी, जिनके चरणों ढोक हमारी॥40॥
ॐ ह्रीं दीप्त तप ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों कड़ाहि पे जल कण जावे, शीघ्र पड़ा जल वहीं विलावे।
तपकर तप्त ऋद्धि प्रगटावे, भुक्त अन्न तन में खो जावे॥41॥
ॐ ह्रीं तप्त तप ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर सम्यक् ज्ञान जगावें, तप की शक्ती नित्य बढ़ावें।
महा सुतप ऋद्धी प्रगटावें, जिनको भविजन पूज रचावें॥42॥
ॐ ह्रीं महा सुतप ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के रोग ज्वरादिक होवे, दुर्धर तप कर वह भी खोवे।
घोर सुतप ऋद्धी के धारी, पूज्य कहे मुनिवर अनगारी॥43॥
ॐ ह्रीं घोर सुतप ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर घोर पराक्रम धारें, जिनसे सारे नृप भी हारें।
ऋद्धी घोर पराक्रम पावें, जिनके पद सब शीश झुकावें॥44॥
ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर गाये संयम धारी, अघोर ब्रह्मचर्य धर अनगारी।
व्यन्तरादिक के भय विनसावें, जिन पद प्राणी पूज रचावें॥45॥
ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सम्यक् तप बल धार मुनीश्वर, मन बल ऋद्धी प्रगटावें।
एक मुहूर्त काल में सुश्रुत, सकल सुचिन्तन कर जावें॥
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं॥46॥
ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि वचन बल के द्वारा मुनि, पूर्ण सुश्रुत का करें कथन।
खेद और श्रम रहित मुनीश्वर, करते सारा उच्चारण॥

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।47।।
ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि कायबल के धारी मुनि, श्रेष्ठ क्षयोपशम प्रगटाते।
कायोत्सर्ग धार मासादिक, श्रम विरहितता मुनि पाते।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।48।।
ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद आठ औषधि ऋद्धी के, आमर्षौषधि कही प्रथम।
चरण स्पर्श किए जिन मुनि के, हो जाता है रोग प्रशम।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।49।।
ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् तप धारी मुनिवर जी, क्ष्वेलौषधि ऋद्धी पाते।
लार थूक कफ के लगते सब, रोग स्वयं ही नश जाते।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।50।।
ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेद और जल के आश्रित रज, मुनि के तन की जल्ल कही।
जल्लौषधि ऋद्धीधर मुनि की, नासक सारे रोग रही।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।51।।
ॐ ह्रीं जल्लोषधि ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके जिह्वा कर्णादिक का, मल भी सौख्य दिलाता है।
तप के द्वारा मुनि के तन का, मल्लौषधी बन जाता है।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।52।।
ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूत्र पुरीषादिक मुनि तन का, पावन औषधि बन जावे।
सम्यक् तप को धार मुनीश्वर विडौषधी ऋद्धी पावें।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।53।।
ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल वायू मुनि का तन छूकर, रोगादिक औषधि होवे।
सर्वौषधि ऋद्धीधर मुनि की, औरों की व्याधी खोवे।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।54।।
ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिक्तादिक रस विष युत भोजन, वचनों से निर्विष होवे।
रोग व्याधि युत जग के प्राणी, व्याधि स्वयं की जो खोवें।।
अष्ट द्रव्य का थल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।55।।
ॐ ह्रीं मुख निर्विष ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टी निर्विष ऋद्धीधर की, दृष्टी जिसपे पड़ जावे।
रोग व्याधि विष की पीड़ा से, मुक्ती वह प्राणी पावे।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।56।।
ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मर जाओ कह दें यदि मुनिवर, जीव वहीं पर मर जावें।
आशीर्विष ऋद्धी धारी मुनि, वचन कभी ना कह पावें।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।57।।
ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टी विष ऋद्धीधर जिस पर, क्रोध सहित दृष्टी डालें।
मरें जीव दृष्टी पड़ते ही, दृष्टि ना ऐसी मुनि डालें।।

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।58।।
ॐ ह्रीं दृष्टीविष ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्षाहार मुनी के कर में, हो जाता है क्षीर समान।
क्षीरस्रावि ऋद्धीधारी मुनि, का प्राणी करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।
मन वच तन से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।59।।
ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धि धारक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

रुक्षाहार मुनी के कर में, मधुर होय शुभकारी।
मधुस्रावी ऋद्धी धर मुनिवर, होते हैं अनगारी।
वीतरागता धारी मुनिवर, मंगलकारी गाये।
जिनके चरणों भक्ति भाव से, श्रावक गण सिर नायें।।60।।
ॐ ह्रीं मधु स्रावि रस ऋद्धि राजित श्री ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष अन्न मुनिवर के कर में, अमृत सम हो जावे।
वचन सुने नर पशु मुनिवर के, परम सौख्य वह पावें।।
वीतरागता धारी मुनिवर, मंगलकारी गाये।
जिनके चरणों भक्ति भाव से, श्रावक गण सिर नायें।।61।।
ॐ ह्रीं अमृत स्रावि रस ऋद्धि राजित श्री ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि के कर में रूखा भोजन, घृत सम स्वादू होवे।
सर्पिस्रावी मुनि जीवों में, छाई जड़ता खोवें।
वीतरागता धारी मुनिवर, मंगलकारी गाये।
जिनके चरणों भक्ति भाव से, श्रावक गण सिर नायें।।62।।
ॐ ह्रीं घृत स्रावि रस ऋद्धि राजित श्री ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारोपरान्त भोज्य वस्तु जो, बाकी कुछ बच जावे।
क्षीण नहीं होवे वह भोजन, कटक चक्रि का खावे।।

वीतरागता धारी मुनिवर, मंगलकारी गाये।
जिनके चरणों भक्ति भाव से, श्रावक गण सिर नायें।।63।।
ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीण महालय ऋद्धी धारी, आसन जहाँ जमावें।
धनुष चार भूमी में चक्री, का भी सैन्य समावें।।
वीतरागता धारी मुनिवर, मंगलकारी गाये।
जिनके चरणों भक्ति भाव से, श्रावक गण सिर नायें।।64।।
ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

बुद्धि विक्रिया क्रिया सुतप बल, औषधि रस ऋद्धी।
आठ ऋद्धियों के चौंसठ सब, भेद की रही प्रसिद्धी।।
वीतरागता धारी मुनिवर, मंगलकारी गाये।
जिनके चरणों भक्ति भाव से, श्रावक गण सिर नायें।।65।।
ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित श्री ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

अथ जयमाला

दोहा– चौंसठ ऋद्धी पूजते, जो भवि चित्त लगाय।
धन सम्पत्ती घर बसे, सकल विघ्न नश जाय।।

चौपाई

जय जय चौंसठ ऋद्धीधारी, तव पूजा करते नर नारी।
मुनि ने रत्नत्रय को धारा, शत्-शत् वंदन नमन हमारा।।
पुण्यकर्म से नर भव पाया, जिसने जैन धर्म अपनाया।
मुनिवर सम्यक् तप बलधारी, शिवपथ के गणधर अधिकारी।।
चौंसठ ऋद्धी धारें कोई, ताको आवागमन न होई।
बुद्धि ऋद्धि धारे मुनि सोई, उनके ज्ञान वृद्धि नित होई।।

विक्रिया ऋद्धी बहु तन धारें, उसकी भक्ती हृदय उतारें।
चारण मुनि को पूजें भाई, भव-भव के आताप नशाई॥
चारण मुनि करुणा नित पालें, जल पर चलते जल ना हालें।
तप करके सब करम खिपावें, तप से शुक्ल ध्यान उपजावें॥
कर्म निर्जरा तप से होई, तप से शिव सुख संपद सोई।
बलधारी मुनि भव दुखहारी, अनुपम सुखकर मुनि बल धारी॥
जय जय औषध ऋद्धी धारी, सकल व्याधि क्षण में तुम हारी।
जो भी नाम तिहारो गावें, शिव स्वरूपमय हो सुख पावें॥
रोग-क्षुधा रस ऋद्धि निवारें, सब प्रकार अमृत बरसावें॥
मुनि अक्षीण महानस धारें, भव सागर से पार उतारें॥
मुनि की भक्ति सदा हम गाएँ, भव भव के सब पाप नशाएँ।
मन वच तन मुनिवर को ध्याएँ, सुख संपद जय सौख्य कराएँ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, सम्यक् तप जीवन में पाएँ।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी॥
पूजा करके जिन गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
'विशद' ज्ञान हम भी प्रगटाएँ, कर्म नाश कर शिव पुर जाएँ॥

पूर्णार्घ्य

चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन लोक सुखदाय।
तिनकों पूजें अर्घ्य ले, केवल ज्ञान जगाय॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि राजित मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं...
।।शांतये शांतिधारा।। ।।दिव्यपुष्पाञ्जलि:।।

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र पद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

इत्याशीर्वाद:

अथ सर्व साधु पूजा प्रारभ्यते-18

अथ स्थापना (छन्द : जोगीरासा)

तीर्थंकर के समवशरण में, मंगल होवे चारों ओर
वेष दिगम्बर धारी मुनिवर, करते मन को भाव विभोर॥
केवल ज्ञानी अवधि पूर्वधर, शिक्षक वादी रहे महान।
दिव्य विक्रिया धारी मुनिवर, विपुलमती पाए जो ज्ञान॥

दोहा

मुनिवर चौंसठ ऋद्धि युत, समवशरण में खास।
आह्वानन् पूजा करूँ, मंगल निधि सब पास॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित ऋषि समूह। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषि समूह। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषि समूह। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जोगीरासा छन्द

क्षीरोदधि जल उज्ज्वल लेकर, केशर गंध मिलाये।
कनक कलश जल भरि कर निर्मल, धार देत हर्षाये।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषिभ्य: जलं...

बावन चंदन पावन केशर, नीर के संग घिसावें।
पूजें चरन हरन भव बंधन, समवशरण गुण गावें॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषिभ्य: चन्दनं...

शशि समान अति उज्ज्वल तन्दुल, हेम पात्र भर लाये।
पुंज धरत प्रभु चरणन आगे, अक्षय फल शुभ पाये॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥3॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषिभ्यः अक्षतान्...

पारिजात मंदार वृक्ष के, दिव्य पुष्प बहु लाएँ।
मदन मोह निरमूल करन को, जिन पद पुष्प चढ़ाएँ॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥4॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषिभ्यः पुष्पं...

घृतवर पूरित घेवर आदिक, सुवरन थाल सजायें।
क्षुधा रोग निर्वारन कारण, जिन पद भेंट चढ़ायें॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥5॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थिति सर्व ऋषिभ्यः नैवेद्यं...

मणिमय घृत के दीपक लेकर, अद्भुत ज्योति जलाएँ।
मिथ्याज्ञान मिटावन कारण, जजहुँ चरण हर्षाएँ॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जल फलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥6॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थिति सर्व ऋषिभ्यः दीपं...

अगर तगर चन्दन वर लेकर, धूपायन में लाएँ।
अष्टकर्म के नाश करन को, चहुँ दिश गंध कराएँ॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥7॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थिति सर्व ऋषिभ्यः धूपं...

ऐला लौंग बदाम छुहारा, पिस्ता श्रीफल लाएँ।
महामोक्ष फल दायक पावन, भेंट धरें शिरनाएँ॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्त रमा को पावें॥8॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थिति सर्व ऋषिभ्यः फलं...

जिनवर वन्दन करके नित ही, वसु विधि अर्घ्य चढ़ाएँ।
अक्षय सौख्य हेत हे श्रीधर! अग्रधरें गुण गाएँ॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा जो भवि गावें।
जलफलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर, मुक्ति रमा को पावें॥9॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थिति सर्व ऋषिभ्यः अर्घ्यं...

दोहा

ऋषियों ने जग में किया, जीवों का उपकार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥
॥शांतये शांतिधारा॥

जग जीवों के लोक में, आप हैं तारणहार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, तिन पद बारम्बार॥

॥दिव्य पुष्पांजलिः॥

अथ प्रत्येक अर्घ्य ''दोहा''

तीर्थंकर के सप्तगण, संयम के आधार।
पुष्पाञ्जलि देते सदा, करो नाथ उद्धार॥1॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री ऋषभ जिन के सप्त ऋषि

छन्दः जोगीरासा

ऋषभदेव के समवशरण में, नित प्रति मंगल गावें।
पोंने पाँच हजार पूर्वधर, मुनी शरण को पावें॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते॥1॥
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवतीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् अधिक सप्तशत्युत्तरचतुः सहस्र पूर्वधर ऋषिभ्यः अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

चार हजार डेढ़ सौ मुनिवर, शिक्षक मुनि कहलावें।
सुर नर जिनकी पूजा करके, मन आनंद मनावें।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवतीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिकएकशत्युत्तरचतु:सहस्र शिक्षक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ हजार मुनि ऋषभदेव के, समवशरण में गाए।
इनको पूजें भव सागर से, मुक्ति शीघ्र मिल जाए।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ नव सहस्र अवधिज्ञानि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर बीस हजार केवली, ऋषभदेव के गाए।
इनको मन से जो भी ध्यावे, त्रिभुवन पति हो जाए।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति सहस्र केवलज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बीस सहस छह शतक् मुनीश्वर, विक्रिया ऋद्धी धारी।
ऋषभदेव के समवशरण में, जानो तुम अविकारी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ –षट्शत्युत्तरविंशतिसहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े बारह सहस मुनीश्वर, विपुलमती थे ज्ञानी।
ऋषभदेव की महिमा गाते, वीतराग विज्ञानी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ –पञ्चाशत्अधिकसप्तशत्युत्तरद्वादश सहस्रंविपुलमति ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े बारह-सहस जानिए, वादी मुनिवर भाई।
उनकी पूजा समवशरण में, होती सन्मति दायी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ –पञ्चाशदधिकसप्तशत्युत्तरद्वादश सहस्रं सप्त शत् वादि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा– सहस चुरासी श्रेष्ठतम, ऋषभ देव के साथ।
मुनिपद वन्दन हम करें, चरण झुकाएँ माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुरशीति: सहस्र सर्वऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।।शान्तये शान्तिधारा।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अजितनाथ के सप्त ऋषि

(शम्भू छन्द)

साढ़े तीन हजार पूर्वधर, अजित नाथ के गाये हैं।
समवशरण में अर्चा करने, भाव सहित हम आए हैं।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक सप्तशत्युत्तर त्रिसहस्रपूर्वधरऋषिभ्य:अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक्कीस सहस छह शतक् मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी।
अजित नाथ के साथ बताए, ज्ञानी ध्यानी अविकारी।।
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर हम भी, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ–षट्शत्युत्तर एकविंशतिसह-षट्शत् शिक्षक ऋषिभ्य: अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा

नौ हजार मुनि चार सौ, अजित नाथ के साथ।
समवशरण में शोभते चरण झुकाएँ माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥10॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ चतुशत्युत्तर नवसहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में केवली, मुनिवर बीस हजार।
अजित नाथ को पूजते, पावे भवदधि पार॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरण विंशति सहस्र केवलज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस सहस अरु चार सौ, विक्रिया धारी साथ।
अजितनाथ प्रभु के सदा, चरण झुकाते माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत्युत्तर विंशति सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्य अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती वारह सहस, चउ शत् और पचास।
समवशरण में अजित जिन, के संग कीन्हे वास॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समशणस्थ पञ्चाशदधिचतु:शत्युत्तर द्वादशसहस्र विपुलमति-ज्ञानीऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारह सहस्र अरु चार सौ, थे वादी मुनिराज।
अजितनाथ के साथ में, करें पूर्ण सब काज॥
तीर्थंकर के सप्त गण, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करते हम गुणगान॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत्युत्तर द्वादश सहस्र वादि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अजित नाथ के साथ में, एक लाख मुनिराज।
पूजें तिनको अर्घ्य से, शुभ दिन पावें आज॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ एकलक्ष सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलि:।

श्री सम्भवनाथ के सप्त ऋषि

(पद्धरि छन्द)

दो हजार शत् एक पचास, मुनी पूर्वधर रहते पास।
सम्भव जिनकी भक्ति विशेष, करें भाव से जो अवशेष॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥15॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरण पञ्चाशदधिक एकशत्युत्तर द्वि सहस्र पूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एक लाख उन्तीस हजार, तीन सौ मुनि शिक्षक सुखकार।
सम्भव जिनके रहते पास, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥16॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शताधिक एकोनत्रिंशत् सहस्रोत्तर एकलक्ष शिक्षक ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ हजार छह सौ मुनिराज, अवधिज्ञान का पाये ताज।
सम्भव जिनके गाए खास, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥17॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्शताधिक् नवसहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञानी श्रेष्ठ मुनीश, पन्द्रह सहस ज्ञान के ईश।
सम्भव जिनके रहते पास, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥

तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥18॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चदशसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विक्रियाधर उन्नीस हजार, और आठ सौ मुनि हितकार।
समवशरण में सम्भव नाथ, उनका सभी निभाते साथ॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥19॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ-अष्टशत्युत्तरएकोनविंशतिः सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अधिक डेढ़ सौ बारह हज्जार, विपुलमति मुनि मंगल कार।
समवशरण में सम्भव नाथ, जिन पद सभी झुकाते माथ॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥20॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र एकशत्विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वादी मुनि बारह हज्जार, कर्म निर्जरा करें अपार।
तीर्थंकर जिन कर भव नाश, आत्मज्ञान का करें प्रकाश॥
तीर्थंकर जिन के गण सात, करें धर्म की जो बरसात।
अर्घ्य चढ़ाने लाए आज, मुनिवर तारण तरण जहाज॥21॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र वादिमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा– **लाख दोय मुनिवर सदा, संभव जिन के पास।**
हाथ जोड़ वन्दन करें, पूरें मन की आस॥3॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्विलक्ष सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

शान्तये शांतिधारा पुष्पाञ्जलिं

श्री अभिनन्दन नाथ के सप्त ऋषि

दोहा– **अभिनन्दन के साथ में, मुनि वर ढाई हजार,**
श्रेष्ठ पूर्व धारी हुए, ज्ञानी मंगलकार।

तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने भवदधि पार॥22॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशताधिक द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस तीस दो लाख अरु, पञ्चाशत् मुनि राज,
अभिनन्दन के साथ में, शिक्षक करते नाज
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने भवदधि पार॥23॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक त्रिंशत्सहस्रोत्तर द्विलक्षं शिक्षक-मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ हजार अरु आठ सौ, अवधिज्ञान के नाथ।
अभिनंदन जिनराज पद, सदा झुकाएँ माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पावे भव दधि पार॥24

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन नाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशत्युत्तरनवसहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में केवली, षोडश सहस मुनीश।
अभिनंदन की वन्दना, करते सभी ऋशीष॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने भव दधि पार॥25॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षोडश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर उन्नीस सहस थे, अभिनन्दन के साथ।
श्रेष्ठ विक्रिया धारते, चरण झुकाते माथ॥
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने भव दधि पार॥26॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनविंशति सहस्र विक्रियाधारिमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक्कीस सहस छह सौ तथा, जानो अधिक पचास।
विपुल मती ज्ञानी सभी, अभिनंदन के पास॥

तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने भव दधि पार।।27।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथतीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक षट्शत्युत्तर एकविंशतिः सहस्रविपुलमति ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एक सहस वादी मुनी, अभिनंदन के साथ।
आरोग्य श्री वृद्धी करो, हम पूजें मुनिनाथ।।
तीर्थंकर के सप्त गण, की पूजा शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने भव दधि पार।।28।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकसहस्र वादि-मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा– तीन लाख मुनिराज थे, अभिनन्दन के साथ।
पुष्पों से पूजें सदा, चरण झुकाएँ माथ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिलक्ष सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं।

शान्तये शांतिधारा पुष्पाञ्जलिं

श्री सुमतिनाथ के सप्त ऋषि

(छन्दः जोगीरासा)

पूरवधर दो सहस चार सौ, सुमतिनाथ के जानों।
गणधर पूजित समवशरण की, महिमा अद्भुत मानों।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।29।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुस्शत्युत्तर द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो लख चौवन सहस तीन सौ, पंचाशत् शुभ जानों।
सुमतिनाथ के समवशरण में, शिक्षक पावन मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।30।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक त्रिशत्युत्तर पञ्चपञ्चाशत् सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह सहस अवधिज्ञानी शुभ, सुमतिनाथ के जानों।
जय-जय-जय-जय भक्ति रचावें, सुरपति यह ही मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।31।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकादश सहस्र अवधिज्ञानीमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उभय श्री को पाने वाले, सुमतिनाथ को जानों।
प्रभु के तेरह सहस केवली, समवशरण में मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।32।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयोदश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।32।।

रहे अठारह सहस चार सौ, विक्रियाधर मुनिराई।
परमानंद सु शिव सुखकारक, सुमतिनाथ शिवदाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।33।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुशत्युत्तर अष्टादश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती दस सहस चार सौ, सुमतिनाथ के भाई।
भव्यबन्धु कहलाते जिनवर, सुमतिनाथ शिव दायी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।34।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुशत्युत्तर दश सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दस हजार चउ सौ पञ्चाशत्, मुनि वादी सुखदाई।
सुमतिनाथ के समवशरण में, ऋषी कहे श्रुतदाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते थे शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी।।35।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् अधिक चतुशत्युत्तर दस सहस्रवादि मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– तीन लाख विंशति सहस, मुनिवर रहे अनूप।
सुमतिनाथ को पूजकर, पाना निज स्वरूप॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति: सहस्रोत्तर त्रिलक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।पुष्पांजलि:।

पद्मप्रभु जिन के सप्त ऋषि

(नरेन्द्र छन्द)

पूरवधर दो सहस तीन सौ, पद्मनाथ के जानों।
स्वयं आत्मभू पद से भूषित, पद्मनाथ को मानों॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥36॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहे लाख दो सहस उनहत्तर, मुनि शिक्षक सुखकारी।
पद्मनाथ के समवशरण में, मुनिगण मंगलकारी॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥37॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनसप्तति: सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दस हजार मुनि अवधिज्ञानी, पद्मनाथ गुण गावें।
समवशरण में जो भवि आवें, प्रभु को शीश झुकावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥38॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ दश सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारह हजार मुनि केवल ज्ञानी, सब विघ्नों को टारें।
पद्मनाथ की पूजा करके, कर्म कालिमा जारें॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥39॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोलह सहस आठ सौ साधू, ऋद्धि विक्रिया पाये।
पद्मनाथ के समवशरण में, रोग शोक हर गाये॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥40॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर षोडश सहस्र विक्रियाधारिं मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती दस सहस तीन सौ, पद्मनाथ के गाये।
जग में सुन्दर पद्मनाथ जिन, अघहारी कहलाए।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥41॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ शत्त्रयोत्तर दस सहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्मनाथ के वादी मुनिवर, जग में प्रीति करावें।
नौ हजार छह सौ मुनिवादी, प्रभु को शीश झुकावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥42॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर नवसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

तीन लाख त्रिंशत् सहस, मुनिवर जिनके पास।
पद्मनाथ को हम जजें, शिव रमणी की आस॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ सर्व त्रिंशत् सहस्रोत्तर त्रिलक्ष मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलि:।

श्री सुपार्श्व जिन के सप्त ऋषि

रहे पूर्वधर प्रभु सुपार्श्व के, समवशरण में भाई।
दो हजार शुभ तीस कहे हैं, आगम में सुखदाई॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी॥43॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिंशत् अधिक द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिक्षक द्वि लख सहस चवालिस, नौ सौ बीस बताए।
जिन सुपार्श्व के समवशरण में, अर्चा करने आए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी॥44॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति अधिक नवशत्युत्तर चतुचत्त्वारिंशत् सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ हजार मुनि अवधिज्ञानी, प्रभु सुपार्श्व के जानों।
समवशरण में पूजा करके, होय सदा सुख मानों॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी॥45॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवसहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर ग्यारह सहस केवली, समवशरण में जानों।
प्रभु सुपार्श्व के पाद-पद्म में, मुक्ति मिले यह मानों॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी॥46॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े पन्द्रह सहस तीन सौ, विक्रियाधारी आवें।
प्रभु सुपार्श्व के समवशरण में, जिन गुण संपद पावें॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनरागी॥47॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर पञ्चदश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ हजार इक सौ पंचाशत्, विपुलमती कहलाए।
समवशरण में आकर सब ही, प्रभु सुपार्श्व गुण गाँए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद के अनुरागी

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक एकशत्युत्तर नवसहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ सहस छह सौ मुनि वादी, समवशरण गुण गावें।
प्रभु सुपार्श्व का दर्शन करके, मन में हर्ष बढ़ावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई त्यागी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन पद हो अनुरागी॥49॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्शत्युत्तर अष्ट सहस्र वादिमुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

तीन लाख मुनिवर कहे, जिन सुपार्श्व के साथ।
मुक्ती पद के हेतु हम, पूज रहे हे नाथ!॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिलक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलि:।

श्री चन्द्रप्रभु के सप्त ऋषि

चन्द्रनाथ की पूजा करने, समवशरण में माने।
मुनिवर चार हजार पूर्वधर, कर्म शत्रुदल हाने॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥50॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं...

लक्ष दोय दश सहस चार सौ, शिक्षक गण जो आवें।
चन्द्रनाथ के समवशरण में, सहसनाम गुण गावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥51॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः शत्युत्तर दश सहस्रोत्तर द्वि लक्ष शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार मुनि अवधिज्ञानी, महाव्रती शुभ जानो।
चन्द्रनाथ गुण माला गावें, शिवपथ गामी मानो॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥52॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं...

सहस अठारह रहे केवली, चन्द्रनाथ के भाई।
धर्मध्यान तप करके सब ने, शिव की पदवी पाई॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥53॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्रनाथ की पूजा करके, समवशरण मुनि सोहें।
छह सौ विक्रियाधारी मुनिवर, प्रभु सन्मुख मन मोहें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥54॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्शत् विक्रिया धारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र नाथ के विपुल मती मुनि, अष्ट सहस बतलाए
समवशरण में ध्यान लगाकर, कर्म शत्रु विनसाए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥55॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्रनाथ के समवशरण में, वृषवृद्धी नित पावें।
सात हजार जु वादी मुनिवर, परम पूज्य कहलावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी॥56॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तसहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्य (सोरठा छन्द)

चन्द्रनाथ के पास, ढाई लाख मुनिवर कहे।
मुक्ति रमा की आस, हो मुनि पद पूजें सदा॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् सहस्रोत्तर द्वि लक्ष सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

श्री पुष्पदन्त जिन के सप्त ऋषि

पुष्पदंत के साथ पूर्वधर, मुनि पन्द्रह सौ आवें।
तीर्थंकर की भक्ती कर के, नित सौभाग्य जगावें।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥57॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक लख पचपन सहस पंचशत्, शिक्षक मुनि शुभ जानो।
पुष्पदंत के समवशरण में, सकल दोष हर मानो॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥58॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशताधिक पंचपञ्चाशत् सहस्रोत्तर एक लक्ष शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ हजार चार सौ मुनिवर, अवधिज्ञानी जानों।
पुष्पदंत के समवशरण में, मंगलकारी मानों॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥59॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुरशीति शत् अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सात हजार पाँच सौ भाई, केवलज्ञानी जानो।
तीर्थंकर की महिमा गायें, त्रिभुवन स्वामी मानो॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥60॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर सप्तसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तेरह हजार विक्रियाधारी, समवशरण मधि गाये।
पुष्पदंत की पूजा करके, मन आनन्दित पाये॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥61॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयोदश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सात हजार पाँच सौ मुनिवर, विपुलमती थे ज्ञानी।
पुष्पदंत के समवशरण में, वीतराग विज्ञानी॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥62।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरण्स्थ पंचशताधिकसप्तसहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्पदंत की वाणी सुन्दर, भविजन का मन मोहें।
छह हजार छह सौ मुनिवादी, पुष्पदंत के सोहें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, पूज्य रहे गुणधारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी हम मनहारी॥63॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर षट् सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मुनिवर जानो लाख दो, पुष्पदन्त के साथ।
धर्म वृद्धि के भाव से, चरण झुकाते माथ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि लक्ष सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

श्री शीतलनाथ जिन के सप्त ऋषि

(शम्भू छन्द)

इक हजार चार सौ मुनिवर, पूरव धारी रहे विशेष।
शीतल जिनके समवशरण को, मिलकर पूजें भक्त अशेष॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नितप्रति, शत् शत् शीश झुकाते हैं॥64॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः शत्युत्तर एक सहस्र पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऊन आठ सौ साठ सहस मुनि, शिक्षक पदवी पाए हैं
प्रभु अतींद्रिय सुख के धारी, समवशरण में आए हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत-शत शीश झुकाते हैं॥65॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर एकोनषष्टि सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त सहस थे केवल ज्ञानी, शीतल जिन के शुभकारी।
इन्द्र नृत्य वादित्र बजाकर, थिरक थिरक देते तारी॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥66॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्त सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, सप्त सहस द्वय शत् गाए।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, श्री जिन के चरणों आए॥

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥67॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शत् द्वयोत्तर सप्त सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीतल जिन के विक्रियाधारी, बारह सहस मुनी जानों।
प्रभु के समवशरण में आकर, आतम सुख होवे मानों॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥68॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्तसहस्र पाँच सौ मुनिवर, शीतल जिन के साथ कहे।
पंच कल्याणक धारी प्रभु की, भक्ति में जो लीन रहे॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥69॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशताधिकसप्तसहस्र विपुलमति ज्ञानीमुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाँच हजार सात सौ वादी, शीतल जिन के साथ रहे।
समवशरण में श्री जिन सोहें, शिव पदवी के नाथ कहे॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकातें है॥70॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तशत्युत्तर पंचसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (सोरठा)

एक लाख मुनिवर कहे, शीतल जिन के साथ।
शीतलता पाने विशद, चरण झुकाते माथ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक लक्ष सर्वमुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलि:।

श्री श्रेयांसनाथ के सप्त ऋषि

शतक् एक सौ तीन पूर्वधर, जिन श्रेयांस के कहे महान।
रहे दिव्य भाषापति जिनवर, जिनका हम करते गुणगान॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकातें हैं॥71॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर एक सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि अड़तालिस सहस दोय सौ, शिक्षक पद के धारी हैं।
प्रभु श्रेयांस की भक्ती करते, अतिशय मंगलकारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥72॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शत्द्वयोत्तर अष्टचत्वारिंशत् सहस्रशिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह हजार मुनि अवधिज्ञानी, दिव्यज्ञान के धारी हैं।
परमानंद परम सुख दाता, श्रेयो जिन अविकारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥73॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह हज्जार पाँच सौ भाई, केवल ज्ञानी, रहे महान।
जिन श्रेयांस के चरण कमल की, अर्चा करते हम गुणगान॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत-शत शीश झुकाते हैं॥74॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर षट् सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्यारह हजार विक्रियाधारी, श्रेयो जिनके रहे विशेष।
प्रभू जितेन्द्रिय पद से शोभित, समवशरण में दें उपदेश॥

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥75॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकादश सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती छह सहस मुनीश्वर, जिन दर्शन को आते हैं।
श्रेयो जिन की पद्मासन छवि, निरख-निरख हर्षाते हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥76॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र विपुलमतिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाँच हजार वादी मुनिवर जी, समवशरण में रहे महान।
कर्म कलंक मिटावन कारण, श्रेयो भक्ति करें गुणगान॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥77॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (चौपाई)

सहस चुरासी ऋषि अनगार, श्रेयनाथ के थे अविकार।
जलफलादि वसु द्रव्यमिलाय, मुनि गण पूजें शीश झुकाय॥11॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुरशीतिसहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलि:।

श्री वासुपूज्य जिन के सप्त ऋषि

(शम्भू छन्द)

एक हजार दो सौ पूरवधर, समकित ज्ञान लहाते हैं।
वासुपूज्य जिन चित्त लगाके, शिव लक्ष्मी पद पाते हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥78॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ शत्द्वयोत्तर एकसहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस उन्तालिस अरु दौ सौ मुनि, शिक्षक पदवी पाये हैं।
भवसागर से पार हेतु हम, वासु पूज्य गुण गाये हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥79॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ शत्द्वयोत्तर एकोनचत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यथाजात मुद्रा को धरकर, वासुपूज्य सह आये थे।
पाँच हजार चार सौ मुनिवर, अवधिज्ञान प्रगटाए थे॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥80॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत्युत्तर पंच सहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह हजार मुनि केवलज्ञानी, वासुपूज्य के साथ रहे।
कर्म निर्जरा करने हेतू, जो उपसर्ग अनेक सहे॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥81॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र केवलज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दस हजार मुनि विक्रियाधारी, जिन दर्शन सुख पातें हैं।
वासपुज्य मन ध्यान लगाकर, शुक्ल ध्यान उपजातें हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥82॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ दश सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में छह हजार मुनि, विपुलमती के धारी हैं।
त्रिभुवन वन्दित वासुपूज्य जिन, भव-भय दुख परिहारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥83॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र विपुलमतिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार सहस अरु दो सौ वादी, भवि मन कमल प्रकाशी हैं।
वासुपूज्य जिन पूजा करके, पाते अविचल राशी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥84॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर चतु:सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

समवशरण में वासुपूज्य के, मुनी बहत्तर सहस महान।
गीत नृत्य वादित्र बजाकर, इन्द्रादिक करते गुण गान॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, नित प्रति पूजा गाते हैं।
समवशरण में दर्शन करके, भव के पाप नशाते हैं॥12॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वासप्ततिसहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।

श्री विमलनाथ के सप्त ऋषि

एक सहस इक सौ पूरवधर, परम पूज्य उपकारी हैं।
समवशरण में विमलनाथ जिन, अनन्त चतुष्टय धारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥85॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक शत्युत्तर एकसहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अड़तिस सहस पाँच सौ मुनिवर, शिक्षक भविमन भाते हैं।
विमल-विमल गुण गाकर सब ही, अविनाशी पद पातें हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्यं चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥86॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर अष्ट त्रिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार हजार आठ सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के धारी मान।
विमलनाथ भव्यों के मन मधि, मोह तिमिर को नाशें आन॥

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥87॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशत्युत्तर चतु: सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े पाँच सहस्र केवली, विविध गुणों के धारी हैं।
समवशरण में विमलनाथ के, संत श्रेष्ठ अविकारी हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥88॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशताधिक पञ्चसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ हजार विक्रियाधारी मुनि, विमलनाथ यश गाते हैं।
धन्य धन्य जिनवर की वाणी, सप्तभंग समझाते हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥89॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नव सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच सहस्र पंचशत् मुनिवर, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
विमलनाथ के चरणाम्बुज में, विपुल मती मुनि आते हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥90॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च शताधिक पञ्चसहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वादी तीन सहस अरु छह सौ, प्रभु वन्दन को आते हैं।
विमलनाथ जिन श्रद्धा धर के, अनुपम निधि को पाते हैं॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसुविधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥91॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर त्रिसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

विमलनाथ के पास में, मुनि अड़सठ हज्जार।
सोलह कारण भावना, भाएँ अपरम्पार॥13॥

ॐ ह्रीं श्री विलमनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टषष्टि: सहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा पुष्पांजलिं

श्री अनन्तनाथ के सप्त ऋषि

समवशरण में सहस पूर्वधर, जिन अनंत के गाये हैं।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, अजर अमर पद पाए हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसुविधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥92॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवशरणस्थ एक सहस्रपूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं...

समवशरण में अष्ट द्रव्य से, जिन अनन्त को पूज रहे।
शिक्षक उन्तालीस हजार अरु, पाँच सौ भाई श्रेष्ठ कहे॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नितप्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥93॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एकोनचत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार हजार तीन सौ मुनिवर, अवधिज्ञानी माने हैं।
जिनानन्त की पूजा भक्ती, भव-भव के दुख हाने हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥94॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर चतु: सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के पाँच हजार केवली, जग में श्रेष्ठ कहाए हैं।
समवशरण में आकर सब ही, जय-जय ध्वनि गुँजाए हैं॥

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसुविधि अर्घ्य चढ़ाकर नितप्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥95॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंच सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ हजार विक्रिया धारी, अनंतनाथ पद आये हैं।
दस धर्मों को धारण करके, जग में पूज्य कहाये हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥96॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट सहस्रविक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती शुभ पञ्च सहस मुनि, संयम गुण के धारी हैं॥
समवशरण में अनंतप्रभू की, आभा अतिशय कारी है॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥97॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ पंचसहस्रविपुलमति ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन सहस अरु दो सौ वादी, जिन दर्शन को आते हैं।
जिन अनंत गुण गरिमा गाकर, सर्वोत्तम पद पाते हैं।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नितप्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥98॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ शत्‌द्वयोत्तर त्रि सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (सोरठा)

मुनि छयासठ हज्जार, प्रभु अनंत के साथ में।
पावें भवदधि पार, पूजें नित जिनपद ''विशद''॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट्षष्टि सहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥शान्तये शांतिधारा॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री धर्मनाथ के सप्त ऋषि

(शम्भू छन्द)

नौ सौ पूरवधारी मुनिवर, धर्म नाथ के साथ रहे।
शुद्ध हृदय से ध्याने वाले, आकुलता से हीन कहे॥
तीर्थंकर के सप्त गणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥99॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत् पूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं...

चालिस सहस सात सौ मुनिवर, शिक्षक पद को पातें हैं।
धर्मनाथ का ध्यान लगाकर, धर्मामृत बरसाते हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नितप्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥100॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्त शत्युत्तर चत्वारिंशत् सहस्र शिक्षकमुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि छत्तिस सौ अवधिज्ञानी, अनुपम सौख्य विकासे हैं।
धर्मनाथ की वाणी सुनकर, लोकालोक प्रकाशे हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥101॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् त्रिंशत् शत् अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े चार हजार केवली, धर्मनाथ गुण साजे हैं।
चार घातिया कर्म नाश कर, सिद्ध शिला पर राजे हैं॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥102॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर चतु: सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात हजार विक्रिया ऋद्धी, संयम तप कर पाए हैं।
धर्मनाथ के समवशरण में, भविजन क्लेश नशाएँ हैं॥

तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥103॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तसहस्रविक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती चतुसहस पंचशत्, धर्मनाथ सहआए हैं।
धर्मनाथ जिनपूजा करके, स्वात्मोपलब्धी पाए हैं।
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं॥
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥104॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर चतु: सहस्रविपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार अरु आठ सौ वादी, धर्मनाथ सह तुम जानों।
समवशरण में अर्चन करके, बोधि लाभ हो यह मानों॥
तीर्थंकर के सप्तगणों की, पूजा नित्य रचाते हैं।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर नित प्रति, शत्-शत् शीश झुकाते हैं॥105॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर द्वि सहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-(दोहा)

धर्मनाथ के पास में, मुनि चौंसठ हज्जार।
तिनके चरण नमें सदा, पाएँ सौख्य अपार॥15॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:षष्टिसहस्र सर्व ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलि:।

श्री शांतिनाथ के सप्त ऋषि

(जोगीरासा छन्द)

मुनि पूरव धर रहे आठ सौ, शांतिनाथ को ध्याएँ।
उनकी हम अर्चा करते हैं, भाव सहित गुण गाएँ॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥106॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशत्पूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इकतालीस हजार आठ सौ, शिक्षक पद के धारी।
शांतिनाथ के पद पंकज में, मुनिवर थे अविकारी।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥107॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एकचत्वारिंशत् सहस्रं शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन सहस मुनि अवधिज्ञानी, शांतिनाथ को ध्यावें।
शांतिनाथ पद अर्घ्य चढ़ाकर, निज आतम सुख पावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥108॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयसहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर चार हजार केवली, शांतिनाथ को ध्यावें।
समवशरण जिन पूजा करके, ऐश्वर्य वृद्धी पावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥109॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: सहस्र केवलि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतिनाथ के विक्रिया धारी, छह हजार गिन लीजे।
निर्निमेष निराहार प्रभू तुम, धर्म वृद्धि मम कीजे॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥110॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार हजार विपुलमति मुनिवर, शांतिनाथ सह जानो।
धर्म साम्राज्य के नायक भगवन्, पूजत श्रिय सुख ठानो॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥111॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: सहस्र विपुलमति ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार अरु चार सौ वादी, पंच समितियाँ पाते।
शांतिनाथ की पूजा करके, धर्म ध्यान उपजाते॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥112॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु: शत्युत्तर द्वि सहस्र वादि ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

शांतिनाथ के साथ में, मुनि बासठ हज्जार।
अर्चा करते भाव से, ध्यावें विविध प्रकार॥16॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सर्व द्विषष्टि सहस्र ऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥शान्तये शांतिधारा॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री कुन्थुनाथ के सप्त ऋषि

दोहा

रहे सात सौ पूर्वधर, कुन्थुनाथ के साथ।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, करो शांति जिननाथ
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥113॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तशत पूर्वधर ऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिक्षक तैतालिस सहस, इक सौ मुनी पचास।
कुन्थुनाथ जिन शरण में, शिक्षक करते वास॥

तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥114॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरणस्थ पंचाशदधिक एकशत्युत्तर त्रयचत्वारिंशत् सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अवधिज्ञानी जानिए, मुनिवर ढाई हजार।
श्री फल से पूजें सदा, हम भी बारम्बार॥
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥115॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशत्युत्तर द्विसहस्र अवधि ज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन सहस दो सौ मुनी, दिव्य केवली जान।
कुन्थुनाथ की भक्ति कर, पावें सुख श्रुत ज्ञान॥
तीर्थंकर के सप्तगण, समवशरण में साथ।
जिनकी हम पूजा करें, चरण झुकाकर माथ॥116॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवशरणस्थ शतद्वयोत्तर त्रिसहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

पंच सहस इक सौ मुनिनाथ, ऋद्धि विक्रियाधारी साथ।
पूज्य कहाए जो ऋषिराज, शीश झुकाए सकल समाज॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥117॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक शतोत्तर पञ्च सहस्र विक्रिया धारिमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन सहस त्रय शतक् पचास, विपुलमती कुन्थू जिन पास।
पूज्य कहाए जो ऋषिराज, शीश झुकाए सकल समाज॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥118॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचाशदधिक त्रि शत्युत्तर त्रि सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार वादी मुनिराज, करें भक्ति प्रभु की ऋषिराज।
पूज्य कहाए जो ऋषिराज, शीश झुकाए सकल समाज॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥119॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि सहस्त्रवादि मुनिभ्यः अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (चौपाई)

कुन्थुनाथ के साठ हजार, मुनी करें सबका उपकार।
जो भवि पूजें योग लगाय, धन समृद्धी सौख्य उपाय॥
तीर्थंकर के गण हैं सात, करें धर्म की जो बरसात।
चरण पूजते जिनके जीव, विशद कमाएँ पुण्य अतीव॥17॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर समवशरण षष्टिः सहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥शान्तये शांतिधारा–पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अरहनाथ जिन के सप्त ऋषि

दोहा

छह सौ दस मुनि पूर्वधर, अर जिन सह सब आय।
तिनकों पूजें भक्ति से, मुक्ति रमा मिल जाय॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥120॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ दशोत्तर षट्शत् पूर्वधर ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि पैंतीस हजार अरु, आठ सौ पैंतिस जान।
अर जिन के शिक्षक रहे, ज्ञानी पूज्य महान॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥121॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथतीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चत्रिंशत् अधिक अष्ट शत्युत्तर पञ्चत्रिंशत् सहस्रं शिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार मुनि आठ सौ, अवधि ज्ञानी जान।
अर जिन पद पूजा करें, महाव्रती गुणखान॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥122॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर द्वि सहस्र अवधिज्ञानी ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार अरु आठ सौ, किए स्वपर कल्याण
प्रभु की पूजा नित करें, पाएँ केवल ज्ञान॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥123॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर द्वि सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार हजार अरु तीन सौ, विक्रियाधारी पास।
अर जिन भक्ति लगाय के, शीश झुकाए दास॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥124॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर चतुः सहस्र विक्रिया धारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार पचपन मुनी, विपुलमती पद पाय।
अर जिन पूजा जो करें, उत्तम क्षमा लहाय॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥125॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चपञ्चाशत् अधिक द्वि सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एक हजार छह सौ मुनी, वादी रहे मनोग
अरह नाथ की वन्दना, का पाये संयोग॥
तीर्थंकर के सप्त गण, पूज्य रहे गुणवान।
जिनकी हम पूजा करें, पाने पद निर्वाण॥126॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर एक सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

गण गाए अर नाथ के, साधु पचास हजार।
समवशरण में आय कें, वन्दें बारम्बार॥18॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ तीर्थंकर समवशरण पंचाशत् सहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं...

शांतये शांतिधारा। पुष्पाञ्जलिः।

श्री मल्लिनाथ के सप्त ऋषि

(नरेन्द्र छन्द)

साढ़े पाँच शतक् पूरवधर, मल्लिनाथ के गाए।
जिनपद जय जयकार करें जो, रत्नत्रय निधि पाए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥127॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् अधिक पञ्चशत पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिक्षक उन्तिस सहस रहे श्री, मल्लिशरण अविकारी।
जिन पद में जयकार करें जो, रत्नत्रय के धारी॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥128॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनत्रिंशत् सहस्र शिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार दो सौ मुनि पावन, अवधि ज्ञान को पाए।
प्रभु की जय-जय करें जो, भव सागर तर जाए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥129॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि शत्युत्तर द्वि सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार दो सौ मुनि जानो, केवल ज्ञान के धारी।
प्रभु की जय-जयकार करें वह, बनते शिव भरतारी॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥130॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि शत्युत्तर द्वि सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दो हजार नौ सौ मुनि भाई, विक्रिया ऋद्धी धारे।
मल्लिनाथ पद शीश नाय जो, भव की बाधा हारे॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥131॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत्युत्तर द्वि सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौने दो हजार मुनि जानो, विपुलमती शुभ ज्ञानी।
मल्लिनाथ पद शीश झुकाते, वीतराग विज्ञानी॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥132॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशदधिक सप्तशत्युत्तर एक सहस्रं विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वादी एक हजार चार सौ, मल्लिनाथ के जानो।
प्रभु की शरणा पाकर नित ही, धर्मोन्नति हो मानो॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥133॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुर्दश शत् वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मल्लिनाथ जिनशरण में, मुनि चालीस हजार।
ध्याएँ प्रभु को नित विशद, भरें सौख्य भंडार॥19॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चत्वारिंशत् सहस्र सर्व ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।।शान्तये शांतिधारा–पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ के सप्त ऋषि

मुनी पूर्वधर रहे पाँच सौ, मुनिसुव्रत के भाई।
तीर्थंकर का आश्रय पाकर, कांति वृद्धि हो जाई॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥134॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशत् पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिक्षक मुनि इक्कीस सहस थे, समता धर अविकारी।
मुनिसुव्रत के चरण कमल में, जिन दीक्षा सब धारी॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥135॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक विंशतिः सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर एक हजार आठ सौ, अवधिज्ञानी जानों।
मुनिसुव्रत वचनामृत सुनकर, आत्मज्ञान हो मानों॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥136॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एक सहस्र अवधि ज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवल ज्ञानी सहस अष्ट शत्, परम पूज्य पद पावें।
मुनिसुव्रत की पूजा करके, मुक्ति शिखर को जावें॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥137॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाईस सौ मुनि विक्रिया धारी, मुनिसुव्रत सह पाएँ।
मुनिसुव्रत के चरण कमल में, शत्-शत् शीश नमाएँ॥

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥138॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वि शत्युत्तर द्वि सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनिराज विपुलमति, मुनिसुव्रत के गाए।
तीर्थंकर के समवशरण में, पूजा विधि सब पाए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥139॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च शत्युत्तर एक सहस्र विपुलमति मुनिभ्य अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिसुव्रत के बारह सौ मुनि, वादी श्रेष्ठ कहाए।
तीर्थंकर के समवशरण में, पुण्य वृद्धि शुभ पाए॥
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते॥140॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश शत् वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (चौपई)

मुनिसुव्रत के तीस हजार, मुनि करते जग का उपकार।
तिनको पूजे मन वच काय, सर्व मनोरथ सफल कराय॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरण त्रिंशत् सहस्र सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥शान्तये शांतिधारा-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री नमिनाथ के सप्त ऋषि

साढ़े चार सौ मुनी पूर्वधर, श्री नमि जिन के गाए।
तीर्थंकर का दर्शन करके, सम्यग्दर्शन पाए॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥141॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशत् चतुःशत् पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारह सहस छह सौ शिक्षक मुनि, करुणाधारी गाए।
प्रभु को मन मन्दिर में ध्याकर, मुक्ति रमा पति पाए॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥142॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर द्वादश सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अवधिज्ञानी सोलह सौ मुनि, उत्तम संयम धारे।
नमि जिन महाब्रह्म पद ईश्वर, पूजें नित पद थारे॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥143॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर एक सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमि जिन चरण शरण में आकर, परम अहिंसा धारें।
सोलह सौ मुनिराज केवली, सर्व दोष को टारें॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥144॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनि विक्रियाधारी, मंगलवृद्धी कारी।
समवशरण नमिनाथ जिनेश्वर, मोह मल्ल क्षयकारी॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥145॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र विक्रियाधारि ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुल मती साढ़े बारह सौ, भविजन कल्मषहारी।
समवशरण में नमि जिनवर की, छवि जग से अति न्यारी॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥146॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक द्वि शत्युत्तर एक सहस्र विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एक सहस वादी मुनिवर जी, जन्म मरण दुख नाशें।
जिन विभु विधु वेधा नमि स्वामी, निज पर भेद प्रकाशें॥
तीर्थंकर के रहे सप्तगण, वीतराग अनगारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, भविजन शोक निवारी॥147॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक सहस्र वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

समवशरण नमिनाथ के, मुनिवर बीस हजार।
तिनके चरण कमल जजें, भवदधि पाने पार॥21॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ विंशति सहस्र सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥शान्तये शांतिधारा-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री नेमिनाथ के सप्त ऋषि

(शम्भू छन्द)

मुनिवर चार सौ पूरब धारी, नेमिनाथ के गाए हैं।
समवशरण में दिव्य देशना, श्री जिनेन्द्र की पाए हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥148॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुःशत पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं...

ग्यारह सहस आठ सौ शिक्षक, प्रभु के साथ बताए हैं।
नेमिनाथ के शरण में राजे, शिव के नाथ कहाए हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥149॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्टशत्युत्तर एकादश सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नेमि प्रभु के पन्द्रह सौ मुनि, अवधिज्ञानी गाये हैं।
धर्म ध्वजा फहराने वाले, सम्यग्ज्ञानी पाए हैं॥

सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥150॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनि केवलज्ञानी, नेमिनाथ के गाये हैं।
समवशरण में शोभा पाते, अर्चा कर हर्षाए हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥151॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एक सहस्र एक सौ मुनिवर, विक्रिया ऋद्धी धारी हैं।
प्रभू नेमि पद भक्ति जगाएँ, त्रिभुवन में हितकारी हैं॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥152॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकशत्युत्तर एक सहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर नौ सौ विपुलमती शुभ, समवशरण में आए थे।
नेमिनाथ की शरणा पाकर, जग में प्रभुता पाए थे॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥153॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत् विपुलमति ज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर वादी श्रेष्ठ आठ सौ, त्रिभुवन में विख्यात रहे।
नेमिनाथ की भक्ती करके, मोह तिमिर को घात रहे॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥154॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत् वादि मुनिभ्यः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्य

नेमिनाथ के सहस अठारह, मुनी श्रेष्ठ कहलाए हैं।
नग्न दिगम्बर साधू पावन, विशद पूज्यता पाए हैं॥

सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्टद्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवशरणस्थ सर्व अष्टादश सहस्र सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।।शान्तये शांतिधारा–पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ के सप्त ऋषि

(शम्भू छन्द)

साढ़े तीन शतक पूरवधर, पार्श्व प्रभू के पास रहे।
कर्म निर्जरा करें मुनीश्वर, जय-जय-जय जिन नाथ कहे।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।155।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक त्रय शत् पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिक्षक दश सहस्र नौ सौ मुनि, सर्व सिद्धि को पाते हैं।
पार्श्व प्रभू की शरण में आकर, धन्य धन्य गुण गाते हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।156।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत्युत्तर दश सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पार्श्वनाथ की वीतराग छवि, भविजन के मन को मोहे।
चौदह सौ मुनि अवधिज्ञानी, समवशरण में अति सोहे।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।157।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुः शत्युत्तर एक सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में सहस केवली, पार्श्वनाथ के गाये हैं।
देवों ने आ पार्श्वनाथ पद, अतिशय कई दिखाए हैं।

सप्त गणों के साथ प्रभू की पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।158।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक हजार मुनि विक्रिया धारी, वेष दिगम्बर धारी हैं।
पार्श्वनाथ जिन नाम मंत्र से, पाए पद सुखकारी हैं।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।159।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक सहस्र केवल ज्ञान धारि मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े सात शतक् मुनि ज्ञानी, विपुल मती के धारी थे।
पार्श्वनाथ के समवशरण में, अतिशय मंगल कारी थे।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।160।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चाशदधिक सप्तशत् विपुलमति मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में छह सौ वादी, पार्श्वनाथ के साथ रहे।
रत्नत्रय का पालन करते, मुक्ति रमा के नाथ कहे।।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं।।161।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत् वादि मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं...

पूर्णार्घ्य (दोहा)

समवशरण में पार्श्व के, मुनि सोलह हज्जार।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, मिले मुक्ति का द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर समवशरण षोडश सहस्र सर्वमुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं...

।।शान्तये शांतिधारा–पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री महावीर जिन के सप्त ऋषि

(जोगीरासा छन्द)

मुनी तीन सौ पूरव धारी, ज्ञानी श्रेष्ठ कहाए।
महावीर के समवशरण में, जो अतिशय सुख पाए॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद चढ़ाने लाए॥162॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रयशत् पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं...

नौ हजार नौ सौ मुनि शिक्षक, शांति सौख्य बरसावें।
महावीर पद शीश झुकाकर, जिनवर सम गुण पावें॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए॥163॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ नव शत्युत्तर नव सहस्र शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महावीर के अवधिज्ञानी, तेरह सौ नित जानों।
जिनवर केवल-ज्ञान दिवाकर, पूजा सब विध ठानों॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए॥164॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिशत्युत्तर एकसहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

महावीर के मुनी सात सौ, केवल ज्ञानी रहे महान।
तिनको पूजें भक्ति भाव से, शिव पद का पावें स्थान॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य विशद यह, आज चढ़ाने लाए हैं॥165॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ सप्तशत् केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नव सौ मुनी विक्रियाधारी, महावीर के साथ रहे।
समवशरण में शोभा पाते, दश धर्मों के नाथ रहे॥

सप्त गणों के साथ प्रभु की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥166॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ नवशत् विक्रिया धारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमती मुनि रहे पाँच सौ, सर्व गुणों की खान कहे।
महावीर के गुण गाने में, आगे सर्व प्रधान रहे।
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥167॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्चशत् विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ चार सौ वादी मुनिवर, आत्मसिद्धि अनुरक्त रहे।
समवशरण में अर्घ्य चढ़ाते, महावीर के भक्त कहे॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥168॥

ॐ ह्री श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ चतु:शत् वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्य

चौदह सहस मुनी बतलाए, महावीर के साथ महान।
समवशरण में शोभा पाते, वीतराग सद्गुण की खान॥
सप्त गणों के साथ प्रभू की, पूजा करने आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद चढ़ाने लाए हैं॥169॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर तीर्थंकर समवशरणस्थ चतुर्दशसहस्र सर्व मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापूर्णार्घ्य

तीर्थंकर के समवशरण में, सातों गण जग पूज्य रहे।
वे सब श्रेष्ठ गुणों के धारक, श्रुत पारंगत श्रेष्ठ कहे॥
वेश दिगम्बर धरकर मुनिवर, जिन धुनि को बतलाते हैं।
तिनकों वन्दे बार-बार नित, मुक्ति रमा सुख पाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट चत्वारिंशत् अष्टाविंशति लक्ष सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्म सूर्य वृषभादि वर्द्धमानान्तेभ्यो नम:

जयमाला

दोहा

सात गणों से युक्त जिन, पूज्य हैं तीनों काल।
धर्म वृद्धि करने सदा, गाते हम जयमाल।।

चौपाई

जय जय तीर्थंकर अविकारी, तीन भुवन में मंगलकारी।
सुरनर मुनि गण पूजा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।
समवशरण सुर इन्द्र बनाते, पूजा करके जो हर्षाते।
साधू सप्त गणों के आते, समवशरण में शोभा पाते।।2।।
चौदह पूरव के हैं ज्ञाता, मुनी पूर्वधर ज्ञान प्रदाता।
स्याद्वाद शैली के धारी, अनेकांत गुण के अधिकारी।।3।।
विपुल मती मनः पर्यय ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
केवल ज्ञानी मुनिवर आवें, गंधकुटी में शोभा पावें।।4।।
मुनिवर अवधि ज्ञान के धारी, जो निर्ग्रन्थ रहे अविकारी।
शिक्षक मुनी शरण में आते, निज आतम का ज्ञान जगाते।।5।।
शिक्षा देते सबको भाई, ये है मुनिवर की प्रभुताई।
वाद कुशल मुनिवर भी आते, मुनिवर वादी जो कहलाते।।6।।
मुनिवर अतिशय तप को पाते, अणिमादिक ऋद्धी प्रगटाते।
आते मुनी विक्रिया धारी, मोक्ष महल के जो अधिकारी।।7।।
तीर्थंकर की महिमा न्यारी, सातों गण हैं मंगलकारी।
जो भी चरण शरण को पावें, भक्ति भाव से पूज रचावें।।8।।
वे सब अतिशय पुण्य कमावें, संयम का सौभाग्य जगावें।
अपने सारे कर्म नशावें, अनुक्रम से फिर मुक्ती पावें।।9।।
'विशद' जगे हैं भाव हमारे, अतः प्रभू हम आये द्वारे।
हम भी शिव सुख को पा जावें, लौट नहीं फिर जग में आवे।।10।।

दोहा-तीर्थंकर के सात गण, त्रिभुवन के हितदाय।
जो जिन मुनि स्तुति करें, अजर अमर पद पाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थकर समवशरणस्थ अष्टचत्त्वारिंशत सहस्रोत्तर अष्टाविंशति लक्ष सर्व मुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पावन हैं चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार।।
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र पद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार।।

इत्याशीर्वादः

पञ्चकल्याणक पूजा-19

स्थापना

पूज्य पञ्च कल्याण कहे हैं, तीर्थंकर के महति महान।
सुर नर मुनि गणधर भी जिनका, भाव सहित करते गुणगान।।
पञ्च कल्याणक पञ्चम गति में, पहुँचाने के हैं सोपान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।
दोहा-गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, अन्तिम पद निर्वाण।
चौबीसों तीर्थेश के, पूज रहे कल्याण।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(गीता छन्द)

हम स्वच्छ शीतल नीर से, त्रयधार दे पूजा करें।
जन्मादि त्रय का ताप हे जिन!, पूर्णतः अब परिहरें।।

तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥1॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सुगन्धित मलयागिर का, घिस कटोरी भर लिया।
भव ताप के संहार हेतू, जिन चरण अर्चन किया॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥2॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल सुगन्धित चाँदनी सम, श्वेत धोकर लाए हैं।
निज आत्म अक्षय सौख्य पाने, जिन चरण में आए हैं॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥3॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दशदिश सुगन्धित जो करें, वह पुष्प थाल सजाए हैं।
हो स्वात्म सुरभित नाथ मेरी, हम चढ़ाने लाए हैं।
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥4।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य यह ताजे बनाकर, भर लिए हैं थाल में।
अब क्षुधा व्याधी नाश हो, हम अर्चते हर हाल में॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥5॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर की ज्योती जगे, हम आरती रुचि से करें।
अज्ञान तम का नाश हो यह, दीप तव चरणों धरें॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥6॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध मिश्रित धूप सुरभित, अग्नि में खेते अहा।
सब कर्म भस्मीभूत करना, लक्ष्य अब मेरा रहा॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥7॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्री फल आदि प्रासुक, थाल में यह फल भरे।
हे नाथ! तव चरणों चढ़ाते, शिव प्रदायक हम अरे!॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥8॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग गंध आदिक अर्घ्य लेकर, दीप जिस पर रख लिया।
शुभ अर्घ्य चरणों में समर्पित, नाथ! यह हमने किया॥
तीर्थेश के कल्याण पाँचों, की करें हम अर्चना।
पञ्चम सुगति का मिले वैभव, है यही बस भावना॥9॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– झारी में भर लाए हैं, गंगा नदि का नीर।
शांती धारा दे रहे, पाने भवदधि तीर॥

॥शान्तये शान्तिधारा॥

पुष्पाञ्जलि को यह लिए, पुष्प सुगन्धीवान।
नाथ चरण में आए हम, पाने शिव सोपान॥

॥पुष्पाञ्जलि क्षिपेत॥

अर्घ्यावली

दोहा– तीर्थंकर प्रकृति कही, महा पुण्य की कोष।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, मिले परम सन्तोष॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

गर्भकल्याणक अर्घ्य

दोहा– द्वितिया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान।
सर्वार्थ सिद्धी से चय किए, पाए गर्भ कल्याण॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी अमावस जेठ की, पाए गर्भ कल्याण।
अजितनाथ का देव सब, किए विशद गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता)

फागुन सित आठें पाए, सुर गर्भ कल्याण मनाए।
जिन सम्भव अन्तर्यामी, हम चरणों करें नमामी॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल छठ आई, रत्नों की झड़ी लगाई।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

श्रावण शुक्ला द्वितिया पाए, सुमतिनाथ जी गर्भ में आए।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाए, मात पिता के भाग्य जगाए॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण पष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी॥6॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

षष्ठी सित भादों पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।
उत्सव सब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए॥7॥

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए॥8॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धडि छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार॥9॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार॥10।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का॥11॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गई माला–माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे॥12॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिल धन्य बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए॥13॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि एकम तिथि जानो, गर्भागम प्रभु का पहिचानो।
देव रत्न वृष्टी करवाए, माँ के गर्भ का शोध कराए॥14॥

ॐ ह्रीं कार्तिक प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित वैशाख अष्टमी गाए, धर्म नाथ जी गर्भ में आए।
रत्नपुरी में रत्न सुवर्षे, सुरनर सभी वहाँ पे हर्षे॥15॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥6॥

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छन्द)

श्रावण कृष्ण दशें को भाई, गर्भ में आए कुन्थु जिनेश।
दिव्य रत्न देवों ने आकर, पृथ्वी पर वर्षाए विशेष॥17॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी फागुन तृतिया शुभकार, गर्भ में आए अरह जिनेश।
दिव्य वर्षाए रत्न अपार, धरा पे आके इन्द्र विशेष॥18॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगल कार, देव नर चरण झुकाए शीश॥19॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥20॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

आश्विन वदि द्वितिया जानो, गर्भागम मंगल मानो।
सुर रत्न श्रेष्ठ वर्षाए, शुभ गर्भ कल्याण मनाए॥21॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥22॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण॥23॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली॥24॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

तीर्थंकर के गर्भागम पर, रत्न वृष्टि करते सुरनाथ।
जहाँ-जहाँ जिस नगर में जन्में, हर्ष मनाते हैं पितु मात॥

शुभ नक्षत्र घड़ी तिथि पावन, हो जाती है मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ा हम अर्चा करते, जिन पद में यह बारम्बार॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मकल्याणक अर्घ्य

दोहा– चैत कृष्ण नौमी प्रभू, पाए जन्म कल्याण।
शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान॥1॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघशुक्ल दशमी प्रभू, अजित नाथ भगवान।
न्हवन कराकर मेरु पे, किए इन्द्र जय गान॥2॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

कार्तिक सित पूनम गाई, जो जन्म की तिथि कहलाई।
मेरू पे न्हवन कराया, देवों ने हर्ष मनाया॥3॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारस सित माघ बताई, जनता सारी हर्षाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए॥4॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशि गाई, सुमतिनाथ जिन मंगलदायी।
जन्मे तीन ज्ञान के धारी, इन्द्र किए तब उत्सव भारी॥5॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए॥6॥
ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

द्वादशी जेठ सित गाई, जन्मे सुपार्श्व जिन भाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए॥7॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ॥8॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान॥9॥
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी जान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम॥10॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा–हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे॥11॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए॥12॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

माघ शुक्ल की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाएँ, खुश हो जय जयकार लगाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी तिथि आयी, नगर अयोध्या बजी बधाई।
जन्मोत्सव तव देव मनाए, नृत्य गान कर वाद्य बजाये॥14॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, जन्म लिए भू पे त्रिपुरारी।
पाण्डुक वन अभिषेक कराए, देव सभी जयकार लगाये॥15॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥16॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सुदि वैशाख बताई, नगर हस्तिनापुर में भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, पावन जय जयकार लगाए॥17॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छन्द)

अगहन सुदि चतुर्दशी भगवान, जन्म ले किए जगत कल्याण।
बजाए भाँति-भाँति के वाद्य, बधाई किए नगर में आन॥18॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार॥19॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥20॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

दशमी अषाढ़ वदि गाई, जन्मे नमि मंगल दाई।
शत इन्द्र शरण में आए, जो जन्म कल्याण मनाए॥21॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥22॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ॥23॥

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी आई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए॥24॥

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

शांति कुन्थु अर जन्म लिए कुरु, वंश शिरोमणि कहलाए।
हरिवंशी मुनि सुव्रत नेमी, पार्श्व उग्र कुल शुभ पाए॥

वर्धमान जी नाथ वंश, इक्ष्वाकू वंश के अन्य कहे।
वंश वृद्धि दोनों कुल की हो, जिनपद हम भी पूज रहे॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपकल्याणक अर्घ्य

दोहा–नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग।
चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग॥1॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी तिथी, पाए तप कल्याण।
इस जग का वैभव तजा, किए आत्म का ध्यान॥2॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जाना, संयम धर मुक्ती पाना।
मगशिर सित पूनम प्यारी, प्रभु बने आप अनगारी॥3॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।
वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे॥4॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

नौमी सित वैशाख बताई, संयम धारे जिस दिन भाई।
प्रभु वैराग की ज्योति जगाई, मुनिपद की तब बारी आई॥5॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए॥6॥
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

द्वादशी जेठ सित स्वामी, संयम धारे जगनामी।
वैराग्य हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया॥7॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना॥8॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग॥9॥
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥10॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा–दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब॥11॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने॥12॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(केसरी छन्द)

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए॥13॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, दीक्षा धार हुए अनगारी।
देव पालकी स्वर्ग से लाए, प्रभु को दीक्षा वन पहुँचाए॥14॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पद के पथगामी।
माघ शुक्ल तेरस तिथि गाई, दीक्षा की पावन घड़ि आई॥15॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥16॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष वैशाख सु एकम, दीक्षा धारे कुन्थूनाथ।
कामदेव चक्री पद छोड़ा, तीर्थंकर पद पाए सनाथ॥17॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छन्द)

जगा जिनके मन में वैराग, त्याग कर चले स्वजन परिवार।
रहा ना जिनके मन में राग, दशें सुदि मगसिर तिथि शुभकार॥18॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग॥19॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥20॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

दशमी आषाढ़ वदि स्वामी, दीक्षा धारे शिवगामी।
मन में वैराग्य जगाए, वन में जा ध्यान लगाए॥21॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥22॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार॥23॥

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया॥24॥

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

ऋषभनाथ जी इक्षु रस अरु, शेष लिए जिन क्षीराहार।
प्रथम पारणा के अवसर पर, पञ्चाश्चर्य हुए मनहार॥
अधिकाधिक बारह कोटी अरु, कम से कम बारह लख मान।
वीर प्रभू के आहारों में, रत्न वृष्टि शुभ हुई महान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर दीक्षाकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानकल्याणक अर्घ्य

दोहा– चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।
फागुन वदि एकादशी, जग में हुई महान॥1॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी, पाए केवल ज्ञान।
दिव्य देशना दे प्रभू, किए जगत कल्याण॥2॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

कार्तिक वदि चौथ बताए, जिन केवल ज्ञान जगाए।
अज्ञान के मेघ हटाए, रवि केवल जो प्रगटाए॥3॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।
सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए॥4॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

चैत सुदी ग्यारस शुभ पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।
समवशरण आ देव बनाए, दिव्य देशना आप सुनाए॥5॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए॥6॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

फाल्गुन वदि छठी निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।
अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रगटाए॥7॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए॥8॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार॥9॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥10॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा–पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे॥11॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को॥12॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए॥13॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावस को जिन स्वामी, ज्ञान जगाए अन्तर्यामी।
सुर नर जय-जय कार लगाए, चरणों में नत शीश झुकाएँ॥14॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया आप नशाए, ऋद्धि सिद्धियाँ स्वामी पाए।
केवल ज्ञान का दीप जलाए, मुक्ती पथ की राह दिखाए॥15॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए॥16॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की तृतिया जानो, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
इन्द्र शरण में आये मिलकर, समवशरण सुर रचे महान॥17॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छन्द)

सुदी कार्तिक द्वादशी महान, प्रभु जी पाए केवल ज्ञान।
किए प्रभु जग में ज्ञान प्रकाश, बने तव भक्त चरण के दास॥18॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण॥19॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥20॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

मगसिर सुदि ग्यारस पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, उपदेश जीव तब पाए॥21॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥22॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान॥23॥

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ॥24॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

इच्छा रहित श्री जिनवर का, होता है उपदेश विहार।
क्षुधा तृषा की बाधा ना हो, करते नहीं हैं कवलाहार॥
दिव्य देशना देकर जग को, प्रभु देते हैं करुणादान।
पूजा करते इसी भाव से, पाएँ हम भी केवल ज्ञान॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणकेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षकल्याणक के अर्घ्य

दोहा– माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हे कर्म विनाश।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास॥1॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पञ्चमी, पाए पद निर्वाण।
सिद्ध लोक में जा बसे, अजितनाथ भगवान॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

षष्ठी सित चैत बखानी, प्रभु पाए शिव रजधानी।
कर्मों का किया सफाया, निज आतम सौख्य उपाया॥3॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

ग्यारस चैत शुक्ल की गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती पाई।
शिव पथ को तुमने अपनाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया॥5॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए॥6॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

फाल्गुन वदि सातें जानो, जिन वर शिव पाए मानो।
सम्मेद शिखर से स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी॥7॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥8॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव॥9॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठें जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥10॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा–मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से॥11॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद॥12॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी॥13॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावस तिथि शुभकारी, हुए प्रभू मुक्ती पथ धारी।
अपने आठों कर्म नशाए, मोक्ष महल में धाम बनाए॥14॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव में रमने वाले, कर्म नाश शिवपुर को चाले।
ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, गिर सम्मेद शिखर से भाई॥15॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥16॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख तिथी एकम को, कीन्हें प्रभु जी कर्म विनाश।
कूट ज्ञानधर से जिन स्वामी, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास॥17॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमावस चैत कृष्ण की खास, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
किए शिवपुर को प्रभू प्रयाण, किया शिवपुर में प्रभु ने वास॥18॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास॥19॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि द्वादशी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥20॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश वैशाख की गायी, मुक्ती पाए जिन भाई।
अपने सब कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥21॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥22॥

ॐ ह्रीं अषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण॥23॥

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए॥24॥

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाअर्घ्य

ऋषभ देव जी चौदह दिन तक, महावीर दो दिन में रोध।
शेष जिनेश्वर एक माह का, कीन्हे भाई योग निरोध॥
ऋषभनाथ अरु वासु पूज्य जी, नेमिनाथ पर्यांकासन।
शेष तीर्थंकर सिद्ध हुए हैं, पाए हैं कायोत्सर्गासन॥5॥
दोहा– चौबीसों जिनराज की, मुक्ति तिथि स्थान।
पूज रहे हम भाव से, करने निज कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर भगवान की, गूँजे जयजयकार।
जयमाला गाएँ यहाँ, सुर नर भक्ती धार॥

(विधाता छन्द)

अनादी काल से हमको, कर्म ने जग भ्रमाया है।
उदय मिथ्यात्व का पाया, ना चेतन चेत पाया है॥
शुभाशुभ कर्म के फल ने, हमें क्या दिन दिखाए हैं।
कभी हँसकर के दिन बीते, कभी रोकर बिताए हैं॥1॥
विभावी भाव करके हम, कर्म का बन्ध करते हैं।
उदय से कर्म के खोटे, कार्य से हम ना डरते हैं॥
कर्म आयू उदय आते, नरक पशु गति में जाते हैं।
वहाँ वध बंध छेदन के, असहनीय दु:ख पाते हैं॥2॥
भाग्य से फिर मनुज भव पा, नहीं श्रद्धा जगाते हैं।
अत: स्वर्गादि में जाकर, भोग में मन लगाते हैं॥
परावर्तन पञ्च करके, ना भव से पार पाये हैं।
नहीं घबराए हैं इसने, पुनर्पुन जग भ्रमाए हैं॥3॥
जो शिवपथ के बनें राही, प्रथम श्रद्धा जगाते हैं।
बनें वह भेद ज्ञानी फिर, विशद चारित्र पाते हैं॥
मुनि निर्ग्रन्थ होकर के, स्वयं आतम को ध्याते हैं।
करें संवर सहित तप जो, कर्म अपने नशाते हैं॥4॥
बनें शुद्धोपयोगी मुनि, निजानुभूति पाते हैं।

कर्मघाती नशाकर के, ज्ञान केवल जगाते हैं॥
जो त्रिभुवन के तिलक बनकर, मोक्ष सुख को ग्रहण करते।
परम निर्वाण पाते हैं, मुक्ति वधु का वरण करते॥5॥
दोहा– 'विशद' ज्ञान धारी प्रभो!, जगती पति जगदीश।
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त छन्द

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुखदाय।
तिनके समवशरण को पूजें, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वे धन धान्य सम्पदा वैभव, सुख सम्पत्ती पाएँ अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्य पद, अनुक्रम से पावें शिवद्वार ॥

॥इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

तीर्थंकर पुण्य पूजा–20

स्थापना

प्रबल पुण्य का योग प्राप्त कर, तीर्थंकर प्रकृति तीर्थेश।
पाते हैं वह मात पिता भी, त्रिजग गुरु कहलाएँ विशेष॥
उत्तम वर्ण देह आयू शुभ, पाने वाले होते आप।
जिनकी अर्चा वन्दन करके, भव्यों के कट जाते पाप॥
दोहा–तीर्थंकर का पुण्य है, जग में सर्व महान।
शिव पद धारी जिन प्रभू, का करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्यसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्यसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्यसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

जन्म मरण पाया है भव भव, हमने कर्म किए खोटे।
आँसू इतने बरसे दुख से, सागर पड़े बड़े छोटे॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥1॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: जलं...!

क्रोधाग्नी है महाभयंकर, जलें महावन भी जिससे।
भवाताप ने घेरा हमको, जले सदा हम भी इससे॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥2॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: चंदनं...!

अक्षत से पूजा कर प्राणी, अक्षय पदवी को पाते।
मुट्ठी बाँधे सब आते हैं, हाथ पसारे सब जाते॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥3॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: अक्षतं...!

काँटों से बचने वालों को, फूल नहीं मिल पाते हैं।
रत्नत्रय ना पाते हैं जो, वो शिवपुर ना जाते हैं॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥4॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: पुष्पं...!

भोजन करके खुश होते जो, नहीं दोष को विनशाते।
दोषों के नाशी हैं जो वे, क्षुधा रोग पर जय पाते॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥5॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: नैवेद्यं...!

दीप जला आरति करने से, नहीं अंधेरा घट पाता।
पर श्रद्धा का दीप जलाते, मोह महातम हट जाता॥

तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥6॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: दीपं...!

होती राख धूप जलने से, फिर भी यह जग महकाए।
कर्म धूप के जलते आतम, का सौरभ बढ़ता जाए॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥7॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: धूपं...!

यत्नाचार के द्वारा मानव, का भविष्य उज्ज्वल होता।
उत्तम बीज का उत्तम तरुवर, उत्तम उसका फल होता॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: फलं...!

अष्ट द्रव्य का मूल आँकने, वाले अज्ञानी गाये।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य सुपद को, ज्ञानी अर्पित कर पाए॥
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति से, पुण्य श्रेष्ठ हम भी पाएँ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, जिनवर के हम गुण गाएँ॥9॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पुण्येभ्य: अर्घ्यं...!

दोहा

तीर्थंकर त्रय लोक में, होते हैं यशवान।
शांतीधारा दे यहाँ, करते हम गुणगान॥ *(शान्तये शान्तिधारा)*
कल्पतरू के पुष्प सम, पुष्प चढ़ाते आज।
पुष्पाञ्जलि करके मिले, मोक्ष महल का ताज॥ *(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)*

अर्घ्यावली

दोहा– पुण्य प्रकृति पाते प्रभु, होते श्री के नाथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते माथ॥
(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

।।चौपाई।।

कुलकर नाभिराय जग नामी, नगर अयोध्या के थे स्वामी।
आदिनाथ सुत जिनके गाए, शत् इन्द्रों से पूज्य कहाए।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं नाभिरायसुत श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

जित शत्रु राजा कहलाए, जो साकेत के स्वामी गाए।
अजितनाथ के पिता कहाए, तीर्थंकर हो शिवपद पाए।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्री जितशत्रूसुत श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नृप श्रावस्ती के शुभकारी, सम्भव जिन के पिता जितारी।
जो त्रिभुवन के गुरू कहाए, जिनके गुण सारा जग गाए।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं जितारि सुत श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नृप संवर साकेत के स्वामी, अभिनन्दन जिनके पितु नामी।
अभिवन्दन के योग्य कहाए, जनक आप जग के कहलाए।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं संवरराज सुत श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रिभुवन गुरू मेघरथ गाए, सुमतिनाथ के पिता कहाए।
नगर अयोध्या के नृप जानो, इक्ष्वाकूवंशी पहिचानो।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्री मेघप्रभ सुत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कौशाम्बी के नृप कहलाए, पदमप्रभु के पिता कहाए।
धरण राज की महिमा न्यारी, महिमा गाए जगती सारी।।

जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं धरणराजसुत श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सु प्रतिष्ठ सुर पूजित जानो, जिन सुपार्श्व के पितु पहिचानो।
नगर बनारस के थे स्वामी, सम्यक् ज्ञान भाव परिणामी।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्री सुप्रतिष्ठसुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्रपुरी में रहने वाले, चन्द्र प्रभू के पिता निराले।
राजा महासेन शुभकारी, अतिशयकारी वैभव धारी।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं महासेनसुत श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काकन्दी के स्वामी जानो, नृप सुग्रीव श्रेष्ठ पहिचानो।
पुष्पदन्त के पिता कहाए, महिमा जिनकी कही ना जाए।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं सुग्रीवसुत श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीतल जिनके पिता कहाए, भद्दलपुर के स्वामी गाए।
दृढ़ रथ राजा नाम बताया, जिनने अतिशय वैभव पाया।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।110।।

ॐ ह्रीं दृढ़रथसुत श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सिंहपुरी के स्वामी गाए, विष्णूराज नाम जो पाए।
श्रेयांस नाथ के पिता कहाए, जगत पिता बन जग में आए।।
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं विष्णुराजसुत श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चम्पापुर नगरी के स्वामी, वसुपूज्य थे अतिशय नामी।
वासु पूज्य जिनके सुत गाए, बाल ब्रह्मचारी कहलाए॥
जगत पूज्यता श्री जिन पाए, जिनकी महिमा जग जन गाए।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥12॥
ॐ ह्रीं वसुपूज्यसुत श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

विमलनाथ के पिता कम्पिला, के स्वामी थे भाई।
कृत वर्मा था नाम आपका, पाए बहु प्रभुताई॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥13॥
ॐ ह्रीं कृतवर्मासुत श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नगर अयोध्या के राजा थे, सिंहसेन शुभकारी।
अनन्त नाथ के पिता कहाए, जग में मंगलकारी॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥14॥
ॐ ह्रीं सिंहसेनसुत श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भानुराय जी रत्न पुरी के, राजा का पद पाए।
धर्म नाथ जिनके गृह जन्में, जग जन मंगल गाए॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥15॥
ॐ ह्रीं भानुराजसुत श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विश्वसेन ने नगर हस्तिना, पुर को धन्य बनाया।
शांतिनाथ नाथ के पिता कहाए, अतिशय वैभव पाया॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥6॥
ॐ ह्रीं विश्वसेनसुत श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नगर हस्तिनापुर के स्वामी, सूर्य सेन कहलाए।
कुन्थुनाथ के पिता आप थे, निज को धन्य बनाए॥

जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥7॥
ॐ ह्रीं सूर्यसेनसुत श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरहनाथ के पिता सुदर्शन, ज्ञानी ध्यानी जानो।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, जिनको भाई मानो॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥8॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनसुत श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुम्भराज मिथिला के स्वामी, थे महिमा के धारी।
मल्लिनाथ के पिता कहाए, बने आप ब्रह्मचारी॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥9॥
ॐ ह्रीं कुंम्भराजसुत श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

राजगृही नगरी के स्वामी, थे सुमित्र गुणधारी।
मुनिसुव्रत के पिता बने जो, तन पाए शुभकारी॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥20॥
ॐ ह्रीं सुमित्रराजसुत श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विजय सेन मिथिला के राजा, की फैली प्रभुताई।
पिता आप थे नमि जिनवर के, ऐसा कहते भाई॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥21॥
ॐ ह्रीं विजयराजसुत श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुद्र विजय ने शौरीपुर का, अनुपम राज्य चलाया।
नेमिनाथ के पितु बनने का, शुभ सौभाग्य जगाया॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥22॥
ॐ ह्रीं समुद्रविजयसुत श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अश्वसेन काशी के स्वामी, सुर नर मान्य कहाए।
पार्श्वनाथ के जनक आप थे, महिमा आप दिखाए॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥23॥
ॐ ह्रीं अश्वसेनसुत श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल मूत्रादिक रहित देहधर, नृप सिद्धार्थ निराले।
महावीर के जनक कहे हैं, जो कुण्डलपुर वाले॥
जगत पूज्य तीर्थंकर पद है, जिन के पिता कहाए।
जिनकी महिमा गा के सारा, यह जग हर्ष मनाए॥24॥
ॐ ह्रीं सिद्धार्थराजसुत श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

तीन लोक में तीर्थंकर की, महिमा अतिशय गाते हैं।
स्वर्ग से धनपति आकर नगरी, खुश हो खूब सजाते हैं॥
तीर्थंकर के पिता बने जो, होते पुण्य के धारी हैं।
जिन पूजाकर पुण्य वृद्धि हो, जिन पद ढोक हमारी है॥25॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति जनक सुतश्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥शान्तये शान्तिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

(चाल छन्द)

जिन आदिनाथ की भाई, मरुदेवी मात कहाई।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥1॥
ॐ ह्रीं मरुदेवी पुत्रस्य श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विजया मति माता जानो, जिन अजितनाथ की मानो।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥2॥
ॐ ह्रीं विजयावती पुत्रस्य श्री अतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन मात सुषेणा गाई, सम्भव जिन की कहलाई।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥3॥
ॐ ह्रीं सुषेणादेवी पुत्रस्य श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माँ अभिनन्दन की मानो, सिद्धार्था है पहिचानो।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥4॥
ॐ ह्रीं सिद्धार्था देवी पुत्रस्य श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु सुमति नाथ कहलाए, जिन मात मंगला पाए।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥5॥
ॐ ह्रीं मंगला देवी पुत्रस्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पदमप्रभु की शुभकारी, है मात सुसीमा प्यारी।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥6॥
ॐ ह्रीं सुसीमा देवी पुत्रस्य श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पृथ्वीमति माता जानो, जिनवर सुपार्श्व की मानो।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥7॥
ॐ ह्रीं पृथ्वीमती पुत्रस्य श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन चन्द्रप्रभू कहलाए, लक्ष्मी मति माता पाए।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥8॥
ॐ ह्रीं लक्ष्मीमती पुत्रस्य श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन पुष्पदन्त की भाई, रामा माता कहलाई।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥9॥
ॐ ह्रीं रामावती पुत्रस्य श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है मात सुनन्दा रानी, शीतल जिनकी जगनामी।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥10॥
ॐ ह्रीं सुनन्दा देवी पुत्रस्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वेणूमति अम्ब कहाई, जिनवर श्रेयांस की भाई।
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए॥111॥
ॐ ह्रीं वेणुमती पुत्रस्य श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन वासुपूज्य कहलाए, विजयावति माता पाए॥
प्रभु जगत पूज्यता पाए, निज माँ को धन्य बनाए।12॥
ॐ ह्रीं विजयावती पुत्रस्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(बेसरी छन्द)

विमलनाथ तीर्थंकर स्वामी, जय श्यामा माँ जिनकी नामी।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥13॥
ॐ ह्रीं जयश्यामा देवी पुत्रस्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनानन्त तीर्थंकर गाए, सर्वयशा माता जो पाए।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥14॥
ॐ ह्रीं सर्वयशा देवी पुत्रस्य श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मनाथ स्वामी को जानो, मात सुव्रतावति पहिचानो।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥15॥
ॐ ह्रीं सुव्रतावती पुत्रस्य श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतिनाथ तीर्थंकर गाए, ऐरावति माता जी पाए।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥16॥
ॐ ह्रीं ऐरावती पुत्रस्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुन्थुनाथ की जननी भाई, श्री मती देवी कहलाई।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥17॥
ॐ ह्रीं श्रीमती देवी पुत्रस्य श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरहनाथ की जननी जानो, नाम सुमित्रा जिनका मानो।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥18॥
ॐ ह्रीं सुमित्रा देवी पुत्रस्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माता प्रभावती मनहारी, मल्लिनाथ जिनकी है प्यारी।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥19॥
ॐ ह्रीं प्रभावती पुत्रस्य श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्मावति माता जग नामी, पाए श्री मुनिसुव्रत स्वामी।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥20॥
ॐ ह्रीं पद्मावती पुत्रस्य श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमीनाथ को जनने वाली, मात वप्रिला रही निराली।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥21॥
ॐ ह्रीं वप्रिला देवी पुत्रस्य श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माता शिवा देवी जग नामी, पाए नेमिनाथ जिन स्वामी।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥22॥
ॐ ह्रीं शिवादेवी पुत्रस्य श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पार्श्वनाथ जिनवर की जानो, मात वप्रिला पावन मानो।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥23॥
ॐ ह्रीं वर्मिला देवी पुत्रस्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रियकारिणी त्रिशला गाई, वीर प्रभू की माँ कहलाई।
जगत पून्यता जिनवर पाए, निज माँ को भी धन्य बनाए॥24॥
ॐ ह्रीं प्रियकारिणी देवी पुत्रस्य श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सोलह स्वप्न देखकर माता, फल पूछे राजा के पास।
तीर्थंकर सुत होगा तुमको, मन में हो अतिशय उल्लास॥
पुत्र जन्म के अवसर पर हो, तीनों लोकों में अति हर्ष।
भव्य जीव आकर के करते, तीर्थंकर बालक के दर्श॥25॥
ॐ ही श्री चतुर्विंशति जननी सुत चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(रोला छन्द)

धनुष पाँच सौ तुंग, देह स्वर्ण मय पाये।
करके नेत्र हजार, इन्द्र दर्शन को आये॥
आदिनाथ भगवान, वृषभ लक्षण जो पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥1॥
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्ण शरीरयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्त्र अठारह सौ कर, जिन की थी ऊँचाई।
अजितनाथ भगवान, स्वर्ण सम सोहें भाई॥
न्हवन मेरु पर होय, गज लक्षण जो पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥2॥
ॐ ह्रीं कनकच्छवि शरीरयुत श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सौलह सौ उत्तुंग, हाथ का तन प्रभु पाए।
इन्द्र स्वर्ग से वस्त्राभूषण ला पहिराए।
सम्भव नाथ जिनेश, अश्व लक्षण प्रगटाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥3॥

ॐ ह्रीं स्वर्णिमकांति शरीरयुत श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह सौ कर उच्च, कहे अभिनन्दन स्वामी।
कनकाभा युत देह, प्राप्त किए जग नामी॥
दाये पग में चिह्न, वानर का प्रभु पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥4॥

ॐ ह्रीं तप्तकांचनद्युति शरीरयुत श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमतिनाथ की देह, बारह सौ कर गाई।
तप्त स्वर्ण सम श्रेष्ठ, पूज्य इस जग में भाई॥
चकवा पाए चिह्न, कीर्ति सारा जग गाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥5॥

ॐ ह्रीं तप्तकरनकदीप्ति शरीरयुत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धनुष ढाई सौ उच्च, प्रभु के तन की जानो।
लाल कमल शुभ चिह्न, अतिशयकारी मानो॥
लाल रंग की देह, श्री पद्म प्रभु पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा करने आए॥6॥

ॐ ह्रीं कल्हारवर्ण शरीरयुत श्री पद्मप्रभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन सुपार्श्व की श्रेष्ठ, आठ सौ कर ऊँचाई।
स्वस्तिक जानो चिह्न, लोक में मंगलदायी॥
मरकत मणि सम आप, आभामय तन पाए।
करते हम गुणगान नाथ! पूजा को आए॥7॥

ॐ ह्रीं मरकतमणिसमहरितवर्ण शरीरयुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र समान शरीर, छह सौ हाथ ऊँचाई।
लक्षण पाए चन्द्र, श्री चन्द्रप्रभु भाई॥

अतिशय गुण के कोष, लोक में प्रभु जी गाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥8॥

ॐ ह्रीं चन्द्रद्युति शरीरयुत श्री चन्द्रप्रभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उच्च चार सौ हाथ, प्रभु का तन शुभकारी।
कुन्द पुष्प सम श्वेत, मगर लक्षण के धारी॥
पुष्प दन्त भगवान, जग में पूज्य कहाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥9॥

ॐ ह्रीं कुन्दपुष्पच्छवि शरीरयुत श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हाथ तीन सौ साठ, प्रभु तन की ऊँचाई।
तन है स्वर्ण समान, शीतल जिन का भाई॥
कल्पतरू लक्षण प्रभु, दाये पग में पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥10॥

ॐ ह्रीं कांचनद्युति शरीरयुत श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हाथ तीन सौ बीस, तुंग तन पाये स्वामी।
गेण्डा लक्षण सोहे पग में, जिन शिवगामी॥
श्री श्रेयांस जिनराज, स्वर्ण सम आभा पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥11॥

ॐ ह्रीं कांचनद्युति शरीरयुत श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान, भैंसा चिह्न के धारी।
तन है पद्म समान, सुन्दर जिन अविकारी॥
दो सौ अस्सी हाथ, ऊँचा तन प्रभु पाए।
करते हम गुणगान, नाथ! पूजा को आए॥12॥

ॐ ह्रीं पद्मरागमणिद्युति शरीरयुत श्री वासुपूज्यनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ताटंक छन्द

विमलनाथ का स्वर्ण वर्ण शुभ, सूकर जिनकी है पहिचान
दौ सौ चालिस कर ऊँचाई, अतिशय पाए महति महान॥

पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥13॥
ॐ ह्रीं स्वर्णदीप्तिशरीराय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दौ सौ हाथ तुंग ऊँचाई, सेही जिनका चिह्न विशेष।
स्वर्णाभा युत सुन्दर तन है, शोभित होते नन्त जिनेश॥
पुण्य सम्पदा पूजे जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥14॥
ॐ ह्रीं कनकदीप्तिशरीराय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंचन छवि युत धर्मनाथ जी, वज्र चिह्न युत हैं भगवान।
एक सौ अस्सी हाथ ऊँचाई, वाला तन है आभावान॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करे प्राणी निर्वाण॥15॥
ॐ ह्रीं कांचनच्छविशरीराय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शान्तिनाथ जी तप्त कनक द्युति, युक्त चिह्न है हिरण प्रधान।
एक सौ साठ हाथ तन ऊँचा, त्रय पद धारी हुए महान॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥16।
ॐ ह्रीं तप्तकनकद्युतिशरीराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वर्णाभामय तन के धारी, अज लक्षण जिनके पग जान।
एक सौ चालिस हाथ ऊँचाई, पाए कुन्थुनाथ भगवान॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥17॥
ॐ ह्रीं तप्तस्वर्णवर्णशरीराय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कनक कांतिमय अर जिनस्वामी, मीन रहा जिनका लक्षण।
एक सौ बीस हाथ ऊँचाई, इन्द्र करें जिन पद वन्दन॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥18॥
ॐ ह्रीं तप्तस्वर्णवर्णशरीराय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एक सौ हाथ उच्च तन पाए, मल्लिनाथ जी स्वर्ण समान।
लक्षण कलश रहा जिनके पद, पाने वाले केवल ज्ञान॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥19॥
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णशरीराय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कछुआ लक्षण पग में जिनके, नील मणी सम रहा शरीर।
अस्सी हाथ रही ऊँचाई, मुनिसुव्रत जी धारी धीर॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥20॥
ॐ ह्रीं इंद्रनीलमणिद्युतिशरीराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लक्षण नीलोत्पल है जिनका, स्वर्णाभा युत तन शुभकार।
साठ हाथ ऊँचे नमि जिनवर, पूँजे सुर नर पशु अनगार॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥21॥
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णनिभशरीराय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चालिस हाथ तुंग तन पाए, नेमिनाथ है जिनका नाम।
लक्षण शंख वर्ण है नीला, जिन पद करते भक्त प्रणाम॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥22॥
ॐ ह्रीं वैडूर्यमणिच्छविशरीराय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हरित मणी सम छवि के धारी, ऊँचाई जिनकी नौ हाथ।
पार्श्वनाथ का चिह्न सर्प है, जिन पद झुका रहे हम माथ॥
पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥23॥
ॐ ह्रीं गारुत्मणिच्छविशरीराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त हाथ उत्तुंग देह धर, बाल सूर्य सम सुन्दर देह।
चिह्न शेर का महावीर पद, पूजें सुर नर निःसन्देह॥

पुण्य सम्पदा पूजें जिनकी, वे होते प्राणी गुणवान॥
विशद ज्ञान के धारी होकर, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥24॥
ॐ ह्रीं बालादित्यदीप्तिशरीराय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जन्म समय से बलानन्त के, धारी होते हैं भगवान।
इन्द्र कराएँ न्हवन मेरु पे, सहस्त्राष्ट कलशों से आन॥
श्रेष्ठ वर्ण लक्षण के धारी, प्राप्त करें तन उच्च महान।
जिन गुण की पूजा करने से, प्राणी हो जाते गुणवान॥25॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरसहस्राक्षविलोकित अप्रतिम सौंदर्यमंडित पंचवर्ण शरीरेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(आयु वर्णन)

बीस लाख पूरब वर्षों तक, आदिनाथ जी रहे कुमार।
त्रेसठ लाख पूर्व की आयू, छद्मस्थ काल है वर्ष हजार॥
केवली काल हजार वर्ष कम, एक लाख पूरब गाए।
लाख चौरासी पूर्व की आयू, जिन पूजा को हम आए॥1॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य चतुरशीतिलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

पूर्व अठारह लाख अजित जिन, रह कुमार फिर राज्य किए।
पूर्वांग एक त्रेपन सु लाख अरु, पूरब आगे छद्मस्थ लिए
अजितनाथ का पूर्व अठारह, लाख कुमार राज्य फिर जान।
त्रेपन लाख पूर्वांग एक युत, छद्मस्थ काल इक पूर्व प्रमाण॥2॥
ॐ ह्रीं अजितनाथस्य द्वासप्ततिलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

पन्द्रह लाख पूर्व वर्षों तक, सम्भव जिनवर रहे कुमार।
राज्य सुचालिस लाख पूर्व अरु, अधिक पूर्वांग भी गाए चार॥
चौदह वर्ष छद्मस्थ केवली, लाख पूर्व कम जो जानो।
चौदह वर्ष पूर्वांग चार युत, साठ लाख पूर्व आयू मानो॥3॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य षष्टिलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

साढ़े बारह लाख पूर्व तक, अभिनन्दन जिन रहे कुमार।
आठ पूर्वांग साढ़े छत्तिस लख, राज्य भोग पाए शुभकार॥
वर्ष अठारह छद्मस्थ केवली, एक लाख पूरब में कम।
वर्ष अठारह पूर्वांग आठ आयु, पचास लख पूरब है सम॥4॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य पंचाशल्लक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

सुमति कुमार दश लाख पूर्व अरु, राज्य द्वादश पूर्वांग समेत।
उन्तिस लाख वर्ष पूरब का, बीस वर्ष छद्मस्थ विशेष॥
केवली एक लाख पूरब में, बारह पूर्वांग बीस वर्ष हीन।
आयू चालिस लाख पूर्व पा, रहे स्वयं के गुण में लीन॥5॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य चत्वारिंशल्लक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

साढ़े सात लाख पूरब तक, पद्मप्रभु जी रहे कुमार।
सोलह पूर्वांग साढ़े इक्तीस लख, राज्य काल पाए मनहार॥
छद्मस्थ पूर्व छह रहे केवली, सोलह पूर्वांग में कम जान।
छह माह हीन इक लाख पूर्व, आयू लख तीस पूर्व की मान॥6॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य त्रिंशल्लक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

लख पंच पूर्व कौमार्य काल, पूर्वांग बीस युत राज्य कहा।
चौदह लख पूरब का जानो, छद्मस्थ काल नौ वर्ष रहा॥
नौ वर्ष बीस पूर्वांग हीन इक, लाख पूर्व केवलि जानो।
बीस लाख पूरव की आयू , जिनवर सुपार्श्व की शुभ मानो॥7॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य विंशतिलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

कौमार्य काल श्री चन्द्रप्रभु का, लख दो सहस पचास पूर्व गाया।
छह लाख पचास हजार पूर्व, चौबीस पूर्वांग राज्य पाया॥
छद्मस्थ माह त्रय केवलि में, त्रिमास पूर्वांग हीन जानो।
इक लाख पूर्व पूर्वायू शुभ, दश लाख पूर्व जिनकी मानो॥8॥
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य दशलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

कौमार्य काल श्री पुष्पदंत का, पूरब पचास फिर राज्य किए।
पूरब पचास हज्जार अट्ठाइस, पूर्वांग पुनः छद्मस्थ लिए॥
चउ वर्ष बाद केवलि पद पाए, चउ वर्ष अट्ठाइस पूर्वांग हीन।
इक लाख पूर्व की आयू जिन, दो लाख पूर्व यजते प्रवीण॥9॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य द्विलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

शीतल जिनका कौमार्य पूर्व, पच्चीस सहस फिर राज्य किए।
पच्चीस हजार पूर्व आगे, छद्मस्थ वर्ष त्रय आप लिए।।
त्रय वर्ष हीन पच्चीस सहस, पूरब केवलि का समय कहा।
इक लाख पूर्व आयू पाए, जिन भक्ति हमारा लक्ष्य रहा।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीलनाथस्य एकलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

कौमार्य काल श्रेयांस नाथ, इक्कीस लाख फिर राज्य लहे।
ब्यालीस लाख छद्मस्थ काल, दो वर्ष मात्र जिनराज कहे।।
दो वर्ष न्यून इक्कीस लाख, कैवल्य काल शुभकर जानो।
पूर्णायु चौरासी लाख वर्ष, पाए जिनवर ऐसा मानो।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य चतुरशीतिलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

कौमार्य काल जिन वासुपूज्य, अष्टादश लाख वर्ष पाए।
ना राज्य पाठ भाया जिनको, प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए।।
छद्मस्थ वर्ष इकवर्ष हीन, लख चौवन केवलि पद जानो।
पूर्वायु बहत्तर लाख वर्ष, जिन पद पूजें सुख हो मानो।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य द्वासप्तलिक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

लख पन्द्रह वर्ष कौमार्य काल, श्री विमलनाथ फिर राज्य किए।
जिन तीस लाख वर्षों रहकर, त्रय वर्ष मात्र छद्मस्थ लिए।।
त्रय वर्ष हीन पन्द्रह सु लाख, वर्षो का केवलि काल कहा।
पूर्णायू लाख है वर्ष साठ, जिन पूजा मेरा लक्ष्य रहा।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य षष्टिलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

श्री जिनानन्त का कुँवर काल, लख साढ़े सात वर्ष गाया।
है राज्य काल पन्द्रह सु लाख, छद्मस्थ वर्ष दो बतलाया।।।
लख सप्त उनन्चास सहस तथा, नौ सौ अट्ठानवे वर्ष लिए।
यह काल केवली पूर्णायू, लख तीस वर्ष की पूर्ण किए।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य त्रिशल्लक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

श्री धर्मनाथ कौमार्य काल, दो लाख पचास सहस पाए।
फिर पाँच लाख का राज्य काल, छद्मस्थ वर्ष इक जिन गाए।

दो लाख उनंचास सहस नौ सौ, निन्यानवे केवलि काल कहा।
दश लाख पूर्ण आयु जानो, जिन पूजा का मम् भाव रहा।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य दशलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

श्री शांतिनाथ कौमार्य काल, पच्चीस हज्जार बरस पाए।
मण्डलेश्वर पच्चिस सहस तथा, चक्रित्व सहस पच्चिस गाए।।
तप सोलह वर्ष पुनः करके, चौबीस सहस नौ सौ जानो।
चौरासी अधिक केवली के, इक लाख पूर्ण आयू मानो।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य एकलक्षपूर्वायुषे अर्घ्यं...।

जिन कुन्थु नाथ जी रहे कुँवर, तेईस सहस अरु सतक सात।
अरु अधिक पचास वरस इतने, मण्डलेश्वर चक्री रहे भ्रात।।
तप सौलह वर्ष केवली के, फिर तेईस सहस अरु सतक सात।
चौबीस वर्ष है पूर्णायू, पन्चानवे सहस वर्ष विख्यात।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य पंचनवतिसहस्रवर्षायुषे अर्घ्यं...।

अरहनाथ प्रभू कौमार्य सहस, इक्कीस वर्ष फिर राज्य लिए।
इतना ही समय मण्डलेश्वर में, चक्री में भी व्यतीत किए।।
छद्मस्थ रहे सोलह वर्षो, फिर बीस सहस नौ सौ जानो।
चौरासी वर्ष केवली का, पूर्णायू सहस चौरासी मानो।।8।।

ॐ ही श्रीअरहनाथस्य चतुरशीतिसहस्रवर्षायुषे अर्घ्यं...।

श्री मल्लिनाथ कौमार्य काल, सौ वर्ष राज्य ना मन भाया।
ब्रह्मचारी रह दीक्षा धारे, छद्मस्थ काल छह दिन गाया।।
फिर चौवन हजार नौ सौ वर्षों, छह दिन कम केवलि आप रहे।
आयू पचपन हजार वर्षों, पाने वाले जिनराज कहे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य पंचपंचाशत्सहस्रवर्षायुषे अर्घ्यं...।

मुनिसुव्रत सात हजार पाँच, सौ वर्षों तक कौमार्य कहे।
फिर राज्य काल पन्द्रह हजार, छद्मस्थ सुग्यारह मास रहे।।
है केवलि काल पचहत्तर सौ, जो ग्यारह माह हीन जानो।
पूर्णायू तीस हजार वर्ष, जिन पद पूजें जय हो मानो।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य त्रिंशत्सहस्रवर्षायुषे अर्घ्यं...।

नमिनाथ कुमार काल पच्चिस, सौ वर्ष पूर्ण कर राज्य लिए।
जो पाँच हजार वर्ष रहकर, तप नौ वर्षों तक आप किए।
दो सहस चार सौ इक्यानवे, यह केवलि काल बताया है।
दश सहस वर्ष आयू पाए, जिन पूजा को मन भाया है॥21॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य दशसहस्रवर्षायुषे अर्घ्यं...।

श्री नेमिनाथ कौमार्य तीन, सौ वर्ष रहे ना राज्य लिया।
ब्रह्मचारी रह दीक्षा धारे, छप्पन दिन तक तप घोर किया॥
शुभ वर्ष उनहत्तर आठ माह, तक केवल ज्ञानी आप रहे।
पूर्णायू एक हजार वर्ष, पाके अपने सब कर्म दहे॥22॥

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथस्य एकसहस्रवर्षायुषे अर्घ्यं...।

प्रभु पार्श्वनाथ जी तीस वर्ष, रहकर कुमार ना राज्य किए।
दीक्षा धारे ब्रह्मचारी रह, छद्मस्थ काल चउ माह लिए॥
फिर वर्ष उनहत्तर आठ माह, केवली काल प्रभु का जानो।
सौ वर्ष पूर्ण आयू पाये, शिव पथ राही जिनको मानो॥23॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य एकशतवर्षायुषे अर्घ्यं...।

कौमार्य काल जिन वीर प्रभू, का तीस वर्ष बतलाया है।
ना राज्य किए ब्रह्मचारी रह, तप बारह वर्ष का पाया है॥
फिर तीस वर्ष केवल ज्ञानी, रहकर के जग को ज्ञान दिया।
पूर्णायू बहत्तर वर्ष प्रभू, पाकर के शिव को गमन किया॥24॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर स्वामिनः द्वासप्तविवर्षायुषे अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

नर आयू अन्तिम पाकर के, तीर्थंकर आयू पूर्ण हरें।
फिर सिद्ध शिला पर जाकर के, आनन्दामृत का पान करें॥
जो प्रभु की आयू आदि सुगुण, का भाव सहित गुणगान करें।
वे आयू आदिक कर्म नाश, शिवपुर को शीघ्र प्रयाण करें॥25॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरकौमारकालराज्यकालछद्मस्थकालकेवलि कालसमेतपूर्णायुर्भ्यः पूर्णार्घ्यं...।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य–ॐ ह्रीं समवसरणपद्मसूर्यवृषभादिवर्द्धमानतेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– पुण्य अनुत्तर प्राप्त जिन, तीर्थंकर भगवान।
आयू पाए श्रेष्ठ तन, करते हम जयगान॥

।।छन्द तोटक।।

जय जय तीर्थंकर आप बने, जो पुण्य अनुत्तर पाए घने।
तव मात पिता भी धन्य रहे, शुभ वर्ण आयु भी श्रेष्ठ कहे॥
हे मृत्युञ्जय जगनाथ प्रभो!, तुम सदा निभाते साथ विभो!।
तव जन्म से भूमि पवित्र रही, महिमा जिनकी ना जाए कही॥1॥
जब गर्भागम प्रभु आप धरें, छह माह पूर्व सुर वृष्टि करें।
माता के उर में हर्ष जगे, सब ऋतुओं के फल फूल लगें॥
सुर जन्मोत्सव पर नृत्य करें, हर्षित हो मन में मोद भरें।
शत् इन्द्र श्रेष्ठ जयगान करें, नत हो पद में गुणगान करें॥2॥
जो पिता आपके श्रेष्ठ रहे, वे जगत पिता जग पूज्य कहे।
हे नाथ! आपकी मात कही, वे सुर नर से भी पूज्य रहीं॥
जो मात पिता की सेव किए, वे विशद पुण्य का कोष लिए।
जो भी प्राणी आशीष लिए, उनके जागे शुभ ज्ञान हिए॥3॥
जिन चरमोत्तम तन के धारी, अनपवर्त्य आयु के अधिकारी।
सौन्दर्य प्रभू का श्रेष्ठ रहा, सुर दर्श करे खुश होय अहा॥
हे नाथ! आप जब बाल बने, तव देव खेलने आए घने।
युवराज बने या राज्य किए, जन जन को प्रभु आनन्द दिए॥4॥
दीक्षा प्रभु अपने आप लिए, छद्मस्थ अवस्था प्राप्त किए।
फिर शुक्ल ध्यान में आप लगे, तव पावन केवल ज्ञान जगे॥
शुभ समवशरण तव देव रचे, जो स्वर्णमयी थे रत्न खचे।
प्रभु नभ में आप स्वयं चलते, पग तल में स्वर्ण कमल खिलते॥5॥
जिन वासुपूज्य मल्लि नेमि कहे, श्री पार्श्ववीर यह पाँच रहे।
यह बालयति तीर्थेश कहे, ना राज्य सम्पदा आप गहे॥
जो तीर्थंकर पद पूज रचें, वे कर्म बन्ध से जीव बचें।
वे ब्रह्म ऋषीश्वर देव बने, नर बनके अपने कर्म हने॥6॥
हम नाथ शरण में आन खड़े, कई भक्त आपके बड़े बड़े।

ना हमको प्रभु निराश करो, अब पूर्ण हमारी आश करो॥
अब 'विशद' ज्ञान का दान मिले, निज चेतन का उपमान खिले।
हम अपना पूर्ण विभाव हरें, अब सिद्ध शिला पर वास करें॥7॥

॥दोहा॥

पूरी हो मम् कामना, हे देवाधीदेव।
जब तक यह जीवन रहे, ध्यायें तुम्हें सदैव॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजनकजननीदेहोत्सेधवर्णायु: पूण्येभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(कवित्त छन्द)

श्री जिन चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में अपरम्पार।
समवशरण की करें अर्चना, अष्ट द्रव्य से मंगलकार॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पाते ज्ञान अपार।
'विशद' भोग अहमिन्द्र इन्द्र पद, अनुक्रम से पावें शिवद्वार॥

इत्याशीर्वाद:

अनुबद्ध केवली पूजा–21

स्थापना

तीर्थंकर के तीर्थ काल में, हुए केवली कई अनुबद्ध।
कई बने अहमिन्द्र स्वर्ग के, कई हुए हैं प्राणी सिद्ध॥
सौधर्मादिक स्वर्गों में कई, इन्द्र बने हैं महति महान।
उन सब यतियों का हम उर में, भाव सहित करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तमुनिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तमुनिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तमुनिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

बचपन खेल-खेल में खोया, गयी जवानी भोगों में।
आशाओं में जीवन बीता, गया बुढ़ापा रोगों में॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्य: जलं ...।

शीतल चन्द्र किरण या हिमकण, में चन्दन सी शीतलता।
भवसंताप मिटाने वाली, होती पावन ज्ञान लता॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्य: चंदनं ...।

परिजन मान प्रतिष्ठा पैसा, यह सब दुख के हेतु कहे।
पूजा भक्ती तीर्थ वन्दना, अक्षय पद के सेतु रहे॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥3।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्य: अक्षतं ...।

बनें मोक्ष पथ के राही वे, ब्रह्मचर्य जो भी धारे।
संयम त्याग तपस्या द्वारा, काम शत्रु जो निरवारे॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्य: पुष्पं ...।

क्षुधा रोग से व्याकुल है जग, दुखी महा इन्सान कहे।
जिनने क्षुधा रोग को नाशा, वे प्राणी भगवान कहे॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्य: नैवेद्यं ...।

अटल रहा विश्वास हृदय तो, सम्यक् ज्ञान का दीप जले।
धीरे-धीरे सही जीव के, अन्दर का तब मोह गले॥

भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥6॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्यः दीपं ...।

धूप जलाकर धुआँ उड़ाया, नहीं किन्तु मम् कर्म गले।
धर्म ध्यान की अग्नि जलाएँ, तव ही सारे कर्म जलें॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्यः धूपं ...।

विषय भोग हम भोग रहे जो, भोगों के फल हमें मिले।
मोक्ष महाफल पाते जिनके, उर में ज्ञान के दीप जले॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥8॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्यः फलं ...।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, अष्टम वसुधा पाने को।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, आये शिवपुर जाने को॥
भव दुख से छुटकारा मिलता, जिन मुनीन्द्र के अर्चन से।
मुक्ती पथ के राही बनते, श्री जिनेन्द्र की पूजन से॥9॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्यः अर्घ्यं ...।

दोहा– प्रमुदित मन मेरा हुआ, जैसे चंद चकोर।
शांतीधारा दे रहे, शांती हो चहुँ ओर॥

(शान्तये शान्तिधारा)

पुष्पाञ्जलि करते चरण, हे त्रैलोकी नाथ!।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥

(दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

दोहा–पूज रहे अनुबद्ध जिन, पाए अनुत्तर देव।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद स्वमेव॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(पाइताछन्द)

श्री आदिनाथ के जानो, अनुबद्ध केवली मानो।
जिनवर चौरासी गाये, जो मुक्ती पद को पाए॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

श्री अजितनाथ जिन गाए, अनुबद्ध केवली पाए।
चौरासी संख्या गाई, जिनने मुक्ती श्री पाई॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

श्री सम्भव जिनवर गाए, अनुबद्ध चौरासी पाए।
जो बने मोक्ष पथगामी, पाए मुक्ती अभिरामी॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

श्री अभिनन्दन जिन देवा, गाये कर्मों के छेवा।
अनुबद्ध केवली पाए, जिनराज चौरासी गाए॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

श्री सुमतिनाथ जगनामी, जो बने मोक्ष पथगामी।
अनुबद्ध केवली जानो, जिनके चौरासी मानो॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

पद्म प्रभु ज्ञान जगाए, अनुबद्ध केवली पाए।
चौरासी हैं शुभकारी, जो बने विशद अनगारी॥

हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥6॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मभनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

जिनवर सुपार्श्व कहलाए, अनुबद्ध केवली पाए।
चौरासी मुनिवर पाए, जो मोक्ष मार्ग अपनाए॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥7॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

प्रभु चन्द्र सुलक्षण धारी, हैं चन्द्र प्रभू अविकारी।
अनुबद्ध केवली सोहें, चौरासी भवि मन मोहें॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

जो शिव की सुविधि बताए, वे सुविधि नाथ कहलाए।
चौरासी मुनिवर पाए, अनुबद्ध केवली गाए॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥9॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

हैं शीतल गुण के धारी, जिनवर शीतल शुभकारी।
अनुबद्ध केवली पाए, चौरासी जिनके गाए॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥10॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य चतुरशीतिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

जिनवर श्रेयांस मन भाए, जो शील सम्पदा पाए।
अनुबद्ध केवली जानो, जो रहे बहत्तर मानो॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥11॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य द्वासप्ततिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

जिन वासुपूज्य के जानो, अनुबद्ध केवली मानो।
जो रहे चवालिस भाई, पाए जग की प्रभु ताई॥
हम जिन पद पूज रचाएँ, अपने सब कर्म नशाएँ।
फिर मोक्ष महल को जाएँ, जिन सिद्धों के सुख पाएँ॥12॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथस्य चतुःचत्त्वारिशंत अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

(नरेन्द्र छन्द)

चालिस शुभ अनुबद्ध केवली, विमलनाथ के गाये।
रत्नत्रय को धारण करके, सिद्धश्री को पाए॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥13॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य चत्वारिंशत्अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

छत्तिस थे अनुबद्ध केवली, सर्व कर्म के नाशी।
श्री अनन्त जिनवर के संग में, सिद्ध शिला के वासी॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥14॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथस्य षट्त्रिंशत्अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

हैं अनुबद्ध केवली बत्तिस, धर्मनाथ के भाई।
धर्म प्राण जगती जनता को, कहे गये शिवदायी॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥15॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथस्य द्वात्रिंशत्अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

अट्ठाइस अनुबद्ध केवली, शांतिनाथ के जानो।
शांति प्रदायक शिव भर्त्तारी, कहे गये जो मानो॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥16॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य अष्टाविंशातिअनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं.....।

चौबिस थे अनुबद्ध केवली, कुन्थु नाथ के संग में।
मृत्यु मल्य को मार गिराए, बढ़े मोक्ष के मग में॥

हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥17॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथस्य चतुर्विंशतिअनुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

बीस रहे अनुबद्ध केवली, अरहनाथ के भाई।
इन्द्र चक्रवर्तिन से पूजित, बने मोक्ष के राही॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥18।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ विंशतिअनुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

हैं अनुबद्ध केवली पावन, मल्लिनाथ के ज्ञानी।
सोलह बतलाए हैं जिनवर, जग जन के कल्याणी॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥19॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य षोडशअनुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

बारह हैं अनुबद्ध केवली, मुनिसुव्रत के भाई।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाले, हैं मुक्ती पद दायी॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥20॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य द्वादशअनुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

आठ केवली नमीनाथ के, पावन कहे गये हैं
जो अनुबद्ध केवली गाये, अपने कर्म क्षये हैं॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥21॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथस्य अष्टानुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

नेमिनाथ के चार केवली, जो अनुबद्ध बताए।
मुक्ती पद को पाए श्री जिन, हम पूजा को आए॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥22॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथस्य चतुरनुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

जिनकी अर्चा करके चरणों, करते हम शत् वन्दन।
तीन रहे अनुबद्ध केवली, पार्श्वनाथ के पावन॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥23॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य त्रयानुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

तीन श्रेष्ठ अनुबद्ध केवली, वर्द्धमान के जानो।
इन्द्र भूति गौतम सुधर्म जिन, जम्बूस्वामी मानो॥
हम अनुबद्ध केवली जिनके, पद में अर्घ्य चढ़ाते।
बनें मोक्ष के राही हम भी, विशद भावना भाते॥24॥
ॐ ह्रीं श्री महावीरस्वामिन: त्रयानुबद्धकेवलिभ्य: अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

तीर्थंकर का मोक्ष गमन हो, उस दिन केवल ज्ञानी।
होते हैं जो अन्य मुनीश्वर, भविजन के कल्याणी॥
इसी प्रकार शृंखला आगे-आगे चलती जाए।
वे अनुबद्ध केवली होते, उन्हें पूज सुख पाए॥

दोहा

ग्यारह सौ ब्यासी हुए, अनुबद्ध केवली संत।
या तेरह सौ सत्तरह, किए कर्म का अंत॥25॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां द्वयशीत्युत्तरएकादशशतानुबद्धकेवलिभ्य: पूर्णार्घ्यं...।
शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

“अनुत्तर प्राप्त मुनियों के अर्घ”

(रेखता छन्द)

शिष्य मुनि गाये बीस हजार, ऋषभ जिनके पावन अनगार।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास॥1॥
ॐ ह्रीं ऋषभदेवस्य अनुत्तरप्राप्तविंशतिसहस्रमुनिभ्य: अर्घ्यं....।

अजित जिन के थे मुनि अनगार, साथ में पावन बीस हजार।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास॥2॥
ॐ ह्रीं अजितनाथ अनुत्तरप्राप्तविंशतिसहस्रमुनिभ्य: अर्घ्यं....।

प्रभू संभव के शिष्य मुनीश, सहस बतलाए श्री जिन बीस।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।3।।
ॐ ह्रीं संभवनाथस्य अनुत्तरप्राप्तविंशतिसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

श्री अभिनन्दन जिन के साथ, सहस बारह मुनियों के नाथ।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।4।।
ॐ ह्रीं अभिनन्दननाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

सुमति जिनवर के शिष्य महान, सहस बारह थे गुण की खान।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।5।।
ॐ ह्रीं सुमतिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

पद्म जिनवर के शिष्य विशेष, सहस बारह का है उपदेश।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।6।।
ॐ ह्रीं पद्मप्रभनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

सहस बारह गाये मुनिराज, सुपारस जिनके पूजें आज।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।7।।
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

चन्द्र प्रभु के हैं शिष्य महान, सहस बारह पाए सद्ज्ञान।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।8।।
ॐ ह्रीं चंद्रप्रभनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

संत हैं ग्यारह सहस प्रमाण, सुविधि जिनवर के पूज्य महान।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।9।।
ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथस्य अनुत्तरप्राप्तएकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

बने शीतल जिन जग के ईश, सहस ग्यारह हैं श्रेष्ठ ऋशीष।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।10।।
ॐ ह्रीं शीतलनाथस्य अनुत्तरप्राप्तएकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

साधु गण ग्यारह सहस प्रमाण, श्रेयांस जिनके हैं अति गुणवान।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।11।।
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथस्य अनुत्तरप्राप्तएकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

पूज्य हैं वासुपूज्य भगवान, शिष्य हैं ग्यारह सहस प्रमाण।
अनुत्तर में जा कीन्हे वास, बनें हम श्री जिनेन्द्र के दास।।12।।
ॐ ह्रीं वासुपूज्यनाथस्य अनुत्तरप्राप्तएकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

(वेसरी छन्द)

विमलनाथ के शिष्य कहाए, ग्यारह सहस पूज्यता पाए।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।13।।
ॐ ह्रीं विमलनाथस्य अनुत्तरप्राप्तएकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

जिनानन्त के मुनि अनगारी, दश हजार संयम के धारी।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।14।।
ॐ ह्रीं अनंतनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

धर्मनाथ के साधू गाए, दश हजार पावन कहलाए।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।15।।
ॐ ह्रीं धर्मनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

शांतिनाथ के शिष्य बखाने, दश हजार थे जाने माने।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।16।।
ॐ ह्रीं शांतिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

कुन्थुनाथ के शिष्य बताए, दश हजार संतों ने गाए।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।17।।
ॐ ह्रीं कुंथुनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

शिष्य रहे अर जिनके ज्ञानी, दश हजार निज आतम ध्यानी।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।18।।
ॐ ह्रीं अरहनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं....।

आठ हजार आठ सौ जानो, मल्लिनाथ से साधू मानो।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।19।।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तअष्टसहस्रअष्टशत् मुनिभ्यः अर्घ्यं....।

मुनिसुव्रत के शिष्य कहाए, आठ हजार आठ सौ गाए।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी।।20।।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथस्य अनुत्तरप्राप्तअष्टसहस्रअष्टशत मुनिभ्यः अर्घ्यं....।

रहे अठासी सौ अविकारी, नमि जिन मुनिवर के अनगारी।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी॥21॥
ॐ ह्रीं नमिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तअष्टसहस्रअष्टशत मुनिभ्य: अर्घ्यं....।

नेमिनाथ के साधू सोहें, श्रेष्ठ अठासी सौ मन मोहें।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी॥22॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तअष्टसहस्रमुनिभ्य: अर्घ्यं....।

कहे अठासी सौ मुनि ज्ञानी, पार्श्वनाथ के ज्ञानी ध्यानी।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी॥23॥
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथस्य अनुत्तरप्राप्तअष्टसहस्रअष्टशत मुनिभ्य: अर्घ्यं....।

शिष्य अठासी सौ अनगारी, वीर प्रभु के मंगलकारी।
हुए अनुत्तर के मुनिवासी, बने श्रेष्ठ गुण की जो राशी॥24॥
ॐ ह्री महावीरस्वामिन: अनुत्तरप्राप्तअष्टसहस्रअष्टशत मुनिभ्य: अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पञ्च अनुत्तर जिनवर गाए, विजयादिक शुभनाम बताए।
दो लख सहस सतत्तर जानो, आठ सौ मुनिवर ज्ञानी मानो॥
चौबीसों जिनवर के गाए, रत्नत्रय पा ध्यान लगाये।
हुए अनुत्तर के जो वासी, होंगे केवलज्ञान प्रकाशी॥25॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां अनुत्तरप्राप्तद्विलक्षसप्तसप्ततिसहस्राष्टशतमुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं....।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं

"मुक्ति प्राप्त मुनियों के अर्घ"

(पद्धडि छन्द)

थे साठ सहस नौ सौ महान, श्री आदिनाथ के शिष्य जान।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥1॥
ॐ ह्रीं ऋषभदेव सिद्धपदप्राप्तषष्टिसहस्रनवशतयतिभ्य: अर्घ्यं......।

मुनि सहस सतत्तर सहस एक, श्री अजितनाथ के रहे नेक।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥2॥
ॐ ह्रीं अजितनाथस्य सिद्धपदप्राप्तसप्तसप्ततिसहस्रएकशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

इक लाख सहस सत्तर सौ एक, सम्भव जिनके गाए सु नेक।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥3॥
ॐ ह्रीं संभवनाथस्य सिद्धपदप्राप्तएकलक्षसप्ततिसहस्रएकशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

दो लाख सहस अस्सी, सौ एक, अभिनन्दन पद धारे विवेक।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥4॥
ॐ ह्रीं अभिनंदननाथस्य सिद्धपदप्राप्तद्विलक्षअशीतिसहस्रएकशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

त्रय लाख शतक सोलह मुनीश, जिन सुमतिनाथ के धरे शीश।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥5॥
ॐ ह्रीं सुमतिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तत्रिलक्षषोडशशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

मुनि तीन लाख चौदह हजार, श्री पद्म प्रभु के निर्विकार॥
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥6॥
ॐ ह्रीं पद्मप्रभनाथस्य सिद्धपदप्राप्तत्रिलक्षचतुर्दशसहस्रयतिभ्य: अर्घ्यं....।

दो लाख पचासी सहस जान, छह सौ मुनि पाए विशद ज्ञान।
जिनवर सुपार्श्व के हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥7॥
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथस्य द्विलक्षपंचाशीतिसहस्रषट्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

दो लाख और चौंतिस हजार, श्री चंद्रप्रभू के निर्विकार।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥8॥
ॐ ह्रीं चंद्रप्रभनाथस्य सिद्धपदप्राप्तद्विलक्षचतुर्स्त्रिंशत्सहस्रयतिभ्य: अर्घ्यं....।

मुनि एक लाख उन्यासी हजार, छह सौ पाए हैं मोक्ष द्वार।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥9॥
ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथस्य सिद्धपदप्राप्तएकलक्षएकोनाशीतिसहस्रषट्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

श्री शीतल जिनवर के महान, अस्सी हजार छह सतक जान।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥10॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथस्य सिद्धपदप्राप्तअशीतिसहस्रषट्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

पैंसठ हजार छह सौ महान, जिनवर श्रेयांस से पाए ज्ञान।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥11॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथस्य सिद्धपदप्राप्तपंचषष्टिसहस्रषट्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

चौवन हजार छह सौ ऋशीष, जिन वासुपूज्य पद झुकें ईश।
प्रभु कर्मनाश कर हुए सिद्ध, जो सुखानन्त पाए प्रसिद्ध॥12॥
ॐ ह्रीं वासुपूज्यनाथस्य सिद्धपदप्राप्तचतु: पंचाशत्सहसषट्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

(मोतियादाम छन्द)

सहस इक्यावन अरु सौ तीन, हुए जिन केवल ज्ञान प्रवीण।
विमल जिनवर के चरणों आन, प्राप्त जो किए सुपद निर्वाण॥13॥
ॐ ह्रीं विमलनाथस्य सिद्धपदप्राप्तएकपंचाशत्सहस्रत्रयशत् यतिभ्य: अर्घ्यं....।

अनन्त जिन के इक्यावन हजार, मोक्ष पद पाए हो अनगार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बने जो मुक्ति वधू के ईश॥14॥
ॐ ह्रीं अनंतनाथस्य सिद्धपदप्राप्तएकपंचाशत्सहस्रयतिभ्य: अर्घ्यं....।

मुनी उनंचास सहस्र और सात, रहे श्री धर्म नाथ के भ्रात।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बने जो मुक्ति वधू के ईश॥15॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथस्य सिद्धपदप्राप्तएकोनपंचाशत्सहस्रसप्तशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

सहस अड़तालिस अरु सौ चार, शांति जिनके थे मुनि अनगार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बनें जो मुक्ति वधू के ईश॥16॥
ॐ ह्रीं शांतिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तअष्टचत्वारिंशत्सहस्रचतु:शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

कुन्थु जिनके छियालीस हजार, आठ सौ मुनि थे मंगलकार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बने जो मुक्ति वधू के ईश॥17॥
ॐ ह्रीं कुंथुनाथस्य सिद्धपदप्राप्तषट्चत्वारिंशत्सहस्रअष्टशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

अरह जिनके सैंतीस हजार, दोय सौ मुनि गाये अनगार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बने जो मुक्ति वधू के ईश॥18॥
ॐ ह्रीं अरहनाथस्य सिद्धपदप्राप्तसप्तत्रिंशत्सहस्रद्विशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

मल्लि जिनवर के शिष्य महान, सहस अट्ठाइस आठ सौ जान।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बने जो मुक्ति वधू के ईश॥19॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तअष्टाविंशतिसहस्रअष्टशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

सहस उन्नीस दोय सौ मान, श्री मुनिसुव्रत के शिष्य महान।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बने जो मुक्ति वधू के ईश॥20॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथस्य सिद्धपदप्राप्तएकोनविंशतिसहस्रद्विशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

सहस नौ छह सौ मुनि अनगार, श्री नमि जिनके मंगलकार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बनें जो मुक्ति वधू के ईश॥21॥
ॐ ह्रीं नमिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तनवसहस्रषट्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

नेमि जिनके मुनि आठ हजार, मोक्ष के राही थे अनगार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बनें जो मुक्ति वधू के ईश॥22॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तअष्टसहस्रयतिभ्य: अर्घ्यं....।

मुनी थे बासठ सौ अनगार, पार्श्व जिनवर के मंगलकार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बनें जो मुक्ति वधू के ईश॥23॥
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथस्य सिद्धपदप्राप्तषष्टिसहस्रद्विशतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

सहस थे चार और सौ चार, वीर जिनवर के मुनि अनगार।
झुकाते जिनके चरणों शीश, बनें जो मुक्ति वधू के ईश॥24॥
ॐ ह्रीं महावीरस्वामिन: सिद्धपदप्राप्तचतुश्चत्वारिंशत्शतयतिभ्य: अर्घ्यं....।

पूर्णार्घ्य

चौबिस लाख चौंसठ हजार अरु, शतक चार सौ मुनि अनगार।
तीर्थंकर चौबीसों के सब, कर्मनाश पाए भव पार॥
जिनकी पूजा करने लाए, अष्ट द्रव्य का पावन अर्घ्य।
कर्मनाश कर मुक्ती पाएँ, सुपद प्राप्त हो हमें अनर्घ्य॥25॥
ॐ ह्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां सिद्धपदप्राप्तचतुर्विंशतिलक्षचतु: षष्टिसहस्रचतु: शतकतिभ्य: पूर्णार्घ्यं...।

शांतये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलि

सौधर्मादिक से ग्रैवेयक तक प्राप्त हुये मुनियों के अर्घ
(चंपकमाला छन्द)

ऋषभ देव के शिष्य कहाए, तीन हजार सु-इक सौ गाए।
सौधर्मादिक स्वर्ग सिधाए, जिन मुनि पद हम शीश झुकाए॥
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं ऋषभदेवस्य स्वर्गादिग्रैवेयकप्राप्तत्रयसहस्रएकशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

अजितनाथ के शिष्य बखाने, उन्तिस सौ गुण धारी माने।
सौधर्मादिक स्वर्ग जो पाए, निज में सम्यक् ज्ञान जगाए।
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2।

ॐ ह्रीं अजितनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकप्राप्तद्वयसहस्रनवशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सम्भवजिन के मुनि अनगारी, निन्यानवे सौ मंगलकारी।
स्वर्गादिक के सौख्य उपाए, सम्यक् गुण के कोष कहाए॥
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं संभवनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकप्राप्तनवसहस्रनवशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

अभिनन्दन के शिष्य उन्यासी, सौ माने हैं सुख की राशी।
गुण मणियों से भूषित गाये, मोक्ष मार्ग जो मुनि अपनाए॥
कहे मुनि वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं अभिनंदनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तसप्तसहस्रनवशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सुमतिनाथ के शिष्य बताए, चौंसठ सौ तप धारी गाए।
ध्यानाध्यन में प्रीति के धारी, हुए जहाँ में मंगलकारी॥
कहे मुनि वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतु: षष्टिशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

पद्म प्रभु के शिष्य थे भाई, चार हजार संत सुखदायी॥
सौधर्मादिक स्वर्ग सिधाए, उत्तम संयम जो अपनाए॥
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुसहस्रसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

श्री सुपार्श्व के शिष्य निराले, चौबिस सौ मन हरने वाले।
जातरूपधर दिव्य कहाए, जग में सुख का स्रोत बहाए।
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुर्विंशतिशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

चन्द्र प्रभु के शिष्य कहाए, चार हजार ज्ञान सद् पाए।
नग्न दिगम्बर थे अनगारी, पावन रत्नत्रय के धारी॥
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतु:सहस्रसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

शिष्य चौरानवे सौ शुभकारी, पुष्पदन्त के मंगलकारी।
स्वर्ग सुखों को पाने वाले, इस जगती पर हुए निराले।
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तनवसहस्रचतु:शतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

चौरासी सौ शिष्य जानिए, शीतल जिनके श्रेष्ठ मानिए।
सौधर्मादिक स्वर्ग सिधाए, तत्व ज्ञान की प्रभुता पाए॥
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥10।

ॐ ह्रीं शीतलनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुरशीतिशतसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

शिष्य चौहत्तर सौ बतलाए, जिन श्रेयांस के पावन गाए।
श्रेष्ठ स्वर्ग के सुख जो पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए॥

कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥11॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तसप्तसहस्रचतुःशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

चौंसठ सौ मुनि गुण के धारी, वासुपूज्य के हैं अनगारी।
उनके पद जो पूज रचाते, वे भी स्वर्ग सम्पदा पाते॥
कहे मुनी वह मंगलकारी, बनने वाले जो अनगारी।
जिन मुनि पद हम अर्घ्य चढ़ाते, पद में सादर शीश झुकाते॥12॥
ॐ ह्रीं वासुपूज्यनाथ स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुःषष्टिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

(सुखमा छन्द)

विमलनाथ के शिष्य कहे है, सत्तानवे सौ श्रेष्ठ रहे हैं।
सौधर्मादिक स्वर्ग बताए, वहाँ पे जाके वैभव पाए॥13॥
ॐ ह्रीं विमलनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तनवसहस्रसप्तशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

जिनानन्त के शिष्य कहाए, पाँच हजार श्रेष्ठ कहलाए।
सौधर्मादिक स्वर्ग सिधाए, जिनपद पूजा हर्ष दिलाए॥14॥
ॐ ह्रीं अनंतनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तपंचसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

तैंतालिस सौ शिष्य गिनाए, धर्म नाथ के मंगल गाए।
जिनकी पूजा हर्ष दिलाए, स्वर्गादिक में जो पहुचाए॥15॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तत्रिचत्वारिंशत्शतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

छत्तिस सौ मुनिवर अनगारी, शांतिनाथ के मंगलकारी,
जिनकी महिमा है शुभकारी, सौख्य दिलाए मंगलकारी॥16॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तषट्त्रिंशत्साधुभ्यः अर्घ्यं....।

कुन्थुनाथ के शिष्य बताए, बत्तिस सौ सत् संयम पाए।
जिनकी महिमा है शुभकारी, सौख्य दिलाए मंगलकारी॥17॥
ॐ ह्रीं कुंथुनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तद्वात्रिंशत्शतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

अट्ठाइस सौ मुनि अनगारी, अरहनाथ के हैं अविकारी।
जिनकी पूजा सौख्य प्रदायी, स्वर्गादिक के सुख दे भाई॥18॥
ॐ ह्रीं अरहनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तअष्टाविंशतिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

चौबिस सौ संयम के धारी, मल्लिनाथ के मुनि अनगारी।
जिन पद को जो पूज रचाते, स्वर्गादिक के सुख वे पाते॥19॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुर्विंशतिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

मुनिसुव्रत के मुनिवर जानो, दो हजार बतलाए मानो।
जिनकी पूजा है सुखदायी, सौधर्मादिक सौख्य प्रदायी॥20॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तद्विसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

नमीनाथ तीर्थंकर गाए, सौलह सौ मुनिवर जो पाए।
सौधर्मादिक सौख्य उपाए, जिनकी महिमा ये जग गाए॥21॥
ॐ ह्रीं नमीनाथ स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तषोडशशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

नेमिनाथ इस जग के त्राता, बारह सौ मुनि जिनके भ्राता।
मुक्ती पथ के राही गाए, सौधर्मादिक सौख्य उपाए॥22॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तद्वादशशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

पार्श्वनाथ के मुनि अनगारी, एक हजार थे मंगलकारी।
स्वर्ग सुखों को जिनने पाया, शिव पथ को जिनने अपनाया॥23॥
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तएकसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

शिष्य आठ सौ सम्यक् ज्ञानी, वीर प्रभु के ज्ञानी ध्यानी।
इनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी शिव पदवी पावें॥24॥
ॐ ह्रीं महावीरस्वामिनः स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तअष्टशतसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

मूलोत्तर गुण के धारी मुनि, संयम शील विनय यमधार।
परिषह जय सम्यक् तपधारी, मुनिवर गाए मंगलकार॥
इक लख पाँच हजार आठ सौ, मुनिवर भाव समाधी वान।
सौधर्मादिक से ग्रैवेयक, स्वर्गों के सुख पाएँ महान॥
दोहा– इनकी पूजा जो करें, विशदभाव के साथ।
स्वर्गों के सुख भोगकर, बनें श्री के नाथ॥1॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तएकलक्षपंचसहस्र अष्टाशतसाधुभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रत्येक तीर्थ में दशदश मुनिवर, दारुण सहं उपसर्ग अनेक।
पञ्च अनुत्तर में जो जन्में, पाएँगे द्वय भव या एक।
वर्तमान चौबीसी के मुनि, पूज रहे दो सौ चालीस।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, झुका रहे जिन पद में शीश॥2॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकराणां स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतउपसर्गप्राप्त द्वयशत चत्त्वारिंशत साधूभ्यः पूर्णार्घ्यं....।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य–ॐ ह्रीं समवसरणपद्मसूर्यवृषभादिवर्द्धमानान्तेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर के शिष्य बन, सुतप किए मुनि घोर।
नमूँ नमूँ जिनके चरण, होके भाव विभोर॥

(पद्धडि छन्द)

जिन तीर्थंकर हैं जग प्रधान, जो प्राप्त करें केवल्य ज्ञान।
जिन दिव्य देशना दे महान, जग जीव सुने जो शरण आन।
दीक्षादिक पावें कई जीव, जो पुण्य प्राप्त करते अतीव।
हों शील सम्पदा सुगुणवान, समता धर निज का करें ध्यान॥1॥
हैं आत्मज्ञान दर्शन प्रवीण, किन्तू मिथ्या में रहें लीन।
कर्मों का आस्रव बार-बार, करके भटके यह जग अपार॥
जब पायें सम्यक् दर्श ज्ञान, होवें सम्यक् चारित्रवान।
शुभ पंच महाव्रत समितिधार, पञ्चेन्द्रिय जय करके अपार॥2॥
षट् आवश्यक जो रहे पाल, हैं शेष सप्त गुण भी त्रिकाल।
अट्ठाइस मूल गुण मुनी धार, हो जाते हैं जो अनागार॥
जो तप द्वादश में रहें लीन, निज कर्मों को वह करें क्षीण।
जो बाइस परीषह सहें आप, स्वाध्याय ध्यान अरु करें जाप॥3॥
भू भृत पर आतप योग वान, गिरि की चोटी पर करें ध्यान।
जो शीत योग धारें महान, सरिता के तट पर करें ध्यान॥
मुनि वृक्ष मूल में बैठ आप, वर्षा में करते ध्यान जाप।
होते मुनिवर त्रय योगवान, जो समता रस का करें पान॥4॥
उपसर्ग सहें जो धार धीर, श्रेणी आरोहण करें वीर।
फिर आप घातिया कर्म घात, शुभ अनन्त चतुष्टय करें प्राप्त॥
कई जीव आपके करें दर्श, जीवन में पावें परम हर्ष।
फिर कर्म अघाती कर विनाश, वे सिद्ध शिला पर करें वास॥5॥
जो मुनिवर करते धर्म ध्यान, जो कहे सुगुण की श्रेष्ठ खान।
वे बनें अनुत्तर में सुदेव, इक दो भव में जिन बनें एव॥
कई बनें स्वर्ग के श्रेष्ठ देव, जो सौख्य प्राप्त करके सदैव।
फिर अल्प भवों में बनें सिद्ध, यह आगम वर्णित है प्रसिद्ध॥6॥
साधू जहँ करते हैं विहार, हो वहाँ धर्म का ही प्रचार।
दुर्भिक्षादिक का हो विनाश, सद्धर्म का होता है प्रकाश॥

शुभ धर्म की गाई यही रीत, पशु भी आपस में करें प्रीति।
हम लेकर आए चरण आश, हो सिद्ध शिला पर मेरा वास॥7॥
दोहा– तीर्थंकर जिनवर तथा, संयम धार ऋशीष।
जिनके चरणों भाव से, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

कवित्त छन्द

तीर्थंकर चौबीस लोक में, करते हैं जग सौख्य प्रदान।
जिनके समवशरण की पूजा, सारे जग में रही महान॥
अष्ट द्रव्य से जिन की पूजा, करते हैं जो मंगल कार।
विशद ज्ञान के धारी हों वे, हो जाते इस भव से पार॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तीर्थ प्रवर्तन काल पूजा–22

स्थापना

तीर्थंकर के तीर्थ प्रवर्तन, काल में बहा धर्म का स्त्रोत।
केवल ज्ञानी मुनी आर्यिका, द्वारा हुआ धर्म उद्योत॥
तीर्थ प्रवर्तन काल में ऋषि मुनि, किए विशद आतम का ध्यान।
राह प्राप्त करने शिव पद की, करते हम उर में आह्वान॥
दोहा–तीर्थंकर जिन पूज्य हैं, पूज्य प्रवर्तन काल।
धर्म जीव धारें विशद, निज में सभी त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तन–कालकेवलिसाधुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(सुखमा छन्द)

पयोराशि का नीर भराए, त्रय धारा देने को लाए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: जलं....।

मलयागिर चन्दन घिस लाए, भवाताप के नाश को आए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।2।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: चंदनं....।

धवल शालि के तन्दुल लाए, अक्षय पद पाने हम आए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।3।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: अक्षतं....।

सुरभित पुष्प सुगन्धित लाए, कामरोग विनसाने आए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।4।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: पुष्पं....।

सरस-सद्य नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।5।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: नैवेद्यं....।

मोह महातम दूर भगाएँ, नाथ चरण में दीप जलाएँ।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।6।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: दीपं....।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश मेरे हो जाएँ।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।7।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: धूपं....।

ताजे फल से थाल भराए, मोक्ष महाफल पाने आए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।8।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: फलं....।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाए, अर्घ्य बना पूजा को आए।
तीर्थ प्रवर्तन है सुखदायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।।9।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

दोह– शांती धारा दे रहे, शांती पाने आज।
अर्ज सुनो सद्भक्त की, तारण तरण जहाज।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– पुष्प समर्पित कर रहे, पुष्पित हे भगवान!
यही भावना है विशद, शीघ्र होय कल्याण।।

(इत्याशीर्वाद)

अर्घ्यावली

दोहा– तीथ प्रवर्तन काल में, पावन हुए मुनीश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, झुका चरण में शीश।।

।।मण्डलस्योपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्।।

(अवतार छन्द)

पञ्चाशत लक्ष करोड़, सागर शुभ जानो।
पूर्वांग प्रवर्तन काल, आदि जिन का मानो।।
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी।।1।।
ॐ ह्रीं ऋषभदेवस्य पंचाशल्लक्षकोटिसागरएकपूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

शुभ त्रिंशत लाख करोड़, त्रय पूर्वांग रहा।
श्री अजितनाथ का तीर्थ, प्रवर्तन काल कहा।।
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी।।2।।
ॐ ह्रीं अजितनाथस्य त्रिंशल्लक्षकोटिसागरत्रयपूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सागर दश लाख करोड़, पूर्वांग चउ गाया।
शुभ तीर्थ प्रवर्तन काल, संभव जिन पाया।।
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी।।3।।
ॐ ह्रीं संभवनाथस्य दशलक्षकोटिसागरचतु:पूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सागर नव लाख करोड़, पूर्वांग चार रहा।
अभिनन्दन जिन का तीर्थ, प्रवर्तन काल कहा।
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी॥4॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दनतीर्थंकरस्य नवलक्षकोटिसागरचतु:पूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकाल-केवलिश्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

शुभ नब्बे सहस करोड़, सागर चार कहे।
पूर्वांग सुमति जिन राज, प्रवर्तन काल रहे॥
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी॥5॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथस्य नवतिसहस्रकोटिसागरचतु:पूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सागर नव सहस करोड़, पूर्वांग चार मिला।
है तीर्थ प्रवर्तन काल, पद्म पद पद्म खिला॥
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी॥6॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभनाथस्य नवतिसहस्रकोटिसागरचतु:पूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सागर है नौ सौ कोटि, पूर्वांग चार कहा।
जिनवर सुपार्श्व का तीर्थ, प्रवर्तन काल रहा॥
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी॥7॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथस्य नवशतकोटिसागरचतु:पूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

सागरोपम नब्बे कोटि, चऊ पूर्वांग अहा।
श्री चन्द्र प्रभू का तीर्थ, प्रवर्तन काल कहा॥
हुए कई केवली और, श्रुत केवल ज्ञानी।
मुनियों की पूजा श्रेष्ठ, गाई कल्याणी॥8॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभनाथस्य नवतिकोटिसागरचतु:पूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं....।

(शम्भू छन्द)

नौ करोड़ सागर में पूर्वांग, अट्ठाइस पल्य का चतुर्थांस।
से हीन अधिक इक लाख पूर्व, है धर्म प्रवर्तन काल अंश॥
श्री पुष्पदन्त के तीर्थ प्रवर्तन, में विच्छेद बताया है।
वह पाव पल्य तक धर्म हीन, नहिं साधु संघ को पाया है॥9॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथस्य पल्यचतुर्थांश अष्टाविंशतिपूर्वांगहीनएकलक्षवर्षाधिकनव-कोटिसागरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं...।

इक कोटी सागर में सौ सागर, आधा पल्य हीन जानो।
छ्यासठ लख छब्बिस सहसवर्ष, पच्चीस सहस्त्र पूरब मानो॥
यह तीर्थ प्रवर्तन काल रहा, श्री शीतल जिनवर का जानो।
विच्छेद धर्म का आद्य पल्य, जिन शास्त्रों में गाया मानो॥10॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथस्य अर्धपल्यशतसागरन्यूनएककोटिसागरषट्षष्टिलक्षषट्विंशति सहस्रवर्षन्यूनपंचविंशतिसहस्रवर्षपूर्वतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं...।

चौवन सागर इक्तीस लाख, वर्षों में पौन पल्य कम है।
श्रेयांस नाथ का तीर्थ प्रवर्तन, काल रहा यह उत्तम है॥
जिन धर्म विच्छुत्ती पौन पल्य, जैनागम में बतलाई है।
धर्मामृत पाने की इच्छा, हे नाथ! मेरे मन आई है॥11॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथस्य पादोनपल्यहीनएकविंशतिलक्षवर्षअधिकचतु: पंचाशत् सागरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं...।

शुभ तीस सागरोपम में चौवन, लख वर्ष में एक पल्य कम है।
श्री वासुपूज्य का तीर्थ प्रवर्तन, काल रहा अति उत्तम है॥
इस एक पल्य कम में भाई, विच्छेद धर्म का गाया है।
अब धर्म प्राप्त करके जीवन, मेरा यह अति हर्षाया है॥12॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यनाथस्य एकपल्यहीनत्रिंशत्सागरचतु: पंचाशल्लक्षवर्षतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं...।

नव सागर पन्द्रह लाख बरस में, पौन पल्य कम यह जानो।
श्री विमल नाथ का तीर्थ प्रवर्तन, काल रहा भाई मानो॥

इस पौन पल्य में धर्म तीर्थ, विच्छेद रहा जिनवर गाए।
हो धर्म तीर्थ में अवगाहन, हे नाथ! शरण में हम आए॥13॥

ॐ ह्रीं विमलनाथस्य पादोनपल्यहीननवसागरपंचदशलक्षवर्षातीर्थ प्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

जिन सप्त लाख पच्चास सहस, शुभ वर्ष चार सागर गाया।
बस आधा पल्य घटाते हैं, जो धर्म विच्छेद का बतलाया॥
जिनवर अनन्त के शासन में, जीवों ने संयम को धारा।
है काल अनादी कर्म शत्रु, उसको नित शक्ती से मारा॥14॥

ॐ ह्रीं अनंतनाथस्य अर्धपल्योनचतुः सागरसप्तलक्षपंचाशत्सहस्रवर्षतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

दो लाख पचास हजार वर्ष, त्रय सागर में इक पल्य हीन।
यह धर्मनाथ का तीर्थ काल, जिन संत किए हैं कर्म क्षीण॥
विच्छेद धर्म का बतलाया, जिन पाव पल्य का गाए हैं।
हम पूज रहे जिनराज चरण, जो मुक्ति रमा को पाए हैं॥15॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथस्य एकपल्यहीनत्रयसागरद्विलक्षपंचाशत्सहस्रवर्षतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

साढ़े बारह सौ वर्ष अधिक, शुभ अर्ध पल्य का गाया है।
श्री शांतिनाथ का तीर्थ काल, जैनागम में बतलाया है॥
हम विशद शांति का भाव लिए, जिन चरण शरण में आए हैं।
जिन देव केवली संतों के, पद में यह अर्घ्य चढ़ाए हैं॥16॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथस्य अर्धपल्यद्वादशशतपंचाशत्वर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुत-केवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं....।

नौ सौ निन्यानवे कोटि निन्यानवे, लक्ष सतानवे सहस रहा।
द्वि शत पञ्चाशत वर्ष हीन, चतुर्थान्स पल्य का काल कहा॥
यह तीर्थ प्रवर्तन कालश्री, कुन्थू जिनवर का गाया है।
जिन राज केवली संतो की, पूजा का भाव जगाया है॥17॥

ॐ ह्री कुंथुनाथस्य नवार्बुदनववतिकोटिनवनवतिलक्षसप्तनवतिसहस्र द्विशत-पंचाशत्वर्षहीनपल्यचतुर्थभागतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

नौ अरब निन्यानवे कोटि निन्यानवे, लाख निन्यानवे का जानो।
छियासठ हजार सौ वर्ष तथा, अर जिन का तीर्थकाल मानो॥
कई ऋषी मुनी अनगार यती, निज आतम ध्यान लगाए हैं।
जिनकी पूजा हम करें आज, यह भाव हृदय में आए हैं॥18॥

ॐ ह्रीं अरहनाथस्य नवार्बुदनवनवतिकोटिनवनवतिलक्षषट्षटिसहस्रशतवर्ष-तीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

शुभ चौवन लाख सैंतालिस सहस, अरु चार वर्ष का कहलाए।
श्री मल्लिनाथ का तीर्थ काल, तीर्थेश देशना में गाए॥
कई ऋषी मुनी अनगार यती, निज आतम ध्यान लगाए हैं।
जिनकी पूजा हम करें आज, यह भाव हृदय में आए हैं॥19॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथस्य चतुःपंचाशल्लक्षसप्तचत्वारिंशत्सहस्रचतुः शतवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

छह लाख पञ्च हज्जार वर्ष, श्री मुनिसुव्रत का जिन गाए।
यह तीर्थ प्रवर्तन काल रहा, जिन धर्म मार्ग प्राणी पाए॥
कई ऋषी मुनी अनगार यती, निज आतम ध्यान लगाए है।
जिनकी पूजा हम करें आज, यह भाव हृदय में आए हैं॥20॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथस्य षट्लक्षपंचसहस्रवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

जिन पाँच लाख अट्ठाइस सौ, वर्षों का काल बताए हैं।
शुभ धर्म प्रवर्तन काल श्रेष्ठ, श्री नमि जिनवर का गाए हैं॥
कई ऋषी मुनी अनगार यती, निज आतम ध्यान लगाए है।
जिनकी पूजा हम करें आज, यह भाव हृदय में आए हैं॥21॥

ॐ ह्रीं नमिनाथस्य पंचलक्षअष्टादशशतवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

शुभ काल चुरासी सहस तीन, सौ अस्सी वर्ष बताए हैं।
श्री नेमिनाथ का तीर्थ काल, जिनवाणी में यह गाए हैं॥
कई ऋषी मुनी अनगार यती, निज आतम ध्यान लगाए है।
जिनकी पूजा हम करें आज, यह भाव हृदय में आए हैं॥22॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथस्य चतुरशीतिसहस्रत्रयशतअशीतिवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुत-केवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं...।

दौ सौ अठहत्तर वर्षकाल, श्री पार्श्व नाथ का गाया है।
शुभ धर्म प्रवर्तन किए प्रभु, फिर शिव पदवी को पाया है॥
कई ऋषी मुनी अनगार यती, निज आतम ध्यान लगाए हैं।
जिनकी पूजा हम करें आज, यह भाव हृदय में आए हैं॥23॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथस्य द्विशतअष्टसप्ततिवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं...।

इक्कीस सहस ब्यालीस वर्ष, तक वीर का शासन जिन गाए।
शुभ धर्म प्रवर्तन काल कहा, यह फिर वह मुक्ती पद पाए॥
हो तीस वर्ष अठमाह सुपन्द्रह, दिनों बाद फिर पञ्चम काल।
केवल ज्ञानी मुनियों के पद, करते हैं हम भी नत भाल॥24॥

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिन: एक विंशतिसहस्रद्विचत्वारिंशद्वर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि श्रुतकेवलि आचार्योपाध्यायसाधुभ्य: अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

ऋषभ देव जिन हुए आदि में, वीरांगज होंगे जिन संत।
वीतराग जिन मुद्रा धारी, होते रहेंगे काल के अन्त॥
भेद ज्ञान के द्वारा मुनिवर, करते हैं निज आतम ध्यान।
भाव सहित हम अर्चा करके, करते हैं नत हो गुणगान॥25॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तन कालवर्ति सर्वकेवलि जिनेन्द्रेभ्यो: पूर्णार्घ्यं...।

।।शांतये शांतिधारा/पुष्पांजलिं।।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवसरणपद्मसूर्यवृषभादिवर्द्धमानान्तेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– तीर्थ प्रवर्तन काल में, हुए अनेकों सन्त।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का अन्त॥

तर्ज–हे दीन बन्धु....

तीर्थेश आदिनाथ प्रभु आदि में गाए,
अन्तिम जिनेन्द्र वीर प्रभु पूज्यता पाए।

जिनदेव के सु साथ में मुनिराज कहे हैं,
जो वीतराग संयम को धार रहे हैं॥
जम्बू सुदीप भरत क्षेत्र श्रेष्ठ बताया,
शुभ आर्य खण्ड भेद छह रूप में गाया।
अठारह सुकोड़ा कोड़ी सागर में जानिए,
कुछ कम के बाद आदि जिन हुए मानिए॥1॥
जिनने चलाया तीर्थ प्रथम मोक्ष को गये,
श्री अनन्तवीर अपने सब कर्म जो क्षये।
तव से सुविधि नाथ का शुभ काल जो कहा,
जिन धर्म मोक्ष मार्ग शुभ अवछिन्न ही रहा॥
फिर धर्म नाथ काल तक जिन सात गाए हैं,
इन सबके बीच धर्म का विच्छेद पाए हैं।
श्री शांतिनाथ काल से महावीर तक अहा,
जिन धर्म तीर्थ का फिर विच्छेद ना रहा॥2॥
श्री वीर जिन जिस तिथि को निर्वाण सिधाए,
उस दिन ही गौतम गणधर कैवल्य जगाए।
गौतम ने जिस तिथि को निर्वाण शुभ किया।
उस तिथि को सुधर्म जी ने ज्ञान पद लिया।
जिस दिन सुधर्म स्वामी जी मोक्ष को गये,
जम्बू मुनीश ज्ञानी उस रोज ही भये।
अनुबद्ध केवली ये बासठ बरस तक रहे,
कुण्डल गिरी से श्रीधर अन्तिम सु शिव लहे॥3॥
श्री सुपार्श्व अन्तिम चारण ऋषी कहे,
प्रज्ञा श्रमण भी अंतिम श्री वज्र यश रहे।
अवधि ज्ञान धारी श्री नाम को पाए,
मुकुट बद्ध चन्द्रगुप्त मुनी कहाए।
नन्दी नन्दीमित्र अपराजित गाए।
मुनि विशाख प्रोष्ठिल अरु क्षत्रिय जानो,
जय नाग सिद्धारथ सब मुनि ये मानो॥4॥
धृतिषेण सुविजय बुद्धिल ये बताए,
गंग देव अरु सब सुधर्म ग्यारह ये गाए।
मुनि एक सौ तिरासी वर्ष तक ये रहे।

दशम पूर्व धारी मुनिराज ये कहे।।
दो सौ बीस वर्ष ग्यारह अंग के धारी,
नक्षत्र जयपाल पाण्डु हुए अनगारी।
ध्रुव सेन कंस मुनिवर के बाद बताए,
शुभद्र यशभद्र यशोबाहु जी गाए।।5।।
लोहाचार्य आचारांग धर मुनि ये जानो,
जो एक सौ अठारह बरस में मानो।
गौतम से लोहाचार्य तक छह सौ तिरासी,
वर्ष बाद काल की जो शेष है राशी।।
लोहार्य के कुछ काल बाद अर्हद् बली हुए,
फिर माघनन्दि धरसेन संत पद छुए।
धरसेन गुरु गाए अंगाश के धारी,
फिर पुष्पदंत भूतबलि हुए अनगारी।।16।।
षट् खण्डागम सूत्र जिनके कर से रचे गये,
श्रुत पञ्चमी शुभ पर्व को वह पूर्णतः भये।
रचना कषाय पाहुड़ की गुणधर यती किए,
पाहुड चौरासी कुन्दकुन्दाचार्य रच दिए।
इस शृंखला में यति वृषभ ज्ञान के धारी,
उमा स्वामी जी समंतभद्र हुए अनगारी।
अकलंक वीरसेन जिन सेन जानिए,
अमृतचंद सकल कीर्ति आदि मानिए।।7।।
श्री आदि सागर महावीर कीर्ति विमल सिन्धु जी,
श्री भरत विराग सागर संतो के इन्दु जी
परिपाटी श्रेष्ठ सन्तों की हमको भी मिली,
पाके जो 'विशद' ज्ञान की उर में कली खिली।
आगे भी मुनी शृंखला चलती ही जायेगी,
पञ्चम काल के यह अन्तिम को जाएगी।
होंगे मुनी वीरांगज अवधि ज्ञान के धारी,
देकर के ग्रास कर में होंगे निराहारी।।8।।
श्री अग्नि दत्त श्रावक आर्यिका भी सर्व श्री,
लेंगें समाधी चारों श्राविका पंगु श्री भी,
आके असुर कुमार देव कल्की को मारेगा,

अग्नि का लोप होगा नृप धर्म नशेगा।
फिर तीन वर्ष साढ़े आठ माह जानिए,
आयेगा काल छठवाँ यह सत्य मानिए।
त्रेसठ हजार वर्ष बाद उत्सर्पिणी आएगा,
जिन धर्म काल फिर से प्रवर्त जाएगा।।9।।

दोहा

तीर्थंकर जिन केवली, श्रुतधर जैन ऋशीष।
जिन शासन जयवन्त हो, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलिआचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

शान्तये शांतिधारा/पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

कवित्त छन्द

तीर्थंकर चौबीस लोक में, करते हैं जग सौख्य प्रदान।
जिनके समवशरण की पूजा, सारे जग में रही महान।।
अष्ट द्रव्य से जिन की पूजा, करते हैं जो मंगल कार।
विशद ज्ञान के धारी हों वे, हो जाते इस भव से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सहस्त्रनाम पूजन–23

स्थापना

सहस आठ गुण पाने वाले, होते हैं अर्हत् भगवान।
सहस नाम सार्थक पाते हैं, पावन गाए महति महान।।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, करते भाव सहित गुणगान।
विशद हृदय के आसन पर हम, करते हैं जिनका आह्वान।
दोहा– आप हमारे नाथ हो, आप हमारे देव।
चरण कमल में आपके, वन्दन विनत सदैव।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण।

(ज्ञानोदय छन्द)

संसार महावन में कब से, मोहित होके हम भटक रहे।
पञ्चेन्द्रिय की लम्पटता में, अज्ञानी होकर अटक रहे॥
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय जलं....।

क्रोधादि कषायों के कारण, निज गुण अपने हम बिसराए।
तुम नाम वाटिका से चन्दन, पावन ये घिसकर के लाए।
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय चंदनं....।

प्रभु ख्याती लाभ उपाधी में, जीवन ये व्यर्थ गँवाया है।
है स्वयं सिद्ध मेरा पावन, वह पद हमने ना पाया है॥
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय अक्षतं....।

जग विषयों का विष ग्रहण किया, लम्पटता अति मन में आई।
पावन निज अनुभूती की सुरभी, ना मेरे हृदय जाग पाई।
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय पुष्पं....।

निज उदर भरण करने हेतू, सब भक्ष्याभक्ष्य का ग्रहण किया।
शुभ ज्ञानामृत व्यञ्जन पाने, शुभ नहीं आपका शरण लिया॥
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय नैवेद्यं....।

मिथ्यातम में हम भ्रमित हुए, निज ज्ञानदीप ना प्रजलाया।
निज पर की शुभ पहिचान बिना, प्रभु ज्ञानानन्द नहीं पाया॥

अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय दीपं....।

कुत्सित कर्मों के फंदे में, हमको हे नाथ! फँसाया है।
निज शांति सुधा का शुभ अमृत, ना प्रभू आज तक पाया है॥
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय धूपं....।

हमने अनादि से हे स्वामी, पापानुबन्ध फल खाए हैं।
सम्यक्त्व स्वानुभव रत्नत्रय, ना जीवन में चख पाए हैं।
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों का, निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय फलं....।

पावन निज गुण की गंगा में, अवगाहन ना कर पाए हैं।
हम निज गुण का अनुभव पाने, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥
अब सहस नाम की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
हम नाश करेंगे कर्मों को निश्चय शिव पदवी पाएँगे॥9॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्त्रनामसमूहाय अर्घ्यं....।

दोहा–शांतिधारा से मिले, मन में शांति अपार।
अल्प समय में जीव वह, पावे भव से पार॥

॥शान्तये शांतिधारा॥

दोहा–पुष्पाञ्जलि करते चरण, नाथ करो कल्याण।
'विशद' भाव से आपका, करते हम गुणगान॥

॥पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा– सहस्रनाम के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सखी छन्द)

प्रभु जी 'श्री मान' कहाए, जो उभय लक्ष्मी पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥1॥
ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'स्वयंभू' गाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥2॥
ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वृषभ' धर्म के धारी, हैं जग जन के उपकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥3॥
ॐ ह्रीं वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सम्भव' समभाव जगाते, इस जग में पूजे जाते।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥4॥
ॐ ह्रीं शंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शम्भू' आनन्दकारी, हैं जग में मंगलकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥5॥
ॐ ह्रीं शंभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'आत्म भू' स्वामी, जिन तीर्थंकर जगनामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥6॥
ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'स्वयंप्रभ' जानो, हैं स्वयं बुद्ध यह मानो।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥7॥
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रभव' कहे जगनामी, जो हैं मुक्ती पथगामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'भोक्ता' कहलाए, जो अनन्त चतुष्टय पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥9॥
ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'विश्व भू' गाए, त्रैलोक्य दर्शि कहलाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥10॥
ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अपुनर्भव' कहलाए, भव भ्रमण पूर्ण विनशाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥11॥
ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वात्म' हैं प्रभू निराले, जो शुद्ध चेतना वाले।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥12॥
ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्व लोकेश' कहाए, जो विश्व पूज्यता पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥13॥
ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वतश्चक्षु' गाए, प्रभु सर्व दर्शि कहलाए।,
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥14॥
ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' प्रभु नाम के धारी, इस जग के करुणाकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥15॥
ॐ ह्रीं अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'विश्व विद' भाई, जिनकी फैली प्रभुताई।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥16॥
ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्व विद्येश' कहलाए, जिन विश्व विद्या शुभ पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥17॥
ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व योनि' कहाए स्वामी, प्रभु जी त्रिभुवन पतिनामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ॥18॥
ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नश्वर देह नशाए, फिर आप 'अनश्वर' गाए
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।19।।
ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व दृश्वा' हे शिवगामी, हम करते चरण नमामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।20।।
ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विभू' कहे मनहारी, जन-जन के करुणाकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।21।।
ॐ ह्रीं विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते है प्रभु 'धाता', इस जग के भाग्य विधाता।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।22।।
ॐ ह्रीं धात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' नाम प्रभु पाए, त्रिभुवन के ज्ञाता गाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।23।।
ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व लोचन' आप कहाए, त्रयलोक दर्शिता पाए।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।24।।
ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्व व्यापी' गुणधारी, इस जग के करुणाकारी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।25।।
ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विधु' कहे आप शिवगामी, ज्ञाता दृष्टा जगनामी।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।26।।
ॐ ह्रीं विधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेधा' जिनराज निराले, जग मंगल करने वाले।
हम सहस्र नाम गुण गाएँ, नत सादर शीश झुकाएँ।।27।।
ॐ ह्रीं वेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शास्वत' शुभ नाम बताया, शास्वत पद प्रभु ने पाया।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।28।।
ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्तोमुख' आप कहाए, प्रभु विशद ज्ञान प्रकटाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।29।।
ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वकर्मा' हे जिन स्वामी, तव करते चरण नमामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।30।।
ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जग ज्येष्ठ' आप कहलाए, इस जग का वैभव पाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।31।।
ॐ ह्रीं जगज्जेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्व मूर्ति' जगनामी, तुम बने मोक्ष पथ गामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।32।।
ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'जिनेश्वर' पाए, जित् इन्द्रिय आप कहाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।33।।
ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व दृग' दर्शन के धारी, जन-जन के करुणाकारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।34।।
ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्व भूतेश' निराले, तम जग का हरने वाले।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।35।।
ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्व ज्योति' शिवकारी, तुम हो महिमा के धारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।36।।
ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'अनीश्वर' पाए, शुभ केवल ज्ञान जगाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।37।।
ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन' नाम आपका गाया, तुमने शिव पद को पाया।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।38।।
ॐ ह्रीं जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिष्णू' कर्मारी जेता, तुम हो प्रभु कर्म विजेता।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।39।।
ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयात्म' आप कहलाए, हम अर्चा करने आए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।40।।
ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वरीश' नाम के धारी, तुम से जग माया हारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।41।।
ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगती पति' आप कहाए, प्रभु जगत पूज्यता पाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।42।।
ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अनन्त जित्' स्वामी, हम करते चरण नमामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।43।।
ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्तयात्म' कहे जगनामी, प्रभु बने मोक्ष के स्वामी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।44।।
ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भव्य बन्धु' शिवदायी, तुम पाए जग प्रभुताई।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।45।।
ॐ ह्रीं भव्यबंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अबन्धन' भाई, तुम कर्म की शक्ति नसाई।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।46।।
ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज हैं 'पुरुष युगादी', तुम नाशे मिथ्यावादी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।47।।
ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'आदिब्रह्म' कहलाए, निज ब्रह्म का ज्ञान कराए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।48।।
ॐ ह्रीं आदि ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पञ्च ब्रह्ममय' गाए, पञ्चम गति धाम बनाए।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।49।।
ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शिव' शिवपदवी धारी, प्रभु हुए आप अविकारी।
तुम नाम मंत्र को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।50।।
ॐ ह्रीं शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

नाम आपका 'पर' शुभकारी, आप रहे करुणा के धारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।51।।
ॐ ह्रीं पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' प्रभू आप कहलाते, जग जीवों से पूजे जाते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।52।।
ॐ ह्रीं परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूक्ष्म' आप कहलाए स्वामी, बने आप मुक्ती पथ गामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।53।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेष्ठी' शुभ आप कहाए, श्रेष्ठ परम पदवी को पाए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥54॥
ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'सनातन' हे शिवकारी, हे शाश्वत पदवी के धारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥55॥
ॐ ह्रीं सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयं ज्योति' कहलाने वाले, रहे लोक में आप निराले।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥56॥
ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका 'अज' भी आता, उत्पत्ती ना प्राणी पाता।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥57॥
ॐ ह्रीं अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'अजन्मा' आप कहाते, जन्म कभी ना फिर से पाते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥58॥
ॐ ह्रीं अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म योनि' कहलाए स्वामी, चरणों करते विशद नमामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥59॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अयोनिज' हे शिवकारी, तुम हो जग में शिव पद धारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥60॥
ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका है 'मोहारी', बने मोक्ष के तुम अधिकारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥61॥
ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह मल्ल 'जेता' कहलाए, शरणागत बन मोही आए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥62॥
ॐ ह्रीं जेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं 'धर्म चक्र' के धारी, महिमा जिनकी जग से न्यारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥63॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'दया ध्वज' थी जिन स्वामी, जिनकी महिमा जग से नामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥64॥
ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तारी' तुमको सब कहते, चरण शरण में प्राणी रहते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥65॥
ॐ ह्रीं प्रशांतारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनन्तात्मा' आतम ज्ञानी, तव वाणी जग की कल्याणी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥66॥
ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगी' आप योग के धारी, पाए जग में प्रभुता भारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥67॥
ॐ ह्रीं योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीस्वरार्चित' आप कहाए, तव महिमा योगीश्वर गाए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥68॥
ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'ब्रह्माविद' तुम कहलाए, ब्रह्म स्वरूपी आतम ध्याये।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥69॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म तत्त्वज्ञ' नाम के धारी, जगती पति हे करुणाकारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥70॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मोद्याविद' ब्रह्म जगाए, ब्रह्म लोक में धाम बनाए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥71॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'यतीश्वर' हो जगनामी, बने आप मुक्ती पथगामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥72॥
ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी आप 'शुद्ध' कहलाते, दोष आपको छू ना पाते।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥73॥
ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्ध' कहे बोधी के दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥74॥
ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रबुद्धात्मा' आप कहाए, तव पूजा करने हम आए।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥75॥
ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सिद्धार्थ' नाम के धारी, तव महिमा है विस्मकारी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥76॥
ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्ध शासन' हे नाथ निराले, निज पर शासन करने वाले
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥77॥
ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्ध' कहाते हो तुम स्वामी, चरणों करते सभी नमामी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥78॥
ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धान्त विद' हे शिवपुरवासी, तुम हो अष्ट कर्म के नाशी।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥79॥
ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्येय' आपने श्रेष्ठ बनाया, शीघ्र आपने उसको पाया।
महिमा गाई जग से न्यारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥80॥
ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'सिद्धसाध्य' कर लिए हैं सारे, कोई शेष न रहे तुम्हारे।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥81॥
ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'जगद्धित' तमु कहलाए, जग का हित करने को आए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥82॥
ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहिष्णु' आप कहाए, उत्तम क्षमा धर्म को पाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥83॥
ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' हो तुम च्युत न होते, निज स्वभाव को कभी न खोते।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥84॥
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अनन्त' कहलाए स्वामी, गुण अनन्त पाए प्रभु नामी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥85॥
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णू' की प्रभा निराली, तुम सम न कोइ शक्तीशाली।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥86॥
ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवोदभव' आप कहाए, अन्तिम भव प्रभु जी तुम पाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥87॥
ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'प्रभुष्णू' कहते भाई, तुमने सारी विद्या पाई।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥88॥
ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजर' तुम्हें न जरा सताए, कोई रोग पास न आए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥89॥
ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अजर्य' शुभ नाम को पाए, तुमरे गुण इस जगने गाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।1।।90
ॐ ह्रीं अजर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भ्राजिष्णू' सब तुमको कहते, तव भक्ति में हीरत रहते।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।91।।
ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश्वर' हो प्रभु केवल ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।92।।
ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अव्यय' व्यय न होंय तुम्हारे, गुण तुमने जो पाए सारे।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।93।।
ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभावसु' तुम हो तुम हारी, महिमा रही जगत् से न्यारी
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।94।।
ॐ ह्रीं विभावसवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'असंभूष्णू' प्रभु तुम कहलाए, जन्म-जरा से मुक्ती पाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।95।।
ॐ ह्रीं असम्भूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभूष्णू' नाम तुम्हारा, स्वयं सिद्ध हो जग को तारा।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।96।।
ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको नाथ 'पुरातन' कहते, तुम प्राचीन सदा ही रहते।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।97।।
ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मा' अतिशय के धारी, भक्त बनी यह दुनियाँ सारी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।98।।
ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम ज्योति' ज्योतिर्मय ज्ञानी, सर्व दृष्टि तुमने पहिचानी।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।99।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता पाए, 'त्रिजगत्परमेश्वर' गाए।
अतः आपके हम गुणगाते, चरणों में हम शीश झुकाते।।100।।
ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

श्रीमान् आदिक नाम के धारी, कहलाते हैं जिन तीर्थेश।
भव्य जीव पाते हैं जिनसे, मोक्ष प्रदायिक शुभ उपदेश।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।1।।
ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

है 'दिव्य भाषा पति' श्रेष्ठ नाम, तव चरणों करता जग प्रणाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश।।101।।
ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय 'दिव्य' नाम धारी जिनेश, तव पद झुकाते सुर नर विशेष।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश।।102।।
ॐ ह्रीं दिव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पूतवाक्' जग में महान, शिव पद के धारी हो प्रधान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश।।103।।
ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पूत शासन' तुम जगत वंद्य, ना रहा आपके कोई द्वन्द।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश।।104।।
ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूतात्म' आपका श्रेष्ठ नाम, तव चरणों करते हम प्रणाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥105॥
ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'परम ज्योति' जग में प्रधान, हम पूज रहे तव चरण आन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥106॥
ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नाथ आप 'धर्माध्यक्ष', शत् ज्ञान प्रदायी आप दक्ष।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥107॥
ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'दमीश्वर' कहे आप, ना रहे आपको कोई पाप।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥108॥
ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री पति' हो जग के आप ईश, तव चरण झुकाएँ जीव शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥109॥
ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भगवान' कहाते आप नाथ, हम विनती करते जोड़ हाथ।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥110॥
ॐ ह्रीं भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हत्' तुमको सब कहें संत, तव गुण का हे प्रभु नहीं अंत।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥111॥
ॐ ह्रीं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मम् अर्ज सुनों हे 'अरज' आप, मम कर जाएँ सब लगे पाप।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥112॥
ॐ ह्रीं अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विरज' आप हो कर्म हीन, तव गुण में हम भी रहें लीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥113॥
ॐ ह्रीं विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुचि' हे शुचिता तुम लिए धार, हो गये प्रभू तुम निर्विकार।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥114॥
ॐ ह्रीं शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'तीर्थकृत' हो महान, तव करें हृदय में विशद ध्यान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥115॥
ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'केवल' तुम हो जगत पूज, तुम सम ना कोई और दूज।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥116॥
ॐ ह्रीं केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ईशान' आप हो निराकार, तुम रहते जग में निराधार।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥117॥
ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूजार्ह' आप हो जग महान, हम करें आपका गुणोगान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥118॥
ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्नातक' तुम हो जग ऋशीष, तव चरण झुकाते विशद शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥119॥
ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमल' आप भय से विहीन, तुम रहते हो निज ज्ञान लीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥120॥
ॐ ह्रीं अमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अनन्त दीप्त' की अलग शान, जो पूज्य रहे जग में महान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥121॥
ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानात्म' आप हो ज्ञान वान, हे नाथ हमें दो ज्ञान दान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥122॥
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'स्वयं बुद्ध' पावन ऋशीष, तव चरण झुकाएँ भक्त शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥123॥
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रजापति' जग में प्रधान, तुम हो इस जग में गुण निधान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥124॥
ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए हे प्रभु आप 'मुक्त', तुम गुणानन्त रहे युक्त।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥125॥
ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम आपका प्रभू 'शक्त', हम बनें आपके प्रभू भक्त।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥126॥
ॐ ह्रीं शक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु जी 'निराबाध', तुमको करते सब प्रभू याद।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥127॥
ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कल' है प्रभु का श्रेष्ठ नाम, सब करते है तव पद में प्रणाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥128॥
ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेश्वर' हे पावन ऋशीष, तव चरण झुकाएँ भक्त शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥129॥
ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'निरंजन' कर्महीन, हो गये कर्म सारे विलीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥130॥
ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगज्ज्योति' जिनवर महान, हम भक्ती करते शरण आन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥131॥
ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''निरुक्तोक्ति'' हो प्रभु निराकार, चरणों में वन्दन बार-बार।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥132॥
ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'निरामय' रोग हीन, निज गुण में प्रभु हो गये लीन।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥133॥
ॐ ह्रीं निरामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचल स्थिति' कहलाए महीश, तव पद में झुकते जगत ईश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥134॥
ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षोभ्य' आपका श्रेष्ठ नाम, शिवपुर में पाया श्रेष्ठ धाम।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥135॥
ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कूटस्थ' कहाए तुम ऋशीष, हम झुका रहे तव चरण शीश।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥136॥
ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थाणू' शुभ स्थान पाय, तुम विशद ज्ञान लीन्हे जगाय।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥137॥
ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षय' क्षय से रहित आप, तव करते हैं सब नाम जाप।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥138॥
ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अग्रणी' सर्व अग्र, तीनों लोकों में हो समग्र।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥139॥
ॐ ह्रीं अग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'ग्रामिणी' जग प्रधान, तीनों लोकों में हो महान।
तुम जिन शासन के कहे ईश, तुम चरण झुकाते विशद शीश॥140॥
ॐ ह्रीं ग्रामण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द सार)

बने 'नेता' प्रभु जी अविकार, दिखाया जग को मुक्ती द्वार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥141॥
ॐ ह्रीं श्री नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणेता' हो आगम के नाथ, झुका तव चरणों मेरा माथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥142॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'न्यायाशास्त्रवित्' आप, करें हम नाम मंत्र का जाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥143॥
ॐ ह्रीं श्री न्यायशास्त्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू का नाम 'शास्ता' जान, दिए जग को उपदेश महान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥144॥
ॐ ह्रीं श्री शास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'धर्मपती' भगवान, प्रभु हैं श्रेष्ठ धर्म की खान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥145॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिए जो 'धर्म' का शुभ उपदेश, नाम पाए प्रभु धर्म विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥146॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'धर्मात्मा' हो तुम एक, विधर्मी प्राणी कई अनेक।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥147॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे हैं 'धर्मतीर्थकृत' देव, किए जो धर्म प्रवर्तन एव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥148॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते हैं 'वृषध्वज' जिनराज, लगाए प्रभु धर्म का ताज।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥149॥
ॐ ह्रीं श्री वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहलाते हैं 'वृषाधीश', धर्म के धारी श्रेष्ठ ऋशीष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥150॥
ॐ ह्रीं श्री वृषाधीश नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'वृषकेतु' कहते लोग, धर्म ध्वज का पाते संयोग।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥151॥
ॐ ह्रीं श्री वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' कहलाते जिन आप, नाश करते हो सारे पाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥152॥
ॐ ह्रीं श्री वृषायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने 'वृष' पाया शुभ नाम, धर्म के धारी तुम्हें प्रणाम।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥153॥
ॐ ह्रीं श्री वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम 'वृषपति' श्रेष्ठ महान, धर्मधारी तुम रहे प्रधान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥154॥
ॐ ह्रीं श्री वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भर्त्ता' हो जग के नाथ, भव्य जीवों का देते साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥155॥
ॐ ह्रीं श्री भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'वृषभांक' जिनेश, बैल है जिनका चिह्न विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥156॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाये 'वृषभोद्भव' जिनदेव, प्रवर्तन करते आप सदैव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥157॥
ॐ ह्रीं श्री वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यनाभि' कहलाते नाथ, रत्न वृष्टि हो गर्भ के साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥158॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'भूतात्म' जिनेश, आत्म का कीन्हे ध्यान विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥159॥
ॐ ह्रीं श्री भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर हैं 'भूभृते' अविकार, करें सारे जग का उद्धार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥160॥
ॐ ह्रीं श्री भूभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

प्रभु 'भूत भावन' कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥161॥
ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रभव' मोक्ष के दाता, जग जन के भाग्य विधाता।
जन-जन के करूणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥162॥
ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' मोक्ष के धारी, इस जग में मंगलकारी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥163॥
ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भास्वान' प्रभू जगनामी, तव चरणों मम प्रणमामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥164॥
ॐ ह्रीं भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भव' संज्ञा को पाए, भव सारे प्रभू नसाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥165॥
ॐ ह्रीं भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भाव' ज्ञान स्वरूपी, तुम हो चेतन चिद्रूपी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥166॥
ॐ ह्रीं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'भवान्तक' गाए, भव से प्रभु मुक्ती पाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥167॥
ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हिरण्य गर्भ' कहलाए, ये जीवन सफल बनाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥168॥
ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री गर्भ' नाम के धारी, तुम हो पावन त्रिपुरारी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥169॥
ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रभूत विभव' कहलाए, त्रिभुवन का वैभव पाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥170॥
ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभव' मोक्ष पथ गामी, तुम हो त्रिभुवन के स्वामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥171॥
ॐ ह्रीं अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'स्वयं प्रभु' पाए, अतएव स्वयं भू गाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥172॥
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रभूतात्म' अविकारी, तुम हो अतिशय के धारी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥173॥
ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूत नाथ' जगनामी, हे मुक्ती पथ के गामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥174॥
ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगत प्रभू' सुखरासी, प्रभु सिद्ध शिला के वासी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥175॥
ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वादि' आप कहलाए, सब लोकालोक दिखाए।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥176॥
ॐ ह्रीं सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सर्वदृक्' स्वामी, तुम सिद्ध श्री के स्वामी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥177॥
ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सार्व' सर्व के ज्ञाता, जग को सन्मार्ग प्रदाता।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥178॥
ॐ ह्रीं सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वज्ञ' आपकी वाणी, है जग की कल्याणी।
जन-जन के करुणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥179॥
ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सर्व दर्शन' कहलाए, त्रय लोक आप दर्शाए।
जन-जन के करूणाकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥180॥
ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वात्म' जगत हितकारी, सब झलके सृष्टि सारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥181॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सर्वलोकेश' कहाए, सबका हित करने आए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥182॥
ॐ ह्रीं श्री सर्व लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वविद्' गाये, क्षण में सब कुछ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥183॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वलोकजित' स्वामी तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥184॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगति' आपने पाई, जो सिद्ध गति कहलाई।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥185॥
ॐ ह्रीं श्री सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुश्रुत' प्रभु कहलाए, सुश्रुत की गंग बहाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥186॥
ॐ ह्रीं श्री सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत्' हो सुनने वाले, ज्ञानी जग के रखवाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥187॥
ॐ ह्रीं श्री सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं 'सुवाक्' के धारी, हैं वचन श्रेष्ठ गुणकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥188॥
ॐ ह्रीं श्री सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जगत गुरु हे 'सूरि', तुम विद्या पाए पूरी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥189॥
ॐ ह्रीं श्री सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञाता, प्रभु तीन लोक विख्याता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥190॥
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्रुत' त्रिभुवन के ज्ञानी, आगम है तव श्रुत वाणी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥191॥
ॐ ह्रीं श्री विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वतः पाद' जिन गाये, प्रभु लोक पूज्यता पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥192॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वत पादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥193॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'शुचिश्रवा' हो स्वामी, हो ज्ञानी अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥194॥
ॐ ह्रीं श्री शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सहस्रशीर्ष' शुभ गाये, प्रभु सुख अनन्त उपजाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥195॥
ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्रज्ञ' तुम्हें कहते हैं, प्रभु सर्व क्षेत्र रहते हैं।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥196॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' कहलाए, जो सब पदार्थ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥197॥
ॐ ह्रीं श्री सहस्राक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'सहस्रपात' जिन स्वामी, हो वीर बली जग नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥198॥
ॐ ह्रीं श्री सहस्रपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूतभव्यभवद्भर्त्ता', त्रैकालिक सुख के कर्त्ता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥199।
ॐ ह्रीं श्री भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वविद्यामहेश्वर', तुम हो इस जग के ईश्वर।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥200॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्यामहेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नाथ दिव्य भाषा पति आदिक, सौ नामों से पूज्य जिनेश।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करते, सुर नरेन्द्र नर आदि विशेष॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥2॥
ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

प्रभु 'स्थविष्ठ' जगनामी, बन गये मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥201॥
ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'स्थविर' जानो, सिद्धों में स्थिर मानो।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥202॥
ॐ ह्रीं स्थविराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्येष्ठ' सभी के दाता, तुम बने सभी के त्राता।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥203॥
ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रष्ठ' कहाते स्वामी, यह जग है तव अनुगामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥204॥
ॐ ह्रीं श्री प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'वरिष्ठधी' नामी, हे प्रखर बुद्धि के स्वामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥206॥
ॐ ह्रीं श्री वरिष्ठधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेष्ठ' आपको कहते, क्योंकि स्थिर हो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥207॥
ॐ ह्रीं श्री स्थेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'गरिष्ठ' हे ज्ञानी, प्रभु वीतराग विज्ञानी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥208॥
ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंहिष्ठ' नाम प्रभु पाये, तव रूप अनेकों गाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥209॥
ॐ ह्रीं श्री बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'श्रेष्ठ' गुणों के धारी, तव दुनियाँ बनी पुजारी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥210॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव नाम 'अणिष्ठ' बखाना, यह सर्व चराचर जाना।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥211॥
ॐ ह्रीं श्री अणिष्ठाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'गरिष्ठगी' कहते, निज गौरव में जो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥212॥
ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठगिरे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वभृष' स्वामी, भव नाश किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥213॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभृषे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वसृज' स्वामी, कई सृजन किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥214॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वसृजे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' के पद में आते, सुर नर मुनि शीश झुकाते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥215॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वेशे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'विश्वभुक्' गाये, जग के रक्षक कहलाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥216॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभुजे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वनायक' कहलाए, नीति का ज्ञान कराए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥217॥
ॐ ह्रीं श्री 'विश्वनायकाय' नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो प्रभु जग 'विश्वाशी', हे मोक्षपुरी के वासी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥218॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वासिने नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'विश्वरूपात्मा' कहलाते हो परमात्मा।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥219॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपात्मने नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'विश्वजित्' स्वामी, भव विजयी अन्तर्यामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पती अनगारी॥220॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वजिते नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजितान्तक' आप कहाए, प्रभु पूजा को हम आए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥221॥
ॐ ह्रीं विजितांतकाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' आप सुखराशी, प्रभु सिद्ध शिला के वासी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥222॥
ॐ ह्रीं विभवाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विभय' कहे भयनाशी, निज आतम ज्ञान प्रकाशी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥223॥
ॐ ह्रीं विभयाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वीर' विजय को पाए, तुम सारे कर्म नशाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥224॥
ॐ ह्रीं वीराय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'विशोक' तुम्हारा, इस जग को दिया सहारा।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥225॥
ॐ ह्रीं विशोकाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विजर' विजय के दाता, जन-जन के भाग्य विधाता।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥226॥
ॐ ह्रीं विजराय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजरण' तुम जीर्ण ना होते, इस जग की जड़ता खोते।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥227॥
ॐ ह्रीं अजरणे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए 'विराग' तुम स्वामी, तुम बने मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी॥228॥
ॐ ह्रीं विरागाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विरत' आप गुणधारी, जन-जन के करुणाकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।229।।
ॐ ह्रीं विरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'असंग' अविकारी, इस जग के राग निवारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।230।।
ॐ ह्रीं असंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी 'विविक्त' कहलाए, ना जग से राग लगाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।231।।
ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वीत मत्सर' जग जेता, कहलाए कर्म विजेता।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।232।।
ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विनेयजनता बन्धु' जी, तुम रहे ज्ञान सिन्धू जी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।233।।
ॐ ह्रीं विनेयजनताबंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विलीना शेष कल्मश' जी, प्रगटाए श्रेष्ठ सुयश जी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।234।।
ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वियोग' नाम के धारी, तुम हो जग में अविकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।235।।
ॐ ह्रीं वियोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाथ 'योग विद' गाए, निज में उपयोग लगाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।236।।
ॐ ह्रीं योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्वान' आप सद्ज्ञानी, तुम हो जग के कल्याणी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।237।।
ॐ ह्रीं विदुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए आप 'विधाता', तुमसे सब पाते साता।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।238।।
ॐ ह्रीं विधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुविधि' आप जगनामी, तुम बने मोक्ष पथगामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।239।।
ॐ ह्रीं सुविधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुधी' ज्ञान के धारी, सद्ज्ञानी हो शिवकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।240।।
ॐ ह्रीं सुधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन क्षांतिभाक् कहलाए, तुम क्षमा धर्म को पाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।241।।
ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पृथ्वी मूर्ति' गुणधारी, जन-जन के करूणाकारी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।242।।
ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शांतिभाक्' शिवगामी, तुम सिद्ध शिला के स्वामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।243।।
ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सलिलात्मक' आप कहाए, गुण शीतल शुभ प्रगटाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।244।।
ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वायु मूर्ति' सद्ज्ञानी, तुम जन-जन के कल्याणी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।245।।
ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'असंगात्म' कहलाए, प्रभु रहित संग से गाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।246।।
ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वह्नि मूर्ति' शिवगामी, तुम सिद्ध शिला के स्वामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।247।।
ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को 'अधर्मधक्' जानो, जो कर्म जलाए मानो।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।248।।
ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सुयज्वा' स्वामी, जिनवर मुक्ती पथ गामी।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।249।।
ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यजमानात्मा' जिन गाए, जो मोक्ष मार्ग दर्शाए।
तव नाम मंत्र शुभकारी, भव-भव का दोष निवारी।।250।।
ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द)

'सुत्वा' आप कहाते हो, निजानन्द रस पाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।251।।
ॐ ह्रीं श्री सुत्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुत्रामपूजित' आप कहे, शत इन्द्रों से पूज्य रहे।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।252।।
ॐ ह्रीं श्री सूत्रामपूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋत्विक्' आप कहाए हो, जगत् पूज्यता पाए हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।253।।
ॐ ह्रीं श्री ऋत्विके नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यज्ञपति' तवनाम अहा, सारे जग में पूज्य रहा।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।254।।
ॐ ह्रीं श्री यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'याज्य' आपको कहते हैं, भक्त शरण में रहते हैं।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।255।।
ॐ ह्रीं श्री याज्याये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते 'यज्ञांग' प्रभो! हो पूजा के हेतु विभो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।256।।
ॐ ह्रीं श्री यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृत' तुम कहलाते हो, सौख्य अनन्त दिलाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।257।।
ॐ ह्रीं श्री अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हवी' नाम को पाये हो, सारे अशुभ जलाए हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।258।।
ॐ ह्रीं श्री हविषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्योममूर्ति' तव नाम अहा, कर्म लेप न लेश रहा।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।259।।
ॐ ह्रीं श्री व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमूर्तात्मा' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।260।।
ॐ ह्रीं श्री अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निर्लेप' कहे जग में, आगे बढ़े मोक्ष मग में।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते है।।।261।।
ॐ ह्रीं श्री निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मल' तुम कहलाते हो, तुम ही कर्म नशाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।262।।
ॐ ह्रीं श्री निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचल' तुम्हें कहते प्राणी, पाए तुम मुक्ति रानी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।263।।
ॐ ह्रीं श्री अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सोममूर्ति' तुम हो स्वामी, हो प्रशान्त जग में नामी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।264।।
ॐ ह्रीं श्री सोममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुसौम्यात्मा' गाये, सौम्य छवि अतिशय पाये।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।265।।
ॐ ह्रीं श्री सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमूर्ति' हे प्रभो तुम्हीं, महा तेज मय रहे तुम्हीं।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।266।।
ॐ ह्रीं श्री सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभ' तुम कहलाते हो, तुम प्रभाव दिखलाते हो।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।267।।
ॐ ह्रीं श्री महाप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मंत्रविद्' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।268।।
ॐ ह्रीं श्री मंत्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'मंत्रकृत' हो आले, सभी मंत्र रचने वाले।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।269।।
ॐ ह्रीं श्री मंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम मंत्री कहलाए, सभी यंत्र तुमने पाये।
नाथ! आपको ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।270।।
ॐ ह्रीं श्री मंत्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कहलाते हो तुम प्रभु, 'मंत्रमूर्ति' भगवान।
सप्ताक्षरी हो, मूर्तिमय, करूँ विशद गुणगान।।271।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम पाया आपने, प्रभू 'अनन्तग' नाम।
तीन योग से तव चरण, पदमें करूँ प्रणाम।।272।।
ॐ ह्रीं अनंतगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बन्ध से हीन हो, हे 'स्वतंत्र' जिनराज।
तंत्र देह को मानकर, स्व में करते राज।।273।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र-तंत्र कर्त्ता कहे, प्रभो 'तंत्रकृत' आप।
मुक्ति पाने के लिए, करूँ आपका जाप।।274।।
ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्त किए हो कर्म का, 'स्वान्त' तुम्हीं हो नाथ।
तव गुण पाने के लिए, चरण झुकाएँ माथ।।275।।
ॐ ह्रीं स्वन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है जिनदेव ने, 'कृतान्तान्त' शुभ नाम।
किए कर्म का अन्त तुम, पद में करें प्रणाम।।276।।
ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम के कर्त्ता तुम्हीं, हो 'कृतान्तकृत' देव।
बन्दूँ तुम्हें सदैव, शिव सुख पाने के लिए।।277।।
ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के धनी, 'कृती' पुण्यफल रूप।
शिवपुर वासी बन गये, पाये निज स्वरूप।।278।।
ॐ ह्रीं कृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सफल करो पुरुषार्थ सब, तुम 'कृतार्थ' भगवान।
पुरुषार्थ सिद्धी के लिए, करें विशद गुणगान।।279।।
ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र करें सत्कार तव, हो जिनेन्द्र 'सत्कृत्य'।
बने आपके चरण में, सुर नर चक्री भृत्य।।280।।
ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म कार्य सब कर चुके, हुए आप 'कृतकृत्य'।
जान स्वयं को ध्याए हो, सारा लोक अनित्य।।281।
ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करते इन्द्र भी, तुम 'कृतक्रतू' जिनेश।
प्राणी जो अर्चा करें, पायें सुफल विशेष।।282।।
ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सादी आप अनन्त हो, प्रभु आप हो 'नित्य'।
तव पद से जो दूर हैं, प्राणी रहे अनित्य॥283॥
ॐ ह्रीं नित्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु को जीते प्रभो, 'मृत्युञ्जय' शुभ नाम।
तव पद पाने के लिए, शत् शत् बार प्रणाम॥284॥
ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण रहित हो जिन प्रभो!, आप 'अमृत्यु' नाथ।
हम भी तुम जैसे बनें, दीजे हमको साथ॥285॥
ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते त्रय लोक में, 'अमृतात्मा' आप।
तुम सम बनने के लिए, करें आपका जाप॥286॥
ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया जिनवर आपने, 'अमृतोद्‌भव' नाम।
पाना हम भी चाहते, अमृत है शिव धाम॥287॥
ॐ ह्रीं अमृतोद्‌भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म आप कहलाए हो, 'ब्रह्मनिष्ठ' हे देव।
ब्रह्मादि नर नाथ सब, वन्दन करें सदैव॥288॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी बन गये, 'परंब्रह्म' उत्कृष्ट।
ध्याते हैं, अतएव सब, रहे सभी को इष्ट॥289॥
ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम ज्ञानी देव तुम, 'ब्रह्मात्मा' शिव रूप।
सर्व गुणों से पूर्ण हो, अविचल ज्ञान स्वरूप॥290॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ब्रह्म सम्भव' कहे, तीर्थंकर भगवान।
अतः आपके नाम का, करें भक्त गुणगान॥291॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महा ब्रह्मपति'' आपका, करते हैं सब जाप।
अर्चा करके भव्य जन, नाश करें सब पाप॥292॥
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जपते हैं 'ब्रह्मोड्' जिन, श्रेष्ठ आपका नाम।
भाव सहित तव चरण में, करते विशद प्रणाम॥293॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महा ब्रह्म पदेश्वर' कहे, तीर्थंकर जिनराज।
पूजा करते आपकी, शिव पद पाने आज॥294॥
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्न' हे प्रभु तुम्हीं, देते शांति अपार।
चरण शरण में भव्य जन, पा लेते हैं पार॥295॥
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशन्नात्मा' आप हो, श्री जिन हे तीर्थेश।
शिवपद पाया आपने, धार दिगम्बर भेष॥296॥
ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान धर्म दम प्रभु' कहे, जगती पति जगदीश।
भक्ती करके आपकी, भक्त झुकाते शीश॥297॥
ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशमात्मा' हे प्रशमगुण, धारी जिन भगवान॥
कर्मनाश कर आपने, पाया पद निर्वाण॥298॥
ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तात्मा' नाम धर, कहे आप भगवान।
सुगुण आपके लोक में, गाये महति महान॥299॥
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराण पुरुषोत्तम' जिन कहे, पाये केवलज्ञान।
वे भी ज्ञानी जीव हों, करें आप का ध्यान॥300॥
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

प्रथम 'स्थविष्ठ' नाम कहा है, पुराण पुरुषोत्तम अन्तिम नाम।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, पाए शिव पद में विश्राम।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अंतिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामेभ्य: नम: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है प्रभु आपने, 'महाशोध्वज' नाम।
समवशरण में शोभता, तरु अशोक तल धाम।।301।।

ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अशोक' कहलाए हैं, रहे शोक से हीन।
शोक निवारी जिन कहे, निज में रहते लीन।।302।।

ॐ ह्रीं श्री अशोकाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा अपरम्पार है, 'क:' कहलाते आप।
मुक्ती पाने के लिए, करें आपका जाप।।303।।

ॐ ह्रीं श्री काय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सृष्टी के कर्त्ता कहे, 'स्रष्टा' तुम हे नाथ!
अर्घ्य चढ़ाते हैं यहाँ, चरण झुकाएँ माथ।।304।।

ॐ ह्रीं श्री स्रष्ट्रे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है प्रभु आपने, आसन पद्म महान।
'पद्मविष्टर' जी कहे, किए जगत कल्याण।।305।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मविष्टराय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते हो लोक मे, जिनवर हे 'पद्मेश'।
पाये हैं जग में सभी, मुक्ति का संदेश।।306।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मेशाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम में प्रभु का कहा, 'पद्मसंभूति' नाम।
करते हैं हम भाव से, बारम्बार प्रणाम।।307।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मसंभूतये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभी पद्म समान तव, 'पद्मनाभि' जिनराज।
आप त्रिलोकी नाथ हो, पूर्ण करो सब काज।।308।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाभये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम कोई भी नहीं, आप 'अनुत्तर' देव।
गुण गण सौरभ आप में, अक्षय रहे सदैव।।309।।

ॐ ह्रीं श्री अनुत्तराय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर पाया आपने 'पद्मयोनि' शुभ नाम।
जिससे जन्म आप हो, योनी पद्म समान।।310।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मयोनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में श्रेष्ठ हो, 'जगद्योनि' हे नाथ।
उत्पत्ती जग में किए, चरण झुकाएँ माथ।।311।।

ॐ ह्रीं श्री जगद्योनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य हुए संसार में, 'इत्य' नाम को पाय।
हम भी वन्दन कर रहे, सादर शीश झुकाय।।312।।

ॐ ह्रीं श्री इत्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र से, हैं 'स्तुत्य' जिनेश।
वीतराग का जो परम, दिए जगत उपदेश।।313।।

ॐ ह्रीं श्री स्तुत्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तुति करने आये हम, 'स्तुतिश्वर' हे नाथ।
हाथ जोड़ तव चरण में, भक्त झुकाये माथ।।314।।

ॐ ह्रीं श्री स्तुतीश्वराय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्तवन योग्य हो, 'स्तवनार्ह' जिनेन्द्र।
करते हैं तव वन्दना, इन्द्र और राजेन्द्र।।315।।

ॐ ह्रीं श्री स्तवनार्हाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिया लोक में आपने, 'हृषीकेश' उपदेश।
इन्द्रिय मन को जीतकर, नाशे कर्म अशेष।।316।।

ॐ ह्रीं श्री हृषीकेशाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहबली को जीतकर, हुए आप 'जितजेय'।
सर्व जहाँ में श्रेष्ठतम, जग में हुए अजेय॥317॥

ॐ ह्रीं श्री जितजेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य किए संसार के, 'कृतक्रिय' करने योग्य।
नहीं योग्य थे आपके, छोड़े सर्व अयोग्य॥318॥

ॐ ह्रीं श्री कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश गण के श्रेष्ठतम, प्रभो! 'गणाधिप' आप।
मुक्ती पाने के लिए, करें नाम का जाप॥319॥

ॐ ह्रीं श्री गणाधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणज्येष्ठ' है नाम तव, सर्व लोक में श्रेष्ठ।
गुणा गण धारी आपने, पाया नाम यथेष्ठ॥320॥

ॐ ह्रीं श्री गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

हो गणना के योग्य तुम, 'गण्य' आपका नाम।
लाख चौरासी गुण सहित, तव पद करूँ प्रणाम ॥321॥

ॐ ह्रीं श्री गण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्य' आपका नाम शुभ, हो तुम पूर्ण पवित्र।
आप सभी के हो प्रभु, कोई शत्रु न मित्र॥322॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणाग्रणी' तुमने दिया, शिव पथ का उपदेश।
मुक्ति पथ पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष॥323॥

ॐ ह्रीं श्री गणाग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के कोष तुम, अतः 'गुणाकर' नाम।
सार्थक पाया आपने, तव पद करूँ प्रणाम॥324॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'गुणाम्भोधी' कहे, श्रेष्ठ गुणों की शान।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश॥325॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाम्भोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुणज्ञ' गुणवान तुम, श्रेष्ठ जगत के ईश।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश॥326॥

ॐ ह्रीं श्री गुणज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' गुण के धनी,गुण मणि आप विशाल।
तव गुण पाने के लिए,गाते हम जयमाल॥327॥

ॐ ह्रीं श्री गुणनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्वादि गुण आदरी, 'गुणादरी' हे नाथ।
सत्त्वप्राप्त गुण हों मुझे, चरण झुकाते माथे॥328॥

ॐ ह्रीं श्री गुणादरिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज तप आदि विभाव गुण, सर्व नशाए आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' हुए, मुझे करो निष्पाप,॥329॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाच्छेदिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन तुम, 'निर्गुण' आप महान।
ज्ञानादि गुण धारते, जग में रहे प्रधान॥330।

ॐ ह्रीं श्री निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु 'पुण्यगी', पावन वाणी धार॥
पावन वाणी हो मेरी, नमन अनन्तो बार॥331॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ गुणों को धारकर, पाए 'गुण' प्रभु नाम।
भव्य जीव अतएव सब, करते तुम्हें प्रणाम॥332॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शरण्य' तव चरण की, शरण जिसे मिल जाए।
ऋद्धि-सिद्धि सुख प्राप्त कर, निश्चय मुक्ति पाए॥333॥

ॐ ह्रीं श्री शरण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्' प्रभु आपके, जग को करें निहाल।
सुख-शांती आनन्द दे, कर देते खुशहाल॥334॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पावन इस लोक में, 'पूत' आपका नाम।
पावन हमको भी करो, बारम्बार प्रणाम॥335॥
ॐ ह्रीं श्री पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वरेण्य' मुक्ति पति, मुक्ति रमा के कंत।
सर्वश्रेष्ठ परमात्मा, किए कर्म का अंत॥336॥
ॐ ह्रीं श्री वरेण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
चरण झुकाएँ शीश, श्रेष्ठ पुण्य का दान दो॥337॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं गणनीय हो, हे 'अगण्य' जिनराज।
हमको भी निज सम करो, आन सम्हारो काज॥338॥
ॐ ह्रीं श्री अगण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यधी' आप हो, बुद्धि पुण्य स्वरूप।
मम बुद्धि को शुद्ध कर, प्रकट करो निज रूप॥339॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' आपका नाम है, श्रेष्ठ गुणों के नाथ!।
पूर्ण गुणी हम बन सकें, नाथ! निभाओ साथ॥340॥
ॐ ह्रीं श्री गुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप शाप को नाशकर, हुए 'पुण्यकृत' आप।
नाम जाप कर आपका, हो जाएँ निष्पाप॥341॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यशासन' तुम्हीं, पुण्य के कोष।
तुम्हें छोड़ते जीव यह, है भारी अफसोस॥342॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' यह नाम शुभ, पाए श्री जिनेश।
धर्म से हो आराम सुख, कहते हैं तीर्थेश॥343॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मरामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलोत्तर गुण के धनी, श्री जिनेन्द्र 'गुणग्राम'।
ऋद्धि-सिद्धि श्री प्राप्त जिन, पाये हैं यह नाम॥344॥
ॐ ह्रीं श्री गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप से हीन तव, 'पुण्यापुण्यनिरोध'।
रत्नत्रय से ध्यान कर, स्वयं जगाए बोध॥345॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यापुण्यनिरोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पाप रहित निष्पाप कहाए, 'पापापेत' नाम प्रभु पाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥346॥
ॐ ह्रीं श्री पापापेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म सब दूर भगाए, आप 'विपापात्मा' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाप जापमें ध्यान लगाएँ॥347॥
ॐ ह्रीं श्री विपापात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है निर्दोष आपकी वाणी, तुम्हें 'विपाप्मा' कहते प्राणी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥348॥
ॐ ह्रीं श्री विपाप्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्मष धो कर शुद्धी पाए, आप 'वीतकल्मष' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाप जाप में ध्यान लगाएँ॥349॥
ॐ ह्रीं श्री वीत्कल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह हीन रहे अविनाशी, हैं 'निर्द्वंद्व' द्वन्द्व के नाशी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥350॥
ॐ ह्रीं श्री निर्द्वंद्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय केवलज्ञान प्रकाशा, 'निर्मद' मद को तुमने नाशा।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥351॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी महिमा हम भी गाएँ, 'शांत' किए उपशांत कषाएँ।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥352॥
ॐ ह्रीं श्री शांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सनातन वसु गुणभागी, हे 'निर्मोह' मोह के त्यागी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥353॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध श्री जिन शिवपुर वासी, 'निरुपद्रव' उपद्रव के नाशी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥354॥
ॐ ह्रीं श्री निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं कभी भी पलक झपकते, 'निर्निमेष' इकटक ही लखते।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥355॥
ॐ ह्रीं श्री निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि औरों की हरते, 'निराहार' आहार न करते।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥356॥
ॐ ह्रीं श्री निराहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रियावान को मुक्ति दिलाए, क्रिया रहित 'निष्क्रिय' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥357॥
ॐ ह्रीं श्री निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुपप्लव' जी विघ्न नशाए, तव अर्चा को हम भी आए।
नाप जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥358॥
ॐ ह्रीं श्री निरुपप्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' अकलंक कहे हैं, कोई कलंक नहीं रहे हैं।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥359॥
ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव पद वन्दन करने आए, प्रभो! 'निरस्तैना' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥360॥
ॐ ह्रीं श्री निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा नाम न कोई पाप का, 'निर्धूतागस्' नाम आपका।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥361॥
ॐ ह्रीं श्री निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हुए प्रभु अन्तर्यामी, आस्रवहीन 'निरास्रव' स्वामी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥362॥
ॐ ह्रीं श्री 'निरास्रवाय' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम कोइ भगवंत नहीं है, हे 'विशाल'! तव अन्त नहीं है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥363॥
ॐ ह्रीं श्री विशालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीश झुकाएँ पद में तेरे, 'विपुलज्योति' हे जिनवर मेरे।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥364॥
ॐ ह्रीं श्री विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर न सके लोक में कोई, 'अतुल' आपकी तुलना सोई।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥365॥
ॐ ह्रीं श्री अतुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बृहस्पती न गुण गा पाए, तुम 'अचिन्त्यवैभव' कहलाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥366॥
ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यवैभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर किए पूर्णतः नामी, कहलाए 'सुसंवृत्त' स्वामी।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥367॥
ॐ ह्रीं श्री सुसंवृत्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मारि छू भी न पाए, 'सुगुप्तात्मा' आप कहाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥368॥
ॐ ह्रीं श्री सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाना लोकालोक है सारा, 'सुभृत्' नाम आपका प्यारा।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥369॥
ॐ ह्रीं सुभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप रहे त्रिभुवन के त्राता, 'सुनयत्त्ववित्' नय के ज्ञाता।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ, नाम जाप में ध्यान लगाएँ॥370॥
ॐ ह्रीं श्री सुनयतत्त्ववित् नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छंद)

हैं क्षद्म ज्ञान से पूर्णमुक्त, प्रभु 'एकविद्य' हैं ज्ञान युक्त।
प्रभु आप जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥371॥
ॐ ह्रीं श्री एकविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए विद्याएँ विशद ज्ञान, प्रभु 'महाविद्य' जग में महान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥372॥
ॐ ह्रीं श्री महाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को भव से किया पार, हे 'मुनि' आपने मौन धार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥373॥
ॐ ह्रीं श्री मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर दिखलाया मार्ग नेक, हे 'परिवृढ़' तुममें गुण अनेक।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥374॥
ॐ ह्रीं श्री परवृिढ़ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी जग में हो ज्ञानवान, हे 'पति'! आप हो जग प्रधान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥।375॥
ॐ ह्रीं श्री पत्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग में पायी प्रधान, हे 'धीश'! आपकी धी महान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥376॥
ॐ ह्रीं श्री धीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव चरणों सुर-नर झुकें भूप, प्रभु 'विद्यानिधि' हो तुम अनूप।
प्रभू नाम जाप से कटें पाप, सारे दःखहर्त्ता रहे आप॥377॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव पद में मेरा नमस्कार, हे 'साक्षी'! कर साक्षात्कार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥378॥
ॐ ह्रीं श्री साक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की सब जाने आप रीत, हे प्रभू! 'विनेता' तुम विनीत।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥379॥
ॐ ह्रीं श्री विनेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध बने पा गुणानन्त, हे 'विहतान्तक' कर कर्म अन्त।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥380॥
ॐ ह्रीं श्री विहितान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जनक कहे जग में विशेष, हे 'पिता'! आप रक्षक जिनेश।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥381॥
ॐ ह्रीं श्री पित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम न त्राता कोई श्रेष्ठ, प्रभु कहे 'पितामह' जग ज्येष्ठ।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥382॥
ॐ ह्रीं श्री पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम वन्दन करते बार-बार, अब भवदधि 'पाता' करो पार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥383॥
ॐ ह्रीं श्री पात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम रहे जगत के श्रेष्ठ मित्र, आतम कीन्ही तुमने 'पवित्र'।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥384॥
ॐ ह्रीं श्री पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न पाये जिसका कोई पार, हे 'पावन'! तव महिमा अपार।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥385॥
ॐ ह्रीं श्री पावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम गति पाई जग प्रधान, हे 'गति' आपकी गति महान्।
प्रभु नामा जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥386॥
ॐ ह्रीं श्री गतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रय दाता हो तुम विशेष, हे 'त्राता'! जग रक्षक जिनेश।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥387॥
ॐ ह्रीं श्री त्रात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब रोग विनाशक हो महान, हे वैद्य! भिषग्वर' तुम प्रधान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥388॥
ॐ ह्रीं श्री भिषग्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुक्ति रमा के वर महान, हे 'वर्य'! आप हैं सुमति मान।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥389॥
ॐ ह्रीं श्री वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर देता है जीवन प्रशस्त, हे प्रभू! आपका 'वरद' हस्त।
प्रभु नाम जाप से कटें पाप, सारे दुखहर्त्ता रहे आप॥390॥
ॐ ह्रीं श्री वरदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका है पावन 'परम' नाम, जिनके पद सब करते प्रणाम।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥391॥
ॐ ह्रीं परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन नाम प्राप्त कीन्हें 'पुमान्', जो प्रगटाए हैं विशद ज्ञान
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥392॥
ॐ ह्रीं पुंसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन! कहलाए 'कवि' आप, तव दर्श किए सब कटे शाप।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥393॥
ॐ ह्रीं कवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'पुराण पुरुष' जिनवर महान, जो श्रेष्ठ गुणों की रहे खान।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥394॥
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्षियान्' तुम हो पवित्र, तुम जग जीवों के परम मित्र।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥395॥
ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'ऋषभ' आप हो जग प्रधान, तव अर्चा से हो कर्म हान।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥396॥
ॐ ह्रीं ऋषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' आप कर्म का करो अन्त, जीवन में आए शुभ बसन्त।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥397॥
ॐ ह्रीं पुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रतिष्ठा प्रसवादी' हे जिनेश, तव गुण है इस जग में विशेष।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥398॥
ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'हेतु' तुम हो अपार, तव पद में वन्दन बार बार।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥399॥
ॐ ह्रीं हेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेक पितामह' कहे श्रेष्ठ, जिनराज कहे हैं जग ज्येष्ठ।
प्रभु का जो करते नाम जाप, उनके कट जाते पूर्ण पाप॥400॥
ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

'महाशोक ध्वज' आदि नाम के, धारी कहलाए भगवान।
सुर नर विद्या धर से पूजित, तीन लोक में रहे महान॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह विशद किया गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥4॥
ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'श्रीवृलक्षणा' भाई, जिन नाम कहा सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥401॥
ॐ ह्रीं श्री वृक्षलणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनप्रभू 'श्लक्ष्ण' कहलाए, जो शिव रमणी को पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।402।।
ॐ ह्रीं श्री श्लक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्षण्य' कहे जिन स्वामी, सब लक्षण पाए नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।403।।
ॐ ह्रीं श्री लक्षण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' प्रभु जी पाए, जो सहस्राष्ट कहलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।404।।
ॐ ह्रीं श्री शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'निरक्ष' कहलाए, प्रभु हीन इन्द्रिय गाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।405।।
ॐ ह्रीं श्री निरक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुण्डरीकाक्ष' कहाए, नाशाग्र दृष्टि शुभ पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।406।।
ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकाक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' कहलाए स्वामी, जग रक्षक अन्तर्यामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।407।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुष्करेक्षण' हैं भाई, शुभ गमन कमल सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।408।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्करेक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सिद्धिदा' स्वामी, सिद्धि दायक जग नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।409।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धसंकल्प' कहाए, कर पूर्ण सभी दिखलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।410।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को 'सिद्धात्मा' जानो, सब सिद्धी पाए मानो।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।411।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सिद्धसाधन' कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।412।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धबोध्य' जगनामी, बोधी तुम पाये स्वामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।413।।
ॐ ह्रीं श्री बुद्धबोध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाबोधि' कहलाये, जो श्रेष्ठ सिद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिवनगरी को जावें।414।।
ॐ ह्रीं श्री महाबोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्धमान' जिन स्वामी, गुण पाये अतिशय नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।415।।
ॐ ह्रीं श्री वर्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महर्द्धिक' कहलाए, जो श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।416।।
ॐ ह्रीं श्री महर्द्धिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदांग' नाम अति प्यारा, है सार्थक नाम तुम्हारा।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।417।।
ॐ ह्रीं श्री वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'वेदविद्' स्वामी, ज्ञानी वेदों के नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।418।।
ॐ ह्रीं श्री वेदविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'वेद' स्वयं संवेदी, आठों कर्मों के भेदी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।419।।
ॐ ह्रीं श्री वेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'जातरूप' कहलाए, शुभ भेष दिगम्बर पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें।।420।।
ॐ ह्रीं श्री जातरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'विदाम्वर' ज्ञानी, हैं जग जन के कल्याणी।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।421।।
ॐ ह्रीं विदांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वेदवेद्य' कहलाए, ज्ञाता इस जग के गाए।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।422।।
ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'स्वसंवेद्य' निराले, जग का हित करने वाले।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।423।।
ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'विवेद' कहाए, वेदों के ज्ञाता गाए।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।424।।
ॐ ह्रीं विवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' हैं जिन स्वामी, जग जन के अन्तर्यामी।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।425।।
ॐ ह्रीं वदताम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनादि निधन' हैं, जिन चरणों शत् वन्दन है।
जो श्री जिनवर को ध्यायें, वे सारे कर्म नशाएँ।।426।।
ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'व्यक्त' जगनामी, तीनों लोकों के स्वामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।427।।
ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'व्यक्त वाक्' कहलाए, शिव पद की राह दिखाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।428।।
ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'व्यक्त शासन' शुभकारी, तव पद में ढोक हमारी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।429।।
ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'युगादिकृत' कहते, निज गुण में स्थिर रहते।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।430।।
ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगाधार' कहलाए, महिमा सारा जग गाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।431।।
ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हैं 'युगादि' जग नामी, इस जग के अन्तर्यामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।432।।
ॐ ह्रीं युगादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' आप कहाए, प्रभु जगत पूज्यता पाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।433।।
ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'अतीन्द्र' निराले, सबका मन हरने वाले।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।434।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अतिन्द्रिय' स्वामी, जग जन के अन्तर्यामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।435।।
ॐ ह्रीं अतीद्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धीन्द्र' कहाए स्वामी, जग जीवों के कल्याणी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।436।।
ॐ ह्रीं धीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'महेन्द्र' निराला, जग का हित करने वाला।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ।।437।।
ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अतीन्द्रियार्थदिक्' स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथ गामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ॥438॥
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'अनिन्द्रिय' गाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ॥439॥
ॐ ह्रीं अनिंद्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अहमिन्द्रार्च्य' आप जगनामी, कहलाए नाथ अकामी।
जो श्री जिनवर को ध्याये, वे सारे कर्म नशाएँ॥440॥
ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जैनागम में कहा है, 'महेन्द्रमहित' तव नाम।
इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सब, करते विशद प्रणाम॥441॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रमहिताय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

आप रहे संसार में, त्रिभुवन पूज्य 'महान्'।
प्रभु गुण पाने के लिए, करें विशद गुणगान॥442॥
ॐ ह्रीं श्री महते नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो, 'उद्भव' जगत् प्रसिद्ध।
उद्भव कीन्हें धर्म का, सार्थक है जो सिद्ध॥443॥
ॐ ह्रीं श्री उद्भवे नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

धर्म सौक्ष्य सौभाग्य के, 'कारण' आप महान्।
कर्म नाश के हेतु तुम, अतिशय रहे प्रधान॥444॥
ॐ ह्रीं श्री कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

असि मसि आदि कर्म के, 'कर्त्ता' तुम तीर्थेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष॥445॥
ॐ ह्रीं श्री कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

पार हुए संसार से, 'पारग' पाए नाम।
पाने भव से पार हम, पद में करें प्रणाम॥446॥
ॐ ह्रीं श्री पारगाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'भवतारक' कहलाए हो, तारण तरण जहाज।
पाया है प्रभु आपने, मोक्ष महल का ताज॥447॥
ॐ ह्रीं श्री भवतारकाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

अवगाहन अति कठिन है, है 'अग्राह्य' तव नाम।
गुण अवगाहन प्राप्त कर, पाए तुम शिवधाम॥448॥
ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'गहन' आप अतिशय रहे, योगी जन के गम्य।
सर्व लोक में श्रेष्ठतम, है स्वरूप तव रम्य॥449॥
ॐ ह्रीं श्री गहनाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

पार नहीं पावे कोई, 'गुह्य' गुप्त हो आप।
योग धारने के लिए, करें नाम का जाप॥450॥
ॐ ह्रीं श्री गुह्याय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'परार्ध्य' तव नाम शुभ, जग में हुए महान है।
महिमा तुमरी अगम है, कैसे करें बखान॥451॥
ॐ ह्रीं श्री परार्ध्याय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'परमेश्वर' कहलाए हैं, मुक्ति श्री के नाथ।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाएँ माथ॥452॥
ॐ ह्रीं श्री परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

'अनन्तर्द्धि' कहलाए हो, ज्ञानी आप अनन्त।
सर्व ऋद्धियों से सहित, नहीं है जिसका अंत॥453॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

मर्यादा जिसकी नहीं, 'अमेयर्द्धि' भगवान।
जो गणना से पार हैं, पाए ऋद्धि महान्॥454॥
ॐ ह्रीं श्री अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

तुम अचिन्त्य संसार में, 'अचिन्त्यर्द्धि' जिनराज।
सर्व ऋद्धियाँ प्राप्त कर, पाए सौख्य समाज॥455॥
ॐ ह्रीं श्री अचिन्तयर्द्धिये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

ज्ञाता ज्ञेय प्रमाण के, हे 'समग्रधी' नाथ।
अपने ज्ञान प्रणाम शुभ, चरण झुकाएँ माथ॥456॥
ॐ ह्रीं श्री समग्रधिये नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

आप लोक में प्रथम हो, 'प्राग्रय' हे जिनदेव।
मुक्ति पाने कर्म से, करें चरण की सेव॥457।
ॐ ह्रीं श्री प्राग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

पूज्य सुमंगल कार्य में, कहे 'प्राग्रहर' आप।
परम पूज्य परमात्मा, नाशक सारे पाप॥458॥
ॐ ह्रीं श्री प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

सम्मुख हो लोकाग्र के, हे 'अभ्यग्र' जिनेन्द्र।
मन वच तन से आपके, पूजें चरण शतेन्द्र॥459॥
ॐ ह्रीं श्री अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

आप विलक्षण जगत से, जिन 'प्रत्यग्र' महान।
भाव सहित तव पाद में, करें विशद गुणगान॥460॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

(चौपाई)

'अग्रय' तुम कहलाए स्वामी, अग्रणीय हो अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥461॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रिम' तुमको कहते प्राणी, रहो अग्र जग के कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥462॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी तुम 'अग्रज' कहलाए, ज्येष्ठ लोक में बनकर आए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥463॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' तुमने तप धारा, तप में जीवन बीता सारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥464॥
ॐ ह्रीं श्री महातपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातेज' प्रभु आप कहाए, आभा शुभ तेजस्वी पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥465॥
ॐ ह्रीं श्री महातेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादर्क' है नाम निराला, भव से मुक्ति देने वाला।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥466॥
ॐ ह्रीं श्री महोदर्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्यदान 'महोदय' जानो, जगतपति प्रभु को पहिचानो।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥467॥
ॐ ह्रीं श्री महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायशा' कहलाए स्वामी, यशोपूत हैं जग में नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥468॥
ॐ ह्रीं श्री महायशसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधाम' है नाम तुम्हारा उसको पाना लक्ष्य हमारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥469॥
ॐ ह्रीं श्री महाधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासत्त्व' तुमको कहते हैं, शाश्वत आप सदा रहते हैं।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥470॥
ॐ ह्रीं श्री महासत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृति' जिनवर कहलाए, जग जीवों को धैर्य दिलाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥471॥
ॐ ह्रीं श्री महाधृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधैर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥472॥
ॐ ह्रीं श्री महाधैर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावीर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।473।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'महासम्पत' कहलाए, समवशरण में शोभा पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।474।।
ॐ ह्रीं श्री महासंपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'महाबल' कहते प्राणी, वीर्यवान हो जग कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।475।।
ॐ ह्रीं श्री महाबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'महाशक्ति' के धारी, त्रिभुवन पति हे करुणाकारी!
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।476।।
ॐ ह्रीं श्री महाशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योति' तुमने शुभ पाई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।477।।
ॐ ह्रीं श्री महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूति' कहलाए स्वामी, विभव रूप हे अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।478।।
ॐ ह्रीं श्री महाभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाद्युति' हैं धुति के धारी, कांतिमान प्रभु अतिशयकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।479।।
ॐ ह्रीं श्री महाद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामति' महाबुद्धि पाए, केवलज्ञानी आप कहाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा।।480।।
ॐ ह्रीं श्री महामतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(केसरी छन्द)

'महानीति' जग सिद्ध कहाए, महानीतियाँ तुम प्रगटाए।
नाम मंत्र जिन का कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।481।।
ॐ ह्रीं महानीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्षांति' वान क्षांतीधारी, कहे गये जग के उपकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।482।।
ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महादय' हे जगनामी, तव चरणों जग करे नमामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।483।।
ॐ ह्रीं महादयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रज्ञ' हे प्रज्ञाधारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।484।।
ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभाग' तुम भाग्य जगाए, जग को मुक्ती मार्ग दिखाए।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।485।।
ॐ ह्रीं महाभागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महानंद' नाम के धारी, पूर्णरूप तुम हो अविकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।486।।
ॐ ह्रीं महानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवी' कहलाने वाले, जग को ज्ञान कराने वाले।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।487।।
ॐ ह्रीं महाकवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महामह' आप कहाते, जग जीवों से पूजे जाते।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।488।।
ॐ ह्रीं महामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकीर्ति' कीर्ती धारी, नाथ! आप अतिशय के धारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।489।।
ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांति' शुभकांती वाले, तीन लोक में रहे निराले।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।490।।
ॐ ह्रीं महाकान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महावपु' हो जगनामी, आप कहाए अन्तर्यामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।491।।
ॐ ह्रीं महावपुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादान' कहलाए दानी, ज्ञान प्रदायक केवलज्ञानी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।492।।
ॐ ह्रीं महादानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्ञान' हो क्षायिक ज्ञानी, जग जग के है प्रभु कल्याणी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।493।।
ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायोग' योगी कहलाते, जगत पूज्यता प्रभु जी पाते।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।494।।
ॐ ह्रीं महायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महागुण' गुण के धारी, जिनके गुण हैं विस्मयकारी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।495।।
ॐ ह्रीं महागुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महामहपति' जिन स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।496।।
ॐ ह्रीं महामहपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राप्त महाकल्याण सुपञ्चक', रहे आप कर्मों के वञ्चक।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।497।।
ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभू' तुम हो जगनामी, तव चरणों हम करें नमामी।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।498।।
ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रतिहार्यधीश' कहाए, प्रीतिहार्य की प्रभुता पाए।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।499।।
ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'महेश्वर' कहते भाई, जिनते अतिशय प्रभुता पाई।
नाम मंत्र जिनका कहलाए, जगत पूज्यता श्री जिन पाए।।500।
ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

श्री वृक्षलक्षणादिक पावन, श्री जिनेन्द्र के गाये नाम।
अन्त महेश्वर नाम आपको, जिन पद करते जीव प्रणाम।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलणादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद)

मुनियों में जो श्रेष्ठ कहाए, 'महामुनी' प्रभु जी कहलाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।501।।
ॐ ह्रीं महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेकर निज को ध्याए, नाम प्रभू 'महामौनी' पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।502।।
ॐ ह्रीं महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान किए जिन अन्तर्यामी, कहे 'महाध्यानी' जिन स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।503।।
ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जित इन्द्रिय हो संयम पाए, प्रभो! 'महादम' आप कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।504।।
ॐ ह्रीं महादमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा धर्म के ईश कहाए, नाम 'महाक्षम' प्रभु जी पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।505।।
ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाशील' हो अन्तर्यामी, अष्टादश शीलों के स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी।।506।।
ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेंधन को तुमने जारा, 'महायज्ञ' है नाम तुम्हारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥507॥
ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक पूज्यता अतिशय पाए, प्रभु 'महामख' भी कहलाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥508॥
ॐ ह्रीं महामखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रतों को धारे नामी, कहे 'महाव्रतपति' हे स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥509॥
ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर साधू भी गुण गाए, 'मह्य' आप जगपूज्य कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥510॥
ॐ ह्रीं मह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय कांती को प्रभु पाए, 'महाकांतिधर' आप कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥511॥
ॐ ह्रीं महाकांतिधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता पाई, 'अधिप' आप कहलाए भाई।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥512॥
ॐ ह्रीं अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को भव पार उतारें, 'महामैत्रीमय' मैत्री धारें।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥513॥
ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरिमेय गुण तुमरे गाते, हे 'अमेय' तुमको हम ध्याते।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥514॥
ॐ ह्रीं अमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने मोक्ष पथ के अनुगामी, 'महोपाय' कहलाए स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥515॥
ॐ ह्रीं महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी है प्रभु तव कल्याणी, तुम्हें 'महोमय' कहते प्राणी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥516॥
ॐ ह्रीं महोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करूणाकर इस जग में गाए, 'महाकारुणिक' आप कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥517॥
ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता हो प्रभु अन्तर्यामी, 'मंता' आप कहे जिन स्वामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥518॥
ॐ ह्रीं मंत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लगता अतिशय प्यारा-प्यारा, 'महामंत्र' है नाम तुम्हारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥519॥
ॐ ह्रीं महामंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब यतियों में श्रेष्ठ कहाए, 'महायति' प्रभु जी कहलाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी॥520॥
ॐ ह्रीं महायतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

जिनदेव 'महानाद' आप कहे, सागर जैसे गंभीर रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥521॥
ॐ ह्रीं श्री महानादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाघोष' कहलाए हैं, जो दिव्य ध्वनि सुनाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥522॥
ॐ ह्रीं श्री महाघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'महेज्य' कहाये हैं, महती पूजा को पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥523॥
ॐ ह्रीं श्री महेज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महासांपति' कहलाए हैं, जग में अतिशय दिखलाए हैं
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।524।।
ॐ ह्रीं श्री महासंपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महाध्वरधर' स्वामी, हैं ज्ञानी मुक्ती पथगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।525।।
ॐ ह्रीं श्री महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धुर्य' कहे महिमाधारी, अनगार बने हैं अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।526।।
ॐ ह्रीं श्री धुर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महौदार्य' प्रभू कहलाए हैं, अतिशय उदारता पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।527।।
ॐ ह्रीं श्री महौदार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'महिष्ठ' भी कहलाए, जो आगम जग को बतलाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।528।।
ॐ ह्रीं श्री महिष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महात्मा' जिन स्वामी, हर जीव रहा है अनुगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।529।।
ॐ ह्रीं श्री महात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महसांधाम' प्रभाकारी, तव कांति रही जग में न्यारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।530।।
ॐ ह्रीं श्री महासांधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'महर्षि' आप कहे, ऋषियों में अतिशय श्रेष्ठ रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।531।।
ॐ ह्रीं श्री महर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'महितोदय' कहलाए हो, तीर्थंकर पदवी पाए हो।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।532।।
ॐ ह्रीं श्री महितोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' धारी, उपसर्ग परीषह जयकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।533।।
ॐ ह्रीं श्री महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शूर' आप क्षय कर्म किए, तब जगे धर्म के दीप हिए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।534।।
ॐ ह्रीं श्री शूराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाभूतपति' आप कहे, गणधर भी प्रभु तव भक्त रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।535।।
ॐ ह्रीं श्री महाभूतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'गुरू' जगत् के कहलाए, न पार कोई महिमा पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।536।।
ॐ ह्रीं श्री गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महापराक्रम' के धारी, हैं मंगलमय मंगलकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।537।।
ॐ ह्रीं श्री महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने 'अनन्त' गुण प्रगटाए, न महिमा कोई कह पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।538।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्ताय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाक्रोधरिपु' के हन्ता, कहलाए अतिशय भगवन्ता।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।539।।
ॐ ह्रीं श्री महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वशी' आप अतिशयकारी, वश किए स्वयं को अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा।।540।।
ॐ ह्रीं श्री वशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नाम आपका श्रेष्ठतम, 'महाभवाब्धिसंतारि'।
मोक्ष महल में जो बसे, चारों गति निवारि॥541॥

ॐ ह्रीं श्री महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामोहाद्रिसूदन' बने, मोहारि को नाश।
परम सिद्ध पद पा लिए, कीन्हे कर्म विनाश॥542॥

ॐ ह्रीं श्री महामोहद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के कोष हो, 'महागुणाकर' आप।
धर्म निधी हमको मिले, करें नाम का जाप॥543॥

ॐ ह्रीं श्री महागुणकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा आदि गुण धारते, 'क्षान्त' आपका नाम।
गुण पाने तुम सम विशद, चरणों करें प्रणाम॥544॥

ॐ ह्रीं श्री क्षान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए परमात्मा, 'महायोगीश्वर' आप।
नाम आपका हम जपें, नाश किए सब पाप॥545॥

ॐ ह्रीं श्री महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे आपके नित्य ही, 'शमी' शांत परिणाम।
शांती पाने के लिए, बारम्बार प्रणाम॥546॥

ॐ ह्रीं श्री शमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान किए हो श्रेष्ठतम, 'महाध्यानपति' नाथ।
ध्यान शुभम् हम कर सकें, चरण झुकाएँ माथ॥547॥

ॐ ह्रीं श्री महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा के धनी, प्रभो 'ध्यातमहाधर्म'।
मुक्ती पाने के लिए, करें सदा सत् कर्म॥548॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यातमहाधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारण करके अपने, पञ्च 'महाव्रत' श्रेष्ठ।
पार हुए संसार से, पाया धर्म यथेष्ट॥549॥

ॐ ह्रीं श्री महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकर्मअरिहा' किए, कर्म अरि का नाश।
मुक्त हुए वसु कर्म से, कीन्हें ज्ञान प्रकाश॥550॥

ॐ ह्रीं श्री महाकर्मारिघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को जानकर, बने प्रभु 'आत्मज्ञ'।
गुण अनन्त पाए प्रभो, अतिशय हुए गुणज्ञ॥551।

ॐ ह्रीं श्री आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादेव' हो आप जिन, सब देवों के देव।
सब इन्द्रों से पूज्य तुम, करें चरण की सेव॥552॥

ॐ ह्रीं श्री महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाये हो ऐश्वर्य सब, है 'महेशिता' नाम।
कृपा पात्र बनकर रहें, शत्-शत् करें प्रणाम॥553॥

ॐ ह्रीं श्री महेशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वक्लेशापह' प्रभो!, नाशे सर्व क्लेश।
मम क्लेश उपशांत हों, पूजें तुम्हें जिनेश॥554॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए साधना श्रेष्ठतम, 'साधू' आप महान।
संयम का पालन करें, मिले मुझे यह ज्ञान॥555॥

ॐ ह्रीं श्री साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों की खान हैं, 'सर्वदोषहर' देव।
निज गुण पाने के लिए, वन्दू तुम्हें सदैव॥556॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्त्ता पापों के प्रभू, 'हर' पाए प्रभु नाम।
कर्म नाशकर आपने, पाया है निज धाम॥557॥

ॐ ह्रीं श्री हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण असंख्य धारी प्रभू, कहलाए 'असंख्येय'।
हम भी वह गुण पा सकें, मेरा है यह ध्येय॥558॥
ॐ ह्रीं श्री असंख्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रमेयात्मा' हैं प्रभू, गणना के न योग्य।
वह गुण नाशे आपने, जो सब रहे अयोग्य॥559॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत स्वरूपी हैं प्रभू, जिन 'शमात्मा' नाथ।
शांत भाव से हर समय, करता रहूँ प्रणाम॥560॥
ॐ ह्रीं श्री शमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-चामर)

'प्रशमाकर' तव नाम रहा, अतिशय कारी श्रेष्ठ अहा
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥561॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वयोगीश्वर' आप कहे, सब मुनियों में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥562॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अचिन्त्य' महिमाधारी, तुम हो अतिशय गुणकारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥563॥
ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' कहलाए, श्रुत स्वरूपता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥564॥
ॐ ह्रीं श्री श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विष्टरश्रव' जिनदेव कहे, सर्व लोक में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥565॥
ॐ ह्रीं श्री विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्तात्मा' जिन कहलाए, विजय आप निज पर पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥566॥
ॐ ह्रीं श्री दान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'दमतीर्थेश' रहे, सकल परीषहजयी कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥567॥
ॐ ह्रीं श्री दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगात्मा' शुभ नाम अहा, प्रभू आपका श्रेष्ठ रहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥568॥
ॐ ह्रीं श्री योगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसर्वग' तुम हे स्वामी!, मोक्ष महल के अनुगामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥569॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रधान' अतिशय धारी, महिमा जग से है न्यारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥570॥
ॐ ह्रीं श्री प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'आत्मा' कहलाए, निज में निजता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥571॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' आप कहाते हो, निज स्वरूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥572॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' प्रभू हैं लोकजयी, सर्व श्रेष्ठ हैं कर्म क्षयी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥573॥
ॐ ह्रीं श्री परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमोदय' तुम हो स्वामी, घट-घट के अन्तर्यामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥574॥
ॐ ह्रीं श्री परमोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'प्रक्षीणाबंध' कहे, कर्म बन्ध से हीन रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥575॥
ॐ ह्रीं श्री प्रक्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामारी' कहलाए, काम शत्रु पर जय पाये।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥576॥
ॐ ह्रीं श्री कामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'क्षेमकृत्' हो स्वामी, क्षेम किया करते नामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥577॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमशासन' जिन आप रहे, मंगलमय भगवन्त कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥578॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' आपका नाम अहा, प्राणी मात्र से प्रेम रहा।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥579॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' आप कहलाते हो, मंत्र रूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥580॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

मंगलकारी 'प्राण, नाम रहा प्रभू का शुभम्।
दिए जगत को त्राण, दीन बन्धु कहलाए हैं॥581॥
ॐ ह्रीं श्री प्राणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षक जग के ईश, प्रभू आप 'प्राणद' कहे।
झुका रहे हैं शीश, प्राणी चरणों में सभी॥582॥
ॐ ह्रीं श्री प्राणदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के भगवान, 'प्रणतेश्वर' शुभ नाम है।
सारा रहा जहान, चरण शरण का दास यह॥583॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाये सम्यक् ज्ञान, हे 'प्रमाण' ज्ञानी प्रभो।
है ऊँचा स्थान, सर्व लोक में आपका॥584॥
ॐ ह्रीं श्री प्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'दक्ष' है नाम, स्वर्ग कला में 'दक्ष' हो।
बारम्बार प्रणाम, दक्ष बनूँ दो दक्षिणा॥586॥
ॐ ह्रीं श्री दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दक्षिण' विशद जिनेश, जीवन दाता आप हो।
पाने को निज देश, चरण वन्दना हम करें॥587॥
ॐ ह्रीं श्री दक्षिणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों के ईश, तुम 'अध्वर्य' जिनेश हो।
झुका रहे हम शीश, अतः आपके चरण में॥588॥
ॐ ह्रीं श्री अध्वर्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्वर' पाया नाम, शिवपथ के राही बने।
जिन के ऋजु परिणाम, चरण वन्दना हम करें॥589॥
ॐ ह्रीं श्री अध्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए शुभ 'आनन्द', सुख अनन्त के कोष प्रभु।
नाश किए सब द्वन्द, राग-द्वेष अरु मोह तज॥590॥
ॐ ह्रीं श्री आनन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ!, 'नन्दन' आप जिनेश हो।
चरण झुकाएँ माथ, दाता तीनों लोक के॥591॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाते हैं 'नन्द', सुख-शांती के कोष प्रभु।
मेटे सारे द्वन्द, निज स्वभाव में खो गये॥592॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वन्द्य' कहाए आप, वन्दनीय प्रभु लोक में।
नाशे सारे पाप, विशद शुद्ध आदर्श पा॥593॥
ॐ ह्रीं श्री वंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब दोषों से हीन, हे 'अनिन्द्य' तुम लोक में।
अतिशय ज्ञान प्रवीण, गुण अनन्त के पुञ्ज हो॥594॥
ॐ ह्रीं श्री अनिंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग वन्दन के योग्य, 'अभिनन्दन' तव नाम है।
सारे रहे अयोग्य, और लोक में देव जो॥595॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण में किया विनाश, 'कामह' तुमने कर्म का।
लगी हमारी आस, बनें आप जैसे प्रभो!॥596॥
ॐ ह्रीं श्री कामघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग में इष्ट, प्रभु 'कामद' है नाम तव।
नशते सर्व अनिष्ट, नाम जाप से आपके॥597॥
ॐ ह्रीं श्री कामदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमयी जिनेन्द्र, 'काम्य' आप कमनीय हो।
करते इन्द्र नरेन्द्र, तव चरणों में वन्दना॥598॥
ॐ ह्रीं श्री काम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वांछित फल दातार, 'कामधेनु' कहलाए तव।
वन्दन बारम्बार, इच्छा मम पूरण करो॥599॥
ॐ ह्रीं श्री कामधेनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरि का किया विनाश, नाम 'अरिञ्जय' आपका।
कीन्हा लोक प्रकाश, विशद ज्ञान को प्राप्त कर॥600॥
ॐ ह्रीं श्री अरिंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

महा मुन्यादिक नाम रहे शुभ, अन्तिम रहा अरिञ्जय नाम।
भाव सहित हम ध्याते जिनको, करते बारम्बार प्रणाम॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥6॥
ॐ ह्रीं महामुन्यादिशत नामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'असंस्कृत संस्कार' कहाए, प्रभु सारे पाप नशाए।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥601॥
ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्राकृत' जिन गाए, जो ज्ञान स्वभाविक पाए।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥602॥
ॐ ह्रीं अप्राकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'वैकृतान्तकृत' स्वामी, इस जग के अन्तर्यामी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥603॥
ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अन्तःकृत' जिन कहलाते, जो घाती कर्म नशाते।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥604॥
ॐ ह्रीं अंतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'कान्तगु' भाई, होते जो मोक्ष प्रदायी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥605॥
ॐ ह्रीं कांतगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कान्त' कहे जगनामी, होते त्रिभुवन के स्वामी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥606॥
ॐ ह्रीं कांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'चिन्तामणि' है भाई, होते चिन्तित फलदायी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥607॥
ॐ ह्रीं चिन्तामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'अभीष्टद' स्वामी, जो हुए मोक्ष पथगामी।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥608॥
ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अजित' कर्म के जेता, कहलाए कर्म विजेता।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥609॥
ॐ ह्रीं अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जित कामारि' कहाए, जो विजय काम पर पाए।
है नाम मंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥610॥
ॐ ह्रीं जितकामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमित' आप कहलाए, न माप कोई भी पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥611॥
ॐ ह्रीं श्री अमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अमितशासन' कहलाए, अनुपम पदवी को पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥612॥
ॐ ह्रीं श्री अमितशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध कहाए स्वामी, जीते कषाय जग नामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥613॥
ॐ ह्रीं श्री जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जितामित्र' अविकारी, तुम जीते जगती सारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥614॥
ॐ ह्रीं श्री जितामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' आप हो स्वामी, तुम हो जिन अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥615॥
ॐ ह्रीं श्री जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'जितान्तक' भाई, मृत्यु जीते दुखदायी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥616॥
ॐ ह्रीं श्री जितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'जिनेन्द्र' अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥617॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'परमानन्द' सुखारी, हो जन-जन के हितकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥618॥
ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'मुनीन्द्र' कहलाए, मुनियों के स्वामी गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥619॥
ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुन्दुभिस्वन' हे स्वामी, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥620॥
ॐ ह्रीं श्री दुंदुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'महेन्द्रवंद्य' जानो, जग पूज्य प्रभू पहिचानो।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥621॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीन्द्र' हुए अविकारी, इस जग में करुणाकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥622॥
ॐ ह्रीं श्री योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'यतीन्द्र' कहलाए, इस जग में युक्ती पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥623॥
ॐ ह्रीं श्री यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नाभीनन्दन' स्वामी, हो गये मोक्ष पथ गामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥624॥
ॐ ह्रीं श्री नाभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभेय' आप कहलाए, आदिम तीर्थंकर गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥625॥
ॐ ह्रीं श्री नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभिजा' कर्म के नाशी, रवि केवलज्ञान प्रकाशी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥626॥
ॐ ह्रीं श्री नाभिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अजात' हे स्वामी!, हो जन्म रहित शिवगामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥627॥
ॐ ह्रीं श्री अजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सुव्रत’ सुव्रत के धारी, हे महाव्रती! अनगारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥628॥
ॐ ह्रीं श्री सुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘मनु’ सुपथ के दाता, हे कर्मभूमि! विज्ञाता।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥629॥
ॐ ह्रीं श्री मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘उत्तम’ से उत्तम गाए, त्रैलोक्यपती कहलाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥630॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

हे जिन! आप ‘अभेद्य’ कहाए, तुम्हें भेद कोई न पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥631॥
ॐ ह्रीं श्री अभेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! ‘अनत्यय’ आप कहाए, नष्ट नहीं कोई कर पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥632॥
ॐ ह्रीं श्री अनत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी श्रेष्ठ ‘अनाश्वान’ गाए, महिमा पार न कोई पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥633॥
ॐ ह्रीं श्री अनाश्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अधिक’ आपको कहते प्राणी, ऐसा मान रही जिनवाणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥634॥
ॐ ह्रीं श्री अधिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अधिगुरु’ नाम आपने पाया, जन-जन को सद्मार्ग दिखाया।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥635॥
ॐ ह्रीं श्री अधिगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सुगी’ आपकी है शुभ वाणी, प्राणी मात्र की है कल्याणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥636॥
ॐ ह्रीं श्री सुगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘सुमेध’ बुद्धि के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥637॥
ॐ ह्रीं श्री सुमेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘विक्रमी’ जग में आले, सर्व लोक में आप निराले।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥638॥
ॐ ह्रीं श्री विक्रमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्वामी’ आप प्रभो! कहलाए, रक्षक सर्व जहाँ में गाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥639॥
ॐ ह्रीं श्री स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दुराधर्ष’ कलाए स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥640॥
ॐ ह्रीं श्री दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

‘निरुत्सुक’ कहलाए जिनराज, सभी जीवों को तुम पर नाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥641॥
ॐ ह्रीं श्री निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो सारे जग को इष्ट, अतः कहलाए आप ‘विशिष्ट’।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥642॥
ॐ ह्रीं श्री विशिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘शिष्टभुक्’ कहते हैं कई लोग, शिष्टता का पाये संयोग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥643॥
ॐ ह्रीं श्री शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्ट' है प्रभु का अतिशय नाम, शिष्ट हो करते चरण प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥644॥
ॐ ह्रीं श्री शिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य के 'प्रत्यय' हो हे नाथ!, झुकाते तव चरणों हम माथ।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥645॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! कहलाए 'कामनीय' आप, दर्श कर मिटते हैं अभिशाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥646॥
ॐ ह्रीं श्री कामनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु! 'अनघा' हो पाप विहीन, पुण्य के फल में रहते लीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥647॥
ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमि' है प्रभो! आपका नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥648॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के 'क्षेमंकर' जिनराज, चरण में झुकता सकल समाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥649॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अक्षय' हो क्षय से हीन, लोक में रहते हो स्वाधीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥650॥
ॐ ह्रीं श्री अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू हो 'क्षेमधर्मपति' आप, नशाने वाले सारे पाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥651॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षमी' हो जग में आप विशेष, क्षमा का देते हो संदेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥652॥
ॐ ह्रीं श्री क्षमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम हो जग में 'अग्राह्य', जगत में रहते जग से बाह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, जाश हों मेरे सारे पाप॥653॥
ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप का नाम 'ज्ञाननिग्राह्य' नहीं हो अज्ञानी के ग्राह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥654॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञाननिग्रह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'ज्ञानसुगम्य' जिनेश, जानते ज्ञानी तुम्हें विशेष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥655॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुत्तर' तुम हो प्रभू विशेष, नहीं तुम सम कोइ और जिनेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥656॥
ॐ ह्रीं श्री निरुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सुकृति' हो अतिशयकार, श्रेष्ठ हो सुकृति के आधार।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥657॥
ॐ ह्रीं श्री सुकृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' हो तुम हे जिन! भगवन्त, शब्द के ज्ञाता आप अनन्त।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥658॥
ॐ ह्रीं श्री धातवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'इज्यार्ह' कहें कई लोग, पूज्य हो तुम पूजा के योग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥659॥
ॐ ह्रीं श्री इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनय' तुम नय के हो सापेक्ष, कुनय से पूर्ण रहे निरपेक्ष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥660॥
ॐ ह्रीं श्री सुनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

जिनवर 'श्रीनिवास' कहलाए, श्री में प्रभु जी धाम बनाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥661॥
ॐ ह्रीं श्री सुनिवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुरानन' ब्रह्मा तुम स्वामी, मोक्ष मार्ग के हो अनुगामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥662॥
ॐ ह्रीं श्री चतुराननाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर देखें, अपना स्वामी प्रभु जी लेखें।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥663॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्वक्त्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' करें पद वन्दन, जन्म-जरादीका हो खण्डन।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥664॥
ॐ ह्रीं श्री चतुरास्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'चतुर्मुख' आप कहाए, चउ दिशि दर्शन सबने पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥665॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी, आप कहाए हो चिद्रूपी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥666॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यात्मने नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यविज्ञान' आप कहलाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥667॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यविज्ञानाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यवाक्' कहलाते स्वामी, वाक् सुधामृत देते नामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥668॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यवाचे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सत्यशासन' कहलाए, भवि जीवों के भाग्य जगाये।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥669॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यशासनाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्याशीष' है नाम तुम्हारा, सर्व जहाँ में अपरम्पारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥670॥
ॐ ह्रीं श्री सत्याशिषे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसंधान' आप कहलाए, तीन लोक की प्रभुता पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥671॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यसंधानाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्य' नाम पाए तुम स्वामी, हुए जहाँ में अन्तर्यामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥672॥
ॐ ह्रीं श्री सत्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' आप कहाए, जन-जन को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥673॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यपरायणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' स्थिर हो स्वामी, अविकारी हे अन्तर्यामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥674॥
ॐ ह्रीं श्री स्थेयसे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' महिमा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥675॥
ॐ ह्रीं श्री स्थवीयसे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेदियान्' प्रभु आप कहाए, अतिशय महिमा को दिखलाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥676॥
ॐ ह्रीं श्री नेदीयसे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दवीयान्' है नाम तुम्हारा, सारे जग का संकटहारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥677॥
ॐ ह्रीं श्री दवीयसे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दूरदर्शन' कहलाते, दूर से दर्शन प्राणी पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥678॥
ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शनाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अणोरणीयान्' कहाते, नहीं दृष्टिगोचर हो पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥679॥
ॐ ह्रीं श्री अणोरणीयसे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' कहते तुमको प्राणी, ऐसी है शुभ आगम वाणी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥680॥
ॐ ह्रीं श्री अनणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'गुरुराद्यगरीयसा' गाए, इस जग के गुरू कहाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥681॥
ॐ ह्रीं श्री गरीयसमाद्यगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदायोग' हैं आले, चेतन में रमने वाले।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥682॥
ॐ ह्रीं श्री सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदाभोग' हैं स्वामी, हैं प्रातिहार्य अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥683॥
ॐ ह्रीं श्री सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदातृप्त' कहलाते, तृप्ती भोगों से पाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥684॥
ॐ ह्रीं श्री सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदागती' के धारी, पञ्चम गति प्यारी-प्यारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥686॥
ॐ ह्रीं श्री सदागतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदासौख्य' शुभपाया, यह है संयम की माया।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥687॥
ॐ ह्रीं श्री सदासौख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'सदाविद्य' जिन स्वामी, मुक्ती पथ के अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥688॥
ॐ ह्रीं श्री सदाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'सदोदय' भाई, यह है प्रभु की प्रभुताई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥689॥
ॐ ह्रीं श्री सदोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'सुघोष' कहलाए, शुभ दिव्य ध्वनि सुनाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥690॥
ॐ ह्रीं श्री सुघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' के धारी, छवि सुन्दर अतिशयकारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥691॥
ॐ ह्रीं श्री सुमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' मूर्ति कहलाए, जिन श्रेष्ठ सौम्यता पाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥692॥
ॐ ह्रीं श्री सौम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुखद' सुखों के धारी, सुखदायी हो अनगारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥693॥
ॐ ह्रीं श्री सुखदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुहित' सु हितकर गाए, जो शास्वत सुख उपजाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥694॥
ॐ ह्रीं श्री सुहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सुहृत' हितू कहलाए, जग हित करने को आए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥695॥
ॐ ह्रीं श्री सुहृदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'सुगुप्त' जिन स्वामी, तव चरणों में प्रणमामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥696॥
ॐ ह्रीं श्री सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'गुप्तिभृत' गाए, निज आतम प्रभुता पाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥697॥
ॐ ह्रीं श्री गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'गोप्ता' पाए, रक्षक जग के कहलाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥698॥
ॐ ह्रीं श्री गोप्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकाध्यक्ष' कहाते, जो व्याधि उपाधि नशाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।699।।
ॐ ह्रीं श्री लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कहे 'दमेश्वर' भाई, निज के ऊपर जय पाई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी।।700।।
ॐ ह्रीं श्री दमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

श्री असंस्कृत संस्कार आदि शुभ, रहा दमेश्वर अंतिम नाम।
भाव सहित हम ध्याते इनको, करते बारम्बार प्रणाम।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।7।।
ॐ ह्रीं असंस्कृत संस्कारादि शत नामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'वृहद् बृहस्पति' आप कहाए, सुरपति मिलकर शरण में आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।701।।
ॐ ह्रीं श्री वृहदबृहस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वाग्मी' आप कहाए, श्रेष्ठ वचन सुनने तव आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।702।।
ॐ ह्रीं श्री वाग्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाचस्पति' हे अतिशयकारी!, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।703।।
ॐ ह्रीं श्री वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'उदारधी' जग के स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।704।।
ॐ ह्रीं श्री उदारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ट 'मनीषी' प्रभु कहलाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।705।।
ॐ ह्रीं श्री मनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धिषण' आपको कहते भाई, प्रभु सर्वज्ञता तुमने पाई।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।706।।
ॐ ह्रीं श्री धिषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आप 'धीमान्' कहाए, कौन आपकी महिमा गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।707।।
ॐ ह्रीं श्री धीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' हो जग के त्राता, अतिशयकारी भाग्य विधाता।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।708।।
ॐ ह्रीं श्री शेमुषीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गिरांपति' प्रभु जी कहलाए, सब भाषामय ध्वनी सुनाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।709।।
ॐ ह्रीं श्री गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकरूप' प्रभु आप कहाए, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गाये।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।710।।
ॐ ह्रीं श्री नैकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' तुमको सब जानें, नय के ज्ञाता तुमको मानें।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।711।।
ॐ ह्रीं श्री नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' त्रिभुवन के स्वामी, गुण पाये तुमने प्रभु नामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।712।।
ॐ ह्रीं श्री नैकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकधर्मकृत' आप कहाए, धर्म अनेक वस्तु में गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।713।।
ॐ ह्रीं श्री नैकधर्मकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अविज्ञेय’ जिन प्रभु कहलाए, महिमा कोई जान न पाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥714॥
ॐ ह्रीं श्री अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अप्रतर्क्यात्मा’ तुम स्वामी, तर्क रहित हो अन्तर्यामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥715॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘कृतज्ञ’ तव महिमा न्यारी, जन-जन के हो करुणाकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥716॥
ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘कृतलक्षण’ है नाम तुम्हारा, लगता सबको प्यारा-प्यारा।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥717॥
ॐ ह्रीं श्री कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘ज्ञानगर्भ’ स्वामी कहलाए, निज का अतिशय ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥718॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दयागर्भ’ त्रिभुवन में गाए, प्राणी मात्र पर दिया दिखाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥719॥
ॐ ह्रीं श्री दयागर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘रत्नगर्भ’ महिमा के धारी, वर्षे रत्न गर्भ में भारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥720॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

हे नाथ! ‘प्रभास्वर’ कहे आप, त्रैलोक्य प्रकाशी रहित पाप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥721॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘पद्मगर्भ’ तुम हो अनन्त, निज किया गर्भ का पूर्ण अन्त।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥722॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘जगद्गर्भ’ जग में महान्, तुमने पाए थे तीन ज्ञान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥724॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे देव! ‘सुदर्शन’ कहे आप, तव दर्शन से कट जाँय पाप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु! हम मुक्तिराज॥725॥
ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘लक्ष्मीवान्’ त्रैलोक्य नाथ, सब वन्दन करते जोड़ हाथ।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥726॥
ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘त्रिदशाध्यक्ष’ जग में महान, अतिशयकारी गुण के निधान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥727॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘दृढ़ीयान’ दृढ़ हो अनूप, सुर-नर झुकते तव चरण भूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥728॥
ॐ ह्रीं श्री दृढ़ीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘इन’ त्रिभुवन के रहे ईश, जग जीव झुकाते चरण शीश।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥729॥
ॐ ह्रीं श्री इनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘ईशित’ तुम हो जग में जिनेश, सब दोष निवारक हो विशेष।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥730॥
ॐ ह्रीं श्री ईशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है श्रेष्ठ ‘मनोहर’ विशद रूप, अतिशयकारी जग में अनूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥731॥
ॐ ह्रीं श्री मनोहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ‘मनोज्ञांग’ हो सुभग रूप, सुख-शांति प्रदायक शांत रूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥732॥
ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धीर' वीर गुण के निधान, त्रिभुवन के ज्ञाता हो महान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥733॥
ॐ ह्रीं श्री धीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गम्भीर शासन' तव है विशेष, न तुम सम कोई है जिनेश।
तव नाम मंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥734॥
ॐ ह्रीं श्री गम्भीरशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमयूप' जग में प्रधान, तुम गुण रत्नों के हो निधान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥735॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दयायाग' सुखप्रद जिनेश, तुम नाश किए सब राग-द्वेष।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥736॥
ॐ ह्रीं श्री दयायागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमनेमि' जिनवर महान्, तुम धर्म धुरी जग में प्रधान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥737॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनेमये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'मुनीश्वर' रहे आप, अविकारी नाशे सर्व पाप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥738॥
ॐ ह्रीं श्री मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धर्मचक्रायुध' धर्म रूप, इस से भी हो तुम प्रथकरूप।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥739॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'देव' परम गुण के निधान, तुम जगत पूज्य जग में महान।
तव नाम मंत्र हम जपें आज पावें हे प्रभु हम मुक्तिराज॥740॥
ॐ ह्रीं श्री देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

जिन कहे 'कर्महा' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥741॥
ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'धर्म घोषण' कहलाए, प्रभु धर्म के ईश कहाए॥
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥742॥
ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'अमोघ वच' कहते, जो लीन स्वयं में रहते।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥743॥
ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमोघाज्ञ' कहलाए, निज आतम ज्ञान जगाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥744॥
ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'निर्मल' हैं अविकारी, प्रभु विशद के ज्ञान के धारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥745॥
ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अमोघ शासन' कहलाए, निज के शासक जिन गाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥746॥
ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'सुरूप' कहाए, अतिशय स्वरूपता पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥747॥
ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुभग' कहे जगनामी, कहलाए अन्तर्यामी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥748॥
ॐ ह्रीं सुभगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'त्यागी' कहलाए, जो त्याग पूर्णतः पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥749॥
ॐ ह्रीं त्यागिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समयज्ञ' रहे अविकारी, जो हैं अतिशय के धारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥750॥
ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'समाहित' गाये, तुममे यह विश्व समाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥751॥
ॐ ह्रीं समाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुस्थित' आप कहाए, निज में स्थिरता पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥752॥
ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्वस्थ भाक्' कहलाए, निज के गुण निज में पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥753॥
ॐ ह्रीं स्वस्थयभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'स्वस्थ' आप जगनामी, तुम बने मोक्ष पथगामी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥754॥
ॐ ह्रीं स्वस्थ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नीरजस्क' अविकारी, तुम बने श्रेष्ठ गुणकारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥755॥
ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'निरुद्धव' माने, हम आए अतः गुण गाने।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥756॥
ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अलेप' हे स्वामी, हे नाथ! मोक्ष पथगामी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥757॥
ॐ ह्रीं अलेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कलंक' कहलाए, ना दोष कोई छू पाए।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥758॥
ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'वीतराग' अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥759॥
ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे 'गतस्पृह' भाई, जन-जन के मोक्ष प्रदायी।
जिन नाम मंत्र को ध्याते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥760॥
ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'वश्येन्द्रिय' भगवान, इन्द्री वश में कर लिए।
बनने आप समान, आए दर पे इसलिए॥761॥
ॐ ह्रीं श्री वश्येन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए कर्म से मुक्त, 'विमुक्तात्मन' हे प्रभो!।
गुणानन्त से युक्त, अनन्त चतुष्टय पा लिए॥762॥
ॐ ह्रीं श्री विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष से हीन, 'निःसपत्न' कहलाए तुम।
किया मोह को क्षीण, निजानन्द में लीन हो॥763॥
ॐ ह्रीं श्री निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविकारी भगवान, आप 'जितेन्द्रिय' हो गये।
जग में हुए महान, जीते इन्द्रिय के विषय॥764॥
ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म सभी निर्मूल, हे 'प्रशान्त' तुमने किए।
हे जिनेन्द्र! अनुकूल, मोक्ष मार्ग मेरा करो॥765॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषियों के सरताज, प्रभु 'अनन्तधामर्षि' तुम।
करती सकल समाज, चरण कमल में वन्दना॥766॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तधामर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश, मंगलमय 'मंगल' परम।
चरणों में धर शीश, वन्दन करते भाव से॥767॥
ॐ ह्रीं श्री मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए आप भगवान, 'मलहा' नाशी पाप के।
जग में हुए महान, कर्म मैल को धो प्रभु॥768॥
ॐ ह्रीं श्री मलघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीन्हा पूर्ण विनाश, 'अनघ' आपने पाप का।
कीन्हा शिवपुर वास, चेतन शक्ती प्रकट कर॥769॥

ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में उपमातीत, नाथ! 'अनीदृक्' आप हो।
रखता है जग प्रीत, श्रेष्ठ गुणों से आपके॥770॥

ॐ ह्रीं श्री अनीदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय 'उपमाभूत', नाथ आपका नाम शुभ।
करते हैं आहूत, अतः हृदय में आपको॥771॥

ॐ ह्रीं श्री उपमाभूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय हुए महान, 'दिष्ट' आप इस लोक में।
गुण अनन्त की खान, नित्य निरंजन श्रेष्ठतम॥772॥

ॐ ह्रीं श्री दिष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा अपरम्पार, 'दैव' आपकी जगत में।
कर देते भवपार, शरणागत को शीघ्र ही॥773॥

ॐ ह्रीं श्री दैवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में किया विहार, नाथ! 'अगोचर' आप हो।
महिमा का नहिं पार, कमल चरण तल सुर रचें॥774॥

ॐ ह्रीं श्री अगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमूर्त' जिनराज, रूपादिक से शून्य तुम।
आन सम्हारो काज, राह दिखाओ नाथ अब॥775॥

ॐ ह्रीं श्री अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अपरम्पार, 'मूर्तिमान' तुम मूर्त हो।
पाया शुभ आधार, परमौदारिक देह का॥776॥

ॐ ह्रीं श्री मूर्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे जगत में एक, 'एक' अनादी आप हो।
धारे रूप अनेक, जग में रहकर के स्वयं॥777॥

ॐ ह्रीं श्री एकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं गणनातीत, 'नैक' आपके गुण कई।
रखते चरणों प्रीत, गुण पाने प्रभु आपके॥778॥

ॐ ह्रीं श्री नैकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र तीर्थेश, 'नानेक तत्त्व दृष्टा' कहे।
धार दिगम्बर भेश, किए कर्म का नाश जिन॥779॥

ॐ ह्रीं श्री नानेक तत्त्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म तत्त्व के कोष, 'अध्यात्मगम्या' हो तुम्हीं।
जो होते निर्दोष, तव स्वरूप पावें वही॥780॥

ॐ ह्रीं श्री अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'अगम्यात्मा' प्रभु कहलाए, मिथ्या ज्ञानी जान न पाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥781॥

ॐ ह्रीं श्री अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'योगविद्' अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के प्रभु अनुगामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥782॥

ॐ ह्रीं श्री योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'योगिवंदित' कहलाए, मुक्ति वधु के स्वामी गाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥783॥

ॐ ह्रीं श्री योगिवंदिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' हे जग के स्वामी, वन्दनीय हो जग में नामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥784॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वत्रगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' कहलाए, नित्य रूपता प्रभु जी पाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥785॥

ॐ ह्रीं श्री सदाभाविने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'त्रिकालविषयार्थदृक्' गाए, त्रैकालिक वस्तु प्रगटाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।786।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंकर' आप रहे सुखदाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।787।
ॐ ह्रीं श्री शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवद' हो अतिशय सुखकारी, वन्दनीय हो मंगलकारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।788।।
ॐ ह्रीं श्री शंवदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्त' आप इन्द्रिय के जेता, मन मर्कट के रहे विजेता।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।789।।
ॐ ह्रीं श्री दांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दमी' इन्द्रियों को तुम दमते, अतः लोग चरणों में नमते।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।790।।
ॐ ह्रीं श्री दमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' क्षमा के धारी, क्षमा धारते हो अनगारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।791।।
ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिप' आपको कहते प्राणी, जन-जन के हो तुम कल्याणी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।792।।
ॐ ह्रीं श्री अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमानंद' आपने पाया, निजानंद को तुमने ध्याया।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।793।।
ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मज्ञ' आप कहलाए, पर को निज सम आप बनाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।794।।
ॐ ह्रीं श्री परमात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परात्पर' हो अविकारी, श्रेष्ठ जगत में मंगलकारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।795।।
ॐ ह्रीं श्री परात्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगद्वल्लभ' हो तुम स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।796।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अभ्यर्च्य' पूज्यता पाए, सुर नर मुनि से पूज्य कहाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।797।।
ॐ ह्रीं श्री अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगन्मंगलोदय' अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।798।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' स्वामी, पूज्य शतेन्द्रों से जग नामी।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।799।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोकाग्रशिखामणि' आप कहाए, शिवपुर नगरी धाम बनाए।
नामावली पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए।।800।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

वृहद् वृहस्पति आदि नाम सौ, श्री जिनेन्द्र के हैं पावन।
जग का मंगल करने वाले, कहे गये हैं मन भावन।।
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना गाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।8।।
ॐ ह्रीं वृहद वृहस्पत्यादिशत् नामेभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप)

हे 'त्रिकालदर्शि' तुम सब पदार्थ जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते।।801।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'लोकेश' आप, सर्व लोक जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥802॥
ॐ ह्रीं श्री लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' आप हो, श्रेष्ठ व्रत धारते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥803॥
ॐ ह्रीं श्री लोकधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़व्रत' हो लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥804॥
ॐ ह्रीं श्री दृढ़व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग', लोग तुम्हें जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥805॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूज्य' आप लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥806॥
ॐ ह्रीं श्री पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकैकसारथी', कर रहे हम आरती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥807॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पुराण' आपको ये सृष्टी पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥808॥
ॐ ह्रीं श्री पुराणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुष' नाम आत्मा, अनादि से धारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥809॥
ॐ ह्रीं श्री पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूर्व' नाम आपका, ये जगती पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥810॥
ॐ ह्रीं श्री पूर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतपूर्वांगविस्तर' हो अंग पूर्ण धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥811॥
ॐ ह्रीं श्री कृतपूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आदिदेव' आप हो, हे जिन धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥812॥
ॐ ह्रीं श्री आदिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' आप हो, समता के धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥813॥
ॐ ह्रीं श्री पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरूदेव' आप रहे, हो कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥814॥
ॐ ह्रीं श्री पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिदेवता' की है, महिमा कुछ न्यारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥815॥
ॐ ह्रीं श्री अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' आप हो, युग के अवतारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥816॥
ॐ ह्रीं श्री युगमुख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' युग के, हो श्रेष्ठ धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥817॥
ॐ ह्रीं श्री युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक', हे देशना के धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥818॥
ॐ ह्रीं श्री युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणवर्ण', जग में कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥819॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! ' 'कल्याण' करो, आये हैं पुजारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी।।820।।
ॐ ह्रीं श्री कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप

नाम 'कल्य' आपको, जीव सभी जानते।
लोक पूज्य आपको, भव्य जीव मानते।।821।।
ॐ ह्रीं कल्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कल्याण लक्षण' आप गाए हैं।
करो कल्याण आप, शरण हम आए हैं।।822।।
ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कल्याण प्रकृति' कहलाए हैं।
दर्शकर आपका जीव सौख्य पाए हैं।।823।।
ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप 'कल्याण आतमा', आप सिद्ध हो।
तीन लोक में नाथ आप ही प्रसिद्ध हो।।824।।
ॐ ह्रीं दीपप्रकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विकल्मश' श्रेष्ठ आपका नाम है।
भव्य जीव चरणें करते प्रणाम हैं।।825।।
ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विकलंक' आप, सर्व कर्म हानते।
भव्य जीव आपको, देव श्रेष्ठ मानते।।826।।
ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कलातीत' आपकी, महिमा अपार है।
नाथ आपके सर्व गुण, का ना पार है।।827।।
ॐ ह्रीं कलातीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कलिलघ्न' नाथ! आप कल्याणकारी।
तव पाद पद्म में, है वन्दना हमारी।।828।।
ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कलाधार' आप सब ही, कलाएँ जानते।
भव्य जीव आपको, जग ज्येष्ठ मानते।।829।।
ॐ ह्रीं कलाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देव देव' आपकी, कर रहे सब आरती।
दिव्य ध्वनी आपकी है पूजनीय भारती।।830।।
ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगन्नाथ' आपकी है, महिमा कुछ न्यारी।
आपको द्वय चरणों है, वन्दना हमारी।।831।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्‌बन्धु' सब, बन्धुओं के नाथ है।
आपके सुपाद सब, झुका रहें माथ।।832।।
ॐ ह्रीं जगद्बंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद् विभु' आपकी, महिमा अपार है।
अर्चना कर आपकी, होता उपकार हैं।।833।।
ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जग हितैशी' नाथ!, आपका शुभ नाम है।
आपके चरण द्वय, मेरा प्रणाम है।।834।।
ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

हे 'लोकज्ञ' जगत के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी।।835।।
ॐ ह्रीं श्री लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वग' आप हितकारी, व्याप्त लोक में हो अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥836॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदग्रज' हे अन्तर्यामी, ज्येष्ठ लोक में हो तुम स्वामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥837॥
ॐ ह्रीं श्री जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'चराचरगुरू' कहाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥838॥
ॐ ह्रीं श्री चराचरगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोप्य' आप गुप्ती के धारी, रक्षक हो तुम विस्मयकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥839॥
ॐ ह्रीं श्री गोप्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़ात्मा' हे नाथ! कहाए, इन्द्रिय गोचर न हो पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥840॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़ात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़सुगोचर' तुम हो स्वामी, ज्ञानी जन हैं तव अनुगामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥841॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़गोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सद्योजात' आप कहलाए, भेष दिगम्बर प्रभु जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥842॥
ॐ ह्रीं श्री सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रकाशात्मा' जिनदेवा, सुर नर करें आपकी सेवा।
नाम मंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥843॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हे स्वामी!, कांतिमान हे अन्तर्यामी!।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥844॥
ॐ ह्रीं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आदित्यवर्ण' कहलाए, सहस रश्मि सम कांती पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥845॥
ॐ ह्रीं श्री आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भर्माभ' श्रेष्ठ छवि धारी, महिमा है इस जग से न्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥846॥
ॐ ह्रीं श्री भर्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रभ' अतिशय शोभा पाते, सूर्य चन्द्रमा कई लजाते।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥847॥
ॐ ह्रीं श्री सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनकप्रभ' तव दीप्ति निराली, तप्त स्वर्ण समकांती वाली।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥848॥
ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुवर्णवर्ण' तव महिमा न्यारी, दीप्तिमान हो जिन अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥849॥
ॐ ह्रीं श्री सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'रुक्माभ' स्वर्ण छविधारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥850॥
ॐ ह्रीं श्री रुक्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यकोटिसमप्रभ' तुम स्वामी, दयानिधी हे अन्तर्यामी!।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥851॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपनीयनिभ' प्रभु कहलाए, तप्त स्वर्ण सम आभा पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥852॥
ॐ ह्रीं श्री तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च देह धर 'तुंग' कहाए, पद सर्वोच्च प्रभू जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥853॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभो' यह जग जाने, उचित सूर्य सम कांति माने।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥854॥
ॐ ह्रीं श्री बालार्काभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनलप्रभ' हो अन्तर्यामी, निर्मल कांती है तव नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥855॥
ॐ ह्रीं श्री अनलप्रभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'संध्याभ्रबभ्रू' छवि धारी, है छवि सांझ के रवि सम प्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥856॥
ॐ ह्रीं श्री संध्यायभ्रबभ्रवे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमाभ' आप कहलाए, स्वर्ण समान देह प्रभु पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥857॥
ॐ ह्रीं श्री हेमाभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्ताचामीकरप्रभ' हे स्वामी!, हेम वर्ण धारी तुम नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥858॥
ॐ ह्रीं श्री तप्तचामीकरप्रभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्टप्तकनकच्छाय' कहाए, यहाँ दीप्ति धारी कहलाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥859॥
ॐ ह्रीं श्री निष्टप्तकनकच्छायाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कनत्कांचनसन्निभ' देही, पाकर भी हो तुम वैदेही।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥860॥
ॐ ह्रीं श्री कनत्कांचनसन्निभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्य वर्ण' जिननाथ निराले, स्वर्णिम श्री जिन कांती वाले।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥861॥
ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव आप 'स्वर्णाभ' कहाए, पावन स्वर्ण छवि को पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥862॥
ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतकुंभनिभप्रभ' हे स्वामी, इस जग के हो अन्तर्यामी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥863॥
ॐ ह्रीं शांतकुंभनिभप्रभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम श्रेष्ठ 'द्युम्नाभ' कहाया, तुमने अतुल कांति को पाया।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥864॥
ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूपाभ' आप जगनामी, बने आप मुक्ती पथ गामी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥865॥
ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बूनद द्युति' के धारी, जग जीवों के करुणाकारी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥866॥
ॐ ह्रीं तप्तजांबूनदद्युतये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुधोत कलधोत श्री' के स्वामी, इस जग में प्रभु आप अकामी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥867॥
ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रदीप्त' सद् ज्ञान जगाए, तीन लोक में प्रभुता पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥868॥
ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हाटकधुति' हे नाथ कहाए, महिमा सारा जग यह गाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥869॥
ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शिष्टेष्ट' आप हो ज्ञानी, तव वाणी जग की कल्याणी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥870॥
ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्टिद' नाम आपका प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥871॥
ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्ट' आप हो मंगलकारी, जन-जन के प्रभु हो उपकारी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥872॥
ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आप 'स्पष्ट' कहाते, जग जीवों से पूजे जाते।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥873॥
ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्पष्टाक्षर' तुम कहलाए, अक्षर ज्ञान आप से पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥874॥
ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आपका 'क्षम' शुभकारी, क्षमा आदि गुणधर अविकारी।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥875॥
ॐ ह्रीं क्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आप 'शत्रुघ्न' कहाए, नहीं शत्रुता जग में पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥876॥
ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्रतिघ' आप कहाए, जग से न्यारे प्रभुता पाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥877॥
ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमोघ' तुम जग के जेता, आप कहाए कर्म विजेता।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥878॥
ॐ ह्रीं अमोघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'प्रशस्ता' आप निराले, जन-जन का मन हरने वाले।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥879॥
ॐ ह्रीं प्रशस्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शासिता' जग में गाए, शासन तव जयवंत कहाए।
नाम आपके मंगलकारी, पूँजे इस जग के नर नारी॥880॥
ॐ ह्रीं शासित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जाने जग के जीव सब, 'स्वभू' आपको देव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥881॥
ॐ ह्रीं श्री स्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांती के दाता कहे, 'शांतिनिष्ठ' जिनदेव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥882॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मुनियों में बड़े हो, 'मुनिज्येष्ठ' हे नाथ।
नाम मंत्र को पूजते, चरण झुकाकर माथ॥883॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव के कर्त्ता आप हो, 'शिवताति' हे नाथ।
नाम मंत्र को पूजते चरण झुकाकर माथ॥884॥
ॐ ह्रीं श्री शिवतातये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवकारी इस लोक में, 'शिवप्रद' कहे जिनेश॥
उत्तम तप को धारकर, नाशे कर्म अशेष॥885॥
ॐ ह्रीं श्री शिव प्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शांतिद' लोक में, कहलाए जिनदेव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥886॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांती इस जग में करो, 'शांतिकृत' हे नाथ!।
नाम मंत्र को पूजते, चरण झुकाकर माथ॥887॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में शांती करो, 'शांती' दाता नाथ!।
नाम मंत्र को पूजते, चरण झुकाकर माथ॥888॥
ॐ ह्रीं श्री शांतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांति के धारी अहा, 'कांतिमान' जिनदेव।
तव चरणों में विनत हो, वन्दू चरण सदैव॥889॥
ॐ ह्रीं श्री कांतिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण मनोरथ कीजिए, 'कामितप्रद' भगवान।
नाम मंत्र को आपके, करें विशद गुणगान॥890॥
ॐ ह्रीं श्री कामितप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेय हमें प्रभु दीजिए, 'श्रेयोनिधि' गुणखान।
तव चरणों में विनत हो, करें विशद गुणगान॥891॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनिधे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म के मूल हो, 'अधिष्ठान' जिनदेव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥892॥
ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजित फिर भी लोक में, 'अप्रतिष्ठ' हे देव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥893॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में हर समय, रहे 'प्रतिष्ठित' आप।
शिव सुख पाने के लिए, करें नाम का जाप॥894॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहते निज स्वभाव में, 'सुस्थिर' आप सदैव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥895॥
ॐ ह्रीं श्री सुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थित रहते हर समय, 'स्थावर' जिनराज।
श्री जिनके शुभ नाम पर, यह जग करता नाज॥896॥
ॐ ह्रीं श्री स्थावराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल अटल अविकार हो, 'स्थाणु' हे देव।
नाम मंत्र को आपके, वन्दू चरण सदैव॥897॥
ॐ ह्रीं श्री स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक में पूज्य हो, 'प्रथीयान्' तव नाम।
'विशद' गुणों के कोष तुम, बारम्बार प्रणाम॥898॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर में गमन से, 'प्रथित' मिले विश्राम।
नाम मंत्र तव पूजते, बारम्बार प्रणाम॥899॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में श्रेष्ठ है, 'पृथु' आपका धाम।
पूजा करते भाव से, बारम्बार प्रणाम॥900॥
ॐ ह्रीं श्री पृथवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

प्रभु त्रिकाल दर्शी आदिक शुभ, सौ नामों के धारी आप।
भाव सहित तव अर्चा करने, से कट जाते सारे पाप॥
सौ नामों के द्वारा श्री जिन, का यह किया विशद गुणगान।
अन्तिम यही भावना भाते, पाएँ हम भी पद निर्वाण॥9॥
ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादि शत नामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द–लोलतरंग)

'दिग्वासा' दिश ही अम्बर है, धारें ऐसी मुद्रा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥901॥
ॐ ह्रीं श्री दिग्वाससे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वातरशन' तव नाम जिनेश, कहाते हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥902॥
ॐ ह्रीं श्री वातरशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्ग्रंथेश' जिनेश अशेष, परिग्रह तुमने छोड़ा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥903॥
ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रंथेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दिगम्बर' हो जिनराज, दिशाएँ अम्बर हैं तव नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥904॥
ॐ ह्रीं श्री दिगम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' किन्चित परिग्रह से, हीन कहे हैं अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥905॥
ॐ ह्रीं श्री निष्किंचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराशंस' इच्छा के त्यागी, कहलाए हैं मेरे स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥906॥
ॐ ह्रीं श्री निराशंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानचक्षु' हैं केवल ज्ञानी, आप हुए हो शिवपुर गामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥907॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अमोमुह' आप कहाए, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥908॥
ॐ ह्रीं श्री अमोमुहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनन्तौज' तुम तेज पुंज के, धारी हो हे जिनवर स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥910॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानाब्धि' हे ज्ञान सरोवर, आप कहाए अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥911॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'शीलसागर' हे स्वामी। आप हुए हो शील के स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥912॥
ॐ ह्रीं श्री शीलसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' शुभ तेज पुंज हे, अतिशय तेज रूप धर नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥913॥
ॐ ह्रीं श्री तेजोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योत' हे ज्योति स्वरूपी, पावन केवल ज्ञान के स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥914॥
ॐ ह्रीं श्री अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ति' ज्योर्तिमय अनुपम, मंगलमय पावन हे स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥915॥
ॐ ह्रीं श्री ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'तमोपह' आप कहाए, मोहारि के नाशकज्ञानी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥916॥
ॐ ह्रीं श्री तमोपहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगच्चूड़ामणि' अनुपम, तीन लोक में अतिशय नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥917॥
ॐ ह्रीं श्री जगच्चूड़ामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दीप्ति' आप दैदीप्यात्मा हो, अतिशय प्रभु हे अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥918॥
ॐ ह्रीं श्री दीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शंवान्' सौख्य शांतीमय, पावन हो समता मय स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥919॥
ॐ ह्रीं श्री शंवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्नविनायक' आप प्रभू हो, इस जग में विघ्नों के नाशी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ती पथगामी॥920॥
ॐ ह्रीं श्री विघ्नविनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

प्रभु 'कलिघ्न' आप कहलाए, सब विघ्नों को दूर भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥921॥
ॐ ह्रीं श्री कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मशत्रुघ्न' नाम के धारी, चऊ कर्मों के नाशनकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥922॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकप्रकाशक' ज्ञानी, वाणी तव जग की कल्याणी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥923॥
ॐ ह्रीं श्री लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनिद्रालू' जिन स्वामी, मोहक्षयी मुक्ति पथगामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥924॥
ॐ ह्रीं श्री अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अतन्द्रालू' कहलाए, आलस तंद्रा पर जय पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥925॥
ॐ ह्रीं श्री अतंद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जागरूक' तुम जाग्रत रहते, हर उपसर्ग परीषह सहते।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥926॥
ॐ ह्रीं श्री जागरूकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'प्रमामय' ज्ञान के धारी, गुण अनन्त के हो अधिकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥927॥
ॐ ह्रीं श्री प्रमामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्ष्मीपति' आप हो स्वामी, अनन्त चतुष्टय पाये नामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥928॥
ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' हो मंगलकारी, अतिशय ज्ञान ज्योति के धारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥929॥
ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मराज' है नाम तुम्हारा, भवि जीवों को तारण हारा।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥930॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रजाहित' करने वाले, जग जीवों के हो रखवाले।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥931॥
ॐ ह्रीं श्री प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मुमुक्षु' भी कहलाए, मोक्ष की इच्छा भी न पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥932॥
ॐ ह्रीं श्री मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बन्धमोक्षज्ञ' प्रभू कहलाए, बन्ध मोक्ष की विधि बतलाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥933॥
ॐ ह्रीं श्री बंधमोक्षज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जिताक्ष' इन्द्रिय मन जेता, मोहादिक वसु कर्म विजेता।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥934॥
ॐ ह्रीं श्री जिताक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितमन्मथ' हे नाथ! कहाए, काम शत्रु को मार भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥935॥
ॐ ह्रीं श्री जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्तरसशैलूष' स्वामी, शांति मार्ग के हे अनुगामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥936॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशांतरसशैलूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यपेटकनायक' तुम स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥937॥
ॐ ह्रीं श्री भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मूलकर्त्ता' कहलाए, धर्म प्रवर्तक आप कहाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥938॥
ॐ ह्रीं श्री मूलकर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अखिलज्योति' तुमने प्रगटाई, निधिज्ञान की तुमने पाई।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥939॥
ॐ ह्रीं श्री अखिलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मलघ्न' मलके हो नाशी, धवल अमल आतम के वासी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥940॥
ॐ ह्रीं श्री मलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

प्रभू 'मूल सुकारण' गाए, इस जग में पूज्य कहाए।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी॥941॥
ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में प्रभु 'आप्त' कहाते, जग जन से पूजे जाते।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।942।।
ॐ ह्रीं आप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वागीश्वर' तव वाणी, है जन-जन की कल्याणी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।943।।
ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'श्रेय' ज्ञान के धारी, तुम हो श्रेयस शिवकारी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।944।।
ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'श्रेय सोक्त' कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।945।।
ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निरुक्त वाक्' जगनामी, तुम जन-जन के कल्याणी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।946।।
ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'प्रवक्ता' गाए, जो दिव्य ध्वनि सुनाए।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।947।।
ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वचसामिश' हैं ज्ञानी, जो वीतराग विज्ञानी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।948।।
ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'मारजित' गाए, जो मोक्ष मार्ग दर्शाए।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।949।।
ॐ ह्रीं मारजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वभाववित्' ज्ञानी, तुम जग जन के कल्याणी।
जिन नाम मंत्र सुखकारी, है जग में मंगलकारी।।950।।
ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुतनु' श्रेष्ठ तनधारी, व्याधी के नाशन हारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।951।।
ॐ ह्रीं श्री सुतनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'तनुनिर्मुक्त' कहाए, इस भव से मुक्ति पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।952।।
ॐ ह्रीं श्री तनुनिर्मुक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगत' आप हो स्वामी, हो मुक्ती के अनुगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।953।।
ॐ ह्रीं श्री सुगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' आप कहाए, नय मिथ्या सभी नशाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।954।।
ॐ ह्रीं श्री हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रीश' आप जिन स्वामी, श्री पति हो अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।955।।
ॐ ह्रीं श्री श्रीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीश्रितपादाब्ज' कहाते, सुर चरण आपके ध्याते।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।956।।
ॐ ह्रीं श्री श्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वीतभी' आप निराले, प्रभु अभय दिलाने वाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।957।।
ॐ ह्रीं श्री वीतभिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभयंकर'! हितकारी, प्रभु जन-जन के उपकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।958।।
ॐ ह्रीं श्री अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्सन्नदोष' तुम स्वामी, बन गये मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।959।।
ॐ ह्रीं श्री उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्विघ्न' कहे जिन अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।960।।
ॐ ह्रीं श्री निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निश्चल' जिन अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।961।।
ॐ ह्रीं श्री निश्चलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'लोकसुवत्सल' ज्ञानी, हे वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।962।।
ॐ ह्रीं श्री लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकोत्तर' अविनाशी, हे लोक शिखर के वासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।963।।
ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपति' जिन स्वामी, हे शिवपुर के पथगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।964।।
ॐ ह्रीं श्री लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकचक्षु' कहलाए, मुक्ती का मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।965।।
ॐ ह्रीं श्री लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अपारधी' स्वामी, धी है तव अतिशय नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।966।।
ॐ ह्रीं श्री अपारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रहे 'धीरधी' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।967।।
ॐ ह्रीं श्री धीरधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धसन्मार्ग' प्रदाता, हे त्रिभुवन के सुखदाता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।968।।
ॐ ह्रीं श्री बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुद्ध' बुद्ध अविनाशी, हो निज स्वभाव के वासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरू कर्म निर्जरा पायें।।969।।
ॐ ह्रीं श्री शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सत्य वचन धारी प्रभो, सत्य 'सुनृत पूत वाक्'।
नाम मंत्र ध्याएँ विशद, पाने कर्म विपाक।।970।।
ॐ ह्रीं श्री सत्यसूनृतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होके 'प्रज्ञापारमित' चरम बुद्धि को प्राप्त।
नाम मंत्र ध्याएं विशद, बने श्रेष्ठ हो आप्त।।971।।
ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर गण करते वन्दना, 'प्राज्ञ' कहाए नाथ!।
प्रज्ञा पाने के लिए, चरण झुकाएँ माथ।।972।।
ॐ ह्रीं श्री प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म निरत रहते सदा, 'यति' हे विषय विहीन।
ध्यायें तव हम नाम को, रहते निज में लीन।।973।।
ॐ ह्रीं श्री यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीते इन्द्रियों के विषय, 'नियमितेन्द्रिय' हे देव।
मन वच तन तिय योग से, ध्याएँ तुम्हें सदैव।।974।।
ॐ ह्रीं श्री नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर यति से पूज्य हो, हे 'भदंत' यतिराज।
नाम मंत्र ध्याते अहा, तुम पर जग को नाज।।975।।
ॐ ह्रीं श्री भदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भद्रता धारते, रहे 'भद्रकृत' आप।
तव पद पाने के लिए, करें नाम तव जाप।।976।।
ॐ ह्रीं श्री भद्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रसिद्ध इस लोक में, 'भद्र' आपका नाम।
नाम मंत्र ध्याते सदा, शत्-शत् करें प्रणाम।।977।।
ॐ ह्रीं श्री भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाञ्छित फलदेते सदा, 'कल्पवृक्ष' भगवान।
ध्याते हम तव नाम को, करें विशद गुणगान।।978।।
ॐ ह्रीं श्री कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देते हैं वरदान शुभ, 'वरप्रद' कहे जिनेश।
तव पद पाने के लिए, ध्याते तुम्हें विशेष।।979।।
ॐ ह्रीं श्री वरप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के नाशी प्रभो!, 'समुन्मूलिकर्मारि'।
ध्याते हैं हम आपको, करके श्रेष्ठ विचार।।980।।
ॐ ह्रीं श्री समुन्मूलिकर्मारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी', किए कर्म का नाश।
शिव पद के धारी बने, करके ज्ञान प्रकाश।।981।।
ॐ ह्रीं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों में निपुण तुम, हे 'कर्मण्य' महान्।
सहस्र नाम का भाव से, करते हम गुणगान।।982।।
ॐ ह्रीं श्री कर्मण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कार्यों में दक्ष हो, 'कर्मठ' आप जिनेन्द्र!।
सहस्र नाम के रूप में, पूजें तुम्हें शतेन्द्र।।983।।
ॐ ह्रीं श्री कर्मठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सौख्य दाता कहे, 'प्रांशु' पाया नाम।
नाम मंत्र का ध्यान कर, करते सभी प्रणाम।।984।।
ॐ ह्रीं श्री प्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेयादेयवीचक्षणः' प्रभो!, पाए हिताहित ज्ञान।
विशद ध्यान करते सभी, जग में रहे प्रधान।।985।।
ॐ ह्रीं श्री हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अनन्तशक्ति' तुम्हीं, पाए शक्ति विशेष।
ध्याते हैं हम भाव से, तुमको हे तीर्थेश।।986।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्वयंभू श्रेष्ठतम्, हे 'अच्छेद्य' प्रधान।
तुमको ध्याते हम अहा, वीतराग विज्ञान।।987।।
ॐ ह्रीं श्री अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता तीनों लोक में, 'त्रिपुरारि' हे नाथ!।
करते तीनों योग से, नाम मंत्र का जाप।।988।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन नेत्रधारी रहे, प्रभू 'त्रिलोचन' आप।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, नाश किए सब पाप।।989।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन ज्ञान धारी हुए, हे 'त्रिनेत्र' भगवान!।
तुमको ध्याते हम अहा, पाए केवल ज्ञान।।990।
ॐ ह्रीं श्री त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।,

(तर्ज–भक्तामर गीता)

''त्र्यंबक'' आप कहाते हो, जग में पूजे जाते हो।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।991।।
ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रयक्ष' आप कहलाते हैं, जो सन्मार्ग दिखाते हैं।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।992।।
ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केवलज्ञानवीक्षण' गाये, जगत पूज्यता जो पाए।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।993।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समंतभद्र' शुभ नाम रहा, जग में तुम सा कौन अहा।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।994।।
ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘शांतारि’ जग पूज्य कहे, तीन लोक में श्रेष्ठ रहे।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।995।।
ॐ ह्रीं शांतारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘धर्माचार्य’ हो आप अहा, नाम आपका पूज्य रहा।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।996।।
ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ‘दयानिधि’ हो स्वामी, इस जग के अन्तर्यामी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।997।।
ॐ ह्रीं दयानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सूक्ष्मदर्शी’ आप कहे, सूक्ष्म ज्ञान के नाथ! रहे।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।998।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! ‘कृपालू’ आप रहे, अपने सारे कर्म दहे।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।999।।
ॐ ह्रीं कृपालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘जितानंग’ तुम हो स्वामी, भविजन के अन्तर्यामी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1000।।
ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘धर्म देशक’ तुम हो ज्ञानी, जन-जन के हो कल्याणी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1001।।
ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘शुभंयु’ आप कहे जाते, जीव आपके गुण गाते।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1002।।
ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘सुखसादभूत’ ज्ञानी, आप कहे क्षायिक दानी।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1003।।
ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘पुण्यराशि’ तव नाम रहा, विशद पुण्य के कोष अहा।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1004।।
ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘अनामय’ आप प्रभो, विषय व्याधि से रहित विभो।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1005।।
ॐ ह्रीं अनामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘धर्मपाल’ हो तुम आले, सर्व जहाँ के रखवाले।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1006।।
ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘जगत पाल’ कहलाते हैं, जगत पूज्यता पाते हैं।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1007।।
ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘धर्म साम्राज्य नायक’ गाये, महिमा कोई ना कह पाए।
भविजन तुमको ध्याते हैं, महिमा अनुपम गाते हैं।।1008।।
ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

‘दिग्वासादिक’ एक सौ, आठ नाम के नाथ!।
अर्चा करते आपकी, जिन नामों के साथ।।
पूजा करके भाव से, गाते हैं गुण गान।
‘विशद’ भावना भा रहे, मिले शीघ्र निर्वाण।।
ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य–ॐ ह्रीं अष्टोत्तर सहस्रनामांकित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः

सहस्रनाम जयमाला

दोहा–सहसनाम जिनराज के, गाये मंगलकार।
जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवल ज्ञान के धारी हैं।
कर्म घातिया के नाशी जिन, पूर्ण रूप अविकारी हैं॥
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सु संगति, धर्म भावना भाते हैं॥1॥
देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं॥
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करके दर्शन॥2॥
सोलह कारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं॥
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें॥3॥
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न बर्साते हैं।
जन्म कल्याण के अवशर पर, मेरू पे न्हवन कराते हैं॥
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहसनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जयकार लगाते हैं॥4॥
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं॥
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्यानें वाले, के कट जाते सारे पाप॥5॥

दोहा– सहसनाम जिनदेव के, गाये अपरम्पार।
उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तरसहस्रनामसमूहाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

कवित्त छन्द

तीर्थंकर चौबीस लोक में, करते हैं जग सौख्य प्रदान।
जिनके समवशरण की पूजा, सारे जग में रही महान॥
अष्ट द्रव्य से जिन की पूजा, करते हैं जो मंगल कार।
विशद ज्ञान के धारी हों वे, हो जाते इस भव से पार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं समवशरण पद्मसूर्य वृषभादि वर्धमानान्तेभ्यो नमः

(समवशरण चूलिका)

बड़ी समुच्चय जयमाला–24

(पद्धरि छन्द)

जय जय तीर्थंकर जग प्रधान, जय जय जिन गुण महिमा निधान।
अतिशय पाए केवल्य ज्ञान, है समवशरण रचना महान॥1॥
भू से द्वादश योजन प्रधान, शुभ नीलमणी सम शोभमान।
शुभ समवशरण है निराधार, जो धनुष उच्च है पंच हजार॥2॥
शुभ बीस सहस सोपान जान, जो मण्डप भू तक रहे मान।
हैं समवशरण में कोट चार, शुभ पाँच वेदियाँ हैं अपार॥3॥
इन नव के मधि शुभ आठ-आठ, मन मोहक जिनके रहे ठाठ।
फिर शिला अन्त में कोट जान, जो रत्न सुनिर्मित हैं महान॥4॥
शुभ चहुँ दिश तोरण द्वार होय, अरु चहुँ दिश मानस्तंभ सोय।
हो मान गलित जिन दर्श पाय, जिनवर की महिमा जो दिखाय॥5॥
घंटा चामर ध्वज शोभमान, जिन बिम्ब स्वर्णसम हैं महान।
सिर क्षत्र शोभते त्रय अनूप, जिनवर दर्शाते निज स्वरूप॥6॥
हैं चार सरोवर दिशा चार, जल से पूरित जो हैं अपार।
है पुष्प वाटिका फिर विशेष, ऐसा कहते हैं श्री जिनेश॥7॥
फिर प्रथम कोट दीखे महान, शुभ दिव्य शालाएँ दिव्य मान।
आगे फिर द्वितिय कोट आय, जिसके आगे वन भूमि पाय॥8॥

फिर वेदी सुन्दर है प्रधान, आगे ध्वज पंक्ती शोभमान।
आगे तृतिय फिर कोट जान, वेदी सुकल्पतरु भू महान्॥9॥
फिर भवन पंक्ति स्तूप वान, फिर तुरिय कोट है शोभमान।
मण्डप भू द्वादश सभावान, जिसमें मुनि इन्द्रादिक प्रधान॥10॥
तदनन्तर वेदी पीठ जान, वैडूर्यमणी की प्रथम मान।
सोलह सोलह सोपान दार, सिर धर्म चक्र सुर लिए धार॥11॥
फिर ऊपर द्वितिय पीठ जान, तहँ अष्ट ध्वजाएँ दिव्यमान।
नव निधियाँ पूजन द्रव्य होय, धूपायन मंगल द्रव्य सोय॥12॥
फिर तृतिय पीठ है रत्नवान, शुभ धूप गंध युत हैं महान।
है गंध कुटी शुभ कमल दार, जिसपे जिन होते निराधार॥13॥
शुभ समवशरण रचना अपार, प्रभु की महिमा का नहीं पार।
जिन की ध्वनि खिरती तीन वार, आनन्द हो चारों दिश अपार॥14॥
है समवशरण जग में महान, मुश्किल जिसका करना बखान।
प्रभु की गणधर पूजा रचायें, महिमा भक्ती से श्रेष्ठ गायें॥15॥
इन्द्रादिक मिलकर शीश नाएँ, प्रभु दर्शन से सब दुःख जाएँ।
ता थेइ थेइ थेइ थेइ करें ध्यान, टम टम टम टम टंकार तान॥16॥
घननं घननं घन घंट बाज, द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मिरदंग साज।
छम-छम छम-छम घुंघरू बजाय, अति भगति भाव वन्दन रचाय॥17॥
ऋषियों से पूजित ऋषभनाथ, जय रागद्वेष जित अजितनाथ।
भव भय दुख हर संभव सु नाथ, जय अभिनंदन त्रैलोक्यनाथ॥18॥
जय सुमति-सुमति कारक जिनंद, जय पद्म सुरासुर वंद्य-वंद्य।
जय सुन्दर तन धारी सु-पास, जय चन्द्रनाथ तम करत नाश॥19॥
जय श्री सुखदायक पुष्पदंत, जय शीतल कर सब व्याधि अंत।
जय श्रेयनाथ भव उदधितार, जय वासुपूज्य तन दिव्य धार॥20॥
जय विमलनाथ प्रभु पद्मवास, जय जय अनंत जिन कर्म नाश।
जय धर्म सुजिन के जीव दास, जय शांति शांति चहुँ दिश विकास॥21॥
जय कुन्थु-कुन्थु करुणा निधान, जय अर जिन पद सब धरें ध्यान।
जय मल्लिनाथ जिन सृष्टि पाल, जय मुनिसुव्रत गुण रत्नमाल॥22॥
जय नमि इन्द्रों से वंद्य-वंद्य, जय नेमिनाथ आनंद कन्द।
जय पारस संयम शीलवान, जय वर्द्धमान श्री वर्द्धमान॥23॥

कल्याणक पाते प्रभु महान, जिन प्राप्त करें कैवल्य ज्ञान।
तीर्थेश रहे गुण के निधान, जो तीन लोक में हैं प्रधान॥24॥
जिनवर के गाए सहस नाम, शत इन्द्र करें जिन पद प्रणाम।
है 'विशद' कल्प द्रुम ये विधान, जो है अनेक गुण का निधान॥25॥

घत्तानन्द

जय-जय तीर्थंकर, त्रिभुवन हितकर, धर्मसुधाकर, जैन धरम्।
भव वारिधि तारं, शिवसुखकारं, मनवांछितफल, पूरकरं॥26॥

ॐ ह्रीं श्री समवशरण-महिमामण्डितेभ्य: गणधर-साधुगण सेवितेभ्य: अनन्तचतुष्टयस्वामिन्य: श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा/दिव्यपुष्पाञ्जलिः।

कवित्त छन्द

तीर्थंकर चौबीस लोक में, करते हैं जग सौख्य प्रदान।
जिनके समवशरण की पूजा, सारे जग में रही महान॥
अष्ट द्रव्य से जिन की पूजा, करते हैं जो मंगल कार।
विशद ज्ञान के धारी हों वे, हो जाते इस भव से पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

आरती कल्पद्रुम विधान की

कल्पद्रुम की आरती करने, दीप जलाकर लाए हैं।
चारों दिश जिन दर्शन करके, हर्ष हर्ष गुण गाए हैं॥ टेक॥
समवशरण की कृत्रिम रचना, पावन यहाँ पे पाए हैं।
कमलाशन पर जिसके ऊपर, जिनवर को पधराए हैं॥
कल्पद्रुम...

मानस्तंभों के दर्शन से, जागृत होता है श्रद्धान।
आठ भूमियाँ समवशरण में, शोभित होतीं आभावान॥
कल्पद्रुम...

धर्म चक्र सिर पर रख करके, यक्ष खड़े हैं चारों ओर।
बारह सभाएँ सुर नर मुनि की, करतीं मन को भाव विभोर॥
कल्पद्रुम...

मंगल अष्ट द्रव्य शोभित हैं, गंध कुटी में मंगलकार।
कमलाशन पर अधर श्री जिन, शोभा पावे अतिशयकार॥
कल्पद्रुम...
छियालिस मूलगुणों के धारी, दोष पूर्णतः किए विनाश।
पञ्च कल्याणक पाते श्री जिन, करते केवलज्ञान प्रकाश॥
कल्पद्रुम...
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, ऋषिवर होते सप्त प्रकार।
स्वर्ग मोक्ष पदवी को पाते, निज-निज भावों के अनुसार॥
कल्पद्रुम...
सहस्त्रनाम हैं श्री जिनेन्द्र के, जो गाए हैं मंत्र समान।
'विशद' भाव के द्वारा करते, आज यहाँ हम मंगलगान॥
कल्पद्रुम...

समवशरण की आरती

आज करें हम समवशरण की, आरति मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, प्रभुवर के दरबार॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया।
अनन्त चतुष्टय पाए तुमने, सुख अनन्त को पाया॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती॥1॥
इन्द्र की आज्ञा पाकर भाई, धन कुबेर यहाँ आया।
स्वर्ण और रत्नों से सज्जित, समवशरण बनवाया॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती॥2॥
स्वर्ग से आकर इन्द्रों ने शुभ, प्रातिहार्य प्रगटाए।
प्रभु की भक्ति अर्चा करके, सादर शीश झुकाए॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती॥3॥
जिनबिम्बों से सज्जित अनुपम, अष्ट भूमियाँ जानो।
श्रेष्ठ सभाएँ सुर नर मुनि की, विस्मयकारी मानो॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती॥4॥
ॐकारमय दिव्य देशना, अतिशय प्रभु सुनाए।
'विशद' पुण्य का योग मिला यह, प्रभु के दर्शन पाए॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती॥5॥

समवशरण चालीसा

दोहा

जिनवर के पद नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
आचार्योपाध्याय साधु पद, नत हो शीश झुकाय॥
तीर्थंकर वृषभेष का, समवशरण अभिराम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने हम शिव धाम॥

(चौपाई)

भव्य भावना सोलह भावें, वे तीर्थंकर पदवी पावें॥1॥
पंच कल्याणक पाते स्वामी, होते हैं जिन अन्तर्यामी॥2॥
कर्म घातिया चार नशावें, फिर वे केवल ज्ञान जगावें॥3॥
इन्द्र शरण में चलकर आवें, निज परिवार साथ में लावें॥4॥
धन कुबेर को पास बुलावें, उसको यह आदेश सुनावें॥5॥
पावन समवशरण बनवाओ, जिनप्रभु को जिसमें बैठाओ॥6॥
धनद इन्द्र की आज्ञा पावे, समवशरण वैभव प्रगटावे॥7॥
जिन भू से ऊँचे उठ जाते, बीस हजार हाथ तक जाते॥8॥
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, जो मुहूर्त में चढ़ते मानों॥9॥
बाल वृद्ध रोगी चढ़ जाते, लूले लगड़े दर्शन पाते॥10॥
प्रथम कोट मणियों युत गाया, धूलिशाल शुभ नाम कहाया॥11॥
चैत्य भूमि पहली शुभ जानो, जिन दर्शन हो जिसमें मानो॥12॥
आगे श्रेष्ठ वेदिका भाई, दूजी भूमि खातिका गाई॥13॥
फूल खिलें जिसमें शुभकारी, जल पूरित सोहे मनहारी॥14॥
लता भूमि वेदीयुत सोहे, आगे परकोटा मन मोहे॥15॥
चौथी उपवन भू कहलाई, जिसमें चार कहे वन भाई॥16॥
चम्पक आम्र असोक बताए, सप्तच्छद भी शोभा पाए॥17॥
चैत्य वृक्ष प्रति वन में सोहें, जिनबिम्बों युत मन को मोहें॥18॥
ध्वज भूमी पंचम कहलाई, लघू महाध्वज युत शुभ पाई॥19॥

तीजा कोट रजतमय जानो, कल्पतरु भू आगे मानो॥20॥
कल्पवृक्ष दश जिसमें गाए, चउ सिद्धार्थ वृक्ष बतलाए॥21॥
जिनमें सिद्धों की प्रतिमाएँ, पूर्ण करें सारी इच्छाएँ॥22॥
भवन भूमि आगे फिर आए, जिसमें स्तूप नव नव गाए॥23॥
अर्हत् सिद्धों की प्रतिमाएँ, अतिशय कारी शोभा पाएँ॥24॥
आगे चौथा कोट बताया, जो स्फटिक मणी का गाया॥25॥
अष्टम श्री मण्डप भू गाई, बारह सभा युक्त बतलाई॥26॥
प्रथम सभा में मुनिवर भाई, कल्पवासि सुरियाँ फिर पाईं॥27॥
आर्यिका श्राविकाएँ फिर जानों, ज्योतिष सुरियाँ आगे मानों॥28॥
व्यन्तर देवी आगे गाईं, भवनों की देवी फिर पाईं॥29॥
भवन वासि फिर देव बताए, व्यन्तर देव अष्टम में गाए॥30॥
ज्योतिष देव नवम में जानो, वैमानिक दशवें में मानो॥31॥
आगे मानव चक्री गाए, सभा ग्यारहवीं में बतलाए॥32॥
सभा बारहवीं में शुभ जानो, सिंहादिक पशु रहते मानो॥33॥
श्रोता संख्यातीत बताए, दिव्य देशना प्रभु की पाए॥34॥
गंधकुटी सोहे मनहारी, त्रय कटनी युत मंगलकारी॥35॥
मंगल अष्ट द्रव्य शुभ जानो, पहली कटनी में शुभ मानो॥36॥
दूजी पर अठ महाध्वजाएँ, प्रभु की जो कीर्ति फैलाएँ॥37॥
तीजी कटनी पर सिंहासन, कमल कर्णिका पर है आसन॥38॥
उससे अधर प्रभु जी गाए, चतुर्मुखी जिन ब्रह्म कहाए॥39॥
प्रभु की महिमा जो नर गावे, वे अपने सौभाग्य जगावें॥40॥

दोहा

दिन में चालिस बार यह, चालीसा चालीसा।
पढ़े भाव से जो विशद, बने श्री का ईष॥
'विशद' भावना है यही, हो जिनवर का दर्श।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, रहे हृदय में हर्ष॥

श्री कल्पद्रुम विधान की प्रशस्ति

(शम्भू छन्द)

ऋषभादिक चौबिस तीर्थंकर, महावीर अन्तिम गाए।
उनके शासन की परम्परा, यह पञ्चम काल कहा जाए॥
इस मूल संघ की परिपाटी, में कुन्दकुन्द आचार्य रहे।
उनकी आम्नाय में बलात्कार गण, सेन गच्छ जग मान्य कहे॥1॥
फिर नन्दी संघ की परम्परा, में आदि सागराचार्य हुए।
महावीर कीर्ति से विमलसिन्धु, के सब जीवों ने चरण छुए॥
उनके हैं शिष्य विराग सिन्धु, लेखक के दीक्षा गुरु जानो।
आचार्य सुपद देने वाले, श्री भरत सिन्धु भी पहिचानो॥2॥
गुरुवर ने सोच समझ करके, मुझे विशद सिन्धु यह नाम दिया।
मैं था बिन्दु पर सिन्धु मुझे, गुरुवर ने बना उपकार किया॥
मिथ्यामति लोगों को देखा, तब मेरे मन करुणा जागी।
तब पार्श्वनाथ लिखकर विधान, मै बना स्वयं ही बड़ भागी॥3॥
जिसको पढ़कर के लोग कई, आग्रह पर आग्रह ले आये।
गुरु सरल सटीक शब्द शैली, की कला आप किससे पाए॥
श्री चन्द्र प्रभु तत्त्वार्थ सूत्र, इन्द्र ध्वज आदिक अन्य कई।
रचनाएँ कर आलम्बन दें, जो भक्तों को हों कर्मक्षयी॥4॥
कतिपय विधान सौ से ऊपर, कुछ और अन्य की रचनाएँ।
एकाग्र ध्यान हो श्रुत सेवा, सब करें जीव शुभ फल पाएँ।
है भारत देश का हृदय स्थल, जो मध्य प्रदेश कहा जाए।
है जिला छतरपुर जिसमें इक, शुभ ग्राम कुपी जिसमें आए॥5॥
श्री नाथूराम जी के गृह में, हम जन्म का शुभ अवसर पाए।
विक्रम सम्वत दो सहस इक्कीस, वदी चैत की चौदश कहलाए।
श्री सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिर में, गुरु विराग सिन्धु से व्रत पाया।
नवम्बर आठ सन उन्नीस सौ, बानवे का सन् तब कहलाया॥6॥
फरवरी आठ सन् उन्नीस सौ छियानवे को मुनि दीक्षा पाए।
शिव पथ के राही बने विशद, मुनि विशद सागर जो कहलाए॥
फिर तेरह फरवरी मालपुरा, में भरत सिन्धु मुनिवर पाए।

आचार्य सुपद देकर के गुरु, तब दीक्षा त्रय जो दिलवाए॥7॥
इन्द्र ध्वज विधान लिखने हेतू, कई बार यहाँ आग्रह आया।
वह पूर्ण किया लिखकर विधान, तब मन मेरा अति हर्षाया॥
फिर तीन लोक लिक्खा विधान, फिर कल्पद्रुम के भाव जगे।
इस कार्य हेतु उपयोग जगा, फिर लिखने में हम स्वयं लगे ॥8॥
पच्चिस सौ चालीस वीर निर्वाण, शुभ ज्येष्ठ शुक्ल पाँचे जानो।
यह कल्पद्रुम विधान लेखन, जब पूर्ण हुआ भाई मानो॥
जो इच्छित फल का दाता है, वह कल्पद्रुम कहलाता है।
जो भाव सहित अर्चा करता, वह इच्छित फल को पाता है॥9॥
करते विधान यह चक्रवर्ति, जिसकी अतिशय महिमा गाई।
देते हैं दान किमिच्छित जो, दिखलाते अति जो प्रभुताई॥
चौबिस सौ पावन अर्घ्य तथा, पूर्णार्घ्य श्रेष्ठ सत्तर गाए।
चौबिस से भाग दिए इसमें, संख्या एक सौ पूर्ण पाए॥10॥
पूजाएँ इसमें हैं पावन, शुभ मंत्र इसमें सुखदायी हैं।
मंगल स्तोत्र अरु चूलिका भी, जिसमें अतिशय कर गाई हैं।
मुझ अल्प ज्ञानी से यह विधान, प्रमुदित भावों से लिखा गया।
है 'विशद' भावना अन्तस् की, प्रगटे उर में कुछ ज्ञान नया॥11॥

दोहा– कल्पद्रुम पूजा रही, इच्छित फल दातार।
'विशद' भावना है यही, पाएँ शिव का द्वार॥

॥इति शुभं भूयात्॥

आचार्य श्री का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।